नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य आनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर-गुरुभ्यो नमः

सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि

भाग 15



आगम १३

"राजप्रश्नीय" मूलं एवं वृत्तिः

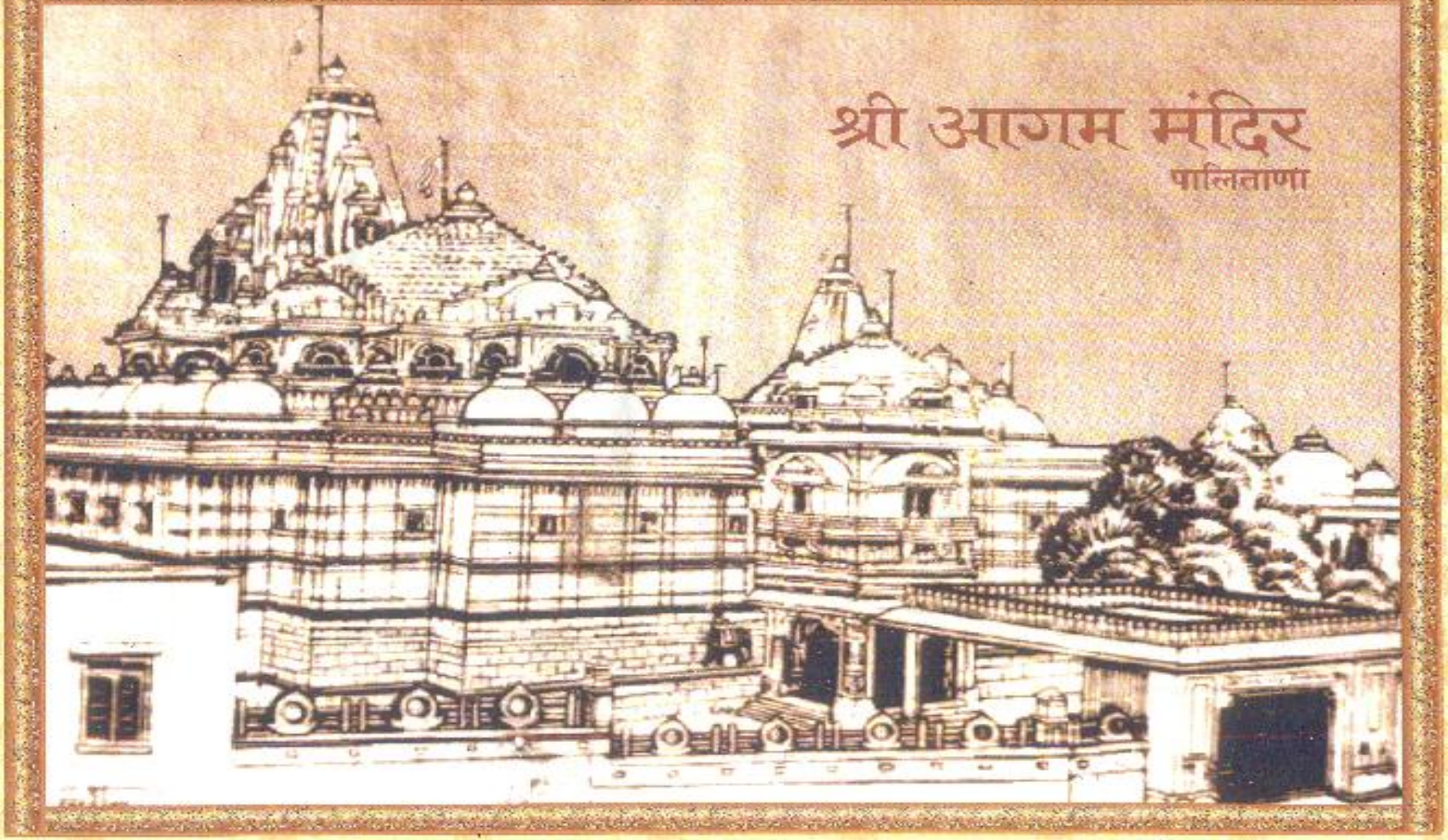
मूल संशोधक :- पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

अभिनव-संकलनकर्ता :- आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

पूज्य शासनप्रभावक आचार्यश्री हर्षसागरसूरिजी की प्रेरणा से

'वर्धमान जैन आगम मंदिर संस्था' पालिताणा

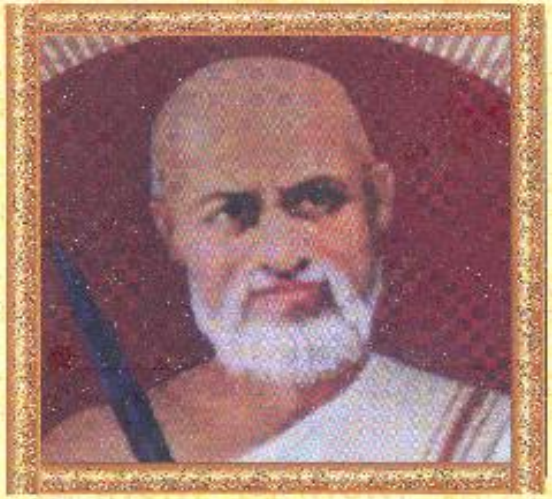
ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता



नमो नमो निम्मलदंसणस्स

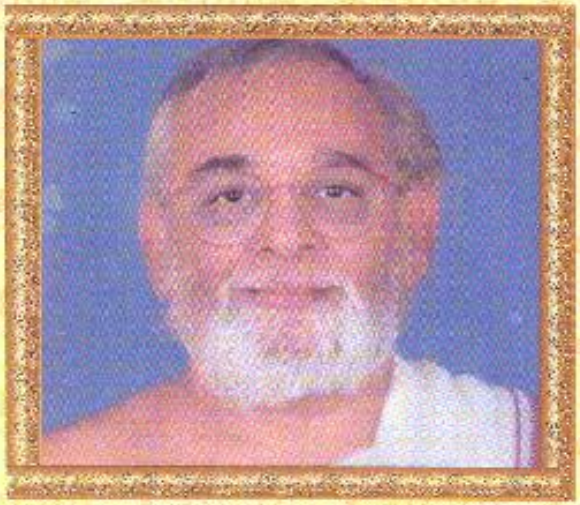
सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि

मूल संशोधक



पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

अभिनव-संकलनकर्ता



आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदावाद Mo 9825598855 / 9825306275


आगम
वाचना शताब्दी वर्ष

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

पूज्य श्रीआनंद-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर गुरूभ्यो नमः

“राजप्रश्नीय” मूलं एवं वृत्तिः

[मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः]

[आद्य संपादकश्री]

पूज्य आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागर सूरीश्वरजी म॰ सा॰

(किञ्चित् वैशिष्ठ्यं समर्पितेन सह)

पुनः संकलनकर्ता→ मुनि दीपरत्नसागर (M.Com., M.Ed., Ph.D.श्रुतमहर्षि)

28/07/2017, शुक्रवार, २०७३ श्रावण शुक्ल ५ ‘सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि’ श्रेणि भाग-१५

श्री आगमोद्धारक-वाचना-शताब्दी-वर्ष-निमित्त ‘आगम-वृत्ति-मुद्रण-प्रोजेक्ट’

सामाचारी-संरक्षक, ज्ञानधनी, आगम-संशोधक, तीव्र-मेधावी, समाधिमृत्यु-प्राप्त, बहुमुखीप्रतिभाधारक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्यदेव श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

◆ जिन्होने शुद्ध-श्रद्धा, सम्यक्-श्रुत आराधना, यथाख्यातचारित्र के प्रति गति और अंत समय देह-ममत्व के त्याग के द्वारा कायोत्सर्ग नामक अभ्यंतर-तप कि मिशाल कायम कि है ऐसे बहुश्रुत आचार्य श्री सागरानंदसूरीश्वरजी महाराज का परिचय कराना मेरे लिए नामुमकिन है, फ़िर भी गुरुभक्ति बुद्धि से श्रद्धांजली स्वरुप एक मामुली सी झलक पैस करने का यह प्रयास मात्र है |

◆ चारित्र-ग्रहण के बाद अल्प कालमे जो अपने गुरुदेव की छत्रछाया से दूर हो गये, तो भी गुरुदेव के स्वर्ग-गमन को सिर्फ़ कर्मो का प्रभाव मानकर अपने संयम के लक्ष्य प्रति स्थिर रहते हुए अकेले ज्ञान-मार्ग कि साधना के पथ पर चले | पढाई के लिए ही कितने महिनो तक रोज एकासणा तप के साथ बारह किल्लोमिटर पैदल विहार भी किया | लेकिन अपने मंझिल पे डटे रहे, और परिणाम स्वरुप संस्कृत एवं प्राकृत भाषा का, प्राचीन लिपिओ का, व्याकरण-न्याय-साहित्य आदि का सम्पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया | जैन आगमशास्त्रो के समुद्र को भी पार कर गए|

◆ एक अकेला आदमी भी क्या नहीं कर शकता? इस प्रश्न का उत्तर हमें इस महापुरुष के जीवन और कवन से मिल गया, जब वे चल पड़े देवर्द्धिगणी क्षमाश्रमण के स्थापित पथ पर. बिना किसी सहाय लिए हुए सिर्फ अकेले ही "जैन-आगम-शास्त्रो" को दीर्घजीवी बनाने के लिए अनेक हस्तप्रतो से शुद्ध-पाठ तैयार किये | दो वैकल्पिक आगम, कल्पसूत्र और निर्युक्तिओ को जोड़कर ४५ आगम-शास्त्रो को संशोधित कर के संपादित किया | फिर पालीताणामें आगम मंदिर बनवाकर आरस-पत्थर के ऊपर ये सभी आगम-साहित्य को कंडारा, सूरतमें ताम्रपत्र पर भी अंकित करवाए और "आगम मंजूषा" नाम से मुद्रण भी करवा के बड़ी बड़ी पेटीमें रखवा के गाँव गाँव भेज दिए | वर्तमानकालमे सर्व प्रथमबार ऐसा कार्य हुआ |

◆ सिर्फ मूल आगम के कार्य से ही उन के कदम रुके नही थे, उन्होंने आगमो की वृत्ति, चूर्णि, निर्युक्ति, अवचूरी, संस्कृत-छाया आदि का भी संशोधन-सम्पादन किया | उपयोगी विषयो के लिए उन्होंने एक लाख श्लोक प्रमाण संस्कृत-प्राकृत नए ग्रंथो की रचना भी की | कितने ही ग्रंथो की प्रस्तावना भी लिखी | ये सम्यक्-श्रुत मुद्रित करवाने के लिए आगमोदय समिति, देवचंद लालभाई इत्यादि विभिन्न संस्था की स्थापना भी की |

◆ ज्ञानमार्ग के अलावा सम्मेतशिखर, अंतरीक्षजी, केशरियाजी आदि तीर्थरक्षा कर के सम्यक-दर्शन-आराधना का परिचय भी दिया | राजाओं को प्रतिबोध कर के और वाचनाओ द्वारा अपनी प्रवचन-प्रभावकता भी उजागर करवाई | बालदिक्षा, देवद्रव्य-संरक्षण, तिथि-प्रश्न इत्यादि विषयोमे सत्य-पक्षमें अंत तक दृढ़ रहे | जैनशासन के लिए जब जरुरत पड़ी तब अदालती कारवाईंओ का सामना भी बड़ी निडरता से किया था |

◆ सागरानंदजी के नाम से मशहूर हो चुके पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजीने अपने परिवार स्वरुप ८७० साधू-साध्वीजी भी शासन को भेट किये |

...ये थे हमारे गुरुदेव "सागरजी"... *.....मुनि दीपरत्नसागर...*

संयमैकलक्षी, उपधान-तप-प्रेरक, चारित्र-मार्ग-रागी, प्रवचन-पटु, सुपरिवार-युक्त

पूज्य गच्छाधिपतिआचार्यदेव श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब

*** परमपूज्य आचार्यश्री आनंदसागरसूरीश्वरजी के पाट-परंपरामे हुए तिसरे गच्छाधिपति थे पूज्य आचार्य श्री देवेन्द्रसागरसूरीश्वरजी, जो एक पून्यवान् आत्मा थे, दीक्षा ग्रहण के बाद अल्पकालमे ही एक शिष्य के गुरु बन गये | फ़िर क्या ! शिष्यो कि संख्या बढती चली, बढ़ते हुए पुन्य के साथ-साथ वे आखिर 'गच्छाधिपति' पद पे आरूढ़ हो गए | इस महात्मा का पुन्य सिर्फ शिष्यों तक सिमित नही था, वे जहा कहीं भी 'उपधान-तप' की प्रेरणा करते थे, तुरंत ही वहां 'उपधान' हो जाते थे | प्रवचनपटुता एवं पर्षदापुन्य के कारण उन के उपदेश-प्राप्त बहोत आत्माओने संयम-मार्ग का स्वीकार किया | खुद भी संयमैकलक्षी होने के कारण चारित्रमार्ग के रागी तो थे ही, साथसाथ ज्ञानमार्ग का स्पर्श भी उन का निरंतर रहेता था | आप कभी भी दुपहर को चले जाइए, वे खुद अकेले या शिष्य-परिवार के साथ कोई भी ग्रन्थ के अध्ययन-अध्यापनमें रत दिखाई देंगे |

*** ये तो हमने उनके जीवन के दो-तीन पहेलु दिखाए | एक और भी अनुसरणीय बात उन के जीवनमें देखने को मिली थी- 'आराधना-प्रेम'. कैसी भी शारीरिक स्थिति हो, मगर उन्होंने दोनों शाश्वती ओलीजी, [पोष}दशमी, शुक्ल पंचमी, त्रिकाल देववंदन, पर्व या पर्वतिथि के देववंदन आदि आराधना कभी नहीं छोड़ी | आखरी सालोमें जब उन को एहसास हो गया की अब 'अंतिम-आराधना' का अवसर नजदीक है, तब उन के मुहमें एक ही रटण बारबार चालु हो गया- "*अरिहंतनुं शरण, सिद्धनुं शरण, साधुनुं शरण, केवली भगवंते भाखेला धर्मनुं शरण*" इसी चार शरणो के रटण के साथ ही वे समाधि-मृत्यु-रूप सम्यक् निद्रा को प्राप्त हुए थे | ऐसे महान् सूरिवर को भावबरी वंदना |

*** मुनि दीपरत्नसागर...

◆◆◆ श्री वर्धमान जैन आगम मंदिर संस्था, पालिताणा ◆◆◆

पूज्यपाद आनंदसागर-सूरीश्वरजी की बौद्धिक-प्रतिभा का मूर्तिमंत स्वरुप ऐसी इस संस्था की स्थापना विक्रम-संवत १९९९ मे महा-वद ५ को हुइ| *पूज्य आचार्य हर्षसागरसूरिजी की प्रेरणा से* जिन की तरफ़ से इस *सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि* के लिए संपूर्ण द्रव्य-सहाय की प्राप्ति हुइ |

शिल्प-स्थापत्य, शिलोत्कीर्ण आगम और समवसरण स्थित नयनरम्य ४५ चौमुख जिन-प्रतिमाजी से सुशोभित ऐसा ये 'आगममंदिर' है, जो शत्रुंजय-गिरिराज कि तलेटीमे स्थित है | वर्तमान २४ जिनवर, २० विहरमान जिनवर और १ शाश्वत मिलाकर ४५ चौमुखजी यहा बिराजमान है | जहां ४० समवसरण की रचना मेरु पर्वत के तिनो काण्ड के वर्णो के अनुसार चार अलग-अलग रंगो के आरस-पत्थर से बना है, देवो द्वारा रचित समवसरण के शास्त्र वर्णन-अनुसार आगम-मंदिर कि समवसरण का स्थापत्य है | ऐसी अनेक विशेषता से युक्त ये आगममंदिर है |

**** मुनि दीपरत्नसागर...*

'सागर-समुदाय-एकता-संरक्षक, तीर्थ-उद्धार-कार्य-प्रवृत्त, गुणानुरागी'

इस "सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि' श्रेणि भाग १ से ४० के संपूर्ण अनुदान के प्रेरणादाता

पूज्य शासनप्रभावक आचार्य श्री हर्षसागरसूरिजी महाराज साहेब

पूज्यपाद स्व॰ गच्छाधिपति देवेन्द्रसागर-सूरीश्वरजी के विनयी शिष्य एवं दो गच्छाधिपतिओ के मुख्य सहायक के रुपमे 'सागर समुदाय' के सुचारु संचालक पूज्य हर्षसागरसूरिजी, जिन की प्रेरणा से ये "सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि" के मुद्रण के लिए संपूर्ण द्रव्यराशि प्राप्त हुई, उनका अत्यल्प परिचय यहां करेंगे| समुदाय-एकता के लिए सदैव प्रयत्नशील रहते हुए ये महात्मा *समुदाय के साधु-साध्वीजी* की आवश्यकताओकी पूर्ती के लिए भी प्रवृत्त रहेते है, प्राचीन-अर्वाचीन तीर्थो के जीर्णोद्धार एवं विकाश के लिए भी उत्साहित रहेते है, ज्ञान-क्षेत्र अछूता न रहे इसीलिए अनुमोदना, अनुदान एवं समय मिलने पर शास्त्र-वांचनमें भी रूचि रखते है | समुदाय के जरूरतमंद साध्वीजी भगवंतो के आवास का विषय हो या साध्वीजी के विहारमें मजदूर का वेतन चुकाना हो, ऐसे छोटे-छोटे कार्यो के प्रति भी उन का लक्ष्य रहेता है | दर्शन-शुद्धि के लिए जब उन्होंने समग्र भारतवर्ष के १०० साल तक के पुराने जिनालयो में १८ अभिषेक की प्रेरणा की, उस वक्त लगभग सभी अभिषेक-सामग्री की द्रव्य-शुद्धि का ख़याल रखते हुए अपनी मेधावी बुद्धि का परिचय दिया था, साथमे अनुकंपा भाव से पुजारी या विधि करानेवाले को यत्किंचित् बहुमान प्रगट करते हुए कुछ धन-राशि प्रदान करवाई |

ऐसे बहुगुण-संपन्न महात्मा पूज्य आचार्यश्री हर्षसागर-सूरिजी को हम भावभरी वंदना करते हुए इस श्रुतकार्य का प्रारंभ करने जा रहे है |

**** मुनि दीपरत्नसागर*

[कात्रज]पूना, कपडवंज, प्रभासपाटण आदि स्थानोमे आगममंदिर के प्रेरक, कर्मग्रंथ अभ्यासु, निस्पृह महात्मा

पूज्यपाद गच्छाधिपति आचार्य श्री दौलतसागर-सूरीश्वरजी महाराज साहेब

(एवं) अजातशत्रु, स्वाध्याय-रसिक, प्रशांतमूर्ती और अपने गुरु के प्रीतिपात्र

परम पूज्य आचार्य श्री नंदीवर्धनसागर-सूरिजी महाराज साहेब

इस पवित्र श्रुत-कार्यमे दोनो सूरिवरो का स्मरण करते हुए कोटि कोटि वंदना के साथ

.....मुनि दीपरत्नसागर

मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:		मूलांक:	विषय:	पृष्ठांक:
०१-४७	सूर्याभदेव-प्रकरणं	०१०		४८-८५	प्रदेशिराजन्-प्रकरणं	२३८
	-आमलकल्पा नगरी	०१०			-सूर्यकान्तादेवी, श्रावस्तीनगरी	
	-सूर्याभदेवस्य विमान, सभा,	०३६			-केशिकुमारस्य धर्मदेशना,	
	पर्षदा, भगवद् वंदन,				-प्रदेशीराज्ञ:.....	
	-दिव्यविमान विकुर्वणा, नृत्य				.....केशिकुमार सार्धं धर्म-वार्ता	
	-सिध्धायतन: एवं...				-प्रदेशिराज्ञस्य समाधिमरणं	
	...जिनप्रतिमा-अधिकार:				-सूर्याभविमाने उत्पत्ति:	

प्रत सूत्रांक [-]

दीप अनुक्रम [-]

॥ अर्हम् ॥

श्रीमन्मलयगिर्याचार्यविहितविवृत्तियुतं श्रीमद्राजप्रश्नीयमुपाङ्गम् ॥

॥ ॐ नमः ॥

प्रणमत वीरजिनेश्वरचरणयुगं परमपाटलच्छायम् । अधरीकृतनतवासवमुकुटस्थितरत्नरुचिचक्रम् ॥ १ ॥
राजप्रश्नीयमहं विवृणोमि यथाऽऽगमं गुरुनियोगात् । तत्र च शक्तिमशक्तिं गुरवो जानन्ति का चिन्ता ? ॥ २ ॥

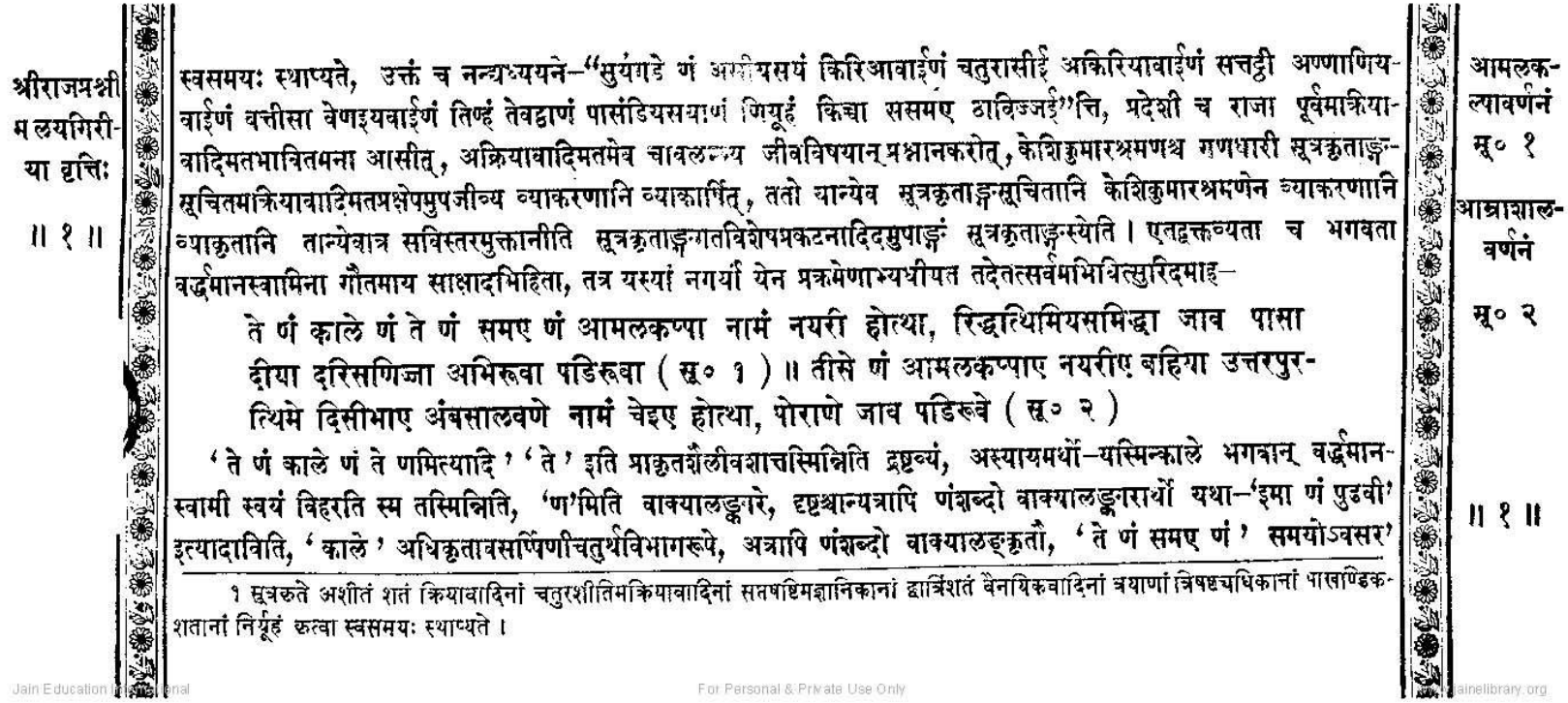
अथ कस्मादिदमुपाङ्गं राजप्रश्नीयाभिधानमिति ?, उच्यते, इह प्रदेशिनामा राजा भगवतः केशिकुमारश्रमणस्य समीपे यान् जीवविषयान् प्रश्नानकार्षीत्, यानि च तस्मै केशिकुमारश्रमणो गणभृत् व्याकरणानि व्याकृतवान्, यच्च व्याकरणसम्यक्परिणतिभावतो बोधिमासाद्य मरणान्ते शुभानुशययोगतः प्रथमे सौधर्मनाम्नि नाकलोके विमानमाधिपत्येनाधितिष्ठत्, यथा च विमानाधिपत्यप्राप्त्यनन्तरं सम्यगवधिज्ञानाभोगतः श्रीमद्वर्धमानस्वामिनं भगवन्तमालोक्य भक्त्यतिशयपरीतचेताः सर्वस्वसामग्रीसमेत इहावतीर्य भगवतः पुरतो द्वात्रिंशद्विधि नाट्यमनरीनृत्यत्, नर्तित्वा च यथाऽऽयुष्कं दिवि सुखमनुभूय ततश्च्युत्वा यत्र समागत्य मुक्तिपदमवाप्स्यति, तदेतत्सर्वमस्मिन्नुपाङ्गेऽभिधेयं, परं सकलवक्तव्यतामूलं राजप्रश्नीय इति—राजप्रश्नेषु भवं राजप्रश्नीयं । अथ कस्याङ्गस्येदमुपाङ्गं ?, उच्यते, सूत्रकृताङ्गस्य, कथं तदुपाङ्गतेति चेत्, उच्यते, सूत्रकृते ह्यङ्गे अशीत्यधिकं शतं क्रियावादिनां, चतुरशीतिरक्रियावादिनां, सप्तषष्टिरज्ञानिकानां, द्वात्रिंशद्वैनयिकानां, सर्वसङ्ख्यया त्रीणि शतानि त्रिषष्ट्यधिकानि पाखण्डिकशतानि प्रतिक्षिप्य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वृत्तिकारश्री कृत् शाश्त्र-प्रस्तावना

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१]



श्रीराजप्रश्नीयमलयगिरीया वृत्तिः ॥ १ ॥

स्वसमयः स्थाप्यते, उक्तं च नन्द्यध्ययने–"सुयगडे णं असीयस्सयं किरिआवाईणं चउरासीईए अकिरियावाईणं सत्तट्ठीए अण्णाणियवाईणं बत्तीसाए वेणइयवाईणं तिण्हं तेवट्ठाणं पासंडियसयाणं[1] वियूहं किच्चा ससमए ठाविज्जई"त्ति, प्रदेशी च राजा पूर्वमक्रियावादिमतभावितमना आसीत्, अक्रियावादिमतमेव चावलम्ब्य जीवविषयान् प्रश्नानकरोत्, केशिकुमारश्रमणश्च गणधारी सूत्रकृताङ्गसूचितमक्रियावादिमतप्रक्षेपमुपजीव्य व्याकरणानि व्याकार्षीत्, ततो यान्येव सूत्रकृताङ्गसूचितानि केशिकुमारश्रमणेन व्याकरणानि व्याकृतानि तान्येवात्र सविस्तरमुक्तानीति सूत्रकृताङ्गगतविशेषप्रकटनादिदमुपाङ्गं सूत्रकृताङ्गस्येति। एतदुक्तव्यता च भगवता वर्द्धमानस्वामिना गौतमाय साक्षादभिहिता, तत्र यस्यां नगर्यां येन प्रक्रमेणाभ्यधीयत तदेतत्सर्वमभिधित्सुरिदमाह–

ते णं काले णं ते णं समए णं आमलकप्पा नामं नयरी होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पासादीया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा (सू० १) ॥ तीसे णं आमलकप्पाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए अंबसालवणे नामं चेइए होत्था, पोराणे जाव पडिरूवे (सू० २)

'ते णं काले णं ते णमित्यादि' 'ते' इति प्राकृतशैलीवशात्तस्मिन्निति द्रष्टव्यं, अस्यायमर्थो–यस्मिन्काले भगवान् वर्द्धमानस्वामी स्वयं विहरति स्म तस्मिन्निति, 'ण'मिति वाक्यालङ्कारे, दृष्टश्चान्यत्रापि णंशब्दो वाक्यालङ्कारार्थो यथा–'इमा णं पुढवी' इत्यादाविति, 'काले' अधिकृतावसर्पिणीचतुर्थविभागरूपे, अत्रापि णंशब्दो वाक्यालङ्कृतौ, 'ते णं समए णं' समयोऽवसर'

[1] सूत्रकृते अशीतं शतं क्रियावादिनां चतुरशीतिमक्रियावादिनां सप्तषष्टिमज्ञानिकानां द्वात्रिंशतं वैनयिकवादिनां त्रयाणां त्रिषष्ट्यधिकानां पाषण्डिकशतानां निर्यूहं कृत्वा स्वसमयः स्थाप्यते।

आमलकल्पावर्णनं सू० १

आम्रशालवर्णनं सू० २

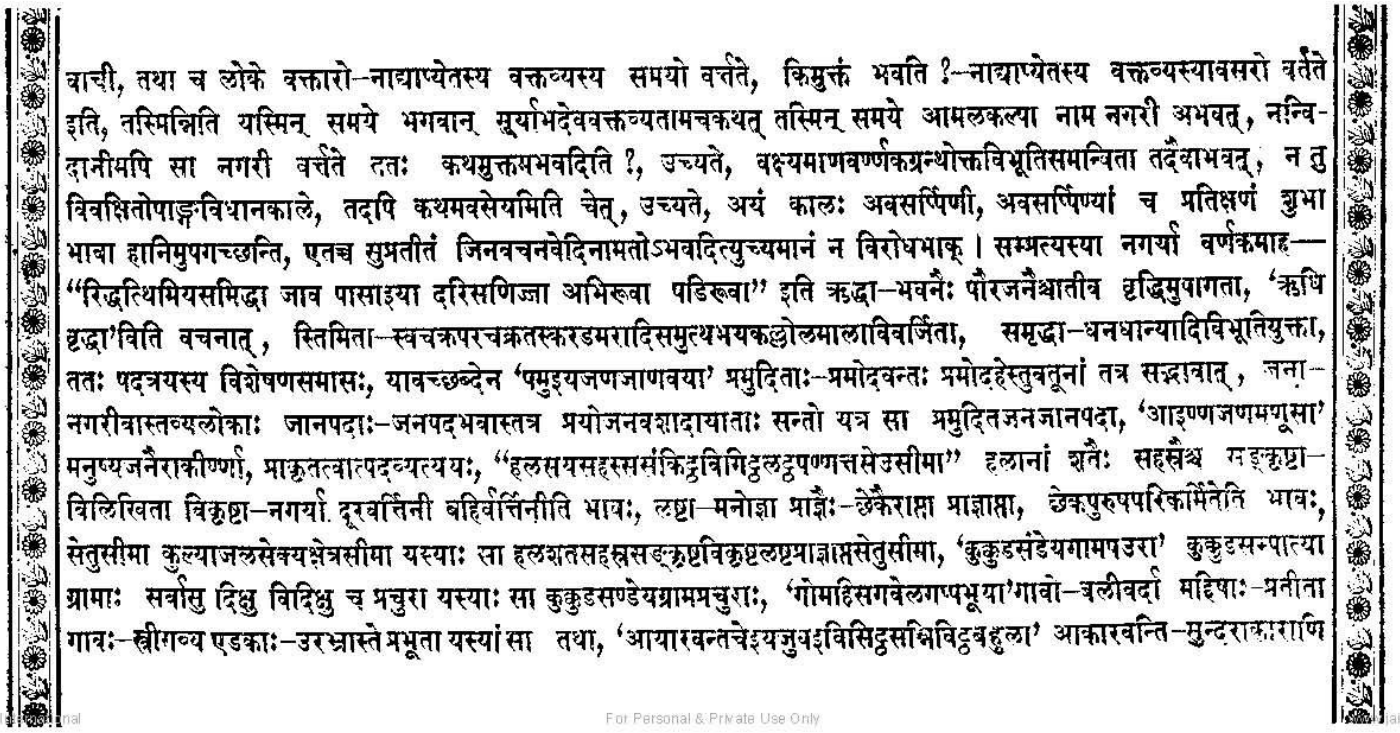
॥ १ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आमलकल्पानगरी एवं आम्रशालवन चैत्यस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [१]

दीप अनुक्रम [१]



वाची, तथा च लोके वक्तारो–नाद्याप्येतस्य वक्तव्यस्य समयो वर्त्तते, किमुक्तं भवति ?–नाद्याप्येतस्य वक्तव्यस्यावसरो वर्त्तते इति, तस्मिन्निति यस्मिन् समये भगवान् सूर्याभदेववक्तव्यतामधिकृत्य तस्मिन् समये आमलकल्पा नाम नगरी अभवत्, नन्वि-दानीमपि सा नगरी वर्त्तते ततः कथमुक्तमभवदिति ?, उच्यते, वक्ष्यमाणवर्णकग्रन्थोक्तविभूतिसमन्विता तदैवाभवत्, न तु विवक्षितोपाङ्गविधानकाले, तदपि कथमवसेयमिति चेत्, उच्यते, अयं कालः अवसर्पिणी, अवसर्पिण्यां च प्रतिक्षणं शुभा भावा हानिमुपगच्छन्ति, एतच्च सुप्रतीतं जिनवचनवेदिनामतोऽभवदित्युच्यमानं न विरोधभाक् । सम्प्रत्यस्या नगर्या वर्णकमाह— "रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा" इति ऋद्धा–भवनैः पौरजनैश्चातीव वृद्धिमुपागता, 'ऋधि वृद्धा'विति वचनात्, स्तिमिता–स्वचक्रपरचक्रतस्करडमरादिसमुत्थभयकल्लोलमालाविवर्जिता, समृद्धा–धनधान्यादिविभूतियुक्ता, ततः पदत्रयस्य विशेषणसमासः, यावच्छब्देन 'पमुइयजणजाणवया' प्रमुदिताः–प्रमोदवन्तः प्रमोदहेस्तुवतूनां तत्र सद्भावात्, जना–नगरीवास्तव्यलोकाः जानपदाः–जनपदभवास्तत्र प्रयोजनवशादायाताः सन्तो यत्र सा प्रमुदितजनजानपदा, 'आइण्णजणमणूसा' मनुष्यजनैराकीर्णा, प्राकृतत्वात्पदव्यत्ययः, "हलसयसहस्ससंकिट्ठविकिट्ठलट्ठपण्णत्तसेउसीमा" हलानां शतैः सहस्रैश्च सङ्कृष्टा–विलिखिता विकृष्टा–नगर्या दूरवर्त्तिनी बहिर्वर्त्तिनीति भावः, लष्टा–मनोज्ञा प्राज्ञैः–छेकैराप्ता प्राज्ञाप्ता, छेकपुरुषपरिकर्मितेति भावः, सेतुसीमा कुल्याजलसेक्यक्षेत्रसीमा यस्याः सा हलशतसहस्रसङ्कृष्टविकृष्टलष्टप्राज्ञाप्तसेतुसीमा, 'कुक्कुडसंडेयगामपउरा' कुक्कुटसम्पात्या ग्रामाः सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च प्रचुरा यस्याः सा कुक्कुडसण्डेयग्रामप्रचुराः, 'गोमहिसगवेलगप्पभूया'गावो–बलीवर्दा महिषाः–प्रतीता गावः–स्त्रीगव्य एडकाः–उरभ्रास्ते प्रभूता यस्यां सा तथा, 'आयारवन्तचेइयजुवइविसिट्ठसन्निविट्ठबहुला' आकारवन्ति–सुन्दराकाराणि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	आमलकल्पानगरी एवं आम्रशालवन चैत्यस्य वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [२]

दीप अनुक्रम [२]

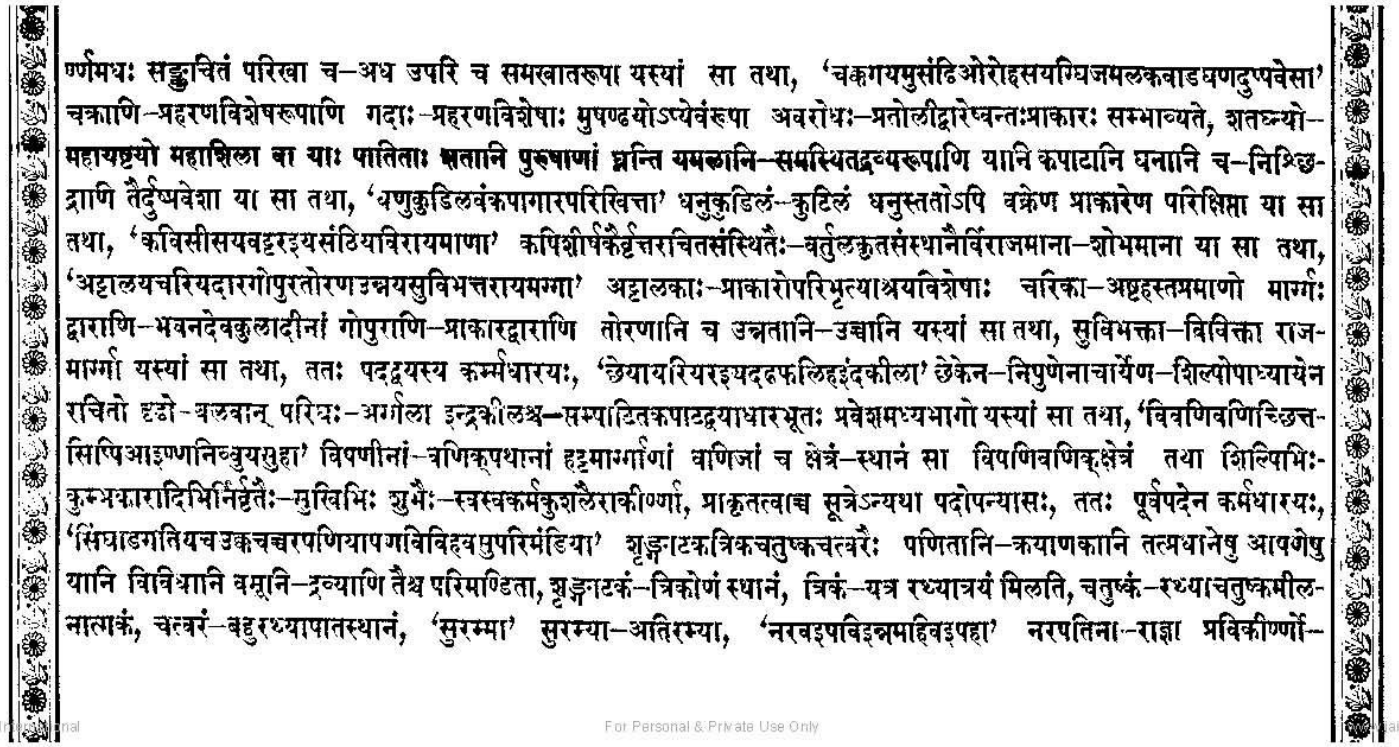
चैत्यानि युवतीनां च पण्यतरुणीनामिति भावः, विशिष्टानि सन्निविष्टानि, सन्निवेशपाटका इति भावः, बहुलानि–बहूनि यस्यां सा तथा, 'उक्कोडियगायगंठिभेदतक्करखंडरक्खरहिया' उत्कोटा–लञ्चा तया चरन्ति उत्कोटिकास्तैर्गात्रभेदैः–शरीरविनाशकारिभिर्ग्रन्थिभेदैः–ग्रन्थिच्छेदैः तस्करैः खण्डरक्षैः–दण्डपाशिकैः रहिता, अनेन तत्रोपद्रवकारिणामभावमाह, 'क्षेमा' अशिवाभावात्, 'निरुवद्दवा' राजादिकृतोपद्रवाभावात्, 'सुभिक्षा' भिक्षुकाणां भिक्षायाः सुलभत्वात्, 'विसत्थसुहावासा' विश्वस्तो–निर्भयः सुखमावासो लोकानां यस्यां सा तथा, 'अणेगकोडिकोडुंबियाइण्णणिव्वुत्तसुहा' अनेककोटीभिः–अनेककोटिसङ्ख्याकैः कौटुम्बिकैराकीर्णा निर्वृत्ता सन्तुष्टजनयोगात् शुभा शुभवस्तूपेतत्वात्, ततः पदत्रयस्य कर्मधारयः, "नडनट्टजल्लमल्लमुट्ठियवेलंबगकहगपवकलासकआइक्खयलंखमंखतूणइल्लतुंबवीणियअणेगतालाचराणुचरिया" नटा–नाटयितारो, नर्त्तका ये नृत्यन्ति, जल्ला–राज्ञः स्तोत्रपाठकाः, मल्लाः प्रतीता मौष्टिका–मल्ला एव ये मुष्टिभिः प्रहरन्ति, विडम्बकाः–विदूषकाः कथकाः–प्रतीताः प्लवका–ये उत्प्लवन्ते नद्यादिकं वा तरन्ति, लासका–ये रासकान् गायन्ति, जयशब्दप्रयोक्तारो वा भाण्डा इत्यर्थः, आख्यायिका–ये शुभाशुभमाख्यान्ति लङ्ख्या–महावंशाग्रखेलका मङ्खाः–चित्रफलकहस्ता भिक्षुकाः, 'तूणइल्ला' तूणाभिधानवाद्यविशेषवन्तः तुम्बवीणिकाः–तुम्बवीणावादका, अनेके च ये तालाचराः–तालादानेन प्रेक्षाकारिणः, एतैः सर्वैरनुचरिता–आसेविता या सा तथा, "आरामुज्जाणअगडतलागदीहियवप्पिणिगुणोववेया" आरामा यत्र माधवीलतागृहादिषु दम्पत्यादीन्यागत्य रमन्ते, उद्यानानि–पुष्पादिमद्वृक्षसङ्कुलान्युत्सवादौ बहुजनभोग्यानि अगडत्ति–अवटाः कूपास्तडागानि–प्रतीतानि दीर्घिकाः–सारिण्यः, वप्पिणित्ति–केदाराः, एते गुणोपपेता–रम्यतादिगुणोपपेता यस्यां सा तथा, 'उव्विद्धविउलगंभीरखातफलिहा' उद्विद्धं–उण्डं विउलं–विस्तीर्णं गम्भीरम्–अलब्धमध्यं खातम्–उपरिविस्ती-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आमलकल्पानगरी एवं आम्रशालवन चैत्यस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२]

दीप अनुक्रम [२]



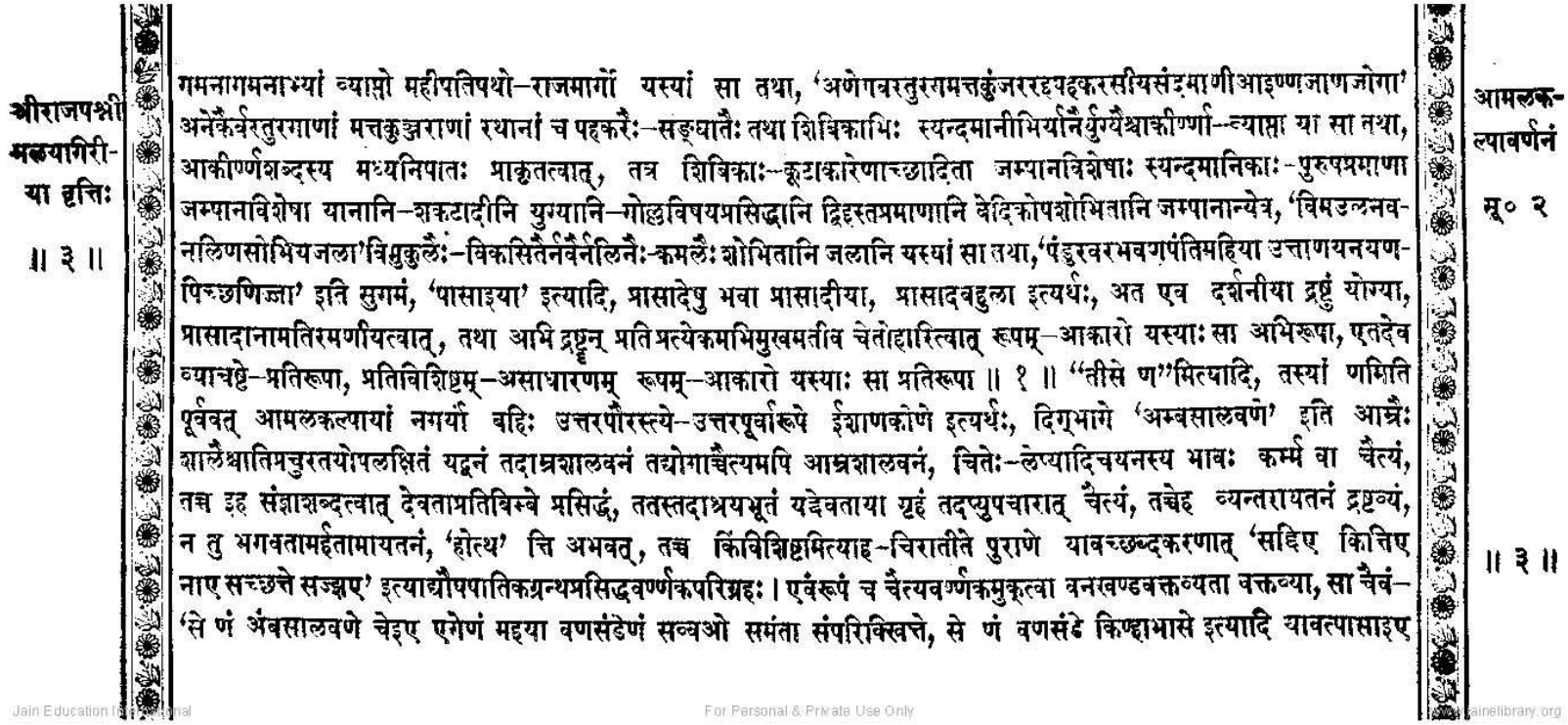
र्णमयः सङ्कुचितं परिखा च–अध उपरि च समखातरूपा यस्यां सा तथा, 'चक्कगयमुसंढिओरोहसयग्घिजमलकवाडघणदुप्पवेसा' चक्राणि–प्रहरणविशेषरूपाणि गदाः–प्रहरणविशेषाः मुषण्ढयोऽप्येवंरूपा अवरोधः–प्रतोलीद्वारेष्वन्तःप्राकारः सम्भाव्यते, शतघ्न्यो–महायष्टयो महाशिला वा याः पातिताः सत्तानि पुरुषाणां घ्नन्ति यमलानि–समस्थितद्वव्यरूपाणि यानि कपाटानि घनानि च–निश्छिद्राणि तैर्दुष्प्रवेशा या सा तथा, 'धणुकुडिलवंकपागारपरिक्खित्ता' धनुकुटिलं–कुटिलं धनुस्ततोऽपि वक्रेण प्राकारेण परिक्षिप्ता या सा तथा, 'कविसीसयवट्टरइयसंठियविरायमाणा' कपिशीर्षकैर्वृत्तरचितसंस्थितैः–वर्तुलकृतसंस्थानैर्विराजमाना–शोभमाना या सा तथा, 'अट्टालयचरियदारगोपुरतोरणउन्नयसुविभत्तरायमग्गा' अट्टालकाः–प्राकारोपरिभृत्याश्रयविशेषाः चरिका–अष्टहस्तप्रमाणो मार्गः द्वाराणि–भवनदेवकुलादीनां गोपुराणि–प्राकारद्वाराणि तोरणानि च उन्नतानि–उच्चानि यस्यां सा तथा, सुविभक्ता–विविक्ता राजमार्गा यस्यां सा तथा, ततः पदद्वयस्य कर्मधारयः, 'छेयायरियरइयदढफलिहइंदकीला' छेकेन–निपुणेनाचार्येण–शिल्पोपाध्यायेन रचितो दृढो–बलवान् परिघः–अर्गला इन्द्रकीलश्च–सम्पादितकपाटद्वयाधारभूतः प्रवेशमध्यभागो यस्यां सा तथा, 'विवणिवणिच्छित्तसिप्पिआइण्णनिव्वुयसुहा' विपणीनां–वणिक्पथानां हट्टमार्गाणां वणिजां च क्षेत्रं–स्थानं सा विपणिवणिक्क्षेत्रं तथा शिल्पिभिः–कुम्भकारादिभिर्निर्वृतैः–सुखिभिः शुभैः–स्वस्वकर्मकुशलैराकीर्णा, प्राकृतत्वाच्च सूत्रेऽन्यथा पदोपन्यासः, ततः पूर्वपदेन कर्मधारयः, 'सिंघाडगतियचउक्कचच्चरपणियापगविविहवसुपरिमंडिया' शृङ्गाटकत्रिकचतुष्कचत्वरैः पणितानि–क्रयाणकानि तत्प्रधानेषु आपणेषु यानि विविधानि वसूनि–द्रव्याणि तैश्च परिमण्डिता, शृङ्गाटकं–त्रिकोणं स्थानं, त्रिकं–यत्र रथ्यात्रयं मिलति, चतुष्कं–रथ्याचतुष्कमीलनात्मकं, चत्वरं–बहुरथ्यापातस्थानं, 'सुरम्मा' सुरम्या–अतिरम्या, 'नरवइपविइण्णमहिवइपहा' नरपतिना–राज्ञा प्रविकीर्णो–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आमलकल्पानगरी एवं आम्रशालवन चैत्यस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२]

दीप अनुक्रम [२]



श्रीराजप्रश्नीयमलयगिरीया वृत्तिः ॥ ३ ॥

गमनागमनाभ्यां व्याप्तो महीपतिपथो–राजमार्गो यस्यां सा तथा, 'अणेगवरतुरगमत्तकुंजररहपहकरसीयसंदमाणीआइण्णजाणजोगा' अनेकैर्वरतुरगाणां मत्तकुञ्जराणां रथानां च पहकरैः–सङ्घातैः तथा शिबिकाभिः स्यन्दमानीभिर्यानैर्युग्यैश्चाकीर्णा–व्याप्ता या सा तथा, आकीर्णशब्दस्य मध्यनिपातः प्राकृतत्वात्, तत्र शिबिकाः–कूटाकारेणाच्छादिता जम्पानविशेषाः स्यन्दमानिकाः–पुरुषप्रमाणा जम्पानविशेषा यानानि–शकटादीनि युग्यानि–गोल्लविषयप्रसिद्धानि द्विहस्तप्रमाणानि वेदिकोपशोभितानि जम्पानान्येव, 'विमउलनवनलिणसोभियजला' विमुकुलैः–विकसितैर्नवैर्नलिनैः–कमलैः शोभितानि जलानि यस्यां सा तथा, 'पंडुरवरभवणपंतिमहिया उत्ताणयनयणपिच्छणिज्जा' इति सुगमं, 'पासाइया' इत्यादि, प्रासादेषु भवा प्रासादीया, प्रासादबहुला इत्यर्थः, अत एव दर्शनीया द्रष्टुं योग्या, प्रासादानामतिरमणीयत्वात्, तथा अभि द्रष्टून् प्रति प्रत्येकमभिमुखमतीव चेतोहारित्वात् रूपम्–आकारो यस्याः सा अभिरूपा, एतदेव व्याचष्टे–प्रतिरूपा, प्रतिविशिष्टम्–असाधारणम् रूपम्–आकारो यस्याः सा प्रतिरूपा ॥ १ ॥ "तीसे ण"मित्यादि, तस्यां णमिति पूर्ववत् आमलकल्पायां नगर्यां बहिः उत्तरपौरस्त्ये–उत्तरपूर्वारूपे ईशाणकोणे इत्यर्थः, दिग्भागे 'अम्बसालवणे' इति आम्रैः शालैश्चातिप्रचुरतयोपलक्षितं यद्वनं तदाम्रशालवनं तद्योगाच्चैत्यमपि आम्रशालवनं, चितेः–लेप्यादिचयनस्य भावः कर्म्म वा चैत्यं, तच्च इह संज्ञाशब्दत्वात् देवताप्रतिबिम्बे प्रसिद्धं, ततस्तदाश्रयभूतं यद्देवताया गृहं तदप्युपचारात् चैत्यं, तच्चेह व्यन्तरायतनं द्रष्टव्यं, न तु भगवतामर्हतामायतनं, 'होत्थ' त्ति अभवत्, तच्च किंविशिष्टमित्याह–चिरातीते पुराणे यावच्छब्दकरणात् 'सद्दिए कित्तिए नाए सच्छत्ते सज्झए' इत्याद्यौपपातिकग्रन्थप्रसिद्धवर्णकपरिग्रहः। एवंरूपं च चैत्यवर्णकमुकृत्वा वनखण्डवक्तव्यता वक्तव्या, सा चैवं– 'से णं अंबसालवणे चेइए एगेणं महया वणसंडेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, से णं वणसंडे किण्हाभासे इत्यादि यावत्पासाइए

आमलकल्पावर्णनं मू० २

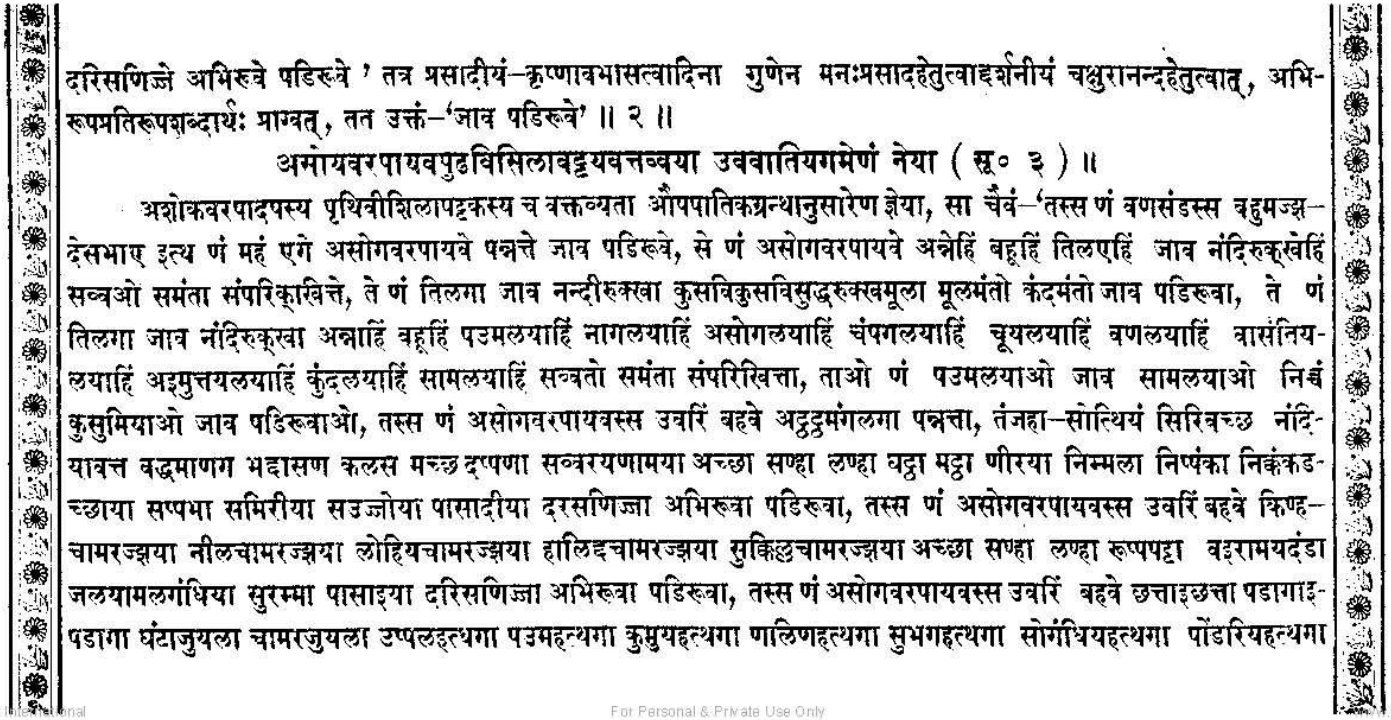
॥ ३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

आमलकल्पानगरी एवं आम्रशालवन चैत्यस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२]

दीप अनुक्रम [२]



दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे ' तत्र प्रसादीयं–कृष्णावभासत्वादिना गुणेन मनःप्रसादहेतुत्वाद्दर्शनीयं चक्षुरानन्दहेतुत्वात्, अभिरूपप्रतिरूपशब्दार्थः प्राग्वत्, तत उक्तं–'जाव पडिरूवे' ॥ २ ॥

असोयवरपायवपुढविसिलावट्टयवत्तव्वया उववातियगमेणं नेया (सू० ३) ॥

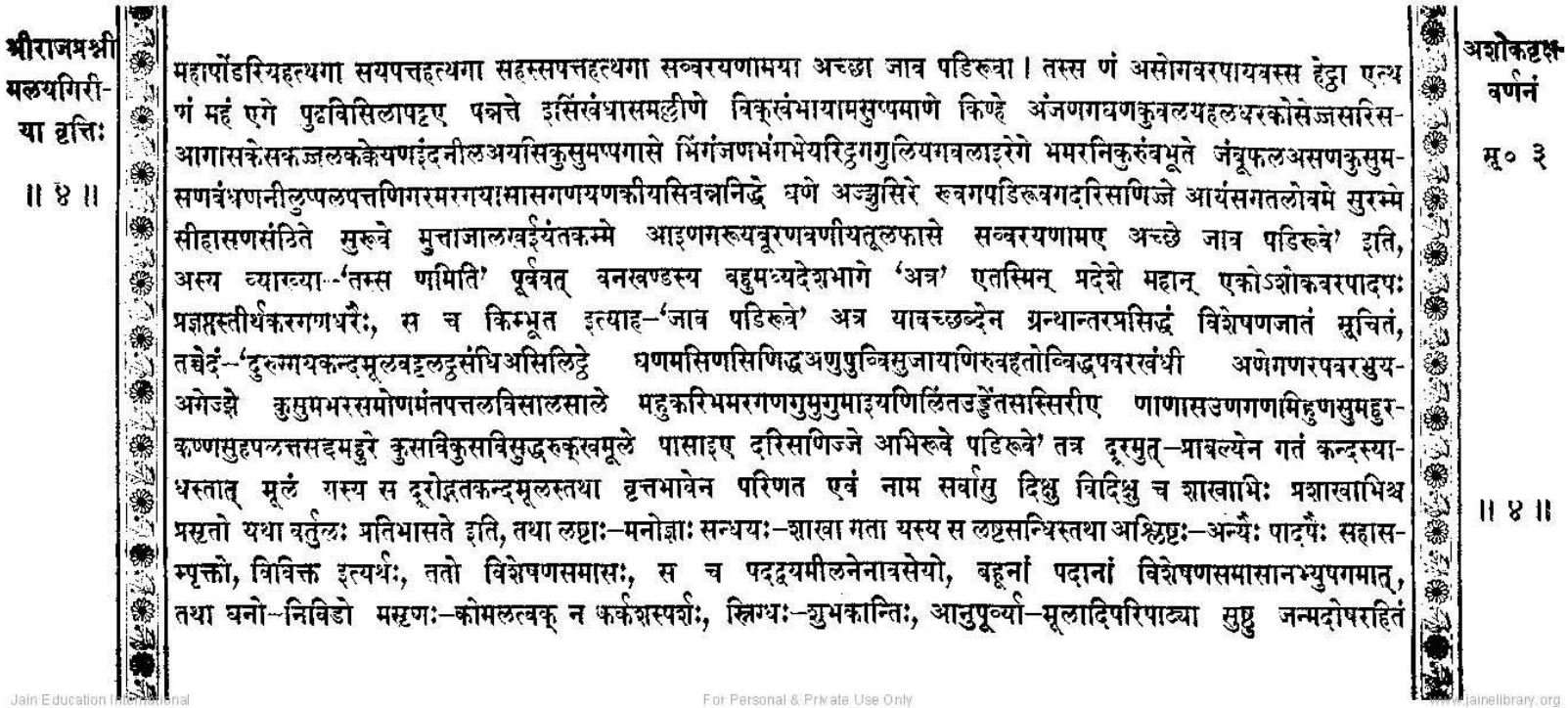
अशोकवरपादपस्य पृथिवीशिलापट्टकस्य च वक्तव्यता औपपातिकग्रन्थानुसारेण ज्ञेया, सा चैवं–'तस्स णं वणसंडस्स बहुमज्झदेसभाए इत्थ णं महं एगे असोगवरपायवे पन्नत्ते जाव पडिरूवे, से णं असोगवरपायवे अन्नेहिं बहूहिं तिलएहिं जाव नंदिरुक्खेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, ते णं तिलगा जाव नन्दीरुक्खा कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूला मूलमंतो कंदमंतो जाव पडिरूवा, ते णं तिलगा जाव नंदिरुक्खा अन्नाहिं बहूहिं पउमलयाहिं नागलयाहिं असोगलयाहिं चंपगलयाहिं चूयलयाहिं वणलयाहिं वासंतियलयाहिं अइमुत्तयलयाहिं कुंदलयाहिं सामलयाहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता, ताओ णं पउमलयाओ जाव सामलयाओ निच्चं कुसुमियाओ जाव पडिरूवाओ, तस्स णं असोगवरपायवस्स उवरिं बहवे अट्ठट्ठमंगलगा पन्नत्ता, तंजहा–सोत्थियं सिरिवच्छं नंदियावत्तं वद्धमाणगं भद्दासणं कलसं मच्छं दप्पणं सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा समिरीया सउज्जोया पासादीया दरसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, तस्स णं असोगवरपायवस्स उवरिं बहवे किण्हचामरज्झया नीलचामरज्झया लोहियचामरज्झया हालिद्दचामरज्झया सुक्किलचामरज्झया अच्छा सण्हा लण्हा रूप्पपट्टा वइरामयदंडा जलयामलगंधिया सुरम्मा पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा, तस्स णं असोगवरपायवस्स उवरिं बहवे छत्ताइछत्ता पडागाइपडागा घंटाजुयला चामरजुयला उप्पलहत्थगा पउमहत्थगा कुमुयहत्थगा णलिणहत्थगा सुभगहत्थगा सोगंधियहत्थगा पोंडरियहत्थगा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अशोकवृक्षस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३]

दीप अनुक्रम [३]



श्रीराजप्रश्नीयमलयगिरीया वृत्तिः ॥ ४ ॥

महापोंडरियहत्थगा सयपत्तहत्थगा सहस्सपत्तहत्थगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा। तस्स णं असोगवरपायवस्स हेट्ठा एत्थ णं महं एगे पुढविसिलापट्टए पन्नत्ते इसिंखंधासमल्लीणे विक्खंभायामसुप्पमाणे किण्हे अंजणगघणकुवलयहलधरकोसेज्जसरिसआगासकेसकज्जलककेयणइंदनीलअयसिकुसुमप्पगासे भिंगंजणभंगभेयरिट्ठगगुलियगवलाइरेगे भमरनिकुरुंबभूते जंबूफलअसणकुसुमसणवंधणनीलुप्पलपत्तणिगरमरगयासगणयणकीयसिवन्ननिद्धे घणे अज्जुसिरे रुवगपडिरूवगदरिसणिज्जे आयंसगतलोवमे सुरम्मे सीहासणसंठिते सुरूवे मुत्ताजालग्घइयंतकम्मे आइणगरूयबूरणवणीयतूलफासे सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे' इति, अस्य व्याख्या–'तस्स णमिति' पूर्ववत् वनखण्डस्य बहुमध्यदेशभागे 'अत्र' एतस्मिन् प्रदेशे महान् एकोऽशोकवरपादपः प्रज्ञप्तस्तीर्थकरगणधरैः, स च किम्भूत इत्याह–'जाव पडिरूवे' अत्र यावच्छब्देन ग्रन्थान्तरप्रसिद्धं विशेषणजातं सूचितं, तच्चेदं–'दुरुग्गयकन्दमूलवट्टलट्ठसंधिअसिलिट्ठे घणमसिणसिणिद्धअणुपुव्विसुजायणिरुवहतोव्विद्धपवरखंधी अणेगणरपवरभुयअगेज्झे कुसुमभरसमोणमंतपत्तलविसालसाले महुकरिभमरगणगुमुगुमाइयणिलिंतउड्डेंतसस्सिरीए णाणासउणगणमिहुणसुमहुरकण्णसुहपलत्तसद्दमहुरे कुसविकुसविसुद्धरुक्खमूले पासाइए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे' तत्र दूरमुत्–प्राबल्येन गतं कन्दस्याधस्तात् मूलं यस्य स दूरोद्गतकन्दमूलस्तथा वृत्तभावेन परिणत एवं नाम सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च शाखाभिः प्रशाखाभिश्च प्रसृतो यथा वर्तुलः प्रतिभासते इति, तथा लष्टाः–मनोज्ञाः सन्धयः–शाखा गता यस्य स लष्टसन्धिस्तथा अश्लिष्टैः–अन्यैः पादपैः सहास्पृक्तो, विविक्त इत्यर्थः, ततो विशेषणसमासः, स च पदद्वयमीलनेनावसेयो, बहूनां पदानां विशेषणसमासानभ्युपगमात्, तथा घनो–निविडो मसृणः–कोमलत्वक् न कर्कशस्पर्शः, स्निग्धः–शुभकान्तिः, आनुपूर्व्या–मूलादिपरिपाट्या सुष्ठु जन्मदोषरहितं

अशोकवृक्ष-वर्णनं सू० ३

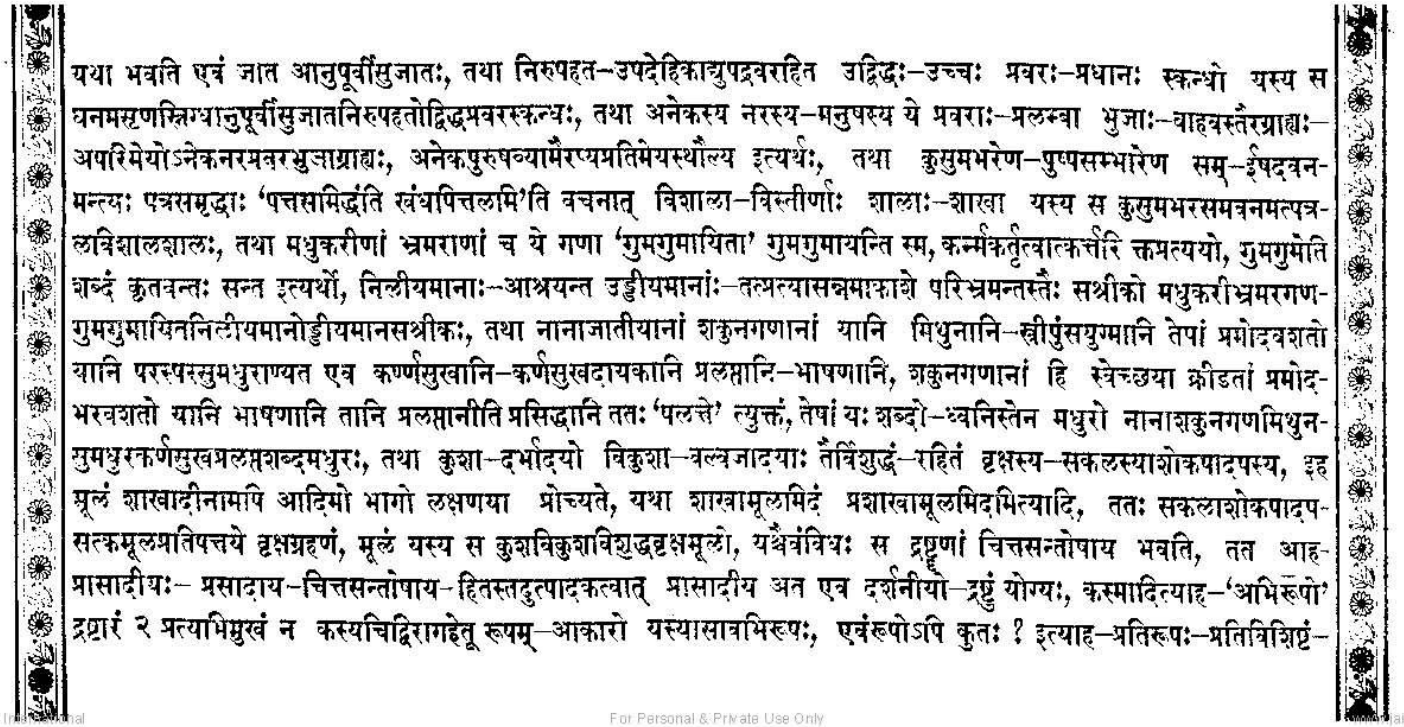
॥ ४ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अशोकवृक्षस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३]

दीप अनुक्रम [३]



यथा भवति एवं जात आनुपूर्वीसुजातः, तथा निरुपहत–उपदेहिकाद्युपद्रवरहित उद्विद्धः–उच्चः प्रवरः–प्रधानः स्कन्धो यस्य स घनमसृणस्निग्धानुपूर्वीसुजातनिरुपहतोद्विद्धप्रवरस्कन्धः, तथा अनेकस्य नरस्य–मनुष्यस्य ये प्रवराः–प्रलम्बा भुजाः–बाहवस्तैरग्राह्यः–अपरिमेयोऽनेकनरप्रवरभुजाग्राह्यः, अनेकपुरुषव्यामैरप्यप्रतिमेयस्थौल्य इत्यर्थः, तथा कुसुमभरेण–पुष्पसम्भारेण सम्–ईषदवनमन्त्यः पत्रसमृद्धाः 'पत्तसमिद्धंति खंधपित्तलमि'ति वचनात् विशाला–विस्तीर्णाः शालाः–शाखा यस्य स कुसुमभरसमवनमत्पत्रलविशालशालः, तथा मधुकरीणां भ्रमराणां च ये गणा 'गुमगुमायिता' गुमगुमायन्ति स्म, कर्म्मकर्तृत्वात्कर्त्तरि क्तप्रत्ययो, गुमगुमेति शब्दं कृतवन्तः सन्त इत्यर्थो, निलीयमानाः–आश्रयन्त उड्डीयमानाः–तत्प्रत्यासन्नमाकाशे परिभ्रमन्तस्तैः सश्रीको मधुकरीभ्रमरगणगुमगुमायिनिलीयमानोड्डीयमानसश्रीकः, तथा नानाजातीयानां शकुनगणानां यानि मिथुनानि–स्त्रीपुंसयुग्मानि तेषां प्रमोदवशतो यानि परस्परसुमधुराण्यत एव कर्णसुखानि–कर्णसुखदायकानि प्रलपितानि–भाषणानि, शकुनगणानां हि स्वेच्छया क्रीडतां प्रमोदभरवशतो यानि भाषणानि तानि प्रलपितानीति प्रसिद्धानि ततः 'पलत्ते' त्युक्तं, तेषां यः शब्दो–ध्वनिस्तेन मधुरो नानाशकुनगणमिथुनसुमधुरकर्णसुखप्रलपितशब्दमधुरः, तथा कुशा–दर्भादयो विकुशा–वल्वजादयाः तैर्विशुद्धं–रहितं वृक्षस्य–सकलस्याशोकपादपस्य, इह मूलं शाखादीनामपि आदिमो भागो लक्षणया प्रोच्यते, यथा शाखामूलमिदं प्रशाखामूलमिदमित्यादि, ततः सकलाशोकपादपसत्कमूलप्रतिपत्तये वृक्षग्रहणं, मूलं यस्य स कुशविकुशविशुद्धवृक्षमूलो, यश्चैवंविधः स द्रष्टृणां चित्तसन्तोषाय भवति, तत आह-प्रासादीयः– प्रसादाय–चित्तसन्तोषाय–हितस्तदुत्पादकत्वात् प्रासादीय अत एव दर्शनीयो–द्रष्टुं योग्यः, कस्मादित्याह–'अभिरूपो' द्रष्टारं २ प्रत्यभिमुखं न कस्यचिद्विरागहेतू रूपम्–आकारो यस्यासावभिरूपः, एवंरूपोऽपि कुतः ? इत्याह–प्रतिरूपः–प्रतिविशिष्टं–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अशोकवृक्षस्य वर्णनं

सकलजगदसाधारणं रूपं यस्य सप्रतिरूपः, 'से णं असोगवरपायवे' इत्यादि 'जाव नंदिरुक्खेहिं' इत्यत्र यावच्छब्दकरणात्, 'लउएहिं छत्तोवगेहिं सिरीसेहिं सत्तवण्णेहिं लोद्धेहिं दधिवन्नेहिं चंदणेहिं अज्जुणेहिं नीवेहिं कयंबेहिं फणसेहिं दाडिमेहिं सालेहिं तमालेहिं पियालेहिं पियंगूहिं रायरुक्खेहिं नंदीरुक्खेहिं' इति परिग्रहः, एते च लवकच्छत्रोपगशिरीषसप्तपर्णदधिपर्णलुब्धकधवचन्दनार्जुननीपकदम्बफनसदाडिमतालतमालप्रियालप्रियङ्गुराजवृक्षनन्दिवृक्षाः प्रायः सुप्रसिद्धाः, 'ते णं तिलगा जाव नंदिरुक्खा कुसविकुसे'त्यादि ते तिलका यावन्नंदिवृक्षाः कुशविकुशविशुद्धवृक्षमूलाः, अत्र व्याख्या पूर्ववत्, 'मूलवन्तः' मूलानि प्रभूतानि दूरावगाढानि च सन्त्येषामिति मूलवन्तः, कन्द एषामस्तीति कन्दवन्तः, यावच्छब्दकरणात् सन्धिमन्तो तयामन्तो सालमन्तो पवालमन्तो पत्तमंतो पुप्फमंतो फलमंतो बीयमंतो अणुपुव्विसुजायरुइलवट्टभावपरिणया एगखंधा अणेगसाहप्पसाहविडिमा अणेगनरवामसुप्पसारियअगिज्झघणविपुलवट्टखंधा अच्छिद्दपत्ता अविरलपत्ता अवाईइपत्ता अणईणपत्ता णिव्वुयजरढपंडुपत्ता नवहरियभिसंतपत्तभारंधयारगंभीरदरिसणिज्जा उवनिग्गयनवतरुणपत्तपल्लवा कोमलउज्जलचलंतकिसलयसुकुमालपवालसोभियवरंकुरग्गसिहरा निच्चं कुसुमिया निच्चं मउलिया निच्चं लवइया निच्चं थवइया निच्चं गुलइया निच्चं गोच्छिया निच्चं जमलिया निच्चं जुयलिया णिच्चं णमिया निच्चं पणमिया निच्चं कुसुमियमउलियलवइयथवइयगुलइयगुच्छियजमलियजुयलियविणमियपणमियसुविभत्तपिंडिमंजरिवडिंसयधरा सुकबरहिणमयणसल्लागाकोइलकोरुगकविंगारककोंडलकजीवंजीवकनंदीमुखकविलपिंगलकुक्खगकारंडवचक्कवाककलहंससारसअणेगसउणगणमिहुणविरइयसद्दोन्नइयमहुरसरणाइया सुरम्मा सुपिंडियदरियभमरमहुयरिपहकरपरिलुवमत्तछप्पयकुसुमासवलोलमहुरगुमगुमंतगुंजंतदेसभागा अब्भिंतरपुप्फफला बाहिरपत्तोच्छण्णा पत्तेहि य पुप्फेहि य उच्छन्नपलिच्छन्ना निरोगका साउ-

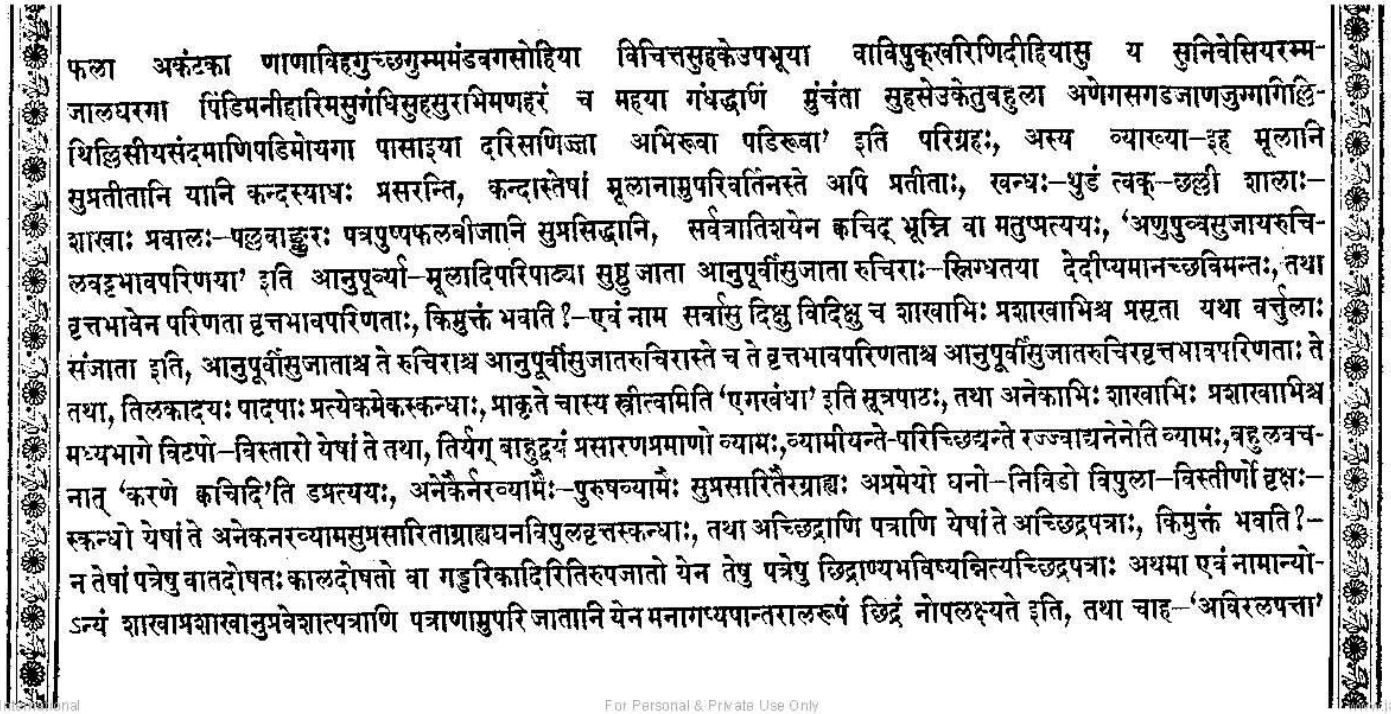
॥ ५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अशोकवृक्षस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३]

दीप अनुक्रम [३]



फला अकंटका णाणाविहगुच्छगुम्ममंडवगसोहिया विचित्तसुहकेउपभूया वावियपुक्खरिणिदीहियासु य सुनिवेसियरम्म-
जालघरगा पिंडिमनीहारिमसुगंधिसुहसुरभिमणहरं च महया गंधद्धाणिं मुंचंता सुहसेउकेतुबहुला अणेगसगडजाणजुग्गागिल्लि-
थिल्लिसीयसंदमाणियपडिमोयगा पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा' इति परिग्रहः, अस्य व्याख्या–इह मूलानि
सुप्रतीतानि यानि कन्दस्याधः प्रसरन्ति, कन्दास्तेषां मूलानामुपरिवर्तिनस्ते अपि प्रतीताः, खन्धः–थुडं त्वक्–छल्ली शालाः–
शाखाः प्रवालः–पल्लवाङ्कुरः पत्रपुष्पफलबीजानि सुप्रसिद्धानि, सर्वत्रातिशयेन क्वचिद् भूम्नि वा मतुप्प्रत्ययः, 'अणुपुव्वसुजायरुचि-
लवट्टभावपरिणया' इति आनुपूर्व्या–मूलादिपरिपाट्या सुष्ठु जाता आनुपूर्वीसुजाता रुचिराः–स्निग्धतया देदीप्यमानच्छविमन्तः, तथा
वृत्तभावेन परिणता वृत्तभावपरिणताः, किमुक्तं भवति?–एवं नाम सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च शाखाभिः प्रशाखाभिश्च प्रसृता यथा वर्तुलाः
संजाता इति, आनुपूर्वीसुजाताश्च ते रुचिराश्च आनुपूर्वीसुजातरुचिरास्ते च ते वृत्तभावपरिणताश्च आनुपूर्वीसुजातरुचिरवृत्तभावपरिणताः ते
तथा, तिलकादयः पादपाः प्रत्येकमेकस्कन्धाः, प्राकृते चास्य स्त्रीत्वमिति 'एगखंधा' इति सूत्रपाठः, तथा अनेकाभिः शाखाभिः प्रशाखाभिश्च
मध्यभागे विटपो–विस्तारो येषां ते तथा, तिर्यग् बाहुद्वयं प्रसारणप्रमाणो व्यामः, व्यामीयन्ते-परिच्छिद्यन्ते रज्ज्वाद्यनेनेति व्यामः, बहुलवच-
नात् 'करणे क्वचिदि'ति डप्रत्ययः, अनेकैर्नरव्यामैः–पुरुषव्यामैः सुप्रसारितैरग्राह्यः अप्रमेयो घनो–निविडो विपुला–विस्तीर्णो वृक्षः–
स्कन्धो येषां ते अनेकनरव्यामसुप्रसारिताग्राह्यघनविपुलवृत्तस्कन्धाः, तथा अच्छिद्राणि पत्राणि येषां ते अच्छिद्रपत्राः, किमुक्तं भवति?–
न तेषां पत्रेषु वातदोषतः कालदोषतो वा गड्डरिकादिरितिरुपजातो येन तेषु पत्रेषु छिद्राण्यभविष्यन्नित्यच्छिद्रपत्राः अथमा एवं नामान्यो-
ऽन्यं शाखाप्रशाखानुप्रवेशात्पत्राणि पत्राणामुपरि जातानि येन मनागप्यपान्तरालरूपं छिद्रं नोपलक्ष्यते इति, तथा चाह–'अविरलपत्ता'

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अशोकवृक्षस्य वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

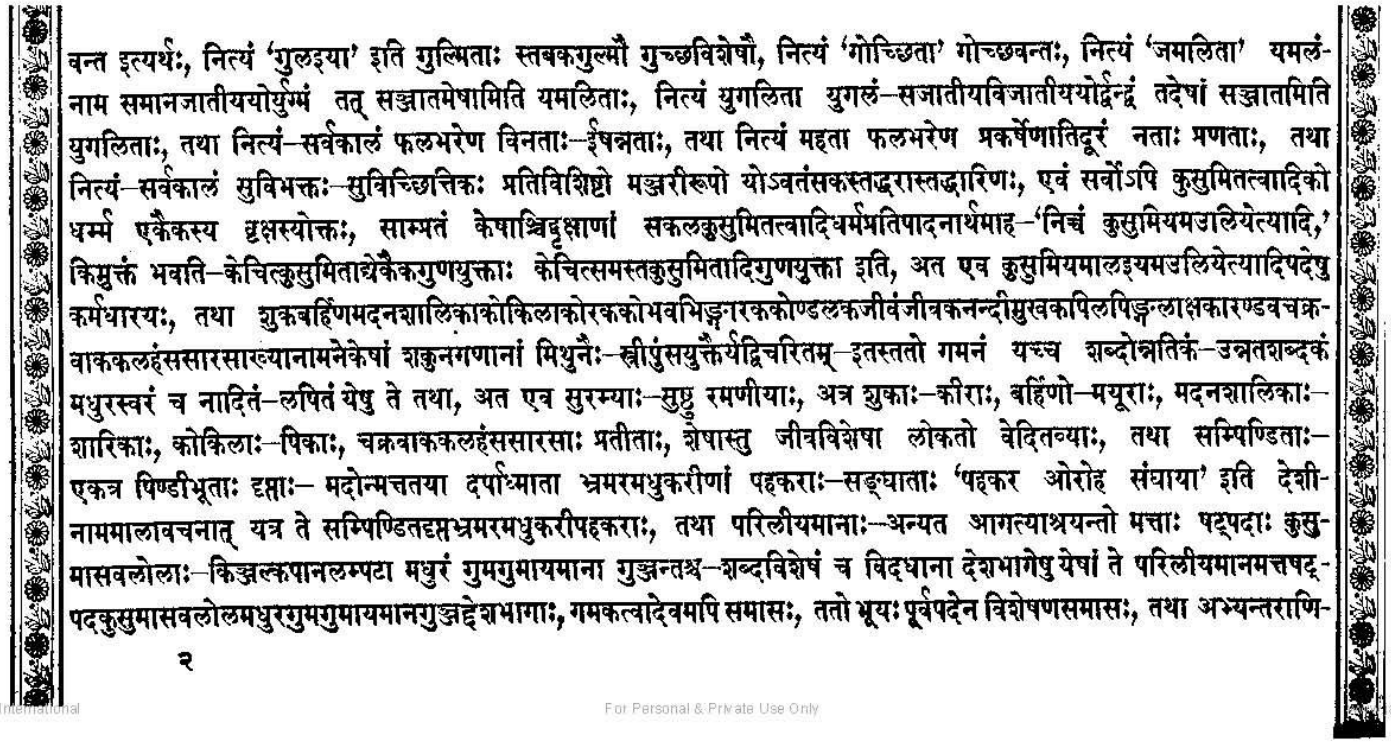
प्रत सूत्रांक [३]

दीप अनुक्रम [३]

इति, अत्र हेतौ प्रथमा, ततोऽयमर्थः–यतः अविरलपत्रा अतोऽच्छिद्रपत्राः, अविरलपत्रा इति कुत इत्याह–अवातीनपत्रा वातीनानि–वातोपहतानि, वातेन पातितानीत्यर्थः, न वातीनानि अवातीनानि पत्राणि येषां ते तथा, किमुक्तं भवति?–न प्रबलेन खरपरुषेण वातेन तेषां पत्राणि भूमौ निपात्यन्ते, ततोऽवातीनपत्रत्वादविरलपत्रा इति अच्छिद्रपत्रा इति, अच्छिद्रपत्रा इत्यत्र प्रथमव्याख्यानपक्षमधिकृत्य हेतुमाह–'अणईइपत्ता' न विद्यते ईतिः–गड्डरिकादिरूपा येषां तान्यतीतीनि अतीतीनि पत्राणि येषां ते अतीतपत्राः, अतीतिपत्रत्वाच्चाच्छिद्रपत्राः, 'निद्धुयजरढपंडुपत्ता' इति निर्द्धूतानि–अपनीतानि जरठानि पाण्डुपत्राणि येभ्यस्ते निर्द्धूतजरठपाण्डुपत्राः, किमुक्तं भवति?–यानि वृक्षस्थानि जरठानि पाण्डुपत्राणि वातेन निर्द्धूय भूमौ पातितानि भूमेरपि च प्रायो निर्द्धूय निर्द्धूयान्यत्रापसारितानीति, 'नवहरियभिसंतपत्तभारंधयारगंभीरदरिसणिज्जा' इति नवेन–प्रत्यग्रेण हरितेन–नीलेन भासमानेन स्निग्धत्वेन वा दीप्यमानेन पत्रभारेण–दलसञ्चयेन यो जातोऽन्धकारस्तेन गम्भीरा–अलब्धमध्यभागाः सन्तो दर्शनीया नवहरितभासमानपत्रभारान्धकारगम्भीरदर्शनीयाः, तथा उपविनिर्गतैः निरन्तरविनिर्गतैरिति भावः, नवतरुणपत्रपल्लवैस्तथा कोमलैः–मनोज्ञैरुज्ज्वलैः–शुद्धैश्चलद्भिरीषत्कम्पमानैः किशलयैः–अवस्थाविशेषोपेतैः पल्लवविशेषैस्तथा सुकुमारैः प्रवालैः–पल्लवाङ्कुरैः शोभितानि वराङ्कुराणि–वराङ्कुरोपेतानि अग्रशिखराणि येषां ते उपविनिर्गतनवतरुणपत्रपल्लवकोमलोज्ज्वलचलत्किशलयसुकुमालप्रवालशोभितवराङ्कुराग्रशिखराः, इहाङ्कुरप्रवालयोः कालकृतावस्थाविशेषाद्विशेषो भावनीयः, तथा नित्यं–सर्वकालं, षट्स्वपि ऋतुषु इत्यर्थः, 'कुसुमिताः' कुसुमानि–पुष्पाणि सञ्जातान्येषामिति कुसुमिताः, तारकादिदर्शनादितप्रत्ययः, 'निच्चं मालइया' (मउलिया) इति नित्यं–सर्वकालं मुकुलितानि, मुकुलानि नाम कुड्मलानि कलिका इत्यर्थः, 'निच्चं लवइया' इति पल्लविताः, नित्यं 'थवइया' इति स्तबकिताः स्तबकभार-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अशोकवृक्षस्य वर्णनं



वन्त इत्यर्थः, नित्यं 'गुलइया' इति गुल्मिताः स्तबकगुल्मौ गुच्छविशेषौ, नित्यं 'गोच्छिता' गोच्छवन्तः, नित्यं 'जमलिता' यमलं-
नाम समानजातीययोर्युग्मं तत् सञ्जातमेषामिति यमलिताः, नित्यं युगलिता युगलं–सजातीयविजातीययोर्द्वन्द्वं तदेषां सञ्जातमिति
युगलिताः, तथा नित्यं–सर्वकालं फलभरेण विनताः–ईषन्नताः, तथा नित्यं महता फलभरेण प्रकर्षेणातिदूरं नताः प्रणताः, तथा
नित्यं–सर्वकालं सुविभक्तः–सुविच्छित्तिकः प्रतिविशिष्टो मञ्जरीरूपो योऽवतंसकस्तद्धरास्तद्धारिणः, एवं सर्वोऽपि कुसुमितत्वादिको
धर्म्म एकैकस्य वृक्षस्योक्तः, साम्प्रतं केषाञ्चिद्वृक्षाणां सकलकुसुमितत्वादिधर्मप्रतिपादनार्थमाह–'निच्चं कुसुमियमउलियेत्यादि,'
किमुक्तं भवति–केचित्कुसुमिताद्येकैकगुणयुक्ताः केचित्समस्तकुसुमितादिगुणयुक्ता इति, अत एव कुसुमियमालइयमउलियेत्यादिपदेषु
कर्मधारयः, तथा शुकबर्हिणमदनशालिकाकोकिलाकोरककोभवभिङ्गारककोण्डलकजीवंजीवकनन्दीमुखकपिलपिङ्गलाक्षकारण्डवचक्र-
वाककलहंससारसाख्यानामनेकेषां शकुनगणानां मिथुनैः–स्त्रीपुंसयुक्तैर्यद्विचरितम्–इतस्ततो गमनं यच्च शब्दोन्नतिकं–उन्नतशब्दकं
मधुरस्वरं च नादितं–लपितं येषु ते तथा, अत एव सुरम्याः–सुष्ठु रमणीयाः, अत्र शुकाः–कीराः, बर्हिणो–मयूराः, मदनशालिकाः–
शारिकाः, कोकिलाः–पिकाः, चक्रवाककलहंससारसाः प्रतीताः, शेषास्तु जीवविशेषा लोकतो वेदितव्याः, तथा सम्पिण्डिताः–
एकत्र पिण्डीभूताः दृप्ताः– मदोन्मत्ततया दर्पाध्माता भ्रमरमधुकरीणां पहकराः–सङ्घाताः 'पहकर ओरोह संघाया' इति देशी-
नाममालावचनात् यत्र ते सम्पिण्डितदृप्तभ्रमरमधुकरीपहकराः, तथा परिलीयमानाः–अन्यत आगत्याश्रयन्तो मत्ताः षट्पदाः कुसु-
मासवलोलाः–किञ्जल्कपानलम्पटा मधुरं गुमगुमायमाना गुञ्जन्तश्च–शब्दविशेषं च विदधाना देशभागेषु येषां ते परिलीयमानमत्तषट्-
पदकुसुमासवलोलमधुरगुमगुमायमानगुञ्जद्देशभागाः, गमकत्वादेवमपि समासः, ततो भूयः पूर्वपदेन विशेषणसमासः, तथा अभ्यन्तराणि-

२

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अशोकवृक्षस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३]

दीप अनुक्रम [३]

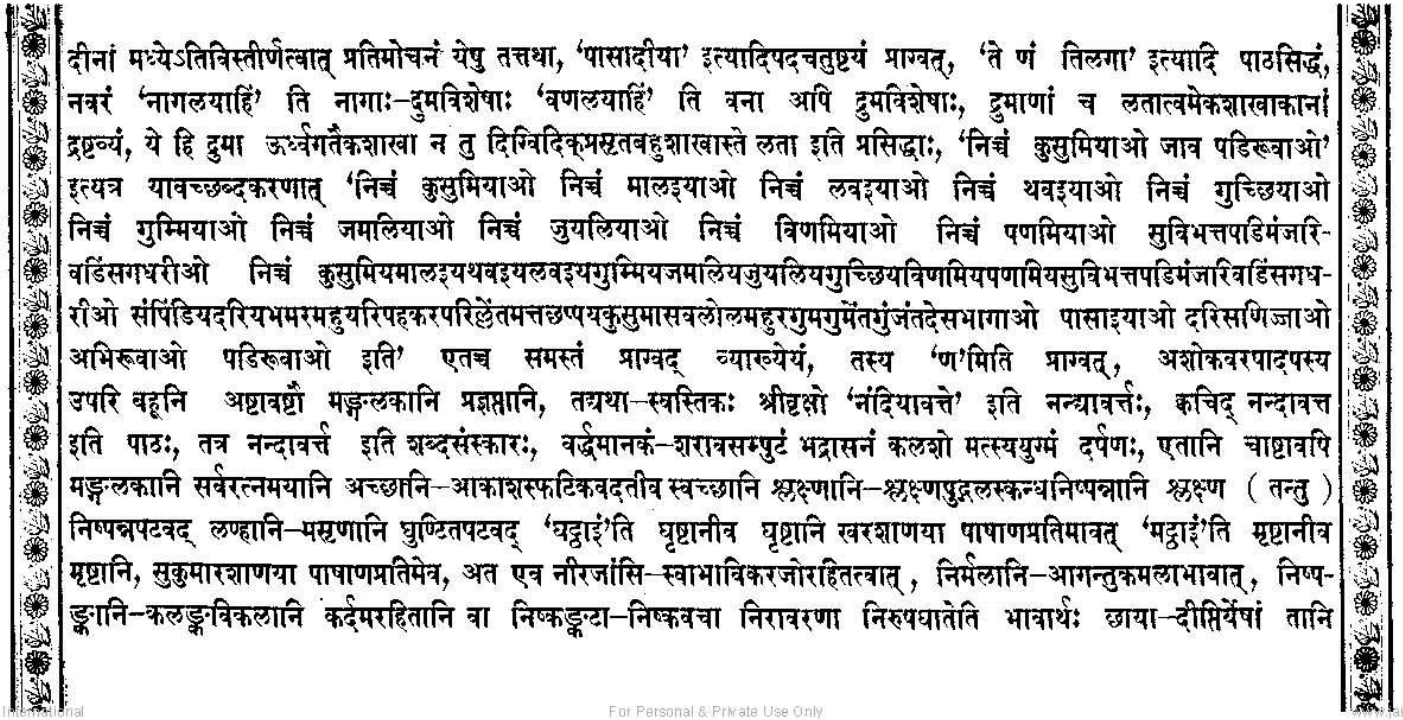
अभ्यन्तरभागवर्तीनि पुष्पाणि च फलानि च पुष्पफलानि येषां ते तथा, 'बाहिरपत्तोच्छन्ना इति' बहिस्तः पत्रैश्छन्ना–व्याप्ता बहिःपत्रच्छन्नाः, तथा पत्रैश्च पुष्पैश्च अवच्छन्नपरिच्छन्नाः–अत्यन्तमाच्छादिताः,तथा नीरोगकाः-रोगवर्जिता अकण्टकाकाः-कण्टकरहिताः, न तेषां प्रत्यासन्ना बब्बूलादिवृक्षाः सन्तीति भावः, तथा स्वादूनि फलानि येषां ते स्वादुफलाः, तथा स्निग्धानि फलानि येषां ते स्निग्धफलाः, तथा प्रत्यासन्नैर्नानाविधैः–नानाप्रकारैर्गुच्छैः–वृन्ताकीप्रभृतिभिर्गुल्मैः–नवमालिकादिभिर्मण्डपकैः शोभिता नानाविधगुच्छगुल्ममण्डपकशोभिताः, तथा विचित्रैः–नानाप्रकारैः शुभैः–मण्डनभूतैः केतुभिः–ध्वजैर्बहुला–व्याप्ता विचित्रशुभकेतुबहुलाः, तथा 'वाविपुक्खरिणीदीहियासु य सुनिवेसियरम्मजालघरगा' वाप्यश्चतुरस्राकारास्ता एव वृत्ताः पुष्करिण्यः, यदिवा पुष्कराणि वर्त्तन्ते यासु ताः पुष्करिण्यः, दीर्घिका–ऋजुसारिण्यः, वापीषु पुष्करिणीषु दीर्घिकासु च सुष्ठु निवेशितानि रम्याणि जालगृहकाणि येषु ते वापीपुष्करिणीदीर्घिकासु सुनिवेशितरम्यजालगृहकाः, तथा पिंडिमा–पिण्डिता सती निर्हारिमा–दूरं विनिर्गच्छन्ती पिण्डिमानिर्हारिमा तां सुगन्धिसुगन्धिकां शुभसुरभिभ्यो गन्धान्तरेभ्यः सकाशात् मनोहरा शुभसुरभिमनोहरा तां च, 'महया' इति प्राकृतत्वात् द्वितीयार्थे तृतीया, महतीमित्यर्थः, गन्धघ्राणिं यावद्भिर्गन्धपुद्गलैर्गन्धविषये गन्धघ्राणिरुपजायते तावती गन्धपुद्गलसंहतिरुपचारात् गन्धघ्राणिरित्युच्यते, तां निरन्तरं मुञ्चन्तः, तथा 'सुहसेउकेउबहुला' इति शुभाः–प्रधाना इति सेतवो–मार्गा आलवालपाल्यो वा केतवो–ध्वजा बहुला–बहवो येषां ते तथा, 'अणेगरहसगडजाणजुग्गगिल्लिथिल्लिसिवियसंदमाणियपडिमोयणा' इति, रथा द्विविधाः–क्रीडारथाः सङ्ग्रामरथाश्च, शकटानि प्रतीतानि, यानानि–सामान्यतः शेषाणि वाहनानि युग्यानि–गोल्लविषयप्रसिद्धानि द्विहस्तप्रमाणानि वेदिकोपशोभितानि जम्पानानि शिबिकाः–कूटाकारेणाच्छादिता जम्पानविशेषाः स्यन्दमानिकाः–पुरुषप्रमाणजम्पानविशेषाः, अनेकेषां रथशकटा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अशोकवृक्षस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३]

दीप अनुक्रम [३]



दीनां मध्येऽतिविस्तीर्णत्वात् प्रतिमोचनं येषु तत्तथा, 'पासादीया' इत्यादिपदचतुष्टयं प्राग्वत्, 'ते णं तिलगा' इत्यादि पाठसिद्धं, नवरं 'नागलयाहिं' ति नागाः–द्रुमविशेषाः 'वणलयाहिं' ति वना अपि द्रुमविशेषाः, द्रुमाणां च लतात्वमेकशाखाकानां द्रष्टव्यं, ये हि द्रुमा ऊर्ध्वगतैकशाखा न तु दिग्विदिक्प्रसृतबहुशाखास्ते लता इति प्रसिद्धाः, 'निच्चं कुसुमियाओ जाव पडिरूवाओ' इत्यत्र यावच्छब्दकरणात् 'निच्चं कुसुमियाओ निच्चं मालइयाओ निच्चं लवइयाओ निच्चं थवइयाओ निच्चं गुच्छियाओ निच्चं गुम्मियाओ निच्चं जमलियाओ निच्चं जुयलियाओ निच्चं विणमियाओ निच्चं पणमियाओ सुविभत्तपडिमंजरिवडिंसगधरीओ निच्चं कुसुमियमालइयथवइयलवइयगुम्मियजमलियजुयलियगुच्छियविणमियपणमियसुविभत्तपडिमंजरिवडिंसगधरीओ संपिंडियदरियभमरमहुयरिपहकरपरिलेंतमत्तछप्पयकुसुमासवलोलमहुरगुमगुमेंतगुंजंतदेसभागाओ पासाइयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ इति' एतच्च समस्तं प्राग्वद् व्याख्येयं, तस्य 'ण'मिति प्राग्वत्, अशोकवरपादपस्य उपरि बहूनि अष्टावष्टौ मङ्गलकानि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा–स्वस्तिकः श्रीवृक्षो 'नंदियावत्ते' इति नन्द्यावर्त्तः, क्वचिद् नन्दावत्त इति पाठः, तत्र नन्दावर्त्त इति शब्दसंस्कारः, वर्द्धमानकं–शरावसम्पुटं भद्रासनं कलशो मत्स्ययुग्मं दर्पणः, एतानि चाष्टावपि मङ्गलकानि सर्वरत्नमयानि अच्छानि–आकाशस्फटिकवदतीव स्वच्छानि श्लक्ष्णानि–श्लक्ष्णपुद्गलस्कन्धनिष्पन्नानि श्लक्ष्ण (तन्तु) निष्पन्नपटवद् लण्हानि–मसृणानि घुष्टितपटवद् 'घट्ठाइं'ति घृष्टानीव घृष्टानि खरशाणया पाषाणप्रतिमावत् 'मट्ठाइं'ति मृष्टानीव मृष्टानि, सुकुमारशाणया पाषाणप्रतिमेव, अत एव नीरजांसि–स्वाभाविकरजोरहितत्वात्, निर्मलानि–आगन्तुकमलाभावात्, निष्पङ्कानि–कलङ्कविकलानि कर्दमरहितानि वा निष्कङ्कटा–निष्कवचा निरावरणा निरुपघातेति भावार्थः छाया–दीप्तिर्येषां तानि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अशोकवृक्षस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३]

दीप अनुक्रम [३]

निष्कङ्कटच्छायानि 'सप्रभाणि' स्वरूपतः प्रभावन्ति 'समरीचीनि' बहिर्विनिर्गताकिरणजालानि, अत एव सोद्योतानि–बहिर्व्यवस्थितवस्तुस्तोमप्रकाशकराणि 'पासाइया' इत्यादिपदचतुष्टयव्याख्या पूर्ववत् । 'तस्स णमि'त्यादि, तस्य 'ण'मिति प्राग्वत् , अशोकवरपादपस्योपरि बहवः कृष्णचामरध्वजाः, चामराणि च ध्वजाश्च चामरध्वजाः कृष्णाश्च ते चामरध्वजाश्च कृष्णचामरध्वजाः, एवं नीलचामरध्वजाः, लोहितचामरध्वजाः, हारिद्रचामरध्वजाः, शुक्लचामरध्वजाः, एते च कथम्भूता इत्याह–अच्छाः–स्फटिकवदतिनिर्मलाः, श्लक्ष्णाः–श्लक्ष्णपुद्गलस्कन्धनिष्पन्नाः, 'रूप्यपट्टा' इति रूप्यो–रूप्यमयो वज्रमयस्य दण्डस्योपरि पट्टो येषां ते रूप्यपट्टाः 'वइरदण्डा' इति वज्रो–वज्ररत्नमयो दण्डो रूप्यपट्टमध्यवर्ती येषां ते वज्रदण्डाः, तथा जलजानामिव–जलजकुसुमानां पद्मादीनामिवामलो गन्धो येषां ते जलजामलगन्धकाः अत एव सुरम्याः–अतिशयेन रमणीयाः 'पासाइया' इत्यादि पूर्ववत् , तस्स णमिति प्राग्वत् , अशोकवरपादपस्योपरि बहूनि छत्रातिच्छत्राणि छत्रात्–लोकप्रसिद्धादेकसङ्ख्याकादतिशायीनि छत्राणि उपर्यधोभागेन द्विसङ्ख्यानि त्रिसङ्ख्यानि वा छत्राणि छत्रातिच्छत्राणि, तथा बह्वयः 'पडागाइपडागा' इति पताकाभ्यो लोकप्रसिद्धाभ्योऽतिशायिन्यः पताकाः पताकातिपताकाः बहूनि तेष्वेव छत्रातिच्छत्रादिषु घण्टायुगलानि चामरयुगलानि, तथा तत्र तत्र प्रदेशे उत्पलहस्तकाः–उत्पलाख्या जलजकुसुमसङ्घातविशेषाः, एवं पद्महस्तकाः कुमुदहस्तकाः नलिनहस्तकाः सुभगहस्तका सौगन्धिकहस्तकाः पुण्डरीकहस्तका महापुण्डरीकहस्तकाः शतपत्रहस्तकाः सहस्रपत्रहस्तकाः सुभगहस्तकाः, उत्पलं–गर्दभकं पद्मं–सूर्यविकाशि पङ्कजं मुकुदं–कैरवं नलिनम्–ईषद्रक्तं पद्मं सुभगं–पद्मविशेषः सौगन्धिकं–कल्हारं पुण्डरीकं–श्वेताम्बुजं तदेवातिविशालं महापुण्डरीकं शतपत्रसहस्रपत्रे पत्रसङ्ख्याविशेषावच्छिन्नौ पद्मविशेषौ, एते च छत्रातिच्छत्रादयः सर्वेऽपि सर्वरत्नमयाः–सर्वात्मना रत्नमयाः 'अच्छा सण्हा'

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अशोकवृक्षस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३]

दीप अनुक्रम [३]

इत्यादि विशेषणजातं पूर्ववत्, 'तस्स ण'मित्यादि, तस्य 'ण'मिति प्राग्वत् अशोकवरपादपस्याधस्तात्, 'एत्थ ण'मिति अशोकवरपादपस्य यदधो अत्र 'ण'मिति पूर्ववत् एको महान् पृथ्वीशिलापट्टकः प्रज्ञप्तः, कथम्भूत इत्याह–'इसिंखंधो समल्लीणे' इत्यादि, इह स्कन्धः स्थुडमित्युच्यते, तस्याशोकवरपादपस्य यत् स्थुडं तत् ईषद्–मनाक् सम्यग् लीनस्तदासन्न इत्यर्थः, 'विक्खम्भायामसुप्पमाणे' इति, विष्कम्भेनायामेन च शोभनम्–औचित्यानतिवर्ति प्रमाणं यस्य स विष्कम्भायामसुप्रमाणः, कृष्णः, कृष्णत्वमेव निरूपयति–'अंजणघणकुवलयहलहरकोसेज्जसरिसो' अञ्जनको–वनस्पतिविशेषः घनो–मेघः कुवलयं–नीलोत्पलं हलधरकौशेयं–बलदेववस्त्रं तैः सदृशः–समानवर्णः, 'आगासकेसकज्जलककेयणइंदनीलअयसिकुसुमप्पगासे' आकाशं धूलीमेघादिविरहितं, केशाः–शिरसिजाः, कज्जलं–प्रतीतं, कर्केतनेन्द्रनीलौ–मणिविशेषौ अतसीकुसुमं प्रसिद्धमेतेषामिव प्रकाशो–दीप्तिर्यस्य स तथा, 'भिंगजणभंगभेयरिट्ठगनीलगुलियगवलाइरेगे' इति भृङ्गः–चतुरिन्द्रियः पक्षिविशेषः अञ्जनं–सौवीराञ्जनं तस्य भङ्गेन–विच्छित्त्या भेदः–छेदोऽञ्जनभङ्गभेदो रिष्टको–रत्नविशेषः नीलगुटिकाः–प्रतीताः, गवलं–माहिषं शृङ्गं तेभ्योऽपि कृष्णत्वेनातिरेको यस्य स तथा, 'भमरनिकुरम्बभूए' इति अत्र भूतशब्द औपम्यवाची, यथाऽयं लाटदेशः सुरलोकभूतः, सुरलोकोपम इत्यर्थः, ततोऽयमर्थः–भ्रमरनिकुरुम्बोपमः, 'जंबूफलअसणकुसुमबंधणनीलुप्पलपत्तनिकरमरगयआसासगनयणकीयासिवन्ने' जम्बूफलानि प्रतीतानि, असनकुसुमबन्धनं–असनपुष्पवृन्तं नीलोत्पलपत्रनिकरो मरकतमणिः प्रतीतः, आसासको–बीयकाभिधानो वृक्षः, नयनकीको–नेत्रमध्यतारा, असि–खड्गं तेषामिव वर्णो यस्य स तथा, स्निग्धो न तु रूक्षः घनो–निविडो न तु कोष्ठक इव मध्यशुषिरः 'अज्झुसिरे' इति श्लक्ष्णशुषिररहितः, 'रूवगपडिरूवगदरिसणिज्जे' इति रूपकाणां यानि तत्र सङ्क्रान्तानि (प्रतिरूपकाणि)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अशोकवृक्षस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३]

दीप अनुक्रम [३]

प्रतिबिम्बानि तैः दर्शनीयो रूपकप्रतिरूपकदर्शनीयः, 'आदर्शतलोपमः' आदर्शो–दर्पणस्तस्य तलं तेन समतयोपमा यस्य स आदर्शतलोपमः, सुष्ठु मनांसि रमयतीति सुरम्यः 'कृद्भहुल'मिति वचनात् कर्त्तरि यप्रत्ययः, 'सिंहासणसंठिए' इति सिंहासनस्येव संस्थितं–संस्थानं यस्य स सिंहासनसंस्थितः, अत एव सुरूपः–शोभनं रूपम्–आकारो यस्य स सुरूपः, इतश्च सुरूपो यत आह–'मुत्ताजालखइयंतकम्मे' मुक्ताजालानि–मुक्ताफलसमूहाः खचितानि अन्तकर्मसु–प्रान्तप्रदेशेषु यस्य स मुक्ताजालखचितान्तकर्मा, 'आइणगरूयबूरनवनीयतूलफासे' आजिनकं–चर्म्ममयं वस्त्रं रूतं–प्रतीतं बूरो–वनस्पतिविशेषः नवनीतं–म्रक्षणं तूलं–अर्कतूलं तेषामिव कोमलतया स्पर्शो यस्य स आजिनकरूतबूरनवनीततूलस्पर्शः, 'सव्वरयणामए' इत्यादिविशेषणकदम्बकं प्राग्वत् ॥

सेओ राया धारिणी देवी, सामी समोसढे, परिसा निग्गया, जाव राया पज्जुवासइ (सू० ४)

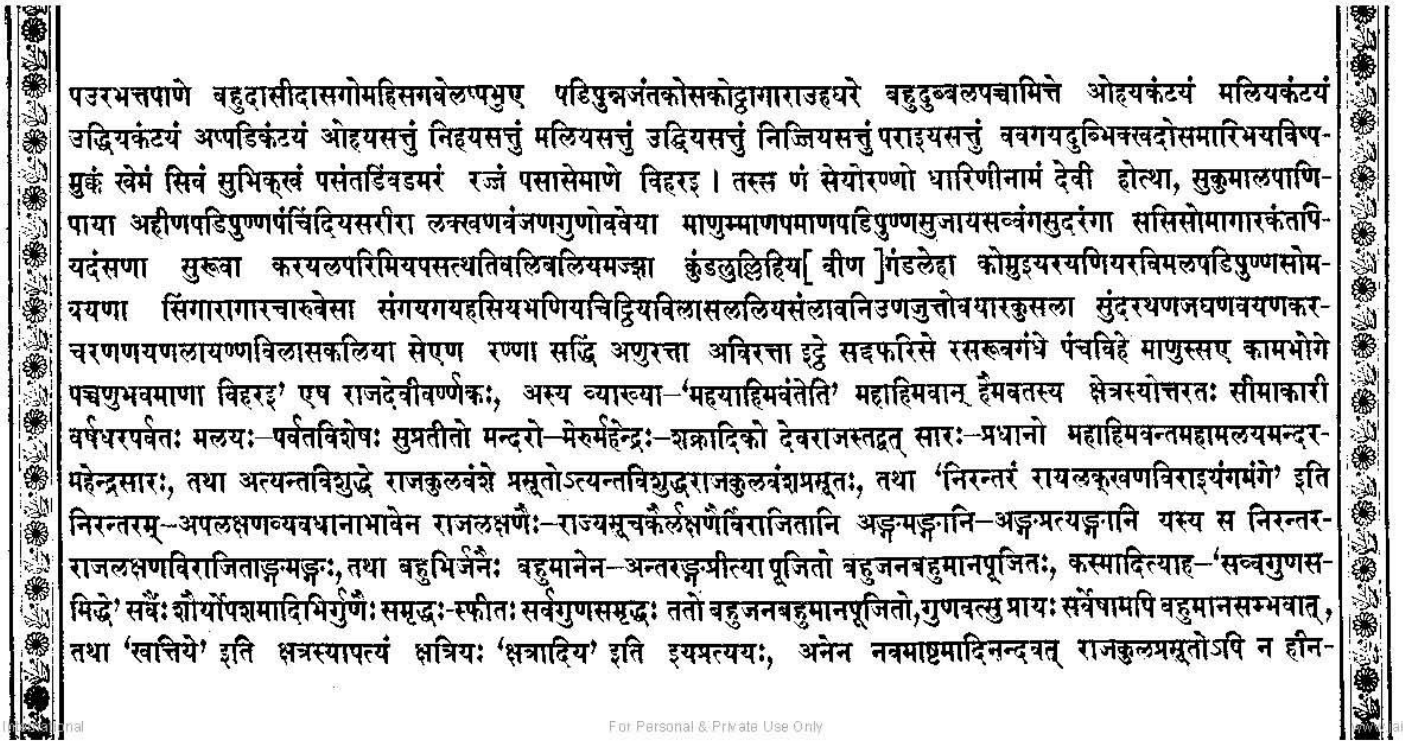
'सेओ राया धारिणी देवी जाव समोसरणं समत्त'मिति तस्यां आमलकल्पायां नगर्यां श्वेतो नाम राजा, तस्य समस्तान्तःपुरप्रधाना भार्या सकलगुणधारिणी धारिणीनामा देवी, 'जाव समोसरणं समत्त'मिति यावच्छब्दकरणाद्राजवर्णको देवीवर्णकः समवसरणं चौपपातिकानुसारेण तावद्वक्तव्यं यावत्समवसरणं समाप्तं, तच्चैवं–'तत्थ णं आमलकप्पाए नयरीए सेओ नाम राजा होत्था, महयाहिमवंतमहंतमलयमंदरमहिंदसारे अच्चंतविसुद्धरायकुलवंसप्पसूए निरंतरं रायलक्खणविराइयंगमंगे बहुजणबहुमाणपूइए सव्वगुणसमिद्धे खत्तिए मुइए मुद्धाभिसित्ते माउपिउसुजाए दय(व्व)पत्ते सीमंकरे सीमंधरे खेमंकरे खेमंधरे मणुस्सिंदे जणवयपिया जणवयपाले जणवयपुरोहिए सेउकरे केउकरे नरपवरे पुरिसवरे पुरिससीहे पुरिसवग्घे पुरिसआसीविसे पुरिसवरपोंडरीए पुरिसवरगंधहत्थी अड्ढे दित्ते वित्ते विच्छिन्नविपुलभवणसयणासणजाणवाहणाइन्ने बहुधणबहुजायरूवरजए आओगपओगसंपउत्ते विच्छड्डिय-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

श्वेत नामक राज्ञः वर्णनं

प्रत सूत्रांक [४]

दीप अनुक्रम [४]



पउरभत्तपाणे बहुदासीदासगोमहिसगवेलप्पभुए पडिपुन्नजंतकोसकोट्ठागाराउहघरे बहुदुब्बलपच्चामित्ते ओहयकंटयं मलियकंटयं उद्धियकंटयं अप्पडिकंटयं ओहयसत्तुं निहयसत्तुं मलियसत्तुं उद्धियसत्तुं निज्जियसत्तुं पराइयसत्तुं ववगयदुब्भिक्खदोसमारिभयविप्पमुक्कं खेमं सिवं सुभिक्खं पसंतडिंबडमरं रज्जं पसासेमाणे विहरइ। तस्स णं सेयोरण्णो धारिणीनामं देवी होत्था, सुकुमालपाणिपाया अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरा लक्खणवंजणगुणोववेया माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुदरंगा ससिसोमागारकंतपियदंसणा सुरूवा करयलपरिमियपसत्थतिवलिवलियमज्झा कुंडलुल्लिहिय[वीण]गंडलेहा कोमुइयरयणियरविमलपडिपुण्णसोमवयणा सिंगारागारचारुवेसा संगयगयहसियभणियचिट्ठियविलाससललियसंलावनिउणजुत्तोवयारकुसला सुंदरथणजघणवयणकरचरणणयणलायण्णविलासकलिया सेएण रण्णा सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्दफरिसे रसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुभवमाणा विहरइ' एष राजदेवीवर्णकः, अस्य व्याख्या–'महयाहिमवंतेति' महाहिमवान् हैमवतस्य क्षेत्रस्योत्तरतः सीमाकारी वर्षधरपर्वतः मलयः–पर्वतविशेषः सुप्रतीतो मन्दरो–मेरुर्महेन्द्रः–शक्रादिको देवराजस्तद्वत् सारः–प्रधानो महाहिमवन्तमहामलयमन्दरमहेन्द्रसारः, तथा अत्यन्तविशुद्धे राजकुलवंशे प्रसूतोऽत्यन्तविशुद्धराजकुलवंशप्रसूतः, तथा 'निरन्तरं रायलक्खणविराइयंगमंगे' इति निरन्तरम्–अपलक्षणव्यवधानाभावेन राजलक्षणैः–राज्यसूचकैर्लक्षणैर्विराजितानि अङ्गमङ्गानि–अङ्गप्रत्यङ्गानि यस्य स निरन्तरराजलक्षणविराजिताङ्गमङ्गः, तथा बहुभिर्जनैः बहुमानेन–अन्तरङ्गप्रीत्या पूजितो बहुजनबहुमानपूजितः, कस्मादित्याह–'सव्वगुणसमिद्धे' सर्वैः शौर्योपशमादिभिर्गुणैः समृद्धः-स्फीतः सर्वगुणसमृद्धः ततो बहुजनबहुमानपूजितो, गुणवत्सु प्रायः सर्वेषामपि बहुमानसम्भवात्, तथा 'खत्तिये' इति क्षत्रस्यापत्यं क्षत्रियः 'क्षत्रादिय' इति इयप्रत्ययः, अनेन नवमाष्टमादिनन्दवत् राजकुलप्रसूतोऽपि न हीन-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

धारिणी नामक राज्यः वर्णनं

जातीयः, किन्तु उत्तमजातीय इत्यावेदितं, तथा 'मुदितः' सर्वकालं हर्षवान्, प्रत्यनीकोपद्रवासम्भवात्, तदसम्भवश्च प्रत्यनीकानामेवाभावात्, तथा चाह–'मुद्धाभिसित्ते' प्रायः सर्वैरपि प्रत्यन्तराजैः प्रतापमसहमानैर्नान्यथाऽस्माकं गतिरिति परिभाव्य मूर्द्धभिः–मस्तकैरभिषिक्तः–पूजितो मूर्धाभिषिक्तः, तथा मातृपितृभ्यां सुजातो मातृपितृसुजातः, अनेन समस्तगर्भाधानप्रभृतिसम्भविदोषविकल इत्यावेदितः, तथा दया(द्रव्य)प्राप्तः स्वभावतः शुद्धजीवद्रव्यत्वात्, तथा सेवागतानामपूर्वापूर्वनृपाणां सीमां–मर्यादां करोति यथा एवं वर्त्तितव्यमेवं नेति सीमङ्करः, तथा पूर्वपुरुषपरम्परायातां स्वदेशमवर्त्तमानां सीमां–मर्यादां धारयति–पालयति न तु विलुम्पतीति सीमन्धरः, तथा क्षेमं–वशवर्त्तिनां उपद्रवाभावं करोति क्षेमङ्करः चौरादिसंहारात् तथा तत् धारयति आरक्षकनियोजनात् क्षेमन्धरः, अत एव मनुष्येन्द्रः, तथा जनपदस्य पितेव जनपदपिता, कथं पितेवेत्यत आह–'जनपदपालः' जनपदं पालयतीति जनपदपालः, ततो भवति जनपदस्य पितेव, तथा जनपदस्य शान्तिकारितया पुरोहित इव जनपदपुरोहितः, तथा सेतुः–मार्गस्तं करोतीति सेतुकरः, मार्गदेशक इति भावः, केतुः–चिह्नं तत्करोतीति केतुकरः, अद्भुतसंविधानकारीति भावः, तथा नरेषु–मनुष्येषु मध्ये प्रवरो–नरप्रवरः, स च सामान्यमनुष्यापेक्षयापि स्यादत आह–'पुरिसवरे' पुरुषेषु–पुरुषाभिमानेषु मध्ये वरः–प्रधान उत्तमपौरुषोपेतत्वादिति पुरुषवरः, यतः पुरुषः सिंह इवाप्रतिमल्लतया पुरुषसिंहः, तथा पुरुषो व्याघ्र इव शूरतया पुरुषव्याघ्रः, पुरुष आसीविष इव दोषविनाशनशीलतया पुरुषासीविषः पुरुषः वरपुण्डरीकमिवोत्तमतया भुवनसरोवरभूषकत्वात् पुरुषवरपुण्डरीकः, पुरुषः वरगन्धहस्तीव परानसहमानान् प्रतीति पुरुषवरगन्धहस्ती ततो भवति पुरुषवरः, तथा आढ्यः–समृद्धो दीप्तः शरीरत्वचा देदीप्यमानत्वात् दृप्तो वा दृप्तारिमानमर्दनशीलत्वात् अत एव वित्तो–जगत्प्रतीतो, यदुक्तमाढ्य इति तदेव सावस्तरमुपदर्शयति–'विच्छिण्णे'त्यादि, विस्तीर्णानि–

॥ १० ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [४]

दीप अनुक्रम [४]

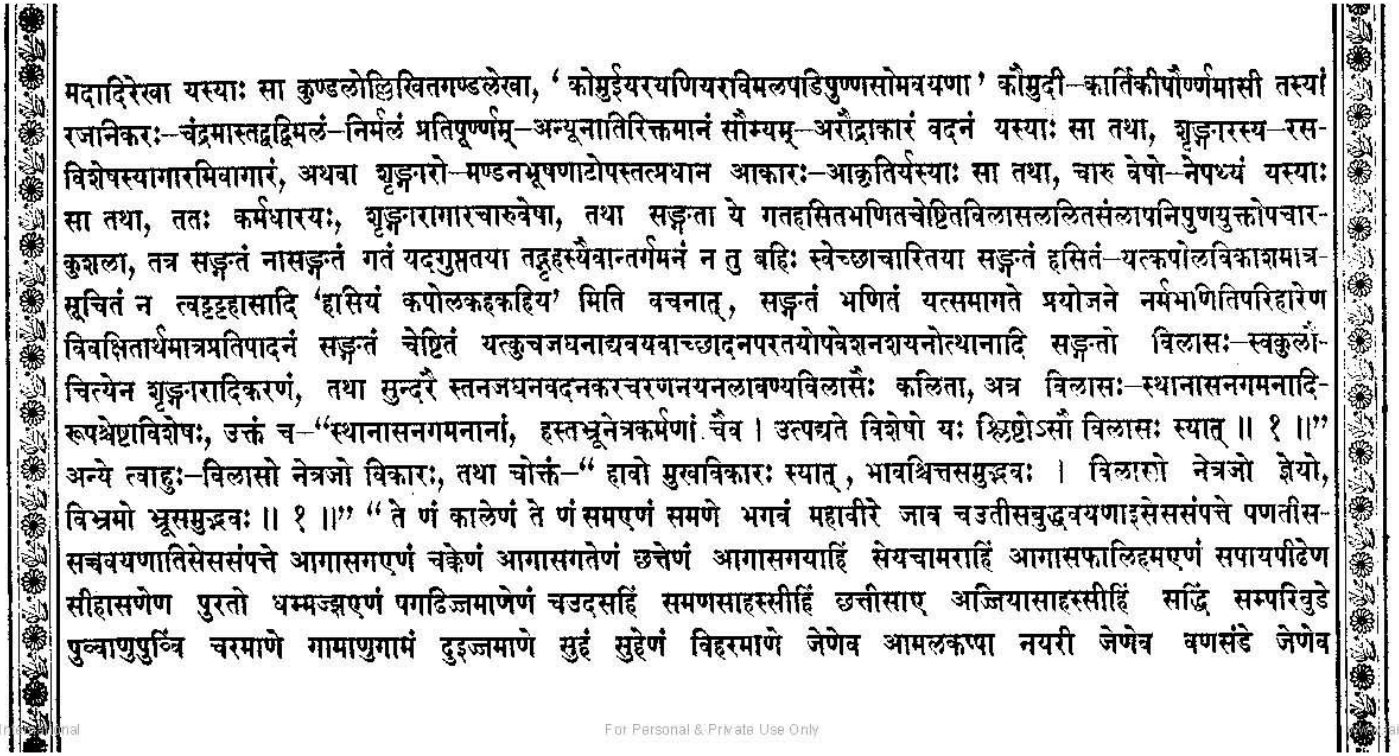
विस्तारवन्ति विपुलानि–प्रभूतानि भवनानि–गृहाणि शयनानि आसनानि च प्रतीतानि यानानि–रथादीनि वाहनानि–अश्वादीनि एतैराकीर्णो–व्याप्तो युक्तो विस्तीर्णविपुलभवनशयनासनयानवाहनाकीर्णः, तथा बहुधनं बहुजातरूपं–सुवर्णो रजतं च–रूप्यं यस्य स बहुधनबहुजातरूपरजतः, तथा आयोगप्रयोगसम्प्रयुक्तः–आवाहनविसर्जनकुशलः, तथा विच्छर्दितं–तथाविधविशिष्टोपकाराकारितया विसृष्टमुकुरिटकादिषु प्रचुरं भक्तपानं यस्मिन् राज्यमनुशासति स विच्छर्दितप्रचुरभक्तपानः, अनेन पुण्याधिकतया न तस्मिन् राज्यमनुशासति दुर्भिक्षमभूदिति कथितं, तथा बहूनां दासीनां दासानां गवां–बलीवर्दानां महिषाणां गवां–स्त्रीगवानां एडकानां च प्रभुः बहुदासीदासगोमहिषगवेलगप्रभुः, ततः स्वार्थिकप्रत्ययविधानात् प्रभुकः, तथा परिपूर्णानि–भृतानि यन्त्रकोशकोष्ठागाराणि यन्त्रगृहाणि कोशगृहाणि–भाण्डागाराणि कोष्ठगृहाणि–धान्यानां कोष्ठागाराणि गृहाणि इति भावः, आयुधगृहाणि च यस्य स परिपूर्णयन्त्रकोशकोष्ठागारायुधगृहः, तथा बलं शारीरिकं मानसिकं च यस्यास्ति स बलवान्, दुर्बलप्रत्ययमित्रो, दुर्बलानामकारणवत्सल इति भावः, एवंभूतः सन् राज्यं प्रशासत् विहरति–अवतिष्ठते इति योगः, कथम्भूतं राज्यमित्याह–अपहतकण्टकं, इह देशोपद्रवकारिणश्चरटाः कण्टकाः ते अपहता अवकाशानासादनेन स्थगिता यस्मिन् तत् अपहतकण्टकं, तथा मलिताः–उपद्रवं कुर्वाणा मानम्लानिमापादिताः कण्टका यत्र तन्मलितकण्टकं, तथा उद्धृताः स्वदेशत्याजनेन जीवितत्याजनेन वा कण्टका यत्र तत् उद्धृतकण्टकं, तथा न विद्यते प्रतिमल्लः कण्टको यत्र तदप्रतिमल्लकण्टकं, तथा 'ओहयसत्तुं' इति प्रत्यनीकाः राजानः शत्रवस्ते अपहताः स्वावकाशमलभमानीकृता यत्र तत् अपहतशत्रु तथा निहताः–रणाङ्गणे पातिताः शत्रवो यत्र तन्निहतशत्रु, तथा मलिताः–तद्बलसैन्यत्रासापादनतो मानम्लानिमापादिताः शत्रवो यत्र तत् मलितशत्रु, तथा स्वातन्त्र्यच्यावनेन स्वदेशच्यावनेन जीवितच्यावनेन वा उद्धृताः शत्रवो यत्र तत्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उद्धतशत्रु, एतदेव विशेषणद्वयेन व्याचष्टे–निर्जितशत्रु, पराजितशत्रु, तथा व्यपगतं दुर्भिक्षं दोषो मारिश्च यत्र तत् व्यपगतदुर्भिक्षदोषमारि, तथा भयेन स्वदेशोत्थेन परचक्रकृतेन वा विप्रमुक्तं, अत एव क्षेमं–निरुपद्रवं शिवं–शान्तं सुभिक्षं शोभना–शुभा भिक्षा दर्शनिनां दीनानाथादीनां च यत्र तत् सुभिक्षं, तथा प्रशान्तानि डिम्बानि–विघ्ना डमराणि–राजकुमारादिकृतविकृतविड्वरा यत्र तत्प्रशान्तडिम्बडमरं। देवीवर्णकं–'सुकुमालपाणिपाया' इति सुकुमारौ पाणी पादौ च यस्याः सा सुकुमारपाणिपादा, तथा अहीनानि–अन्यूनानि स्वरूपतः प्रतिपूर्णानि लक्षणतः पञ्चापीन्द्रियाणि यस्मिन् तथाविधं शरीरं यस्याः सा अहीनप्रतिपूर्णपञ्चेन्द्रियशरीरा, तथा लक्षणानि–स्वस्तिकचक्रादीनि व्यञ्जनानि–मषीतिलकादीनि गुणाः–सौभाग्यादयस्तैरुपपेता लक्षणव्यञ्जनगुणोपपेता, उप अप इत इतिशब्दत्रयस्थाने 'पृषोदरादय' इत्यपाकारस्य लोपे उपपेता इति द्रष्टव्यं, 'माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुंदरंगी' इति तत्र मानं–जलद्रोणप्रमाणता, कथमिति चेत्, उच्यते, जलस्यातिभृते कुण्डे पुरुषे स्त्रियां वा निवेशितायां यज्जलं निस्सरति तद्यदि द्रोणप्रमाणं भवति तदा पुरुषः स्त्री वा मानप्राप्त उच्यते, तथा उन्मानं–अर्द्धभारप्रमाणता, सा चैवं–तुलायामारोपितः पुरुषः स्त्री वा यद्यर्द्धभारं तुलति तदा स उन्मानप्राप्तोऽभिधीयते, प्रमाणं–स्वाङ्गुलेनाष्टोत्तरशतोच्छ्रयिता, ततो मानोन्मानप्रमाणैः प्रतिपूर्णानि–अन्यूनानि सुजातानि–जन्मदोषरहितानि सर्वाणि अङ्गानि–शिरःप्रभृतीनि यानि तैः सुन्दराङ्गी मानोन्मानप्रमाणप्रतिपूर्णसुजातसर्वाङ्गसुन्दराङ्गी, तथा शशिवत्सोमाकारम्–अरौद्राकारं कान्तं–कमनीयं प्रियं–द्रष्टृणामानन्दोत्पादकं दर्शनं–रूपं यस्याः सा शशिसोमाकारकान्तप्रियदर्शना, अत एव सुरूपा, तथा करतलपरिमितो–मुष्टिग्राह्यः प्रशस्तलक्षणोपेतत्रिवलीको–वलित्रयोपेतो रेखात्रयोपेतो वलिको–बलवान् मध्यो–मध्यभागो यस्याः सा करतलपरिमितप्रशस्तत्रिवलीकवलिकमध्या, तथा कुण्डलाभ्यां उल्लिखिता–घृष्टा गण्डलेखा–कपोलविरचितमृग-

॥ ११ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org



मदादिरेखा यस्याः सा कुण्डलोल्लिखितगण्डलेखा, 'कोमुईयरयणियरविमलपडिपुण्णसोमवयणा' कौमुदी–कार्तिकीपौर्णमासी तस्यां रजानिकरः–चंद्रमास्तद्वद्विमलं–निर्मलं प्रतिपूर्णम्–अन्यूनातिरिक्तमानं सौम्यम्–अरौद्राकारं वदनं यस्याः सा तथा, शृङ्गारस्य–रस-विशेषस्यागारमिवागारं, अथवा शृङ्गारो–मण्डनभूषणाटोपस्तत्प्रधान आकारः–आकृतिर्यस्याः सा तथा, चारु वेषो–नेपथ्यं यस्याः सा तथा, ततः कर्मधारयः, शृङ्गारागारचारुवेषा, तथा सङ्गता ये गतहसितभणितचेष्टितविलासललितसंलापनिपुणयुक्तोपचार-कुशला, तत्र सङ्गतं नासङ्गतं गतं यदगुप्ततया तद्गृहस्यैवान्तर्गमनं न तु बहिः स्वेच्छाचारितया सङ्गतं हसितं–यत्कपोलविकाशमात्र-सूचितं न त्वट्टट्टहासादि 'हासियं कपोलकहकहिय' मिति वचनात्, सङ्गतं भणितं यत्समागते प्रयोजने नर्मभणितिपरिहारेण विवक्षितार्थमात्रप्रतिपादनं सङ्गतं चेष्टितं यत्कुचजघनाद्यवयवाच्छादनपरतयोपवेशनशयनोत्थानादि सङ्गतो विलासः–स्वकुलो-चित्येन शृङ्गारादिकरणं, तथा सुन्दरैः स्तनजघनवदनकरचरणनयनलावण्यविलासैः कलिता, अत्र विलासः–स्थानासनगमनादि-रूपश्चेष्टाविशेषः, उक्तं च–"स्थानासनगमनानां, हस्तभ्रूनेत्रकर्मणां चैव । उत्पद्यते विशेषो यः श्लिष्टोऽसौ विलासः स्यात् ॥ १ ॥" अन्ये त्वाहुः–विलासो नेत्रजो विकारः, तथा चोक्तं–" हावो मुखविकारः स्यात्, भावश्चित्तसमुद्भवः । विलासो नेत्रजो ज्ञेयो, विभ्रमो भ्रूसमुद्भवः ॥ १ ॥" "ते णं कालेणं ते णं समएणं समणे भगवं महावीरे जाव चउतीसबुद्धवयणाइसेससंपत्ते पणतीस-सच्चवयणातिसेससंपत्ते आगासगएणं चक्केणं आगासगतेणं छत्तेणं आगासगयाहिं सेयचामराहिं आगासफालिहमएणं सपायपीढेण सीहासणेण पुरतो धम्मज्झएणं पगडिज्जमाणेणं चउदसहिं समणसाहस्सीहिं छत्तीसाए अज्जियासाहस्सीहिं सद्धिं सम्परिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दुइज्जमाणे सुहं सुहेणं विहरमाणे जेणेव आमलकप्पा नयरी जेणेव वणसंडे जेणेव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [४]

दीप अनुक्रम [४]

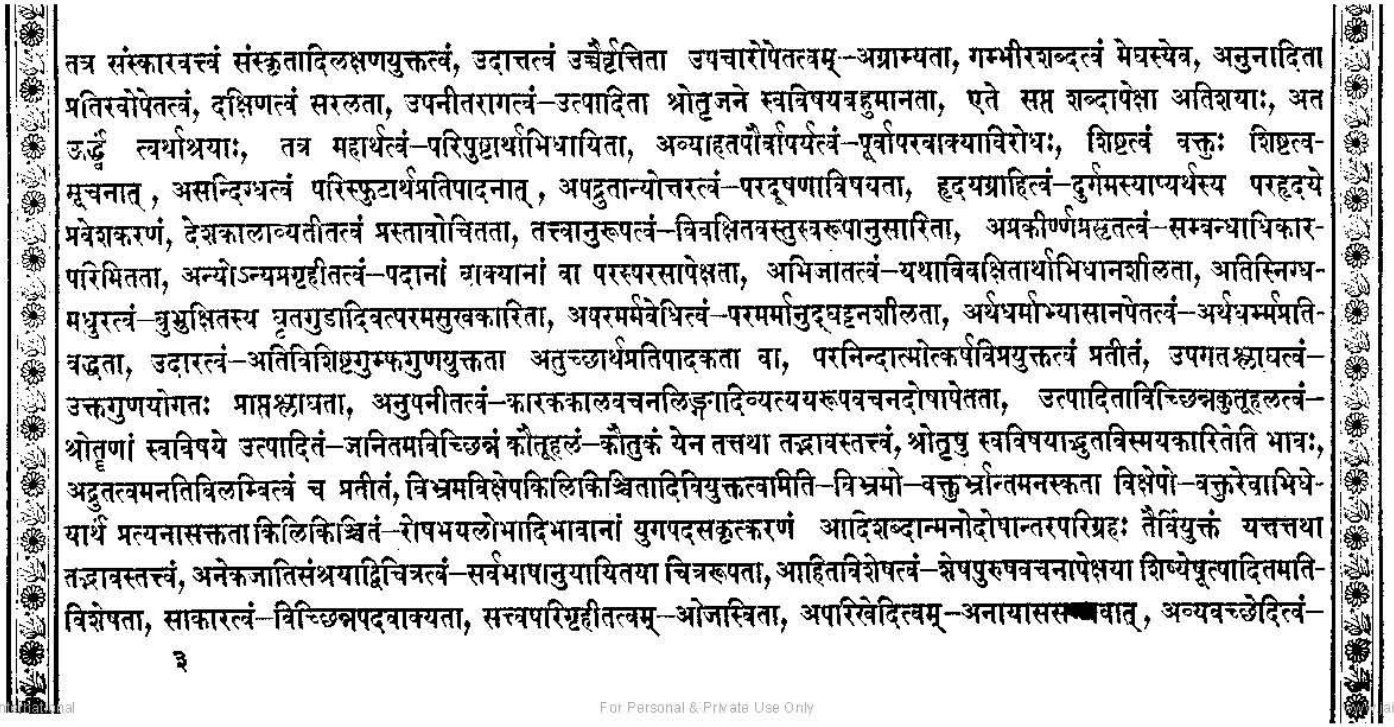
असोगवरपायवे जेणेव पुढविसिलापट्टे तेणेव उवागच्छइ, २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता असोगवरपायवस्स अहे पुढविसिलापट्टंसि पुरत्थाभिमुहे संपलिअंकनिसन्ने संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति" । इदं सुगमं, नवरं 'जाव चोत्तीसाए' इत्यत्र यावच्छब्दकरणात् 'आइकरे तित्थगरे' इत्यादिकः समस्तोऽपि औपपातिकग्रन्थप्रसिद्धो भगवद्गुणको वाच्यः, स चातिगरीयानिति न लिख्यते, केवलमौपपातिकग्रन्थादवसेयः, ' चोत्तीसाए बुद्धवयणातिसेससंपत्ते ' चतुस्त्रिंशद् बुद्धानां–भगवतामर्हतां वचनप्रमुखाः ' सर्वस्वभाषानुगतं वचनं धर्मावबोधकर'मित्यादिना उक्तस्वरूपा ये अतिशेषा–अतिशयास्तान् प्राप्तश्चतुस्त्रिंशद्बुद्धवचनातिशेषसम्प्राप्तः, इह वचनातिशेषस्योपादानमत्यन्तोपकारितया प्राधान्यख्यापनार्थम् , अन्यथा देहवैमल्यादयस्ते पठ्यन्ते, तथा (चाह)–देहं विमलसुगन्धं आमयपस्सेयवज्जियं अरयं । रुहिरं गोक्खीराभं निव्विस्सं पंडुरं मंस ॥ १ ॥ मित्यादि, ' पणतीसाए सच्चवयणातिसेससंपत्ते ' पञ्चत्रिंशत् ये सत्यवचनस्यातिशेषा–अतिशयास्तान् सम्प्राप्तः पञ्चत्रिंशद्वचनातिशेषसम्प्राप्तः, ते चामी सत्यवचनातिशेषाः–संस्कारवत्त्वं १ उदात्तत्वं २ उपचारोपेतत्वं ३ गम्भीरशब्दत्वं ४ अनुनादित्वं ५ दक्षिणत्वं ६ उपनीतरागत्वं ७ महार्थत्वं ८ अव्याहतपौर्वापर्यत्वं ९ शिष्टत्वं १० असन्दिग्धत्वं ११ अपहृतान्योत्तरत्वं १२ हृदयग्राहित्वं १३ देशकालयुतत्वं १४ तत्त्वानुरूपत्वं १५ अप्रकीर्णप्रसृतत्वं १६ अन्योऽन्यगृहीतत्वं १७ अभिजातत्वं १८ अतिस्निग्धमधुरत्वं १९ अपरमर्मवेधित्वं २० अर्थधर्माभ्यासानपेतत्वं २१ उदारत्वं २२ परनिन्दात्मोत्कर्षविप्रमुक्तत्वं २३ उपगतश्लाघत्वं २४ अनपनीतत्वं २५ उत्पादिताविच्छिन्नकौतूहलत्वं २६ अद्भुतत्वं २७ अनतिविलम्बित्वं २८ विभ्रमविक्षेपकिलिकिञ्चितादिवियुक्तत्वं २९ अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रत्वं ३० आहितविशेषत्वं ३१ साकारत्वं ३२ सत्त्वपरिगृहीतत्वं ३३ अपरिखेदितत्वं ३४ अव्युच्छेदित्वं ३५ चेति,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तिर्थंकरस्य ३५ वचनातिशया:

प्रत सूत्रांक [४]

दीप अनुक्रम [४]



तत्र संस्कारवत्त्वं संस्कृतादिलक्षणयुक्तत्वं, उदात्तत्वं उच्चैर्वृत्तिता उपचारोपेतत्वम्–अग्राम्यता, गम्भीरशब्दत्वं मेघस्येव, अनुनादिता प्रतिरवोपेतत्वं, दक्षिणत्वं सरलता, उपनीतरागत्वं–उत्पादिता श्रोतृजने स्वविषयबहुमानता, एते सप्त शब्दापेक्षा अतिशयाः, अत ऊर्द्धं त्वर्थाश्रयाः, तत्र महार्थत्वं–परिपुष्टार्थाभिधायिता, अव्याहतपौर्वापर्यत्वं–पूर्वापरवाक्याविरोधः, शिष्टत्वं वक्तुः शिष्टत्व-सूचनात्, असन्दिग्धत्वं परिस्फुटार्थप्रतिपादनात्, अपहृतान्योत्तरत्वं–परदूषणाविषयता, हृदयग्राहित्वं–दुर्गमस्याप्यर्थस्य परहृदये प्रवेशकरणं, देशकालाव्यतीतत्वं प्रस्तावोचितता, तत्त्वानुरूपत्वं–विवक्षितवस्तुस्वरूपानुसारिता, अप्रकीर्णप्रसृतत्वं–सम्बन्धाधिकार-परिमितता, अन्योऽन्यप्रगृहीतत्वं–पदानां वाक्यानां वा परस्परसापेक्षता, अभिजातत्वं–यथाविवक्षितार्थाभिधानशीलता, अतिस्निग्ध-मधुरत्वं–बुभुक्षितस्य घृतगुडादिवत्परमसुखकारिता, अपरमर्मवेधित्वं–परमर्मानुद्घट्टनशीलता, अर्थधर्माभ्यासानपेतत्वं–अर्थधर्म्मप्रति-बद्धता, उदारत्वं–अतिविशिष्टगुम्फगुणयुक्तता अतुच्छार्थप्रतिपादकता वा, परनिन्दात्मोत्कर्षविप्रयुक्तत्वं प्रतीतं, उपगतश्लाघत्वं–उक्तगुणयोगतः प्राप्तश्लाघता, अनुपनीतत्वं–कारककालवचनलिङ्गादिव्यत्ययरूपवचनदोषापेतता, उत्पादिताविच्छिन्नकुतूहलत्वं–श्रोतॄणां स्वविषये उत्पादितं–जनितमविच्छिन्नं कौतूहलं–कौतुकं येन तत्तथा तद्भावस्तत्त्वं, श्रोतृषु स्वविषयाद्भुतविस्मयकारितेति भावः, अद्भुतत्वमनतिविलम्बित्वं च प्रतीतं, विभ्रमविक्षेपकिलिकिञ्चितादिवियुक्तत्वमिति–विभ्रमो–वक्तुर्भ्रान्तमनस्कता विक्षेपो–वक्तुरेवाभिधे-यार्थं प्रत्यनासक्तता किलिकिञ्चितं–रोषभयलोभादिभावानां युगपदसकृत्करणं आदिशब्दान्मनोदोषान्तरपरिग्रहः तैर्वियुक्तं यत्तत्तथा तद्भावस्तत्त्वं, अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रत्वं–सर्वभाषानुयायितया चित्ररूपता, आहितविशेषत्वं–श्रेषपुरुषवचनापेक्षया शिष्येषूत्पादितमति-विशेषता, साकारत्वं–विच्छिन्नपदवाक्यता, सत्त्वपरिगृहीतत्वम्–ओजस्विता, अपरिखेदित्वम्–अनायाससम्भवात्, अव्यवच्छेदित्वं–

३

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तिर्थंकरस्य ३५ वचनातिशया

प्रत सूत्रांक [४]

दीप अनुक्रम [४]

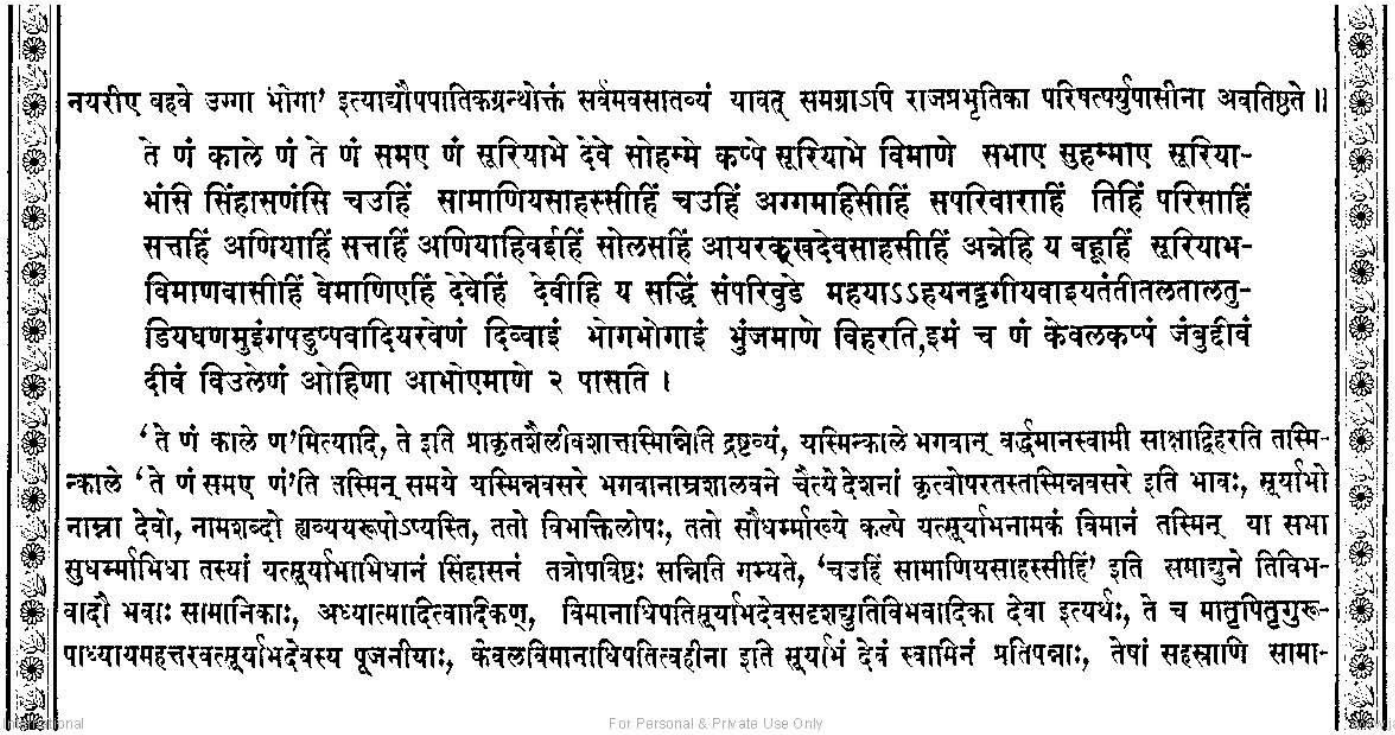
विवक्षितार्थसम्यक्सिद्धिं यावदविच्छिन्नवचनप्रमेयतेति । 'आगासफालियामएणं' आकाशस्फटिकं–यदाकाशवत् अतिस्वच्छं स्फटिकं तन्मयेन 'धम्मज्झएणं'ति धर्मचक्रवर्तित्वसूचकेन केतुना महेन्द्रध्वजेनेत्यर्थः, तथा 'पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे' इति पूर्वानुपूर्व्या क्रमेणेत्यर्थः चरन्–सञ्चरन्, एतदेवाह–'गामाणुगामं दूइज्जमाणे' इति ग्रामश्चानुग्रामश्च–विवक्षितग्रामादनन्तरं ग्रामो ग्रामानुग्रामं, तत् द्रवन्–गच्छन्, एकस्मादनन्तरं ग्राममनुल्लङ्घयन् इत्यर्थः, अनेनाप्रतिबद्धविहारिता ख्यापिता, तत्राप्यौत्सुक्याभावमाह–'सुहंसुहेणं विहरमाणे' सुखंसुखेन–शरीरखेदाभावेन संयमबाधाविरहेण च ग्रामादिषु विहरन्–अवतिष्ठमानो 'जेणेव'ति प्राकृतत्वात्सप्तम्यर्थे तृतीया यस्मिन्नेव देशे आमलकल्पा नगरी यस्मिन्नेव च प्रदेशे वनखण्डो यस्मिन्नेव देशे सोऽनन्तरोक्तस्वरूपः शिलापट्टकः 'तेणामेव'ति तस्मिन्नेव देशे उपागच्छति, उपागत्य च पृथिवीशिलापट्टके पूर्वाभिमुखः, तीर्थकृतो हि भगवन्तः सदा समवसरणे पृथिवीशिलापट्टके वा देशनायै पूर्वाभिमुखा अवतिष्ठन्ते संपर्यङ्कनिषण्णाः, संयमेन तपसा चात्मानं भावयन् विहरन् आस्ते॥ ततः पर्षन्निर्गमो वाच्यः, स चैवं–'तए णं आमलकप्पानयरीए सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउम्मुहमहापहेसु बहुजणो अण्णमण्णं एवमाइक्खइ एवं भासेइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ–एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे जाव आगासगएणं छत्तेणं जाव संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तं महाफलं खलु देवाणुप्पियाणं तहारूवाणं अरहंताणं नामगोयस्सावि सवणयाए किमंग पुण अभिगमणवंदणनमंसणपडिपुच्छणपज्जुवासणयाए?, तं सेयं खलु एगस्सावि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ?, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! समणं भगवं महावीरं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेमो, एयं तं इहभवे परभवे य हियाए (सुहाए खमाए निस्सेसाए) आणुगामियत्ताए भविस्सइ, तए णं आमलकप्पाए

॥ १३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [४]

दीप अनुक्रम [४]



नयरीए बहवे उग्गा भोगा' इत्याद्यौपपातिकग्रन्थोक्तं सर्वमवसातव्यं यावत् समग्राऽपि राजप्रभृतिका परिषत्पर्युपासीना अवतिष्ठते ॥

ते णं काले णं ते णं समए णं सूरियाभे देवे सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे सभाए सुहम्माए सूरियाभंसि सिंहासणंसि चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं तिहिं परिसाहिं सत्तहिं अणियाहिं सत्तहिं अणियाहिवईहिं सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहि य बहूहिं सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे महयाऽऽहयनट्टगीयवाइयतंतीतलतालतुडियघणमुइंगपडुप्पवादियरवेणं दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति,इमं च णं केवलकप्पं जंबुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे २ पासति ।

'ते णं काले ण'मित्यादि, ते इति प्राकृतशैलीवशात्तस्मिन्निति द्रष्टव्यं, यस्मिन्काले भगवान् वर्द्धमानस्वामी साक्षाद्विहरति तस्मिन्काले 'ते णं समए णं'ति तस्मिन् समये यस्मिन्नवसरे भगवानाम्रशालवने चैत्ये देशनां कृत्वोपरतस्तस्मिन्नवसरे इति भावः, सूर्याभो नाम्ना देवो, नामशब्दो ह्यव्ययरूपोऽप्यस्ति, ततो विभक्तिलोपः, ततो सौधर्म्मारव्ये कल्पे यत्सूर्याभनामकं विमानं तस्मिन् या सभा सुधर्म्माभिधा तस्यां यत्सूर्याभाभिधानं सिंहासनं तत्रोपविष्टः सन्निति गम्यते, 'चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं' इति सामान्येन तिविभवादौ भवाः सामानिकाः, अध्यात्मादित्वादिकण्, विमानाधिपतिसूर्याभदेवसदृशद्युतिविभवादिका देवा इत्यर्थः, ते च मातृपितृगुरूपाध्यायमहत्तरवत्सूर्याभदेवस्य पूजनीयाः, केवलविमानाधिपतित्वहीना इति सूर्याभं देवं स्वामिनं प्रतिपन्नाः, तेषां सहस्राणि सामा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	सूर्याभदेवस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [५]

दीप अनुक्रम [५]

निकसहस्राणि तैश्चतुर्भिः, प्राकृतत्वाच्च सूत्रे सकारस्य दीर्घत्वं स्त्रीत्वं च, 'चतसृभिरग्रमहिषीभिः' इह कृताभिषेका देवी महिषीत्युच्यते, सा च स्वपरिवारभूतानां सर्वासामपि देवीनामग्रे इत्यग्राः, अग्राश्च ता महिष्यश्च अग्रमहिष्यस्ताभिश्चतसृभिः, कथम्भूताभिरित्याह–'सपरिवाराभिः' परिवारः सह यासां ताः सपरिवारास्ताभिः, परिवारश्चैकैकस्या देव्याः सहस्रं २ देवीनां, तथा तिसृभिः पर्षद्भिः, तिस्रो हि विमानाधिपतेः सर्वस्यापि पर्षदः, तद्यथा–अभ्यन्तरा मध्या बाह्या च, तत्र या वयस्यमण्डलीकस्थानीया परममित्रसंहतिसदृशी सा अभ्यन्तरपर्षत्, तया सहापर्यालोचितं स्वल्पमपि प्रयोजनं न विदधाति, अभ्यन्तरपर्षदा सह पर्यालोचितं यस्मै निवेद्यते यथेदमस्माकं पर्यालोचितं सम्मतमागतं युष्माकमपीदं सम्मतं किंवा नेति सा मध्यमा, यस्याः पुनरभ्यन्तरपर्षदा सह पर्यालोचितं मध्यमया च सह दृढीकृतं यस्मै करणायैव निरूप्यते यथेदं क्रियतामिति सा बाह्या, तथा 'सत्तहिं अणिएहिं' इति अनीकानि–सैन्यानि, तानि च सप्त, तद्यथा–हयानीकं गजानीकं रथानीकं पदात्यनीकं वृषभानीकं गन्धर्वानीकं नाट्यानीकं, तत्राद्यानि पञ्चानीकानि सङ्ग्रामाय कल्प्यन्ते, गन्धर्वनाट्यानीके पुनरुपभोगाय, तैः सप्तभिरनीकैः, अनीकानि स्वस्वाधिपतिव्यतिरेकेण न सम्यक् प्रयोजने समागते सत्युपकल्प्यन्ते ततः सप्तानीकाधिपतयोऽपि तस्य वेदितव्याः, तथा चाह– 'सत्तहिं अणियाहिवईहिं,' तथा 'षोडशभिरात्मरक्षदेवसहस्रै'रिति विमानाधिपतेः सूर्याभस्य देवस्यात्मानं रक्षयन्तीत्यात्मरक्षाः, 'कर्मणोऽण्' त्यण् प्रत्ययः, ते च शिरस्त्राणकल्पाः, यथा हि शिरस्त्राणं शिरस्यावि(व)द्धं प्राणरक्षकं भवति तथा तेऽप्यात्मरक्षका गृहीतधनुर्दण्डादिप्रहरणाः समन्ततः पृष्ठतः पार्श्वतोऽग्रतश्चावस्थायिनो विमानाधिपतेः सूर्याभस्य देवस्य प्राणरक्षकाः, देवानामपायाभावात् तेषां तथाग्रहणपुरस्सरमवस्थानं निरर्थकमिति चेत्, न, स्थितिमात्रपरिपालनहेतुत्वात् प्रकर्षहेतुत्वाच्च, तथा हि ते समन्ततः सर्वासु दिक्षु गृहीतप्रहरणा ऊर्द्धस्थिता अवतिष्ठमानाः

॥ १४ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य वर्णनं

स्वनायकशरीररक्षणपरायणाः स्वनायकैकनिषण्णदृष्टयः परेषामसहमानानां क्षोभमापादयन्तो जनयन्ति स्वनायकस्य परां प्रीतिमिति, एते च नियतसङ्ख्याकाः सूर्याभस्य देवस्य परिवारभूता देवा उक्ताः, ये तु तस्मिन् सूर्याभे विमाने पौरजनपदस्थानीया ये त्वाभियोग्याः–दासकल्पास्तेऽतिभूयांसः आस्थानमण्डल्यामपि चानियतसङ्ख्याका इति तेषां सामान्यत उपादानमाह–'अन्नेहिं बहूहिं सूरियाभविमाणवासीहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे' एतैः सामानिकप्रभृतिभिः सार्द्धं संपरिवृतः–सम्यग्नायकैकचित्ताराधनपरतया परिवृतः, 'महयाऽऽहये'त्यादि, महता रवेणेति योगः 'आहया' इति आख्यानकपतिबद्धानीति वृद्धाः, अथवा अहतानि–अव्याहतानि, अक्षतानीति भावः, नाट्यगीतवादितानि च तन्त्री–वीणा तला–हस्ततालाः कंसिकाः तुटितानि–शेषतूर्याणि, तथा घनो–घनसदृशो ध्वनिसाधर्म्यत्वात् यो मृदङ्गो–मर्दलः पटुना–दक्षपुरुषेण प्रवादितः, तत एतेषां पदानां द्वन्द्वः, तेषां यो रवस्तेन, दिव्यान्–दिवि भवान् अतिप्रधानानित्यर्थः, 'भोगभोगाइं' इति भोगार्हा ये भोगाः–शब्दादयस्तान्, सूत्रे नपुंसकता प्राकृतत्वात्, प्राकृते हि लिङ्गव्यभिचारः, यदाह पाणिनिः स्वप्राकृतलक्षणे–'लिङ्गं व्यभिचार्यपी'ति, भुञ्जानो 'विहरति' आस्ते, न केवलमास्ते किंत्विमं–प्रत्यक्षतया उपलभ्यमानं 'केवलकल्पं' ईषदपरिसमाप्तं केवलं–केवलज्ञानं केवलकल्पं, परिपूर्णतया केवलसदृशमिति भावः, जम्बूद्वीपं उत्तरकुरुवासिन्या उपलक्षितो द्वीपो जम्बूद्वीपस्तं जम्बूद्वीपाभिधानं द्वीपं 'विपुलेन' विस्तीर्णेनावधिना, तस्य हि सूर्याभस्य देवस्यावधिरधः प्रथमां पृथिवीं यावत्तिर्यक् असङ्ख्येयान् द्वीपसमुद्रानिति भवति विस्तीर्णस्तेनाभोगयन्–परिभावयन् पश्यति, अनेन सत्यप्यवधौ यदि तं ज्ञेयविषयमाभोगं न करोति तदा न किञ्चिदपि तेन जानाति पश्यति वेत्यावेदितं ॥

तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबूदीवे भारहे वासे आमलकप्पाए नयरीए बहिया अंबसालवणे चेइए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [५]

दीप अनुक्रम [५]

अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए णंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए विकसियवरकमलणयणे पयलियवरकडगतुडियकेउरमउडकुंडलहारविरायंतरइयवच्छे पालंबपलंबमाणघोलंतभूसणधरे ससंभमं तुरियचवलं सुरवरे (जाव) [सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ २ त्ता पायपीढाओ पच्चोरुहति, २ त्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेति, २ त्ता सत्तट्ठपयाइं तित्थयराभिमुहे अणुगच्छति, २ त्ता वामं जाणुं अंचेति, २ त्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि णिहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि णिवेसेइ, णिवेसित्ता ईसिं पच्चुन्नमइ, ईसिं पच्चुन्नमइत्ता करतलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–णमोऽत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आदिगराणं तित्थगराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसोत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुंडरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं जीवदयाणं सरणदयाणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं वियट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरसीणं सिवमयलमरुयमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुणरावत्तं सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं, नमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थं सूर्याभदेवस्य आगमनं

प्रत सूत्रांक [५]

दीप अनुक्रम [५]

महावीरस्स जाव संपाविउकामस्स, वंदामि णं भगवन्तं तत्थगयं इह गते] पासइ मे भगवं तत्थ गते इहगतंतिकट्टु वंदति णमंसति वंदित्ता णमंसित्ता सीहासणवरगए पुव्वाभिमुहं सण्णिसण्णे। (सू० ५) तए णं तस्स सुरियाभस्स इमे एतारूवे अब्भत्थिते चिंतिते मणोगते संकप्पे समुपज्जित्था

'तत्र' तस्मिन्विपुलेनावधिना जम्बूद्वीपविषये दर्शने प्रवर्तमाने सति 'श्रमणं' श्राम्यति–तपस्यति नानाविधमिति श्रमणः, भगः–समग्रैश्वर्यादिलक्षणः, उक्तं च–"ऐश्वर्यस्य समग्रस्य, रूपस्य यशसः श्रियः। धर्मस्याथ प्रयत्नस्य, षण्णां भग इतीङ्गना ॥ १ ॥" भगोऽस्यास्तीति भगवान् भगवन्तं 'शूर वीर विक्रान्तौ' वीरयति–कषायान् प्रति विक्रामति स्मेति वीरः महांश्चासौ वीरश्च महावीरस्तं, जम्बूद्वीपे भारते वर्षे आमलकल्पायां नगर्यां बहिराम्रशालवने चैत्ये अशोकवरपादपस्याधः पृथिवीशिलापट्टके सम्पर्यङ्कनिषण्णं श्रमणगणसमृद्धिसंपरिवृत प्रतिरूपमवग्रहं गृहीत्वा संयमेन तपसा आत्मानं भावयन्तं पश्यति, दृष्ट्वा च–'हट्ठतुट्ठमाणंदिए' इति, हृष्टतुष्टोऽतीवतुष्ट इति भावः, अथवा हृष्टो नाम विस्मयमापन्नो, यथा–अहो भगवानास्ते इति, तुष्टः–सन्तोषं कृतवान्, यथा–भव्यमभूत् यन्मया भगवानालोकितः, तोषवशादेव चित्तमानन्दितं–स्फीतीभूतं 'टु नदि समृद्धौ'ति वचनात्, यस्य स चित्तानन्दितः, सुखादिदर्शनात्पाक्षिको निष्ठान्तस्य परनिपातः, मकारः प्राकृतत्वादलाक्षणिकस्ततः पदत्रयस्य पदद्वय २ मीलने कर्मधारयः, 'पीइमणे इति' प्रीतिर्मनसि यस्यासौ प्रीतिमनाः, भगवति बहुमानपरायण इति भावः, ततः क्रमेण बहुमानोत्कर्षवशात् 'परमसोमणस्सिए' इति शोभनं मनो यस्य स सुमनास्तस्य भावः सौमनस्यं परमं च तत्सौमनस्यं च परमसौमनस्यं तत्सञ्जातमस्येति परमसौमन-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थे सूर्याभदेवस्य आगमनं

प्रत सूत्रांक [६]

दीप अनुक्रम [६]

स्यितः, एतदेव व्यक्तीकुर्वन्नाह–'हरिसवसविसप्पमाणहियए' हर्षवशेन विसर्पत्–विस्तारयायि हृदयं यस्य स हर्षवशविसर्पद्धृदयः, हर्षवशादेव 'वियसियवरकमलनयणे' विकसिते वरकमलवत् नयने यस्य स तथा, हर्षवशादेव शरीरोद्धर्षेण 'पयलियवरकडगतुडियकेउरमउडकुंडले'ति प्रचलितानि वराणि कटकानि–कलाचिकाभरणानि त्रुटितानि–बाहुरक्षकाः केउराणि–बाह्वाभरणविशेषरूपाणि मुकुटो–मौलिभूषणं कुण्डले–कर्णाभरणे यस्य स प्रचलितवरकटकत्रुटितकेयूरमुकुटकुण्डलः, तथा हारेण विराजमानेन रचितं–शोभितं वक्षो यस्य स हारविराजमानरचितवक्षाः, ततः पूर्वपदेन कर्मधारयः समासः, तथा प्रलम्बते इति प्रलम्बः–पदकस्तं प्रलम्बमानं–आभरणविशेषं घोलन्ति च भूषणानि धरन्तीति प्रलम्बप्रलम्बमानघोलद्भूषणधरः, सूत्रे च प्रलम्बमानपदस्य विशेष्यात्परतो निपातः प्राकृतत्वात्, हर्षवशादेव 'ससंभमं' संभ्रम इह विवक्षितक्रियाया बहुमानपूर्विका प्रवृत्तिः सह सम्भ्रमो यस्य वन्दनस्य नमनस्य वा तत्ससम्भ्रमं, क्रियाविशेषणमेतत्, त्वरितं–शीघ्रं चपलं–सम्भ्रमवशादेव व्याकुलं यथा भवत्येवं सुरवरो–देववरो यावत्करणात् ' सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहति २ त्ता पाउयाओ ओमुयइ ओमुयइत्ता तित्थयराभिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ [उत्पाटयति] दाहिणं जाणुं धरणितलंसि निहट्टु तिखुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निमेइ निमित्ता (निवेसेइ २ त्ता) ईसिं पच्चुन्नमइ पच्चुन्नमित्ता कडियतुडियथंभियभुयाओ साहरइ साहरित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–नमोऽत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं जाव ठाणं संपत्ताणं, नमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स तित्थयरस्स जाव संपाविउकामस्स, वंदामि ण भगवंतं तत्थगयं इह गए ' इति परिग्रहः, पश्यति मां स भगवान् तत्र गत इह गतमिति कृत्वा वन्दते–स्तौति नमस्यति–कायेन मनसा च

॥ १६ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थे सूर्याभदेवस्य आगमनं

प्रत सूत्रांक [६]

दीप अनुक्रम [६]

वन्दित्वा नमस्यित्वा च भूयः सिंहासनवरं गतो गत्वा च पूर्वाभिमुखं सन्निषण्णः॥ 'तए णं तस्से'त्यादि, 'ततो' निषदनानन्तरं 'तस्य' सूर्याभदेवस्य अयमेतद्रूपः सङ्कल्पः समुदपद्यत, कथम्भूत इत्याह–' मनोगतः ' मनसि गतो–व्यवस्थितो, नाद्यापि वचसा प्रकाशित-स्वरूप इति भावः, पुनः कथम्भूत इत्याह–आध्यात्मिकः आत्मन्यध्यध्यात्मं तत्र भव आध्यात्मिकः, आत्मविषय इति भावः, सङ्कल्पश्च द्विधा भवति–कश्चिद् ध्यानात्मकः अपरश्चिन्तात्मकः, तत्रायं चिन्तात्मक इति प्रतिपादनार्थमाह–चिन्तितः चिन्ता सञ्जाता-ऽस्येति चिन्तितः, चिन्तात्मक इति भावः, सोऽपि कश्चिदभिलाषात्मको भवति कश्चिदन्यथा, तत्रायमभिलाषात्मकः, तथा चाह–प्रार्थितं प्रार्थनं प्रार्थो णिजन्तत्वात् अलप्रत्ययः, प्रार्थः सञ्जातोऽस्येति प्रार्थितः, अभिलाषात्मक इति भावः, किंस्वरूप इत्याह–

एवं (सेयं) (मे) खलु समणे भगवं महावीरे जंबूदीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पाणयरीए बहिया अंबसालवणे चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति, तं महाफलं खलु तहारूवाणं भगवंताणं णामगोयस्सावि सवणयाए किमंग पुण अहिगमणवंदणणमंसणप-डिपुच्छणपज्जुवासणयाए ?, एगस्सावि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए ?, किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ?, तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वंदामि णमंसामि सक्कारेमि सम्मा-णेमि कल्लाणं मंगलं चेतियं देवयं पज्जुवासामि, एयं मे पेच्चा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेसाए आणु-

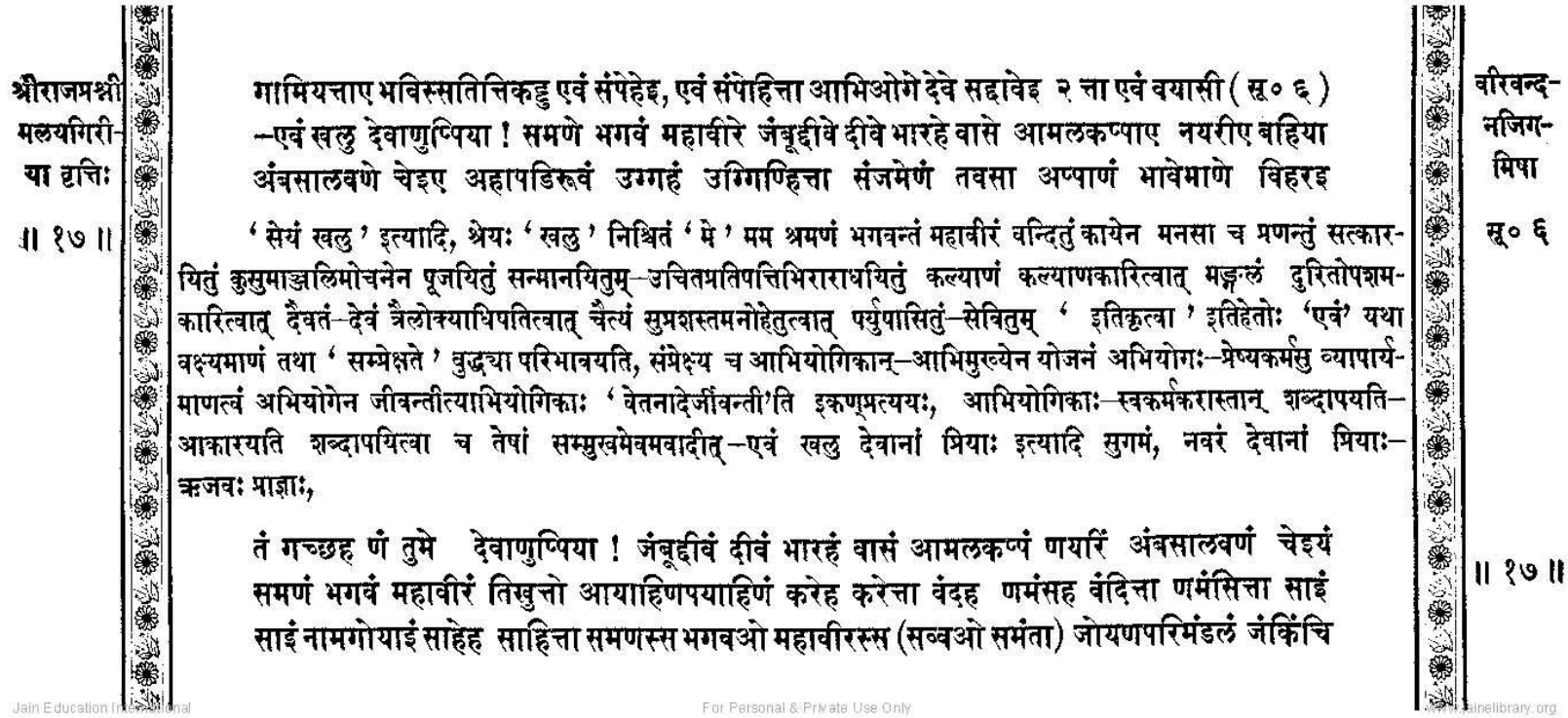
१ वंदिउं नमंसिउं सक्कारेउं सम्माणेउं (वृत्तिः) २ पज्जुवासिउं (वृत्तिः)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थं सूर्याभदेवस्य आगमनं

प्रत सूत्रांक [६]

दीप अनुक्रम [६]



श्रीराजप्रश्नी-
यमलयगिरी-
या वृत्तिः
॥ १७ ॥

गामियत्ताए भविस्सतित्तिकट्टु एवं संपेहेइ, एवं संपेहित्ता आभिओगे देवे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी (सू० ६)
–एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पाए नयरीए बहिया अंबसालवणे चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ

'सेयं खलु' इत्यादि, श्रेयः 'खलु' निश्चितं 'मे' मम श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दितुं कायेन मनसा च प्रणन्तुं सत्कारयितुं कुसुमाञ्जलिमोचनेन पूजयितुं सन्मानयितुम्–उचितप्रतिपत्तिभिराराधयितुं कल्याणं कल्याणकारित्वात् मङ्गलं दुरितोपशमकारित्वात् दैवतं–देवं त्रैलोक्याधिपतित्वात् चैत्यं सुप्रशस्तमनोहेतुत्वात् पर्युपासितुं–सेवितुम् 'इतिकृत्वा' इतिहेतोः 'एवं' यथा वक्ष्यमाणं तथा 'सम्प्रेक्षते' बुद्ध्या परिभावयति, संप्रेक्ष्य च आभियोगिकान्–आभिमुख्येन योजनं अभियोगः–प्रेष्यकर्मसु व्यापार्यमाणत्वं अभियोगेन जीवन्तीत्याभियोगिकाः 'वेतनादेर्जीवन्ती'ति इकण्प्रत्ययः, आभियोगिकाः–स्वकर्मकरास्तान् शब्दापयति–आकारयति शब्दापयित्वा च तेषां सम्मुखमेवमवादीत्–एवं खलु देवानां प्रियाः इत्यादि सुगमं, नवरं देवानां प्रियाः–ऋजवः प्राज्ञाः,

तं गच्छह णं तुमे देवाणुप्पिया ! जंबूद्दीवं दीवं भारहं वासं आमलकप्पं णयरिं अंबसालवणं चेइयं समणं भगवं महावीरं तिखुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेह करेत्ता वंदह णमंसह वंदित्ता णमंसित्ता साइं साइं नामगोयाइं साहेह साहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स (सव्वओ समंता) जोयणपरिमंडलं जंकिंचि

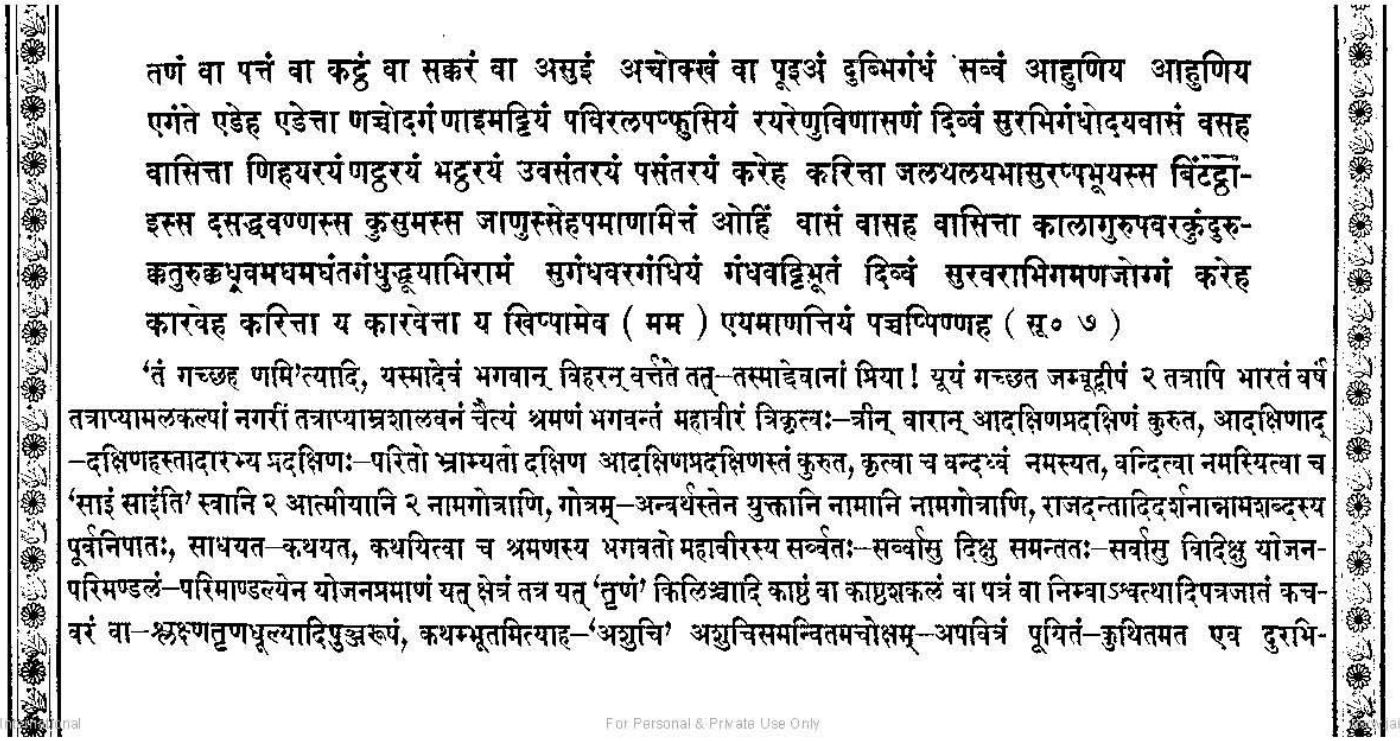
वीरवन्द-
नजिग-
मिषा
सू० ६
॥ १७ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थे सूर्याभदेवस्य आगमनं

प्रत सूत्रांक [७]

दीप अनुक्रम [७]



तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा सक्करं वा असुइं अचोक्खं वा पूइअं दुब्भिगंधं सव्वं आहुणिय आहुणिय एगंते एडेह एडेत्ता णच्चोदगंणाइमट्टियं पविरलपप्फुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदयवासं वसह वासित्ता णिहयरयंणट्ठरयं भट्ठरयं उवसंतरयं पसंतरयं करेह करित्ता जलथलयभासुरप्पभूयस्स विंटट्ठा-इस्स दसद्धवण्णस्स कुसुमस्स जाणुस्सेहपमाणमित्तं ओहिं वासं वासह वासित्ता कालागुरुपवरकुंदुरु-क्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धूयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूतं दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं करेह कारवेह करित्ता य कारवेत्ता य खिप्पामेव (मम) एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह (सू० ७)

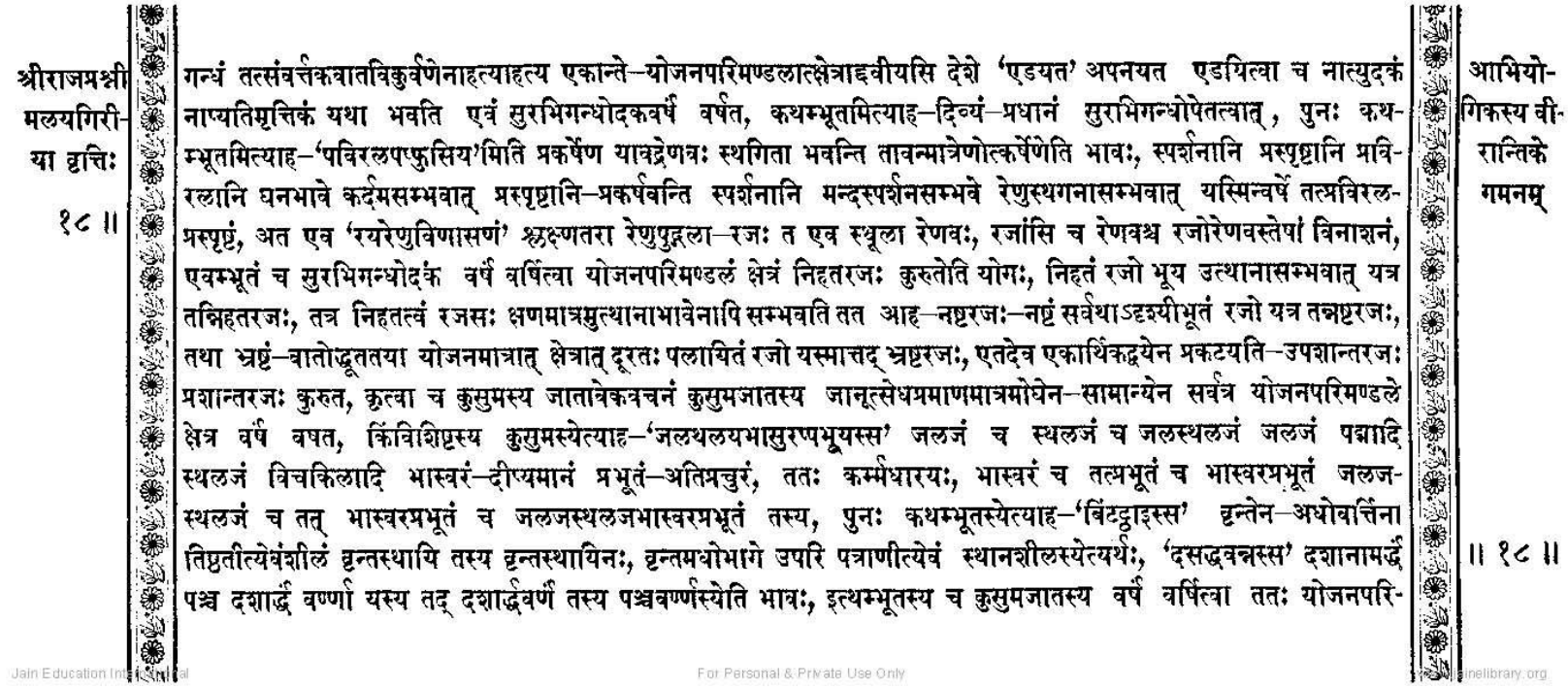
'तं गच्छह णमि'त्यादि, यस्मादेवं भगवान् विहरन् वर्त्तते तत्—तस्मादेवानां प्रिया! यूयं गच्छत जम्बूद्वीपं २ तत्रापि भारतं वर्षं तत्राप्यामलकल्पां नगरीं तत्राप्याम्रशालवनं चैत्यं श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रिकृत्वः—त्रीन् वारान् आदक्षिणप्रदक्षिणं कुरुत, आदक्षिणाद् —दक्षिणहस्तादारभ्य प्रदक्षिणः—परितो भ्राम्यतो दक्षिण आदक्षिणप्रदक्षिणस्तं कुरुत, कृत्वा च वन्दध्वं नमस्यत, वन्दित्वा नमस्यित्वा च 'साइं साईंति' स्वानि २ आत्मीयानि २ नामगोत्राणि, गोत्रम्—अन्वर्थस्तेन युक्तानि नामानि नामगोत्राणि, राजदन्तादिदर्शनान्नामशब्दस्य पूर्वनिपातः, साधयत—कथयत, कथयित्वा च श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य सर्व्वतः—सर्व्वासु दिक्षु समन्ततः—सर्वासु विदिक्षु योजन-परिमण्डलं—परिमाण्डल्येन योजनप्रमाणं यत् क्षेत्रं तत्र यत् 'तृणं' किलिञ्चादि काष्ठं वा काष्ठशकलं वा पत्रं वा निम्बाऽश्वत्थादिपत्रजातं कच-वरं वा—श्लक्ष्णतृणधूल्यादिपुञ्जरूपं, कथम्भूतमित्याह—'अशुचि' अशुचिसमन्वितमचोक्षम्—अपवित्रं पूयितं—कुथितमत एव दुरभि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थं सूर्याभदेवस्य आगमनं

प्रत सूत्रांक [७]

दीप अनुक्रम [७]



श्रीराजप्रश्नी मलयगिरी- या वृत्तिः १८ ॥

गन्धं तत्संवर्त्तकवातविकुर्वणेनाहत्याहत्य एकान्ते–योजनपरिमण्डलात्क्षेत्राद्बहीयसि देशे 'एडयत' अपनयत एडयित्वा च नात्युदकं नाप्यतिमृत्तिकं यथा भवति एवं सुरभिगन्धोदकवर्षं वर्षत, कथम्भूतमित्याह–दिव्यं–प्रधानं सुरभिगन्धोपेतत्वात्, पुनः कथम्भूतमित्याह–'पविरलपप्फुसिय'मिति प्रकर्षेण यावद्रेणवः स्थगिता भवन्ति तावन्मात्रेणोत्कर्षेणेति भावः, स्पर्शनानि प्रस्पृष्टानि प्रविरलानि घनभावे कर्दमसम्भवात् प्रस्पृष्टानि–प्रकर्षवन्ति स्पर्शनानि मन्दस्पर्शनसम्भवे रेणुस्थगनासम्भवात् यस्मिन्वर्षे तत्प्रविरलप्रस्पृष्टं, अत एव 'रयरेणुविणासणं' श्लक्ष्णतरा रेणुपुद्गला–रजः त एव स्थूला रेणवः, रजांसि च रेणवश्च रजोरेणवस्तेषां विनाशनं, एवम्भूतं च सुरभिगन्धोदकं वर्षं वर्षित्वा योजनपरिमण्डलं क्षेत्रं निहतरजः कुरुतेति योगः, निहतं रजो भूय उत्थानासम्भवात् यत्र तन्निहतरजः, तत्र निहतत्वं रजसः क्षणमात्रमुत्थानाभावेनापि सम्भवति तत आह–नष्टरजः–नष्टं सर्वथाऽदृश्यीभूतं रजो यत्र तन्नष्टरजः, तथा भ्रष्टं–वातोद्धूततया योजनमात्रात् क्षेत्रात् दूरतः पलायितं रजो यस्मात्तद् भ्रष्टरजः, एतदेव एकार्थिकद्वयेन प्रकटयति–उपशान्तरजः प्रशान्तरजः कुरुत, कृत्वा च कुसुमस्य जातावेकवचनं कुसुमजातस्य जानूत्सेधप्रमाणमात्रमोघेन–सामान्येन सर्वत्र योजनपरिमण्डले क्षेत्र वर्षं वषत, किंविशिष्टस्य कुसुमस्येत्याह–'जलथलयभासुरप्पभूयस्स' जलजं च स्थलजं च जलस्थलजं जलजं पद्मादि स्थलजं विचकिलादि भास्वरं–दीप्यमानं प्रभूतं–अतिप्रचुरं, ततः कर्म्मधारयः, भास्वरं च तत्प्रभूतं च भास्वरप्रभूतं जलजस्थलजं च तत् भास्वरप्रभूतं च जलजस्थलजभास्वरप्रभूतं तस्य, पुनः कथम्भूतस्येत्याह–'विंटट्ठाइस्स' वृन्तेन–अधोवर्त्तिना तिष्ठतीत्येवंशीलं वृन्तस्थायि तस्य वृन्तस्थायिनः, वृन्तमधोभागे उपरि पत्राणीत्येवं स्थानशीलस्येत्यर्थः, 'दसद्धवन्नस्स' दशानामर्द्धं पञ्च दशार्द्धं वर्णा यस्य तद् दशार्द्धवर्णं तस्य पञ्चवर्णस्येति भावः, इत्थम्भूतस्य च कुसुमजातस्य वर्षं वर्षित्वा ततः योजनपरि-

आभियोगिकस्य वीरान्तिके गमनम्

॥ १८ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थं सूर्याभदेवस्य आभियोगिक-देवानाम् आगमनं

प्रत सूत्रांक [७]

दीप अनुक्रम [७]

मण्डलं क्षेत्रं दिव्यं–प्रधानं सुरवराभिगमनयोग्यं कुरुत, कथम्भूतं सत् कृत्वा सुरवराभिगमनयोग्यं कुरुतेत्यत आह–'कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामं' कालागुरुः प्रसिद्धः प्रवरः–प्रधानः कुन्दुरुक्कः–चीडा तुरुक्कं–सिल्हकं कालागुरुश्च प्रवरकुन्दुरुक्कतुरुक्कौ च कालागुरुप्रवरकुन्दुरुक्कतुरुक्काः तेषां धूपस्य यो मघमघायमानो गन्धः उद्धूतः–इतस्ततो विप्रसृतस्तेनाभिरामं–रमणीयं कालागुरुप्रवरकुन्दुरुक्कतुरुक्कधूपमघमघायमानगन्धोद्धूताभिरामं तथा शोभनो गन्धो येषां ते सुगन्धास्ते च ते वरगन्धाश्च–वासाः सुगन्धवरगन्धास्तेषां गन्धः सोऽस्यास्तीति सुगन्धवरगन्धिकं 'अतोऽनेकस्वरादिति' इकप्रत्ययः, अत एव गन्धवर्त्तिभूतं, सौरभ्यातिशयात् गन्धगुटिकाकारमिति भावः, न केवलं स्वयं कुरुत किन्त्वन्यैरपि कारयत, कृत्वा च कारयित्वा च एतां ममाज्ञप्तिकां क्षिप्रमेव–शीघ्रमेव प्रत्यर्पयत, यथोक्तकार्यसम्पादनेन सफलां कृत्वा निवेदयत ॥

तए णं ते आभियोगिया देवा सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहियं (दसनहं) सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, एवं देवो तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेत्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमंति, उत्तरपुरच्छिमं दिसिभागं अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति २ त्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सरन्ति, तंजहा–रयणाणं वयराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोइरसाणं अंजणपुलगाणं अंजणाणं रयणाणं जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहाबायरे पुग्गले

४

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थं सूर्याभदेवस्य आभियोगिक-देवानाम् आगमनं

प्रत सूत्रांक [८]

दीप अनुक्रम [८]

परिसाडंति अहा० त्ता अहासुहुमे पुग्गले परियायंति २ त्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति २ त्ता उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति २ त्ता ताए उक्किट्ठाए (पसत्थाए) तुरियाए चवलाए चंडाए जयणाए सिग्घाए उद्धूयाए दिव्वाए देवगइए तिरियमसंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झं मज्झेणं वीईवयमाणे २ जेणेव जंबुद्दीवे २ जेणेव भारहे वासे जेणेव आमलकप्पा णयरी जेणेव अंबसालवणे चेतिए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति २ त्ता वंदंति नमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता एवं वदासि–अम्हे णं भंते ! सूरियाभस्स देवस्स आभियोगा देवा देवाणुप्पियाणं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो (सू० ८)

'तए णमि'त्यादि, ततो णमिति पूर्ववत् ते आभियोगिका देवाः सूर्याभेन देवेन एवमुक्ताः सन्तो 'हट्ठतुट्ठ जाव हियया' इति, अत्र यावच्छब्दकरणात् 'हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया' इति द्रष्टव्यं, 'करयलपरिग्गहिय'मित्यादि, द्वयोर्हस्तयोरन्योऽन्यान्तरिताङ्गुलिकयोः सम्पुटरूपतया यदेकत्र मीलनं सा अञ्जलिस्तां करतलाभ्यां परिगृहीता–निष्पादिता करतलपरिगृहीता तां दश नखा यस्यां एकैकस्मिन् हस्ते नखपञ्चकसम्भवात् दशनखा तां तथा आवर्त्तनमावर्त्तः शिरस्यावर्त्तो यस्याः सा शिरस्यावर्त्ता 'कण्ठेकाल उरसिलोमे'त्यादिवत् अलुक् समासः, ताम्,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थं सूर्याभदेवस्य आभियोगिक-देवानाम् आगमनं

प्रत सूत्रांक [८]

दीप अनुक्रम [८]

अत एवाह–मस्तके कृत्वा विनयेन वचनं सूर्याभस्य देवस्य प्रतिशृण्वन्ति–अभ्युपगच्छन्ति, कथम्भूतेन विनयेनेत्याह–'एवं देवो तहत्ति आणाए' इति हे देव! 'एवं' यथैव यूयमादिशत तथैवाज्ञया–भवदादेशेन कुर्म्म इत्येवंरूपेण, देवो इत्यत्रौकार आमन्त्रणे प्राकृतलक्षणवशात्, यथा 'अज्जो' इत्यत्र, प्रतिश्रुत्य वचनं 'उत्तरपुरच्छिमं' उत्तरपूर्वदिग्भागं, ईशानकोणमित्यर्थः, तस्यात्यन्तप्रशस्तत्वात्, अपक्रामन्ति–गच्छन्ति, अपक्रम्य च वैक्रियसमुद्घातेन–वैक्रियकरणाय प्रयत्नविशेषेण समोहनन्ति–समवहन्यन्ते समवहता भवन्तीत्यर्थः, समवहताश्चात्मप्रदेशान् दूरतो विक्षिपन्ति, तथा चाह–'संखेज्जाणि जोयणाणि दंडं निस्सरन्ति' दण्ड इव दण्डः–ऊर्द्ध्वाध आयतः शरीरबाहल्यो जीवप्रदेशसमूहस्तं शरीराद्बहिः सङ्ख्येयानि योजनानि यावन्निसृजन्ति–निष्काशयन्ति, निसृज्य तथाविधान् पुद्गलानाददते, एतदेव दर्शयति, तद्यथा–रत्नानां कर्केतनादीनां १ वज्राणां २ वैडूर्याणां ३ लोहिताक्षाणां ४ मसारगल्लाणं ५ हंसगर्भाणां ६ पुद्गलानां ७ सुगन्धिकानां ८ ज्योतीरसानां ९ अञ्जनपुलकानां १० अञ्जनानां ११ रजतानां १२ जातरूपाणां १३ अङ्कनानां १४ स्फटिकानां १५ रिष्टानां १६ योग्यान् यथाबादरान्–असारान् पुद्गलान् परिशातयन्ति यथासूक्ष्मान्–सारान् पुद्गलान् पर्यादत्ते पर्यादाय चिकीर्षितरूपनिर्माणार्थं द्वितीयमपि वारं वैक्रियसमुद्घातेन समवहन्यन्ते, समवहत्य च यथोक्तानां रत्नादीनामयोग्यान् यथाबादरान् पुद्गलान् परिशातयन्ति यथासूक्ष्मानाददते आदाय च ईप्सितानि उत्तरवैक्रियाणि विकुर्वन्ति, ननु रत्नादीनां प्रायोग्याः पुद्गला औदारिका उत्तरवैक्रियरूपयोग्याश्च पुद्गला ग्राह्या वैक्रियास्ततः कथमेवं युक्तमिति?, उच्यते, इह रत्नादिग्रहणं सारतामात्रप्रतिपादनार्थं, ततो रत्नादीनामिवेति द्रष्टव्यमिति न कश्चिद्दोषः, अथवा औदारिका अपि तैः गृहीताः सन्तो वैक्रियतया परिणमन्ते, पुद्गलानां तत्तत्सामग्रीवशात् (तथा) तथापरिणमनस्वभावत्वादतोऽपि न कश्चिद्दोषः, तत एवमुत्तरवैक्रियाणि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थे सूर्याभदेवस्य आभियोगिक-देवानाम् आगमनं

प्रत सूत्रांक [८]

दीप अनुक्रम [८]

रूपाणि कृत्वा तया देवजनप्रसिद्धया उत्कृष्टया प्रशस्तविहायोगतिनामोदयात् प्रशस्तया शीघ्रसञ्चरणात् 'त्वरितया' त्वरा सञ्जाता अस्या इति त्वरिता तया प्रदेशान्तरक्रमणवती चपला तया क्रोधाविष्टस्येव श्रमासंवेदनात् चण्डेव चण्डा तया निरन्तरं शीघ्रत्वगुणयोगात् शीघ्रा तया शीघ्रया परमोत्कृष्टवेगपरिणामोपेता जवना तया वातोद्धूतस्य दिगन्तव्यापिनो रजस इव या गतिः सा उद्धूता तया दिव्यया–दिवि देवलोके भवा दिव्या तया देवगत्या तिर्यगसङ्ख्येयानां द्वीपसमुद्राणां मध्यंमध्येन, मध्येनेत्यर्थः, गृहंगृहेण मध्यंमध्येन पदंपदेन सुखंसुखेनेत्यादयः शब्दाश्चिरन्तनव्याकरणेषु सुसाधवः प्रतिपादिता इति नायमपप्रयोगः, अवपतन्तोऽवपतन्तः, समागच्छन्त इति भावः, पूर्वान् पूर्वान् द्वीपसमुद्रान् व्यतिक्रामन्तो व्यतिक्रामन्तः, उल्लङ्घयन्त इत्यर्थः, शेषं सुगमं यावत्

देवाइ समणे भगवं महावीरे देवा एवं वदासी–पोराणमेयं देवा! जीयमेयं देवा! किच्चमेयं देवा! करणिज्जमेयं देवा! आइन्नमेयं देवा! अब्भणुण्णायमेयं देवा! जण्णं भवणवइवाणमंतरजोइसियवेमाणिया देवा अरहंते भगवंते वंदंति नमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता तओ साइं साइं णामगोयाइं साहिंति तं पोराणमेयं देवा! जाव अब्भणुण्णायमेयं देवा! ॥ (सू० ९)

'देवाइ समणे'त्यादि, देवादियोगात् देवादि श्रमणो भगवान् महावीरस्तान् देवानेवमवादीत्–पुराणेषु भवं पौराणमेतत्कर्म भो देवाः!, चिरन्तनैरपि देवैः कृतमिदं चिरन्तनान् तीर्थङ्करान् प्रतीति तात्पर्यार्थः, जीतमेतद्–वन्दनादिकं तीर्थकृद्भ्यो भो देवा!,

१ इतः प्राक् अब्भणुण्णायमेयमिति वृत्तिः ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थं सूर्याभदेवस्य आभियोगिक-देवानाम् आगमनं

प्रत सूत्रांक [९]

दीप अनुक्रम [९]

यतोऽभ्यनुज्ञातमेतत् सर्वैरपि तीर्थकृद्भिर्भो देवास्ततः कर्त्तव्यमेतद् युष्मादृशां भो देवाः !, एतदेव व्याचष्टे–करणीयमेतद् भो देवाः !, आचीर्णमेतत्–कल्पभूतमेतद् भो देवाः !, किं तदित्याह–'जन्न'मित्यादि, यत् 'णमि'ति पूर्ववत् भवनपतिव्यन्तरज्योतिष्कवैमानिका देवा अर्हतो भगवतो वन्दन्ते नमस्यन्ति, वन्दित्वा नमस्यित्वा च पश्चात्स्वानि २–आत्मीयानि २ नामगोत्राणि कथयन्ति, ततो युष्माकमपि भो देवाः ! पौराणमेतत् यावदाचीर्णमेतदिति ॥

तए णं ते आभिओगिया देवा समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव हियया समणं भगवं० वंदंति णमंसंति वंदित्ता णमंसित्ता उत्तरपुरत्थिच्छिमं दिसीभागं अवक्कमंति अवक्कमित्ता वेउव्विय-समुग्घाएणं समोहणंति २ त्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सरंति, तंजहा–रयणाणं जाव रिट्ठाणं अहाबा-यरे पोग्गले परिसाडंति अहाबायरे २ त्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति २ त्ता संवट्टवाए विउव्वंति, से जहानामए भइयदारए सिया तरुणे जुगवं बलवं अप्पायंके [थिरसंघयणे] थिरग्गहत्थे पडिपुण्णपाणिपायपिट्ठंतरोरु [संघाय] परिणए घननिचियवट्टवलिय (वलियवट्ट) खंधे चम्मेट्ठगदुघणमुट्ठि-यसमाहयगत्ते उरस्सबलसमन्नागए तलजमलजुयल [फलिहनिभ] बाहू लंघणपवणजइणपमद्दणसमत्थे छेए दक्खे पट्ठे कुसले मेहावी णिउणसिप्पोवगए एगं महं दंडसंपुच्छणिं वा सलागाहत्थगं वा वेणुसलाइयं वा गहाय रायंगणं वा रायंतेपुरं वा देवकुलं वा सभं वा पवं वा आरामं वा उज्जाणं वा अतुरियम-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थे सूर्याभदेवस्य आभियोगिक-देवानाम् आगमनं

प्रत सूत्रांक [१०]

दीप अनुक्रम [१०]

चवलमसंभंते निरंतरं सुनिउणं सव्वतो समंता संपमज्जेज्जा, एवामेव तेऽवि सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा संवट्टवाए विउव्वंति, संवट्टवाए २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वतो समंता जोयणपरिमण्डलं जं किंचि तणं वा पत्तं वा तहेव सव्वं आहुणिय २ एगंते एडेंति एगंते २ त्ता खिप्पामेव उवसमंति, खिप्पा २ त्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, दोच्चंपि २ त्ता अब्भवद्दलए विउव्वंति अब्भ० २ त्ता से जहाणामए भइगदारए सिया तरुणे जाव सिप्पोवगए एगं महं दगवारगं वा दगथालगं वा दगकलसगं वा दगकुंभगं वा आरामं वा जाव पवं वा अतुरिय जाव सव्वतो समंता आवरिसेज्जा, एवामेव तेऽवि सूरियाभस्स देवस्स आभियोगिया देवा अब्भवद्दलए विउव्वंति अब्भ० २ त्ता खिप्पामेव पयणुतणायन्ति २ यित्ता खिप्पामेव विज्जुयायंति २ त्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वओ समंता जोयणपरिमंडलं णच्चोदगं णातिमट्टियं तं पविरलपप्फुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदगं (वासं) वासंति वासेत्ता णिहयरयं णट्ठरयं भट्ठरयं उवसंतरयं पसंतरयं करेंति, २ त्ता खिप्पामेव उवसामंति २ त्ता तच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति २ त्ता पुप्फवद्दलए विउव्वंति, से जहाणामए मालागारदारए सिया तरुणे जाव सिप्पोवगए एगं महं पुप्फपडलगं वा पुप्फचंगेरियं वा पुप्फछज्जियं वा गहाय रायंगणं वा जाव सव्वतो समंता कयग्गाहगहियकरयलपब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवन्नेणं कुसु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थे सूर्याभदेवस्य आगमनार्थे समार्जनादिः

प्रत सूत्रांक [१०]

दीप अनुक्रम [१०]

मेणं मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलितं करेज्जा, एवामेव ते सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा पुप्फवद्दलए विउव्वंति २ त्ता खिप्पामेव पयणुतणायन्ति खिप्पा २ त्ता जाव जोयणपरिमण्डलं जलथलयभासुरप्पभूयस्स विंटट्ठाइस्स दसद्धवन्नकुसुमस्स जाणुस्सेहपमाणमेत्तिं ओहिवासं वासंति वासित्ता कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूतं दिव्वं सुरवराभिगमणजोगं करेंति कारयंति करेत्ता य कारवेत्ता य खिप्पामेव उवसामंति २ त्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियातो अंबसालवणातो चेइयाओ पडिनिक्खमंति पडिनिक्खमित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणे २ जेणेव सोहम्मे कप्पे जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति २ त्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति २ त्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति ॥ (सू० १०)

'तए णमित्यादि' सुगमं, यावत् 'से जहानामए भइयदारए सिया' इत्यादि, स वक्ष्यमाणगुणो यथानामकोऽनिर्दिष्टनामकः कश्चिद्भृतिकदारकः–भृतिं करोति भृतिकः–कर्म्मकरः तस्य दारको भृतिकदारकः स्यात्, किंविशिष्ट इत्याह–तरुणः प्रवर्द्धमानवयाः (ननु दारकः वर्धमानवया) एव भवति ततः किमनेन विशेषणेन ?, न, आसन्नमृत्योः प्रवर्द्धमानवयस्त्वाभावात्, न ह्यासन्न-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थे सूर्याभदेवस्य आगमनार्थे समार्जनादिः

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [१०]

दीप अनुक्रम [१०]

मृत्युः प्रवर्धमानवया भवति, न च तस्य विशिष्टसामर्थ्यसम्भवः, आसन्नमृत्युत्वादेव, विशिष्टसामर्थ्यप्रतिपादनार्थश्चैवं आरम्भस्ततोऽर्थवद्विशेषणं, अन्ये तु व्याचक्षते–इह यद्द्रव्यं विशिष्टवर्णादिगुणोपेतमभिनवं च तत्तरुणमिति लोके प्रसिद्धं, यथा तरुणमिदमश्वत्थपत्रमिति, ततः स भृतिकदारकस्तरुण इति, किमुक्तं भवति ?–अभिनवो विशिष्टवर्णादिगुणोपेतश्चेति, बलं–सामर्थ्यं तद् यस्यास्तीति बलवान्, तथा युगं–सुषमदुष्षमादिकालः स स्वेन रूपेण यस्यास्ति न दोषदुष्टः स युगवान्, किमुक्तं भवति ?–कालोपद्रवोऽपि सामर्थ्यविघ्नहेतुः स चास्य नास्तीति प्रतिपत्त्यर्थमेतद्विशेषणं, युवा–यौवनस्थः, युवावस्थायां हि बलातिशय इत्येतदुपादानं, 'अप्पायंके' इति अल्पशब्दोऽभाववाची, अल्पः–सर्वथा अविद्यमान आतङ्को–ज्वरादिर्यस्य सोऽल्पातङ्कः स्थिरोऽग्रहस्तो यस्य स स्थिराग्रहस्तः, 'दढपाणिपायपिट्ठंतरोरुपरिणए' इति दृढानि–अतिनिविडचयापन्नानि पाणिपादपृष्ठान्तरोरूणि परिणतानि यस्य स दृढपाणिपादपृष्ठान्तरोरुपरिणतः, सुखादिदर्शनात् पाक्षिकः क्तान्तस्य परनिपातः, तथा घनम्–अतिशयेन निचितौ–निबिडतरचयमापन्नौ वलितावित्र वलितौ वृत्तौ स्कन्धौ यस्य स घननिचितवलितवृत्तस्कन्धः, 'चम्मेट्ठगदुघणमुट्ठियसमाहयगत्ते' इति चर्मेष्टकेन दुघणेन मुष्टिकया च–मुष्ट्या समाहत्य २ ये निचितीकृतगात्रास्ते चर्मेष्टकदुघणमुष्टिकसमाहतनिचितगात्राः, 'उरस्सबलसमण्णागए' इति उरसि भवं उरस्यं तच्च तद्बलं च उरस्यबलं तत्समन्वागतः–समनुप्राप्तः उरस्यबलसमन्वागतः आन्तरोत्साहवीर्ययुक्त इति भावः, 'तलजमलयुगलबाहू' तलौ–तालवृक्षौ तयोर्यमलयुगलं–समश्रेणीकं युगलं तलयमलयुगलं तद्वदातिसरलौ पीवरौ च बाहू यस्य स तलयमलयुगलबाहुः 'लंघणपवणजइणपमद्दणसमत्थे' इति लङ्घने–अतिक्रमणे प्लवने–मनाक् पृथुतरविक्रमवति गमने जवने–अतिशीघ्रगतौ प्रमर्दने–कठिनस्यापि वस्तुनश्चूर्णनकरणे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थे सूर्याभदेवस्य आगमनार्थे समार्जनादि:

समर्थः लङ्घनप्लवनजवनप्रमर्दनसमर्थः, क्वचित् 'लंघणपवणजइणवायामणसमत्थे' इति पाठः, तत्र व्यायामने–व्यायामकरणे इति व्याख्येयं, छेको–द्वासप्ततिकलापण्डितो, दक्षः–कार्याणामविलम्बितकारी प्रष्ठो–वाग्मी कुशलः–सम्यक्क्रियापरिज्ञानवान् मेधावी परस्पराव्याहतः–पूर्वापरानुसन्धानदक्षः, अत एव 'निपुणसिप्पोवगए' इति निपुणः यथा भवति एवं शिल्पं–क्रियासु कौशलं उपगतः–प्राप्तो निपुणशिल्पोपगतः एकं महान्तं शिलाकाहस्तकं–सरित्पर्णादिशलाकासमुदायं सरित्पर्णादिशलाकामयीं सम्मार्जनीमित्यर्थः, वाशब्दो विकल्पार्थो, 'दंडसंपुच्छणिं वा' इति दण्डयुक्ता सम्पुच्छनी–सन्मार्जनी दण्डसम्पुच्छनी तां वा 'वेणुसिलागिगं वा' इति वेणुः–वंशस्तस्य शलाका वेणुशलाकास्ताभिर्निर्वृत्ता वेणुशलाकिकी–वेणुशलाकामयी सम्मार्जनी तां वा गृहीत्वा राजाङ्गणं राजान्तःपुरं वा देवकुलं वा 'सभां वा' सन्तो भान्त्यस्यामिति सभा–ग्रामप्रधानानां नगरप्रधानानां यथासुखमवस्थानहेतुर्मण्डपिका तां वा 'प्रपां वा' पानीयशालां 'आरामं वेति' आगत्यागत्य भोगपुरुषा वरतरुणीभिः सह यत्र रमन्ते–क्रीडन्ति स आरामो-नगरान्नातिदूरवर्त्ती क्रीडाश्रयः तरुखण्डः तं 'उज्जाणं वेति' ऊर्द्धं विलम्बितानि प्रयोजनाभावात् यानानि यत्र तदुद्यानं–नगरात्यत्यासन्नवर्त्ती यानवाहनक्रीडागृहाद्याश्रयस्तरुखण्डः, तथा अत्वरितमचपलमसम्भ्रान्तं, त्वरायां चापल्ये सम्भ्रमे वा सम्यक्त्वरा-द्यपगमासम्भवात्, निरन्तरं न त्वपान्तरालमोचनेन, सुनिपुणं श्लक्ष्णस्याप्यचोक्षस्यापसारणेन, सर्वतः–सर्वासु दिक्षु विदिक्षु समन्ततः–सामस्त्येन सम्प्रमार्जयेत्, 'एवमेवे'त्यादि, सुगमं यावत् 'खिप्पामेव पच्चुवसमंती'त्यादि, एकान्ते तृणकाष्ठाद्यपनीय क्षिप्रमेव–शीघ्रमेव प्रत्युपशाम्यन्ति प्रत्येकं ते आभियोगिका देवाः 'उपशाम्यन्ति' संवर्त्तकवायुविकुर्वणान्निवर्त्तन्ते, संवर्त्तकवातविकुर्वणमुपसंहरन्तीति भावः, ततो 'दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति' संवर्त्तकवातविकुर्वणार्थं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थं सूर्याभदेवस्य आगमनार्थं समार्जनादिः

प्रत सूत्रांक [१०]

दीप अनुक्रम [१०]

हि यद्वेलाद्वयमपि वैक्रियसमुद्घातेन समवहननं तत्किलैकं इदं त्वब्भ्रवार्दलकविकुर्वणार्थं द्वितीयमत उक्तं–द्वितीयमपि वारं वैक्रियसमुद्घातेन समवहन्यन्ते (घ्नन्ति), समवहत्य चाब्भ्रवार्दलकानि विकुर्वन्ति, वाः–पानीयं तस्य दलानि वार्दलानि तान्येव वार्दलकानि मेघा इत्यर्थः, अपो बिभ्रतीति अब्भ्राणि–मेघाः, अब्भ्राणि सन्त्यस्मिन्निति 'अभ्रादिभ्य' इति मत्वर्थीयोऽप्रत्ययः, आकाशमित्यर्थः, अब्भ्रे वार्दलकानि अब्भ्रवार्दलकानि तानि विकुर्वन्ति, आकाशे मेघानि विकुर्वन्तीत्यर्थः, 'से जहानामए भइगदारगे सिया' इत्यादि पूर्ववत् 'निउणसिप्पोवगए एगं महमि'त्यादि, स यथानामको भृतिकदारक एकं महान्तं 'दकवारकं वा' मृत्तिकामयभाजनविशेषं दगकुंभगं वा' ति दकघटं, दकस्थालकं वा–कंसादिमयमुदकभृतं भाजनं दककलसं वा–उदकभृतं भृङ्गारं 'आवरिसिज्जा' इति आवर्षेत् आ–समन्तात्सिञ्चेत्, 'खिप्पामेव पतणतणायंति' अनुकरणवचनमेतत् प्रकर्षेण स्तनितं कुर्वन्तीत्यर्थः, 'पविज्जुयाइंति' त्ति प्रकर्षेण विद्युतं विदधति, 'पुप्फवद्दलए विउव्वंति' पुष्पवृष्टियोग्यानि वार्दलिकानि पुष्पवार्दलिकानि–पुष्पवर्षुकान् मेघान् विकुर्वन्तीति भावः, 'एगं महं पुप्फछज्जियं वा' एकां महतीं छाद्यते–उपरि स्थग्यते इति छाद्या छाद्यैव छाद्यिका पुष्पैर्भृता छाद्यिका पुष्पछाद्यिका तां वा पटलकानि–प्रतीतानि, 'कयग्गाहगहियकरयलपब्भट्ठविप्पमुक्केणं' ति इह मैथुनसंरम्भे यत् युवतेः केशेषु ग्रहणं स कचग्रहस्तेन गृहीतं कचग्रहगृहीतं तथा करतलाद्वि(प्र)मुक्तं सत्प्रभ्रष्टं करतलप्रभ्रष्टविप्रमुक्तं, प्राकृतत्वात्पदव्यत्ययस्ततो विशेषणसमासः, तेन, शेषं सुगमं यावत् 'जएणं विजएणं वद्धावेंति' जयेन विजयेन वर्द्धापयन्ति, जयतु देवेत्येवं वर्द्धापयन्तीत्यर्थः, तत्र जयः–परैरनभिभूयमानता प्रतापवृद्धिश्च विजयस्तु–परेषामसहमानानामभिभवोत्पादः, वर्द्धापयित्वा च तां पूर्वोक्तामाज्ञप्तिकां प्रत्यर्पयन्ति, आदिष्टकार्यसम्पादनेन निवेदयन्तीत्यर्थः ॥

॥ २३ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थे सूर्याभदेवस्य आगमनार्थे समार्जनादिः

प्रत सूत्रांक [११]

दीप अनुक्रम [११]

तए णं से सूरियाभे देवे तेसिं आभियोगियाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए पायत्ताणियाहिवइं देवं सद्दावेति सद्दावेत्ता एवं वदासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सूरियाभे विमाणे सभाए सुहम्माए मेघोघरसियगंभीरमहुरसद्दं जोयणपरिमंडलं सुस्सरघंटं तिक्खुत्तो उल्लालेमाणे २ महया २ सद्देणं उग्घोसेमाणे २ एवं वयासी–आणवेति णं भो सूरियाभे देवे गच्छति णं भो सूरियाभे देवे जंबूद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पाए णयरीए अंबसालवणे चेतिते समणं भगवं महावीरं अभिवंदए, तुब्भेऽवि णं भो देवाणुप्पिया ! सव्विड्ढीए जाव णातियरवेणं णियगपरिवाल सद्धिं संपरिवुडा सातिं २ जाणविमाणाइं दुरूढा समाणा अकालपरिहीणं चेव सूरियाभस्स देवस्स अंतियं पाउब्भवह । (सू० ११)

'तए णमि'त्यादि, ततो 'णमिति' पूर्ववत् स सूर्याभो देवस्तेषां 'आभियोगाणं'ति आ–समन्तादाभिमुख्येन युज्यन्ते–प्रेष्य–कर्मसु व्यापार्यन्ते इत्याभियोग्या आभियोगिका इत्यर्थः, तेषामाभियोग्यानां देवानामन्तिके–समीपे एनम्–अनन्तरोक्तमर्थं 'श्रुत्वा' श्रवणविषयं कृत्वा श्रवणानन्तरं च निशम्य–परिभाव्य 'हट्ठतुट्ठजावहियए' इति यावच्छब्दकरणात् 'हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए पीइमणे परमसोमणस्सिए हरिसवसविसप्पमाणहियए' इति द्रष्टव्यं, पदात्यनीकाधिपतिं देवं शब्दयति, शब्दयित्वा एवमवादीत्–क्षिप्रमेव भो देवानां प्रिय ! सभायां सुधर्मायां–सुधर्माभिधानायां 'मेघोघरसियगंभीरमहुरसद्द' मिति मेघानामोघः–सङ्घातो मेघौघस्तस्य रसितं–गर्जितं तद्वद्गम्भीरो मधुरश्च शब्दो यस्याः सा मेघौघरसितगम्भीरमधुरशब्दा तां 'जोयणपरिमंडलं' ति योजनं–योजनप्रमाणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थं गमनाय उद्घोषणा

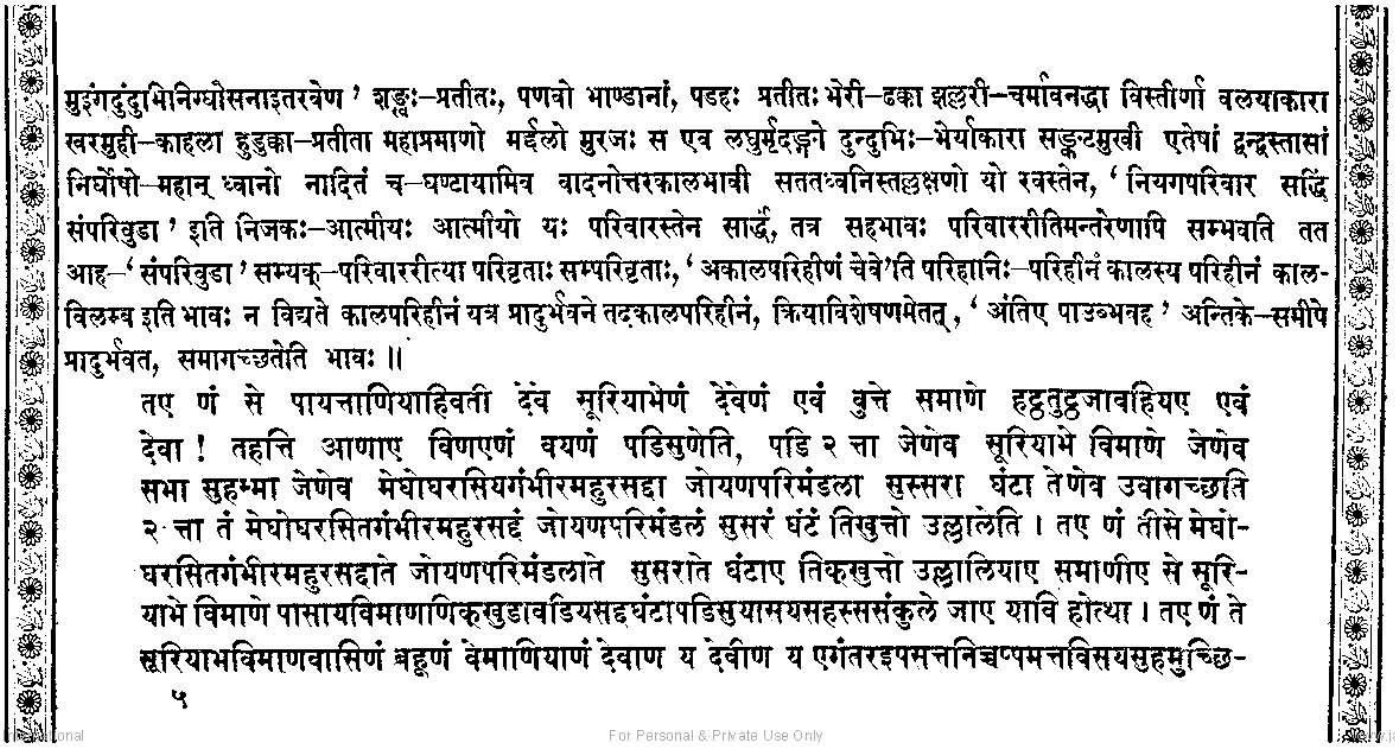
परिमण्डलं–गुणप्रधानोऽयं निर्देशः पारिमण्डल्यं यस्याः सा योजनपरिमण्डला तां सुस्वरां–सुस्वराभिधानां घण्टामुल्लालयन् २–ताडयन् ताडयन्नित्यर्थः, महता २ शब्देन उद्घोषयन्–उद्घोषणां कुर्वन् एवं वदति–आज्ञापयति भोः सूर्याभो देवो गच्छति भोः सूर्याभो देवो जम्बूद्वीपं भारतं वर्षं आमलकल्पां नगरीमाम्रशालवनं चैत्यं यथा (तत्र) श्रमणं भगवं महावीरं वन्दितुं, तत्–तस्मात्, 'तुब्भेऽवि णमि'ति यूयमाप 'णमि'ति पूर्ववद्,: देवानां प्रियाः! पूर्ववद् सर्वेद्धर्या–परिवारादिकया सर्वद्युत्या–यथाशक्तिविस्फारितेन समस्तेन शरीरतेजसा सर्वबलेन–समस्तेन हस्त्यादिसैन्येन सर्वसमुदायेन–स्वस्वाभियोग्यादिसमस्तपरिवारेण, सर्वादरेण–समस्तयावच्छक्तितुलनेन सर्वविभूत्या–सर्वया अभ्यन्तरवैक्रियकरणादिबाह्यरत्नादिसम्पदा सर्वविभूषया–यावच्छक्तिस्फारोदारशृङ्गारकरणेन 'सव्वसंभमेणं'ति' सर्वोत्कृष्टेन संभ्रमेन, सर्वोत्कृष्टसम्भ्रमो नामेह स्वनायकविषयबहुमानख्यापनपरा स्वनायकोपदिष्टकार्यसम्पादनाय यावच्छक्तित्वरितत्वरिता प्रवृत्तिः, 'सव्वपुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं' अत्र गन्धावासाः माल्यानि–पुष्पदामानि अलङ्काराः–आभरणविशेषाः, ततः समाहारो द्वन्द्वस्ततः सर्वशब्देन सह विशेषणसमासः, 'सव्वदिव्वतुडियसद्दसंनिनाएणमि'ति सर्वाणि च तानि दिव्यत्रुटितानि च सर्वदिव्यत्रुटितानि तेषां शब्दाः सर्वदिव्यत्रुटितशब्दाः तेषामेकत्र मीलनेन यः सङ्गतेन नितरां नादो–महान् घोषः सर्वत्रुटितदिव्यशब्दसन्निनादस्तेन, इह अल्पेष्वपि सर्वशब्दो दृष्टो यथा 'अनेन सर्वं पीतं घृत'मिति, तत आह–'महता इड्ढीए' इत्यादि महत्या यावच्छक्तितुलितया ऋद्ध्या–परिवारादिकया, एवं 'महता जुईए' इत्याद्यपि भावनीयं, तथा महतां–स्फूर्त्तिमतां वराणां–प्रधानानां तुडितानां–आतोद्यानां यमकसमकम्–एककालं पटुभिः पुरुषैः प्रवादितानां यो रवस्तेन, एतदेव विशेषेणाचष्टे–'संखपणवपडहभेरिझल्लरिखरमुहिहुडुक्कमुरव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थं गमनाय उद्घोषणा

प्रत सूत्रांक [११]

दीप अनुक्रम [११]



मुइंगदुंदुभिनिग्घोसनाइतरवेण ' शङ्खः–प्रतीतः, पणवो भाण्डानां, पडहः प्रतीतः भेरी–ढक्का झल्लरी–चर्मावनद्धा विस्तीर्णा वलयाकारा खरमुही–काहला हुडुक्का–प्रतीता महाप्रमाणो मर्दलो मुरजः स एव लघुर्मृदङ्गो दुन्दुभिः–भेर्याकारा सङ्कटमुखी एतेषां द्वन्द्वस्तासां निर्घोषो–महान् ध्वानो नादितं च–घण्टायामिव वादनोत्तरकालभावी सततध्वनिस्तल्लक्षणो यो रवस्तेन, ' नियगपरिवार सद्धिं संपरिवुडा ' इति निजकः–आत्मीयः आत्मीयो यः परिवारस्तेन सार्द्धं, तत्र सहभावः परिवाररीतिमन्तरेणापि सम्भवति तत आह–' संपरिवुडा ' सम्यक्–परिवाररीत्या परिवृताः सम्परिवृताः, ' अकालपरिहीणं चेवे'ति परिहानिः–परिहीनं कालस्य परिहीनं काल-विलम्ब इति भावः न विद्यते कालपरिहीनं यत्र प्रादुर्भवने तदकालपरिहीनं, क्रियाविशेषणमेतत्, ' अंतिए पाउब्भवह ' अन्तिके–समीपे प्रादुर्भवत, समागच्छतेति भावः ॥

तए णं से पायत्ताणियाहिवती देवे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठजावहियए एवं देवा ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेति, पडि २ त्ता जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव मेघोघरसियगंभीरमहुरसद्दा जोयणपरिमंडला सुस्सरा घंटा तेणेव उवागच्छति २ त्ता तं मेघोघरसितगंभीरमहुरसद्दं जोयणपरिमंडलं सुसरं घंटं तिक्खुत्तो उल्लालेति । तए णं तीसे मेघो-घरसितगंभीरमहुरसद्दाते जोयणपरिमंडलाते सुसराते घंटाए तिक्खुत्तो उल्लालियाए समाणीए से सूरि-याभे विमाणे पासायविमाणणिक्खुडावडियसद्दघंटापडिसुयासयसहस्ससंकुले जाए यावि होत्था । तए णं ते सूरियाभविमाणवासिणं बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य एगंतरइपमत्तनिच्चप्पमत्तविसयसुहमुच्छि-

५

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थं गमनाय उद्घोषणा

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [१२]

दीप अनुक्रम [१२]

याणं सुसरघंटारवविउलबोल (तुरियचवल) पडिबोहणे कए समाणे घोसणकोउहलादिन्नकन्नएगग्गचित्त-उवउत्तमाणसाणं से पायत्ताणीयाहिवई देवे तंसि घंटारवंसि णिसंतपसंतंसि महया महया सद्देणं उग्घोसे-माणे उग्घोसेमाणे एवं वदासी–हंत सुणंतु भवंतो सूरियाभविमाणवासिणो बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य! सूरियाभविमाणवइणो वयणं हियसुहत्थं आणवणियं भो! सूरियाभे देवे गच्छइ णं भो सूरियाभे देवे जंबूद्दीवं २ भारहं वासं आमलकप्पं नयरीं अंबसालवणं चेइयं समणं भगवं महावीरं अभिवंदए, तं तुब्भेऽवि णं देवाणुप्पिया! सव्विड्ढीए अकालपरिहीणा चेव सूरियाभस्स देवस्स अंतियं पाउब्भवह ॥ (सू० १२)

'तए णं से' इत्यादि 'जाव पडिसुणित्ता' इति, अत्र यावच्छब्दकरणात् 'करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवा! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ'त्ति द्रष्टव्यं, 'तिक्खुत्तो उल्लालेइ'त्ति त्रिकृत्वः–त्रीन् वारान् उल्लालयति–ताडयति, ततो 'ण' मिति वाक्यालङ्कारे तस्यां मेघौघरसितगम्भीरमधुरशब्दायां योजनपरि-मण्डलायां सुस्वराभिधानायां घण्टायां त्रिकृत्वस्ताडितायां सत्यां यत् सूर्याभविमानं (तत्र) तत्प्रासादनिष्कुटेषु च ये आपतिताः शब्दाः–शब्दवर्गणापुद्गलास्तेभ्यः समुच्छलितानि यानि घण्टाप्रतिश्रुताशतसहस्राणि–घण्टाप्रतिशब्दलक्षाणि तैः सङ्कुलमपि जातमभूत्, किमुक्तं भवति?–घण्टायां महता प्रयत्नेन ताडितायां ये विनिर्गताः शब्दपुद्गलास्तत्प्रतिघातवशतः सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च दिव्यानु-भावतः समुच्छलितैः प्रतिशब्दैः सकलमपि विमानमेकयोजनलक्षमानमपि बधिरितमजायत इति॥ एतेन द्वादशभ्यो योजनेभ्यः समागतः शब्दः श्रोत्रग्राह्यो भवति, न परतः, ततः कथमेकत्र ताडितायां घण्टायां सर्वत्र तच्छब्दश्रुतिरुपजायते? इति यच्चोद्यते

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थं गमनाय उद्घोषणा

तदपाकृतमवसेयं, सर्वत्र दिव्यानुभावतः तथारूपप्रतिशब्दोच्छलने यथोक्तदोषासम्भवात्। 'तए णमि'त्यादि, ततो 'णमि'ति पूर्ववत् तेषां सूर्याभदेवविमानवासिनां बहूनां वैमानिकदेवानां देवीनां च एकान्तेन सर्वात्मना रतौ–रमणे प्रसक्ता एकान्तरतिप्रसक्ता अत एव नित्यं–सर्वकालं प्रमत्ता नित्यप्रमत्ताः, कस्मादिति चेदत आह–' विसयसुहमुच्छियात्ति ' विषयसुखेषु मूर्च्छिता–अध्युपपन्ना विषयसुखमूर्च्छिता अध्युपपन्नास्ततो नित्यप्रमत्ताः, ततः पदत्रयस्य पददयमीलनेन विशेषणसमासः, तेषां ' सुसरघंटारवविउलबोलतुरियचवलपडिबोहणे ' इति सुस्वराभिधानाया घण्टाया रवस्य यः सर्वासु दिक्षु विदिक्षु च प्रतिशब्दोच्छलनेन विपुलः–सकलविमानव्यापितया विस्तीर्णो बोलः–कोलाहलस्तेन त्वरितं–शीघ्रं चपलं–आकुलं प्रतिबोधने कृते सति ' घोसणकोउहलादिन्नकन्नएगग्गचित्तउवउत्तमाणसाणमिति ' कीदृग् नाम घोषणं भविष्यतीत्येवं घोषणे कुतूहलेन दत्तौ कर्णौ यैस्ते घोषणकुतूहलदत्तकर्णाः, तथा एकाग्रं–घोषणाश्रवणैकविषयं चित्तं येषां ते एकाग्रचित्ताः, एकाग्रचित्तत्वेऽपि कदाचिदनुपयोगः स्यादत आह–उपयुक्तमानसाः, ततः पूर्वपदेन विशेषणसमासस्तेषां, पदात्यनीकाधिपतिर्देवस्तस्मिन् घण्टारवे ' निसंतपसंतंसी'ति नितरां शान्तो निश्शान्तः–अत्यन्तमन्दीभूतस्ततः प्रकर्षेण–सर्वात्मना शान्तः प्रशान्तः, ततश्छन्नप्ररूढ इत्यादाविव विशेषणसमासस्तस्मिन् महता २ शब्देन उद्घोषयन्नेवमवादीत्–' हन्त सुणंतु ' इत्यादि, हन्तेति हर्षे, उक्तं च–' हन्त हर्षेऽनुकम्पायामि'त्यादि, हर्षश्च स्वामिनाऽऽदिष्टत्वात् श्रीमन्महावीरपादवन्दनार्थं च प्रस्थानसमारम्भात्, शृण्वन्तु भवन्तो बहवः सूर्याभविमानवासिनो वैमानिकदेवा देव्यश्च, सूर्याभविमानपतेर्वचनं हितसुखार्थं हितार्थं सुखार्थं चेत्यर्थः, तत्र हितं जन्मान्तरेऽपि कल्याणावहं तथाविधकुशलं, सुखं तस्मिन् भवे निरुपद्रवता, आज्ञापयति भो देवानां प्रियाः! सूर्याभो देवो यथा गच्छति भोः! सूर्याभो देवो! 'जम्बूद्वीपं द्वीपमि'त्यादि तदेव यावदन्तिके प्रादुर्भवत ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थं गमनाय उद्घोषणा

प्रत सूत्रांक [१३-१४]

दीप अनुक्रम [१३-१४]

तए णं ते सूरियाभविमाणवासिणो बहवे वेमाणिया देवा देवीओ य पायत्ताणियाहिवइस्स देवस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जावहियया अप्पेगइया वंदणवत्तियाए अप्पेगइया पूयणवत्तियाए अप्पेगइया सक्कारवत्तियाए एवं संमाणवत्तियाए कोउहलवत्तियाए अप्पे० अमुयाइं सुणिस्सामो सुयाइं अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छिस्सामो, अप्पेगइया सूरियाभस्स देवस्स वयणमणुयत्तमाणा अप्पेगतिया अन्नमन्नमणुयत्तमाणा अप्पेगइया जिणभत्तिरागेणं अप्पेगइया धम्मोत्ति अप्पेगइया जीयमेयंति कट्टु सव्विड्ढीए जाव अकालपरिहीणा चेव सूरियाभस्स देवस्स अंतियं पाउब्भवंति। (सू० १३)। तए णं से सूरियाभे देवे ते सूरियाभविमाणवासिणो बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य अकालपरिहीणा चेव अंतियं पाउब्भवमाणे पासति पासित्ता हट्ठतुट्ठ जाव हियए आभिओगियं देवं सद्दावेति आभिओ० २ सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसयसंनिविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं ईहामियउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिंनररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तं खंभुग्गयवरवइरवेइया–परिगयाभिरामं विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्तंपिव अच्चीसहस्समालिणीयं रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं घंटावलिचलियमहुरमणहरसरं सुहं कंतं दरिसणिज्जं णिउणोचियमिसिमिसिंतमणिरयणघंटियाजालपरिक्खित्तं जोयणसयसहस्सवित्थिण्णं दिव्वं गमणसज्जं सिग्घ-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थे गमनाय देवानाम् प्रादुर्भावः

प्रत सूत्रांक [१३-१४]

दीप अनुक्रम [१३-१४]

गमणं णाम दिव्वं जाणं (जाणविमाणं) विउव्वाहि, विउव्वित्ता खिप्पामेव एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि (सू० १४)

'तए णं ते' इत्यादि, ततस्ते सूर्याभविमानवासिनो बहवो वैमानिका देवा देव्यश्च पदात्यनीकाधिपतेर्देवस्य समीपे एनम्–अनन्तरोक्तमर्थं श्रुत्वा 'णिसम्म हट्ठ तुट्ठ जाव हियया' इति यावत्करणात् 'हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिया पीइमणा परमसोमणस्सिया हरिसवसविसप्पमाणहियया' इति परिग्रहः, ' अप्पेगइया वंदणवत्तियाए' इति अपिः सम्भावनायामेककाः–केचन वन्दनप्रत्ययं वन्दनम्–अभिवादनं प्रशस्तकायवाग्मनःप्रवृत्तिरूपं तत्प्रत्ययं तत् मया भगवतः श्रीमन्महावीरस्य कर्त्तव्यमित्येवंनिमित्तम्, अप्येककाः पूजनप्रत्ययं पूजनं–गन्धमाल्यादिभिः समभ्यर्चनं अप्येककाः सत्कारप्रत्ययं सत्कारः–स्तुत्यादिगुणोन्नतिकरणं अप्येककाः सन्मानो–मानसः प्रीतिविशेषः, अप्येककाः कुतूहलजिनभक्तिरागेण–कुतूहलेन–कौतुकेन कीदृशो भगवान् सर्वज्ञः सर्वदर्शी श्रीमन्महावीर इत्येवंरूपेण यो जिने–भगवति वर्द्धमानस्वामिनि भक्तिरागो–भक्तिपूर्वकोऽनुरागस्तेन अप्येके सूर्याभस्य वचनम्–आज्ञामनुवर्त्तमानाः अप्येककाः अश्रुतानि–पूर्वमनाकर्णितानि स्वर्गमोक्षप्रसाधकानि वचांसि श्रोष्याम इतिबुद्ध्या अप्येककाः श्रुतानि–पूर्वमाकर्णितानि यानि शङ्कितानि जातानि तानि इदानीं निःशङ्कितानि करिष्याम इति बुद्ध्या अप्येकका जीतमेतत्–कल्प एष इतिकृत्वा, 'सव्विड्ढीए' इत्यादि प्राग्वत् ।

त ए णं से आभिओगिए देवे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठे जाव हियए करयलपरिग्गहियं जाव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त महावीरस्य वन्दनार्थे गमनाय देवानाम् प्रादुर्भावः

प्रत सूत्रांक [१५]

दीप अनुक्रम [१५]

पडिसुणेइ जाव पडिसुणेत्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमति अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ २त्ता संखेज्जाइं जोयणाइं जाव अहाबायरे पोग्गले २ त्ता अहासुहुमे पोग्गले परियाएइ २त्ता दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणित्ता अणेगखंभसयसन्निविट्ठं जाव दिव्वं जाणविमाणं विउव्विउं पवत्ते यावि होत्था । तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स तिदिसिं तओ तिसोवाणपडिरूवए विउव्वति, तंजहा–पुरच्छिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं, तेसिं तिसोवाणपडिरूवगाणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तंजहा–वइरामया णिम्मा रिट्ठामया पतिट्ठाणा वेरुलियामया खंभा सुवण्णरुप्पमया फलगा लोहितक्खमइयाओ सूइओ वयरामया संधी णाणामणिमया अवलंबणा अवलंबणबाहाओ य पासादीया जाव पडिरूवा । तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरओ तोरणे विउव्वति, तोरणा [तेसि णं] णाणामणिमएसु थंभेसु उवनिविट्ठसंनिविट्ठविविहमुत्तंतरोवचिया विविहतारारूवोवचिया [ईहामियउसभतुरगणरमगरविहगवालगकिंनररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्ता खंभुग्गय(वर)वइरवेइयापरिगताभिरामा विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्तावि अच्चीसहस्समालिणीया रूवगसहस्सकलिया भिसमाणा भिब्भिसमाणा चक्खुल्लोयणलेसा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाइया] जाव पडिरूवा

'तए णमि'त्यादि 'अणेगखंभसयसन्निविट्ठ'मिति अनेकेषु स्तम्भशतेषु सन्निविष्टं, 'लीलट्ठियसालिभंजियाग'मिति लीलया

॥ २७ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र शिर्षक-स्थाने मूल संपादने सूत्र-क्रम विषयक स्खलना दृश्यते–सू० १५ स्थाने सू० १४ इति मुद्रितं
सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

प्रत सूत्रांक [१५]

दीप अनुक्रम [१५]

स्थिता लीलास्थिताः, अनेन तासां पुत्तलिकानां सौभाग्यमावेदयति, लीलास्थिताः शालभञ्जिकाः–पुत्तलिका यत्र तत्तथा 'ईहा-मियउसभतुरगनरमगरविहगवालगकुंजररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तमि'ति ईहामृगा–वृका व्यालाः–स्वापदभुजङ्गा ईहामृगऋषभतुरगनरमगरविहगव्यालकिन्नररुरुसरभचमरकुञ्जरवनलतापद्मलतानां भक्त्या–विच्छित्त्या चित्रम्–आलेखो यत्र तत्तथा, तथा स्तम्भोद्गतया–स्तम्भोपरिवर्त्तिन्या वज्ररत्नमय्या वेदिकया परिगतं सत् यदभिरामं तत्स्तम्भोद्गतवज्रवेदिकापरिगताभिरामं, 'विज्जाहरजमलजुगलजंतजुत्तंपिव' इति विद्याधरयोर्यद् यमलयुगलं–समश्रेणीकं द्वन्द्वं विद्याधरयमलयुगलं तच्च तद् यन्त्रं च–सञ्चरिष्णुपुरुषप्रतिमाद्वयरूपं तेन युक्तं तदेव तथा, अर्चिषां–किरणानां सहस्रैर्मालिनीयं–परिचारणीयं अर्चिःसहस्रमालिनीयं, तथा रूपकसहस्रकलितं, 'भिसमाणंति' दीप्यमानं 'भिब्भिसमानम्' अतिशयेन देदीप्यमानं, 'चक्खुल्लोयणलेसंति' चक्षुः कर्तृ लोकने लिसतीव–दर्शनीयत्वातिशयात् श्लिष्यतीव यत्र तत्तथा, 'सुहफासंति' शुभः–कोमलः स्पर्शो यस्य तत्तथा, सश्रीकानि–सशोभाकानि रूपाणि–रूपकाणि यत्र तत् सश्रीकरूपं, 'घण्टावलिचलियमहुरमणहरसर'मिति घण्टावलेः–घण्टापङ्क्तेर्वातवशेन चलि-तायाः–कम्पितायाः मधुरः–श्रोत्रप्रियो मनोहरो–मनोनिर्वृतिकरः स्वरो यत्र तत्तथा, चलितशब्दस्य विशेष्यात्परनिपातः प्राकृत-त्वात्, 'शुभं' यथोदितवस्तुलक्षणोपेतत्वात् 'कान्तं' कमनीयं, अत एव दर्शनीयं, तथा 'निउणोचियमिसिमिसिंतमणिरयण-घंटियाजालपरिक्खित्त' मिति निपुणक्रियमुचितानि–खचितानि 'मिसिमिसिंत'त्ति देदीप्यमानानि मणिरत्नानि यत्र तत्तथा तेन, कथंभूतेन ? घण्टिकाजालेन –क्षुद्रघण्टिकासमूहेन परिः–सामस्त्येन क्षिप्तं–व्याप्तं यत्तत्तथा, योजनशतसहस्रविस्तीर्णं–योजनलक्षविस्तारं 'दिव्वं' प्रधानं 'गमनसज्जं' गमनप्रवणं शीघ्रगमननामधेयं 'जाणविमाणं' यानरूपं–वाहनरूपं विमानं यानविमानं, शेषं प्राग्वत्।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

'तस्स ण'मित्यादि, तस्स णमिति पूर्ववत् दिव्यस्य यानविमानस्य 'तिदिसिं' इति तिस्रो दिशः समाहृतास्त्रिदिक् तस्मिन् त्रिदिशि, तत्र 'तिसोवाणपडिरूवए' इति त्रीणि एकैकस्यां दिशि एकैकस्य भावात् त्रिसोपानप्रतिरूपकाणि प्रतिविशिष्टं रूपं येषां तानि प्रतिरूपकाणि त्रयाणां सोपानानां समाहारस्त्रिसोपानं त्रिसोपानानि च तानि प्रतिरूपकाणि चेति विशेषणसमासः, विशेषणस्यात्र परनिपातः प्राकृतत्वात् । 'तेसि णमि'त्यादि, तेषां च त्रिसोपानप्रतिरूपकाणामयमेतद्रूपो–वक्ष्यमाणस्वरूपो 'वण्णावासो' वर्णकनिवेशः प्रज्ञप्तः, तद्यथा–'वज्रमया' वज्ररत्नमया 'नेमी' नेमिभूमिका तत्र ऊर्द्धं निर्गच्छन्तः प्रदेशाः रिष्टरत्नमयानि प्रतिष्ठानानि-निष्ठानानि त्रिसोपानमूलप्रदेशाः वैडूर्यमयाः स्तम्भाः सुवर्णरूप्यमयानि फलकानि–त्रिसोपानाङ्गभूतानि, लोहिताक्षमय्यः सूचयः–फलकद्वयसम्बन्धविघटनाभावहेतुपादुकास्थानीयाः 'वज्रमया' वज्ररत्नपूरिताः 'सन्धयः' फलकद्वयापान्तरालप्रदेशाः नानामणिमयानि अवलम्ब्यन्ते इति अवलम्बनानि–अवतरतामुत्तरतां चालम्बनहेतुभूता अवलम्बनबाहातो विनिर्गताः केचिदवयवाः, 'अवलम्बणबाहाओ य'त्ति अवलम्बनबाहाश्च नानामणिमय्यः, अवलम्बनबाहा नाम उभयोः पार्श्वयोरवलम्बनाश्रयभूता भित्तयः, 'पासाईयाओ' इत्यादि पदचतुष्टयं प्राग्वत् । 'तेसि ण'मित्यादि, तेषां 'णमि'ति वाक्यालङ्कारे त्रिसोपानप्रतिरूपकाणां पुरतः प्रत्येकं तोरणं प्रज्ञप्तं, तेषां च तोरणानामयमेतद्रूपो वर्णावासो–वर्णकनिवेशः प्रज्ञप्तः, तद्यथा–तोरणा नानामणिमया इत्यादि, क्वचिदेवं पाठः–'तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरतो तोरणे विउव्वइ तोरणा नाणामणिमया' इत्यादि, मणयः–चन्द्रकान्ताद्याः, विविधमणिमयानि तोरणानि नानामणिमयेषु स्तम्भेषु उपनिविष्टानि–सामीप्येन स्थितानि, तानि च कदाचिच्चलानि अथवा अपदपतितानि वाऽऽशङ्क्येरन् तत आह–सम्यक्–निश्चलतया अपदपरिहारेण च निविष्टानि, ततो विशेषणसमासः, उपनिविष्टसन्निविष्टानि,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र शिर्षक-स्थाने मूल संपादने सूत्र-क्रम विषयक स्खलना दृश्यते–सू० १५ स्थाने सू० १४ इति मुद्रितं

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

प्रत सूत्रांक [१५]

दीप अनुक्रम [१५]

'विविहमुत्तंतरो (रारूवो) वचियाइं' इति विविधा–विविधविच्छित्तिकलिता मुक्ता–मुक्ताफलानि 'अन्तरे'ति अन्तराशब्दोऽगृहीतवीप्सोऽपि सामर्थ्याद्वीप्सां गमयति, अन्तरा २ रूपोपचितानि यावता यत्र तानि तथा, 'विविहतारारूवंचियाइं' विविधैस्तारारूपैः–तारिकारूपैरुपचितानि, तोरणेषु हि शोभार्थं तारिका निबध्यन्ते इति प्रतीतं लोकेऽपीति विविधतारारूपोपचितानि 'जाव पडिरूवा' इति यावत्करणात् 'ईहामिगउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिंनररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्ता खंभुग्गयवइरवेइयापरिगयाभिरामा विज्जाहरजमलजुगलजंतजुत्तावि व' एवं नाम स्तम्भद्वयसन्निविष्टानि तोरणानि व्यवस्थितानि यथा विद्याधरयमलयुगलयन्त्रयुक्तानीव प्रतिभासन्ते इति, 'अच्चीसहस्समालणीया रूवगसहस्सकलिया भिसिमाणा भिब्भिसमाणा चक्खुल्लोयणलेसा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा' इति परिग्रहः, क्वचिदेतत्साक्षाल्लिखितमपि दृश्यते।

तेसि णं तोरणाणं उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा पण्णत्ता, तंजहा–सोत्थियसिरिवच्छणंदियावत्तवद्धमाणगभद्दासणकलसमच्छदप्पणा (जाव पडिरूवा)। तेसिं च णं तोरणाणं उप्पिं बहवे किण्हचामरज्झए जाव सुक्किलचामरज्झए अच्छे मण्हे रुप्पपट्टे वइरामयदंडे जलयामलगंधिए सुरम्मे पासादीए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे विउव्वति। तेसि णं तोरणाणं उप्पिं बहवे छत्तातिच्छत्ते घंटाजुगले पडागाइपडागे उप्पलहत्थए कुमुदणलिणसुभगसोगंधियपोंडरीयमहापोंडरीयसतपत्तसहस्सपत्तहत्थए सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे विउव्वति। तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं विउव्वति।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

'तेसिं तोरणाणं उप्पिमि'त्यादि सुगमं, नवरं 'जाव पडिरूवा' इति यावच्छब्दकरणात् 'घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया समिरीया सउज्जोया पासाइया दरिसणिज्जा अभिरूवा' इति द्रष्टव्यं। 'तेसि णमि'त्यादि, तेषां तोरणानामुपरि बहवः कृष्णचामरयुक्ता ध्वजाः कृष्णचामरध्वजाः, एवं बहवो नीलचामरध्वजाः, लोहितचामरध्वजाः, हरितचामरध्वजाः, शुक्लचामरध्वजाः, कथम्भूता एते सर्वेऽपीत्यत आह–अच्छा–आकाशस्फटिकवदतिनिर्मलाः श्लक्ष्णाः–श्लक्ष्णपुद्गलस्कन्धनिर्मापिताः 'रूप्पपट्टा' इति रूप्यो–रूप्यमयो वज्रमयस्य दण्डस्योपरि पट्टो येषां ते रूप्यपट्टाः 'वइरदंडा' इति वज्रो–वज्ररत्नमयो दण्डो रूप्यपट्टमध्यवर्त्ती येषां ते वज्रदण्डाः, तथा जलजानामिव–जलजकुसुमानां पद्मादीनामिवामलो न तु कुद्रव्यगन्धसम्मिश्रो यो गन्धः स जलजामलगन्धः स विद्यते येषां ते जलजामलगन्धिकाः, अत एव सुरम्याः 'प्रासादीया' इत्यादिविशेषणचतुष्टयं प्राग्वत्। 'तेसि ण'मित्यादि, तेषां तोरणानामुपरि बहूनि छत्रातिच्छत्राणि–छत्रात्–लोकप्रसिद्धात् एकसङ्ख्याकात् अतिशायीनि छत्राणि उपर्यधोभावेन द्विसङ्ख्याकानि त्रिसङ्ख्याकानि वा छत्रातिच्छत्राणि, वाय्वपताकाभ्यो लोकप्रसिद्धाभ्योऽतिशायिन्यो दीर्घत्वेन विस्तारेण च पताकाः पताकातिपताकाः, बहूनि घण्टायुगलानि, बहूनि चामरयुगलानि, बहव उत्पलहस्ताः–उत्पलाख्यजलजकुसुमसमूहविशेषाः, एवं बहवः पद्महस्तकाः नलिनहस्तकाः सुभगहस्तकाः सौगन्धिकहस्तकाः शतपत्रहस्तकाः सहस्रपत्रहस्तकाः, पद्मादिविभागव्याख्यानं प्राग्वत्, एते च छत्रातिच्छत्रादयः सर्वेऽपि रत्नमया अच्छा–आकाशस्फटिकवदतिनिर्मला यावत्करणात् 'सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला निप्पंका निक्कंकडच्छाया सप्पभा समिरीया सउज्जोया पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा' इति परिग्रहः। 'तस्स णमि'त्यादि, तस्स णमिति पूर्ववत् दिव्यस्य यानविमानस्य अन्तः–मध्ये बहुसमः सन् रमणीयो बहुरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः, किंविशिष्ट? इत्याह—

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र शिर्षक-स्थाने मूल संपादने सूत्र-क्रम विषयक स्खलना दृश्यते–सू० १५ स्थाने सू० १४ इति मुद्रितं

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

प्रत सूत्रांक [१५]

दीप अनुक्रम [१५]

से जहाणामए आलिंगपुक्खरे ति वा मुइंगपुक्खरे इ वा सरतले इ वा करतले इ वा चंदमंडले इ वा सूरमंडले इ वा आयंसमंडले इ वा उरब्भचम्मे इ वा (वसहचम्मे इ वा) वराहचम्मे इ वा सीहचम्मे इ वा वग्घचम्मे इ वा मिगचम्मे इ वा (छगलचम्मे इ वा) दीवियचम्मे इ वा अणेगसंकुकीलगसहस्सवितए णाणाविहपंचवन्नेहिं मणीहिं उवसोभिते आवडपच्चावडसेढिपसेढिसोत्थिय (सोवत्थिय) पूसमाणग (वद्धमाणग) मच्छंडगमगरंडगजारामाराफुल्लावलिवपउमपत्तसागरतरंगवसंतलयपउमलयभत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सप्पभेहिं समरीइएहिं सउज्जोएहिं णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहिं उवसोभिएहिं तंजहा–किण्हेहिं णीलेहिं लोहिएहिं हालिद्देहिं सुक्किल्लेहिं, तत्थ णं जे ते किण्हा मणी तेसिणं मणीणं इमे एतारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहानामए जीमूतए इ वा अंजणे इ वा खंजणे इ वा कज्जले इ वा गवले इ वा गवलगुलिया इ वा भमरे इ वा भमरावलिया इ वा भमरपतंगसारे ति वा जंबूफले ति वा अद्दारिट्ठे इ वा परहुते इ वा गए इ वा गयकलभे इ वा किण्हसप्पे इ वा किण्हकेसरे इ वा आगासथिग्गले इ वा किण्हासोए इ वा किण्हकणवीरे इ वा किण्हबंधुजीवे इ वा, भवे एयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, (ओवम्मं समणाउसो !) ते णं किण्हा मणी इत्तो इट्ठतराए चेव कंततराए चेव मणामतराए चेव मणुण्णतराए चेव वण्णेणं पण्णत्ता । तत्थ णं जे ते नीला मणी तेसि णं मणीणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

प्रत सूत्रांक [१५]

दीप अनुक्रम [१५]

से जहानामए भिंगे इ वा भिंगपत्ते इ वा सुए इ वा सुयपिच्छे इ वा चासे इ वा चासपिच्छे इ वा णीली इ वा णीलीभेदे इ वा णीलीगुलिया इ वा सामा इ वा उच्चन्ते इ वा वणराती इ वा हलधरवसणे इ वा मोरग्गीवा इ वा अयसिकुसुमे इ वा बाणकुसुमे इ वा अंजणकेसियाकुसुमे इ वा नीलुप्पले इ वा णीलासोगे इ वा णीलबंधुजीवे इ वा णीलकणवीरे इ वा, भवेयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं णीला मणी एत्तो इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं पण्णत्ता। तत्थ णं जे ते लोहियगा मणी तेसि णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहाणामए उरब्भरुहिरे इ वा ससरुहिरे इ वा नररुहिरे इ वा वराहरुहिरे इ वा (महिसरुहिरे इवा) बालिंदगोवे इ वा बालदिवाकरे इ वा संझब्भरागे इ वा गुंजद्धरागे इ वा जासु-अणकुसुमे इ वा किंसुयकुसुमे इ वा पालियायकुसुमे इ वा जाइहिंगुलए ति वा सिलप्पवाले ति वा पवालअंकुरे इ वा लोहियक्खमणी इ वा लक्खारसगे ति वा किमिरागकंबले ति वा चीणपिट्ठरासी ति वा रत्तुप्पले इ वा रत्तासोगे ति वा रत्तकणवीरे ति वा रत्तबंधुजीवे ति वा, भवेयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं लोहिया मणी इत्तो इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं पं०। तत्थ णं जे ते हालिद्दा मणी तेसिणं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते– से जहाणामए चंपे ति वा चंपछल्ली ति वा (चंपगभेए इ वा) हलिद्दा इ वा हलिद्दाभेदे ति वा हलिद्दगुलिया ति वा हरियालिया

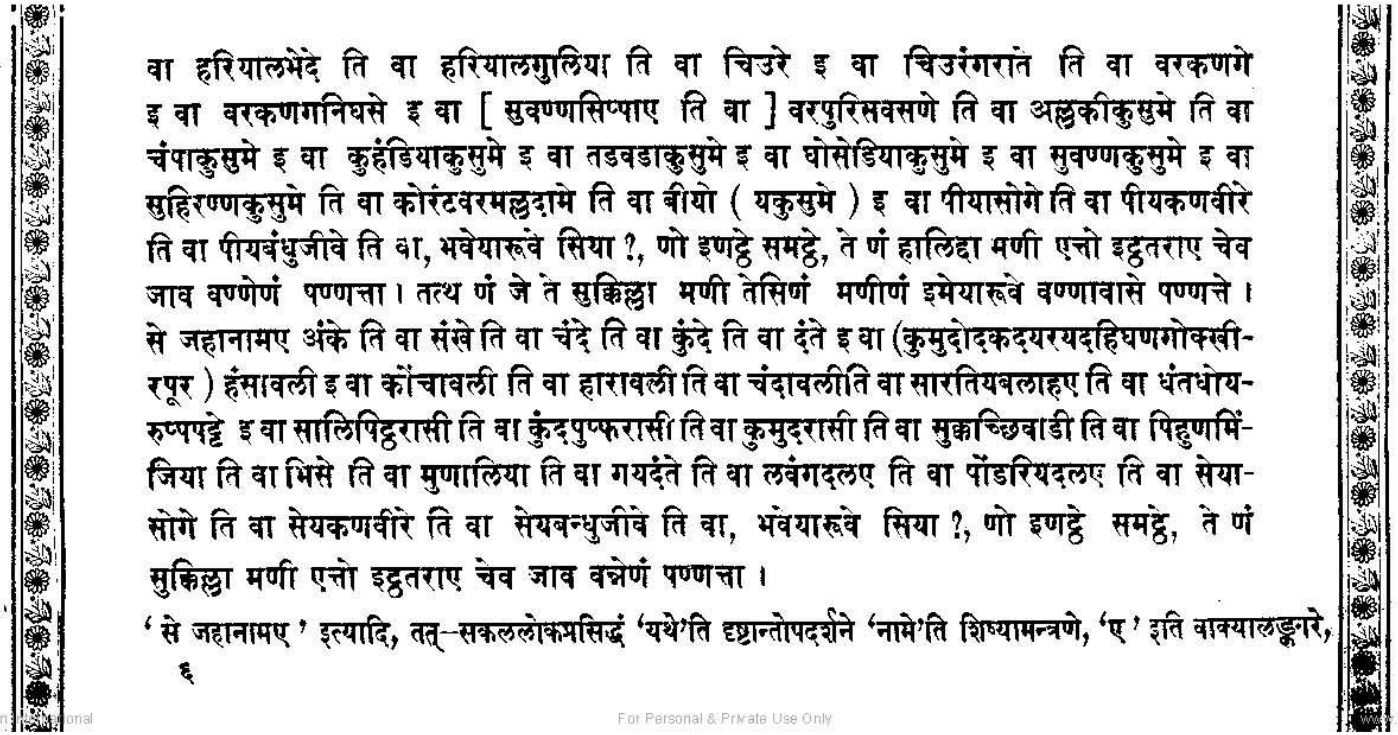
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र शिर्षक-स्थाने मूल संपादने सूत्र-क्रम विषयक स्खलना दृश्यते–सू० १५ स्थाने सू० १४ इति मुद्रितं

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

प्रत सूत्रांक [१५]

दीप अनुक्रम [१५]



वा हरियालभेदे ति वा हरियालगुलिया ति वा चिउरे इ वा चिउरंगरागे ति वा वरकणगे इ वा वरकणगनिघसे इ वा [सुवण्णसिप्पाए ति वा] वरपुरिसवसणे ति वा अल्लकीकुसुमे ति वा चंपाकुसुमे इ वा कुहंडियाकुसुमे इ वा तडवडाकुसुमे इ वा घोसेडियाकुसुमे इ वा सुवण्णकुसुमे इ वा सुहिरण्णकुसुमे ति वा कोरंटवरमल्लदामे ति वा बीयो (यकुसुमे) इ वा पीयासोगे ति वा पीयकणवीरे ति वा पीयबंधुजीवे ति वा, भवेयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं हालिद्दा मणी एत्तो इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं पण्णत्ता। तत्थ णं जे ते सुक्किल्ला मणी तेसिणं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते। से जहानामए अंके ति वा संखे ति वा चंदे ति वा कुंदे ति वा दंते इ वा (कुमुदोदकदयरयदहिघणगोक्खीरपूर) हंसावली इ वा कोंचावली ति वा हारावली ति वा चंदावलीति वा सारतियबलाहए ति वा धंतधोयरुप्पपट्टे इ वा सालिपिट्ठरासी ति वा कुंदपुप्फरासी ति वा कुमुदरासी ति वा सुक्कच्छिवाडी ति वा पिहुणमिंजिया ति वा भिसे ति वा मुणालिया ति वा गयदंते ति वा लवंगदलए ति वा पोंडरियदलए ति वा सेयासोगे ति वा सेयकणवीरे ति वा सेयबन्धुजीवे ति वा, भवेयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं सुक्किल्ला मणी एत्तो इट्ठतराए चेव जाव वन्नेणं पण्णत्ता।

'से जहानामए' इत्यादि, तत्–सकललोकप्रसिद्धं 'यथे'ति दृष्टान्तोपदर्शने 'नामे'ति शिष्यामन्त्रणे, 'ए' इति वाक्यालङ्कारे,

६

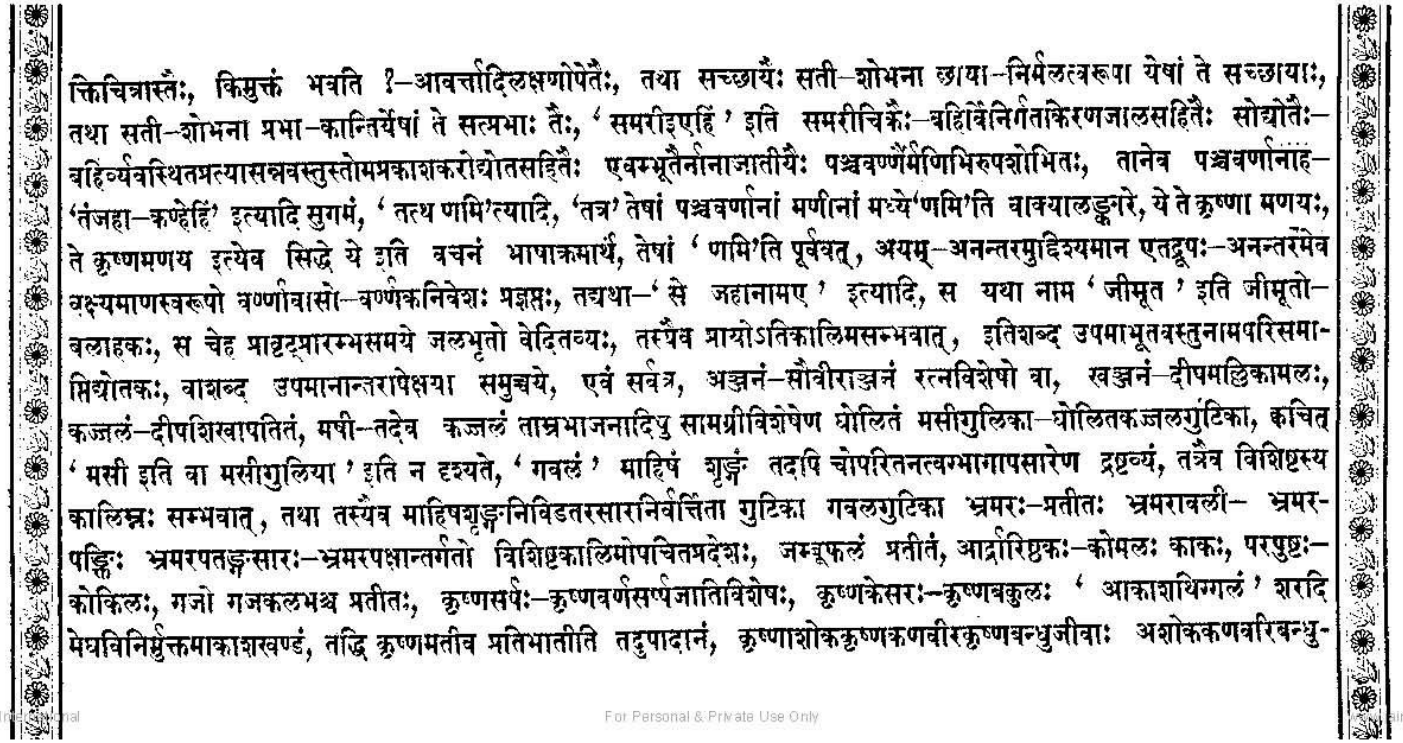
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

'आलिंगपुक्खरे इ वे'ति आलिङ्गेो–मुरजनामा वाद्यविशेषः तस्य पुष्करं–चर्मपुटं तत्किलात्यन्तसमामिति तेनोपमा क्रियते, इति–शब्दाः सर्वेऽपि स्वस्वोपमाभूतवस्तुपरिसमाप्तिद्योतकाः, वाशब्दाः समुच्चये, मृदङ्गेा लोकप्रतीतो मर्दलस्तस्य पुष्करं मृदङ्गपुष्करं 'परिपूर्णं' पानीयेन भृतं तडाकं सरस्तस्य तलम्–उपरितनो भागः सरस्तलं, करतलं प्रतीतं, चन्द्रमण्डलं सूर्यमण्डलं च यद्यपि तत्त्ववृत्त्या उत्तानीकृतार्द्धकपित्थाकारं पीठप्रासादापेक्षया वृत्तालेखमिति तद्गतो दृश्यमानो भागो न समतलस्तथापि प्रतिभासते समतल इति तदुपादानं, आदर्शमण्डलं सुप्रसिद्धं, 'उरब्भचम्मे इ वे'त्यादि, अत्र सर्वत्रापि 'अणेगसंकुकीलगसहस्सवितते' इति विशेषणयोगः, उरभ्रः–ऊरणः, वृषभवराहसिंहव्याघ्रच्छगलाः प्रतीताः द्वीपी–चित्रकः, एतेषां प्रत्येकं चर्म्म अनेकैः शङ्कुप्रमाणैः कीलकसहस्रैः, महद्भिर्हि कीलकैस्ताडितं प्रायो मध्ये क्षामं भवति, तथारूपताडासम्भवात् अतः शङ्कुग्रहणं, 'विततं' विततीकृतं ताडितमिति भावः, यथाऽत्यन्तं बहुसमं भवति तथा तस्यापि यानविमानस्यान्तर्बहुसमो भूमिभागः, पुनः कथम्भूत इत्याह–'णाणाविहपंचवन्नेहिं मणीहिं उवसोभिते' नानाविधाः–जातिभेदान्नानाप्रकारा ये पञ्चवर्णा मणयस्तैरुपशोभितः, कथम्भूतैरित्याह–'आवडे' इत्यादि, आवर्त्तादीनि मणीनां लक्षणानि, तत्रावर्त्तः प्रतीतः एकस्यावर्त्तस्य प्रत्यभिमुख आवर्त्तः प्रत्यावर्त्तः श्रेणिः–तथाविधबिन्दुजा पङ्क्तिस्तस्याश्च श्रेणेर्या च निर्गता अन्या श्रेणिः सा प्रश्रेणिः स्वस्तिकः प्रतीतः सौवस्तिकपुष्पमाणवौ लक्षणविशेषौ लोकात्प्रत्येतव्यौ वर्द्धमानकं–शरावसम्पुटं मत्स्यकाण्डकमकरकाण्डके प्रतीते 'जारमारेति' लक्षणविशेषौ सम्यग्मणिलक्षणवेदिनो लोकाद्वेदितव्यौ, पुष्पावलिपद्मपत्रसागरतरङ्गवासन्तीलतापद्मलताः सुप्रतीताः तासां भक्त्या–विच्छित्त्या चित्रम्–आलेखो येषु ते आवर्त्तप्रत्यावर्त्तश्रेणिप्रश्रेणिस्वस्तिकसौवस्तिकपुष्पमाणववर्द्धमानकमत्स्याण्डकमकराण्डकजारमारपुष्पावलिपद्मपत्रसागरतरङ्गवासन्तीलतापद्मलताभ-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं



किंचित्रास्तैः, किमुक्तं भवति ?–आवर्त्तादिलक्षणोपेतैः, तथा सच्छायैः सती–शोभना छाया–निर्मलत्वरूपा येषां ते सच्छायाः, तथा सती–शोभना प्रभा–कान्तिर्येषां ते सत्प्रभाः तैः, 'समरीइएहिं' इति समरीचिकैः–बहिर्विनिर्गताकिरणजालसहितैः सोद्योतैः–बहिर्व्यवस्थितप्रत्यासन्नवस्तुस्तोमप्रकाशकरोद्योतसहितैः एवम्भूतैर्नानाजातीयैः पञ्चवर्णैर्मणिभिरुपशोभितः, तानेव पञ्चवर्णानाह–'तंजहा–कण्हेहिं' इत्यादि सुगमं, 'तत्थ णमि'त्यादि, 'तत्र' तेषां पञ्चवर्णानां मणीनां मध्ये 'णमि'ति वाक्यालङ्कारे, ये ते कृष्णा मणयः, ते कृष्णमणय इत्येव सिद्धे ये इति वचनं भाषाक्रमार्थं, तेषां 'णमि'ति पूर्ववत्, अयम्–अनन्तरमुद्दिश्यमान एतद्रूपः–अनन्तरमेव वक्ष्यमाणस्वरूपो वर्णावासो–वर्णकनिवेशः प्रज्ञप्तः, तद्यथा–'से जहानामए' इत्यादि, स यथा नाम 'जीमूत' इति जीमूतो–बलाहकः, स चेह प्रावृट्प्रारम्भसमये जलभृतो वेदितव्यः, तस्यैव प्रायोऽतिकालिमसम्भवात्, इतिशब्द उपमाभूतवस्तुनामपरिसमाप्तिद्योतकः, वाशब्द उपमानान्तरापेक्षया समुच्चये, एवं सर्वत्र, अञ्जनं–सौवीराञ्जनं रत्नविशेषो वा, खञ्जनं–दीपमल्लिकामलः, कज्जलं–दीपशिखापतितं, मषी–तदेव कज्जलं ताम्रभाजनादिषु सामग्रीविशेषेण घोलितं मसीगुलिका–घोलितकज्जलगुटिका, क्वचित् 'मसी इति वा मसीगुलिया' इति न दृश्यते, 'गवलं' माहिषं शृङ्गं तदपि चोपरितनत्वग्भागापसारेण द्रष्टव्यं, तत्रैव विशिष्टस्य कालिम्नः सम्भवात्, तथा तस्यैव माहिषशृङ्गनिर्विडतरसारनिर्वर्त्तिता गुटिका गवलगुटिका भ्रमरः–प्रतीतः भ्रमरावली– भ्रमरपङ्क्तिः भ्रमरपतङ्गसारः–भ्रमरपक्षान्तर्गतो विशिष्टकालिमोपचितप्रदेशः, जम्बूफलं प्रतीतं, आर्द्रारिष्टकः–कोमलः काकः, परपुष्टः–कोकिलः, गजो गजकलभश्च प्रतीतः, कृष्णसर्पः–कृष्णवर्णसर्प्पजातिविशेषः, कृष्णकेसरः–कृष्णबकुलः 'आकाशथिग्गलं' शरदि मेघविनिर्मुक्तमाकाशखण्डं, तद्धि कृष्णमतीव प्रतिभातीति तदुपादानं, कृष्णाशोककृष्णकणवीरकृष्णबन्धुजीवाः अशोककणवरिबन्धु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

जीववृक्षभेदाः, अशोकादयो हि पञ्चवर्णा भवन्ति ततः शेषवर्णव्युदासार्थं कृष्णग्रहणं, एतावत्युक्ते त्वरावानिव शिष्यः पृच्छति–'भवे एयारूवे' इति भवेत् मणीनां कृष्णो वर्णः 'एतद्रूपो' जीमूतादिरूपः ?, सूरिराह–'नायमर्थः समर्थः' नायमर्थ उपपन्नो, यदुत–एवम्भूतः कृष्णो वर्णो मणीनामिति, यद्येवं तर्हि किमर्थं जीमूतादीनां दृष्टान्तत्वेनोपादानमत आह–औपम्यम्–उपमामात्रमेतत् उदितं हे श्रमण आयुष्मन् !, यावता पुनस्ते कृष्णा मणय 'इतो' जीमूतादेरिष्टतरका एव–कृष्णेन वर्णेन अभीप्सिततरका एव, तत्र किञ्चिदकान्तमपि केषाञ्चिदिष्टतमं भवति ततोऽकान्तताव्यवच्छित्त्यर्थमाह–'कान्ततरका एव' अतिस्निग्धमनोहारिकालिमोपचिततया जीमूतादेः कमनीयतरकाः, अत एव मनोज्ञतरका एव–मनसा ज्ञायते–अनुकूलतया स्वप्रवृत्तिविषयीक्रियते इति मनोज्ञं-मनोऽनुकूलं ततः प्रकर्षविवक्षायां तरप्प्रत्ययः, तत्र मनोज्ञतरमपि किञ्चिन्मध्यमं भवेत्, ततः सर्वोत्कर्षप्रतिपादनार्थमाह–'मन आपतरका एव' द्रष्टृणां मनांसि आप्नुवन्ति–आत्मवशतां नयन्तीति मनआपास्ततः प्रकर्षविवक्षायां तरप्प्रत्ययः, प्राकृतत्वाच्च पकारस्य मकारे मणामतरा इति भवति । तथा 'तत्थ णमि'त्यादि, तत्र तेषां मणीनां मध्ये ये ते नीला मणयस्तेषामयमेतद्रूपो वर्णावासो–वर्णकनिवेशः प्रज्ञप्तः, तद्यथा–'से जहानामए' इत्यादि स यथा नाम भृङ्गः–कीटविशेषः पक्ष्मलः 'भृङ्गपत्रं' तस्यैव भृङ्गाभिधानस्य कीटविशेषस्य पक्ष्मः, शुकः–कीरः, शुकपिच्छं–शुकस्य पत्रं, चाषः–पक्षिविशेषः, 'चाषपिच्छं' चाषपक्षः, नीली प्रतीता, नीलीभेदो–नीलीच्छेदः, नीलीगुलिका–गुलिकाद्रव्यगुटिका, श्यामाको–धान्यविशेषः, 'उच्चंतगो' दन्तरागः, वनराजी प्रतीता, हलधरो–बलदेवस्तस्य वसनं हलधरवसनं, तच्च किल नीलं भवति सदैव तथास्वभावतया, हलधरस्य नीलवस्त्रपरिधानात्, मयूरग्रीवापारापतग्रीवाअतसीकुसुमवाणवृक्षकुसुमानि प्रतीतानि, इत ऊर्द्धं क्वचित् 'इंदनीले इ वा महानीले इ वा मरगते

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

प्रत सूत्रांक [१५]

दीप अनुक्रम [१५]

इ वा ' इति दृश्यते तत्रेन्द्रनीलमहानीलमरकता रत्नविशेषाः प्रतीताः, अञ्जनकेशिका–वनस्पतिविशेषस्तस्य कुसुममञ्जनकेसिकाकुसुमं, नीलोत्पलं–कुवलयं, नीलाशोककर्णवीरनीलबन्धुजीवाअशोकादिवृक्षाविशेषाः, ' भवेयारूवे ' इत्यादि प्राग्वद् व्याख्येयं । तथा ' तत्थ णमि'त्यादि, ' तत्र ' तेषां मणीनां मध्ये ये ते लोहिता मणयस्तेषामयमेतद्रूपो वर्णावासः प्रज्ञप्तः, तद्यथा–' से जहानामए ' इत्यादि, तद्यथा नाम शशकरुधिरं उरभ्रः–ऊरणस्तस्य रुधिरं, वराहः–शूकरस्तस्य रुधिरं, मनुष्यरुधिरं महिषरुधिरं च प्रतीतं, एतानि हि किल शेषरुधिरेभ्यो लोहितवर्णोत्कटानि भवन्ति तत एतेषामुपादानं, बालेन्द्रगोपकः–सद्योजातेन्द्रगोपकः स हि प्रवृद्धः सन्नीषत्पाण्डुरो रक्तो भवति ततो बालग्रहणं, इन्द्रगोपकः–प्रथमप्रावृट्कालभावी कीटविशेषः, बालदिवाकरः–प्रथममुद्गच्छन् सूर्यः, सन्ध्याभ्ररागो–वर्षासु सन्ध्यासमयभावी अभ्ररागः, गुञ्जा–लोकप्रतीता तस्यार्द्धे रागो गुञ्जार्द्धरागः, गुञ्जाया हि अर्द्धमतिरक्तं भवति अर्द्धं चातिकृष्णमिति गुञ्जार्द्धग्रहणं, जपाकुसुमकिंसुककुसुमपारिजातकुसुमजात्यहिङ्गुला लोकप्रसिद्धाः, शिलाप्रवालं–प्रवालनामा रत्नविशेषः प्रवालाङ्कुरः–तस्यैव रत्नविशेषस्य प्रवालस्याङ्कुरः, स हि तत्प्रथमोद्गतत्वेनात्यन्तरक्तो भवति ततस्तदुपादानं, लोहिताक्षमणिर्नाम रत्नविशेषः, लाक्षारसकृमिरागरक्तकम्बलचीनपिष्टराशिरक्तोत्पलरक्ताशोककर्णवीररक्तबन्धुजीवाः प्रतीताः, ' भवेयारूवे ' इत्यादि प्राग्वत् । 'तत्थ णमि'त्यादि, ' तत्र ' तेषां मणीनां मध्ये ये हारिद्रा मणयस्तेषामेतद्रूपो वर्णावासः प्रज्ञप्तः, तद्यथा— ' से जहानामए ' इत्यादि , स यथानाम चम्पकः सामान्यतः सुवर्णचम्पको वृक्षः, चम्पकच्छल्ली–सुवर्णचम्पकत्वक्, चम्पकभेदः–सुवर्णचम्पकच्छेदः, हारिद्रा प्रतीता, हरिद्राभेदो–हरिद्राच्छेदः, हरिद्रागुटिका–हरिद्रासारनिर्वर्तिता गुटिका, हरितालिका–पृथिवीविकाररूपा प्रतीता हरितालिकाभेदो–हरितालिकाच्छेदः, हरितालिकागुटिका–हरितालिकासारनिर्वर्तिता गुलिका, चिकुरो–रागद्रव्यविशेषः,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [१५]

दीप अनुक्रम [१५]

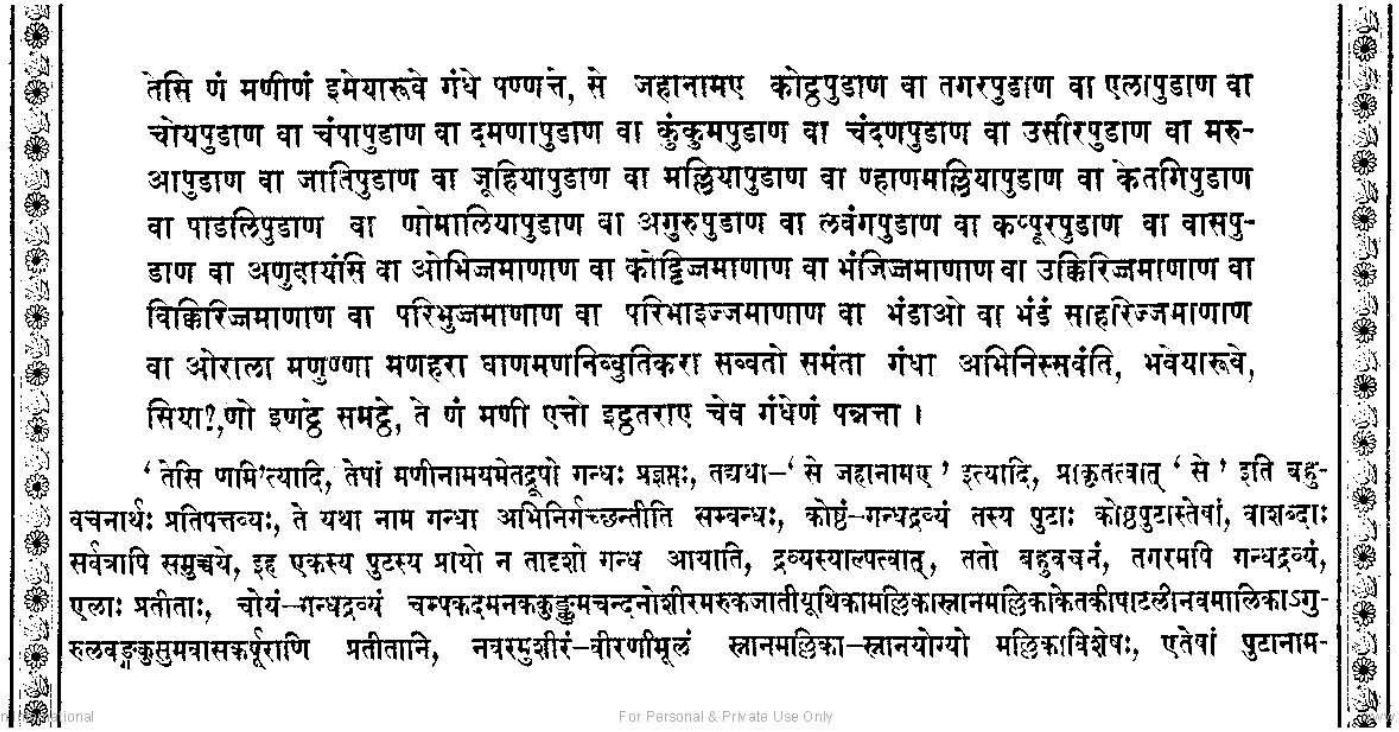
चिकुराङ्गरागः–चिकुरसंयोगनिर्मितो वस्त्रादौ रागः, वरकनकस्य–जात्यसुवर्णस्य यः कषपट्टके निघर्षः स वरकनकनिघर्षः वरपुरुषो–वासुदेवस्तस्य वसनं वरपुरुषवसनं, तच्च किल पीतमेव भवतीति तदुपादानं, अल्लकीकुसुमं लोकतोऽवसेयं, चम्पककुसुमं–सुवर्णचम्पकपुष्पं कूष्माण्डीकुसुमं–पुष्पफलीकुसुमं, कोरण्टकः–पुष्पजातिविशेषः तस्य दाम कोरण्टकदाम तडवडा–आउली तस्याः कुसुमं तडवडाकुसुमं, घोषातकीकुसुमं सुवर्णयूथिकाकुसुमं च प्रतीतं, सुहिरण्यका–वनस्पतिविशेषस्तस्याः कुसुमं सुहिरण्यकाकुसुमं, बीयको–वृक्षः प्रतीतः तस्य कुसुमं बीयककुसुमं, पीताशोकपीतकणवीरपीतबन्धुजीवाः प्रतीताः, 'भवेयारूवे' त्यादि प्राग्वत्। 'तत्थ णमि'–त्यादि, 'तत्र' तेषां मणीनां मध्ये ये शुक्ला मणयस्तेषामयमेतद्रूपो वर्णावासः प्रज्ञप्तः, तद्यथा 'से जहानामए' इत्यादि, स यथानाम 'अङ्के' रत्नविशेषः, शङ्खचन्द्र (दतकुन्द) कुमुदोदकोदधिजनगोक्षीरपूरकौञ्चावलिहारावलिहंसावलिबलाकावलयः प्रतीताः, चन्द्रावली–तडागादिषु जलमध्यप्रतिबिम्बितचन्द्रपङ्क्तिः, 'सारइयबलाहगे इति वा' शारदिकः–शरत्कालभावी बलाहको–मेघः, 'धन्तधोयरुप्पपट्टे इ वेति' ध्मातः–अग्निसम्पर्केण निर्मलीकृतो धौतः–भूतिखरण्टितहस्तसंतर्जनेन अतिनिशितीकृतो यो रूप्यपट्टो–रजतपत्रकं स ध्मातधौतरूप्यपट्टः, अन्ये तु व्याचक्षते–ध्मातेन–अग्निसंयोगेन यो धौतः–शोधितो रूप्यपट्टः स ध्मातधौतरूप्यपट्टः, शालिपिष्टराशिः–शालिक्षोदपुञ्जः, कुन्दपुष्पराशिः कुमुदराशिश्च प्रतीतः, 'सुक्कछेवाडिया इ वे' ति छेवाडिनाम–वल्लादिफलिका सा च क्वचिद्देशविशेषे शुष्का सती अतीव शुक्ला भवति ततस्तदुपादानं, 'पेहुणमिंजिया इ वेति' पेहुणं–मयूरपिच्छं तन्मध्यवर्त्तिनी पेहुणमिञ्जिका सा चातिशुक्लेति तदुपन्यासः, 'बिसं' पद्मनीकन्दः, 'मृणालं' पद्मतन्तु गजदन्तलवङ्गदलपुण्डरीकदलश्वेताशोकश्वेतकणवीरश्वेतबन्धुजीवाः प्रतीताः, 'भवेयारूवे सिया' इत्यादि प्राग्वत्। तदेवमुक्तं वर्णस्वरूपं, सम्प्रति गन्धस्वरूपं प्रतिपादनार्थमाह–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

प्रत सूत्रांक [१५]

दीप अनुक्रम [१५]



तेसि णं मणीणं इमेयारूवे गंधे पण्णत्ते, से जहानामए कोट्ठपुडाण वा तगरपुडाण वा एलापुडाण वा चोयपुडाण वा चंपापुडाण वा दमणापुडाण वा कुंकुमपुडाण वा चंदणपुडाण वा उसीरपुडाण वा मरुआपुडाण वा जातिपुडाण वा जूहियापुडाण वा मल्लियापुडाण वा ण्हाणमल्लियापुडाण वा केतगिपुडाण वा पाडलिपुडाण वा णोमालियापुडाण वा अगुरुपुडाण वा लवंगपुडाण वा कप्पूरपुडाण वा वासपुडाण वा अणुदायंसि वा ओभिज्जमाणाण वा कोट्ठिज्जमाणाण वा भंजिज्जमाणाण वा उक्किरिज्जमाणाण वा विक्किरिज्जमाणाण वा परिभुज्जमाणाण वा परिभाइज्जमाणाण वा भंडाओ वा भंडं साहरिज्जमाणाण वा ओराला मणुण्णा मणहरा घाणमणनिव्वुतिकरा सव्वतो समंता गंधा अभिनिस्सवंति, भवेयारूवे, सिया?,णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं मणी एत्तो इट्ठतराए चेव गंधेणं पन्नत्ता ।

'तेसि णमि'त्यादि, तेषां मणीनामयमेतद्रूपो गन्धः प्रज्ञप्तः, तद्यथा–'से जहानामए' इत्यादि, प्राकृतत्वात् 'से' इति बहुवचनार्थः प्रतिपत्तव्यः, ते यथा नाम गन्धा अभिनिर्गच्छन्तीति सम्बन्धः, कोष्ठं–गन्धद्रव्यं तस्य पुटाः कोष्ठपुटास्तेषां, वाशब्दाः सर्वत्रापि समुच्चये, इह एकस्य पुटस्य प्रायो न तादृशो गन्ध आयाति, द्रव्यस्यालपत्वात्, ततो बहुवचनं, तगरमपि गन्धद्रव्यं, एलाः प्रतीताः, चोयं–गन्धद्रव्यं चम्पकदमनककुङ्कुमचन्दनोशीरमरुकजातीयूथिकामल्लिकास्नानमल्लिकाकेतकीपाटलीनवमालिकाऽगुरुलवङ्गकुसुमवासकर्पूराणि प्रतीतानि, नवरमुशीरं–वीरणीमूलं स्नानमल्लिका–स्नानयोग्यो मल्लिकाविशेषः, एतेषां पुटानाम-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

नुवाते–आम्नायकविवक्षितपुरुषाणामनुकूले वाते वाति सति उद्घिद्यमानानामुद्घाट्यमानानां वाशब्दः सर्वत्रापि समुच्चये 'कुट्टिज्जमाणाण वा' इति इह पुटैः परिमितानि यानि कोष्ठादीनि गन्धद्रव्याणि तान्यपि परिमेये परिमाणोपचारात् कोष्ठपुटादीनीत्युच्यन्ते तेषां कुट्यमानानाम्–उदूखले सुद्यमानानां 'भंजिज्जमाणाण वा' इति श्लक्ष्णखण्डीक्रियमाणानां' एतच्च विशेषणद्वयं कोष्ठादिद्रव्याणामवसेयं, तेषामेव प्रायः कुट्टनश्लक्ष्णखण्डीकरणसम्भवात्, न तु यूथिकादीनां, 'उक्किरिज्जमाणाण वा' इति क्षुरिकादिभिः कोष्ठादिपुटानां कोष्ठादिद्रव्याणां वा उत्कीर्यमाणानां 'विकिरिज्जमाणाण वा' इति विकीर्यमाणानामितस्ततो विप्रकीर्यमाणानां 'परिभुज्जमाणाण वा' परिभोगाय उपयुज्यमानानां, क्वचित् 'परिभाइज्जमाणाण वा' इति पाठस्तत्र परिभाइज्जमाणानां–पार्श्ववर्त्तिभ्यो मनाग् दीयमानानां, 'भंडाओ भंडं साहरिज्जमाणाण वा' इति भाण्डात्–स्थानादेकस्मादन्यद् भाण्डं–भाजनान्तरं संहियमाणानां उदाराः–स्फारास्ते चामनोज्ञा अपि स्युरत आह–मनोज्ञा–मनोऽनुकूलाः तच्च मनोज्ञत्वं कुत इत्याह–मनोहराः–मनो हरन्ति–आत्मवशं नयन्तीति मनोहराः, इतस्ततो विप्रकीर्यमाणेन मनोहरत्वं, कुतः? इत्याह–घ्राणमनोनिर्वृतिकराः, एवंभूताः सर्वतः–सर्वासु दिक्षु समन्ततः–सामस्त्येन गन्धा अभिनिस्सरन्ति, जिघ्रतामभिमुखं निस्सरन्ति, क्वचित् 'अभिनिस्सवन्तीति' पाठः, तत्रापि स एवार्थो नवरमभितः स्रवन्तीति शब्दसंस्कारः, एवमुक्ते शिष्यः पृच्छति–'भवेयारूवे सिया' स्यादेतत् यथा भवेद् एतद्रूपस्तेषां मणीनां गन्धः?, सूरिराह–'नो इणट्ठे समट्ठे' इत्यादि प्राग्वत्।

तेसि णं मणीणं इमेयारूवे फासे पण्णत्ते, से जहानामए आइणेति वा रूए ति वा बूरे इ वा णवणी-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

प्रत सूत्रांक [१५]

दीप अनुक्रम [१५]



ए इ वा हंसगब्भतूलिया इ वा सिरीसकुसुमनिचये इ वा बालकुसुमपत्तरासी ति वा, भवेयारूवे सिया?, णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं मणी एत्तो इट्ठतराए चेव जाव फासेणं पन्नत्ता ॥

'तेसि णमि'त्यादि, तेषां 'णमि'ति प्राग्वन्मणीनामयमेतद्रूपः स्पर्शः प्रज्ञप्तः, तद्यथा–'से जहानामए' इत्यादि, तद्यथा–अजिनकं–चर्ममयं वस्त्रं रुतं–प्रतीतं बूरो–वनस्पतिविशेषः नवनीतं–म्रक्षणं हंसगर्भतूलीशिरीषकुसुमनिचयाश्च प्रतीताः, 'बालकुमुदपत्तरासी इव' इति बालानि–अचिरकालजातानि यानि कुमुदपत्राणि तेषां राशिर्बालकुमुदपत्रराशिः, क्वचिद्'बालकुसुमपत्रराशिः' इति पाठः, 'भवे एयारूवे' इत्यादि प्राग्वत् ।।

तए णं से आभियोगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं महं पिच्छाघरमंडवं विउव्वइ अणेगखंभसयसंनिविट्ठं अब्भुग्गयसुकयवरवेइयातोरणवररइयसालभंजियागं सुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठियपसत्थवेरुलियविमलखंभं णाणामणि [कणगरयण] खचियउज्जलबहुसमसुविभत्तदेसभाइए ईहामियउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिन्नररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तं कंचणमणिरयणथूभियागं णाणाविहपंचवण्णघंटापडागपरिमंडियग्गसिहरं चवलं मरीतिकवयं विणिम्मुयंतं लाउल्लोइयमहियं गोसीस [सरस] रत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितलं उवचियचंदणकलसं चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागं आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं पंचवण्णसरससुरभि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

प्रत सूत्रांक [१५]

दीप अनुक्रम [१५]

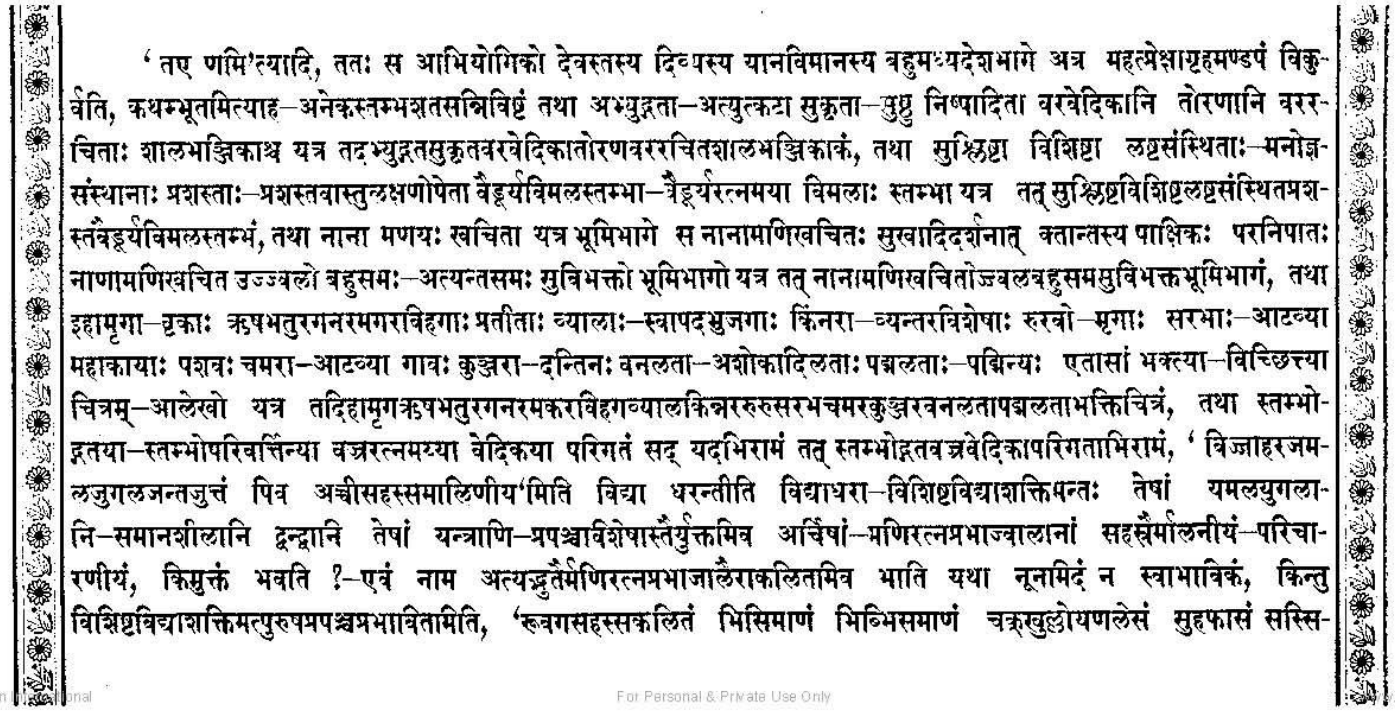
मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं कालागुरुपवरकुंदरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूतं दिव्वं तुडियसद्दसंपणाइयं अच्छरगणसंघविकिण्णं पासाइयं दरिसणिज्जं जाव पडिरूवं। तस्स णं पिच्छाघरमंडवस्स बहुसमरमणिज्जभूमिभागं विउव्वति जाव मणीणं फासो। तस्स णं पेच्छाघरमंडवस्स उल्लोयं विउव्वति पउमलयभत्तिचित्तं जाव पडिरूवं। तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महं एगं वइरामयं अक्खाडगं विउव्वति। तस्स णं अक्खाडयस्स बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं महेगं मणिपेढियं विउव्वति अट्ठजोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वं मणिमयं अच्छं सण्हं जाव पडिरूवं। तीसे णं मणिपेढियाए उवरि एत्थ णं महेगं सिंहासणं विउव्वइ, तस्स णं सीहासणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते–तवणिज्जमया चक्कला रययामया सीहा सोवण्णिया पाया णाणामणिमयाइं पायसीसगाइं जंबूणयमयाइं गत्ताइं वइरामया संधी णाणामणिमये वेच्चे, से णं सीहासणे ईहामियउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिंनररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तं[सं]सारसारोवचियमणिरयणपायवीढे अच्छरगमिउमसूरगणवतयकुसंतलिम्बकेसरपच्चत्थुयाभिरामे सुविरइयरयत्ताणे उवचियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छायणे रत्तंसुअसंवुए सुरम्मे आईणगरूयबूरणवणीयतूलफासे मउए पासाइए ४।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

प्रत सूत्रांक [१५]

दीप अनुक्रम [१५]



'तए णमि'त्यादि, ततः स आभियोगिको देवस्तस्य दिव्यस्य यानविमानस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र महत्प्रेक्षागृहमण्डपं विकुर्वति, कथम्भूतमित्याह–अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टं तथा अभ्युद्गता–अत्युत्कटा सुकृता–सुष्ठु निष्पादिता वरवेदिकानि तोरणानि वररचिताः शालभञ्जिकाश्च यत्र तदभ्युद्गतसुकृतवरवेदिकातोरणवररचितशालभञ्जिकाकं, तथा सुश्लिष्टा विशिष्टा लष्टसंस्थिताः–मनोज्ञसंस्थानाः प्रशस्ताः–प्रशस्तवास्तुलक्षणोपेता वैडूर्यविमलस्तम्भा–वैडूर्यरत्नमया विमलाः स्तम्भा यत्र तत् सुश्लिष्टविशिष्टलष्टसंस्थितप्रशस्तवैडूर्यविमलस्तम्भं, तथा नाना मणयः खचिता यत्र भूमिभागे स नानामणिखचितः सुखादिदर्शनात् क्तान्तस्य पाक्षिकः परनिपातः नानामणिखचित उज्ज्वलो बहुसमः–अत्यन्तसमः सुविभक्तो भूमिभागो यत्र तत् नानामणिखचितोज्ज्वलबहुसमसुविभक्तभूमिभागं, तथा ईहामृगा–वृकाः ऋषभतुरगनरमगरविहगाः प्रतीताः व्यालाः–स्वापदभुजगाः किंनरा–व्यन्तरविशेषाः रुरवो–मृगाः सरभाः–आटव्या महाकायाः पशवः चमरा–आटव्या गावः कुञ्जरा–दन्तिनः वनलता–अशोकादिलताः पद्मलताः–पद्मिन्यः एतासां भक्त्या–विच्छित्त्या चित्रम्–आलेखो यत्र तदीहामृगऋषभतुरगनरमकरविहगव्यालकिन्नररुरुसरभचमरकुञ्जरवनलतापद्मलताभक्तिचित्रं, तथा स्तम्भोद्गतया–स्तम्भोपरिवर्त्तिन्या वज्ररत्नमय्या वेदिकया परिगतं सद् यदभिरामं तत् स्तम्भोद्गतवज्रवेदिकापरिगताभिरामं, 'विज्जाहरजमलजुगलजन्तजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालिणीय'मिति विद्या धरन्तीति विद्याधरा–विशिष्टविद्याशक्तिमन्तः तेषां यमलयुगलानि–समानशीलानि द्वन्द्वानि तेषां यन्त्राणि–प्रपञ्चाविशेषास्तैर्युक्तमिव अर्चिषां–मणिरत्नप्रभाज्वालानां सहस्रैर्मालनीयं–परिचारणीयं, किमुक्तं भवति ?–एवं नाम अत्यद्भुतैर्मणिरत्नप्रभाजालैराकलितमिव भाति यथा नूनमिदं न स्वाभाविकं, किन्तु विशिष्टविद्याशक्तिमत्पुरुषप्रपञ्चप्रभावितमिति, 'रूवगसहस्सकलितं भिसिमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सि-

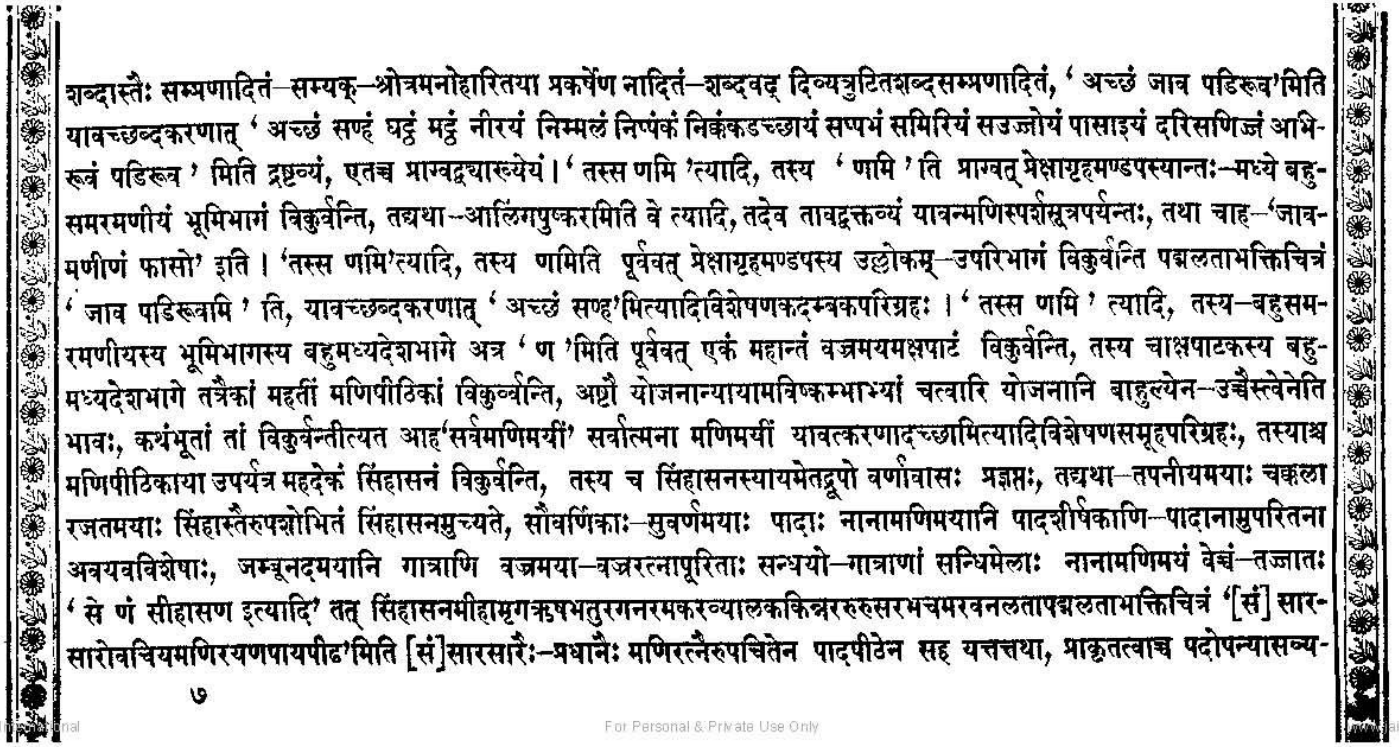
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

रीयरूव'मिति प्राग्वत्, क्वचिदेतन्न दृश्यते, ' कञ्चणमणिरयणथूभियाग'मिति काञ्चनं च मणयश्च रत्नानि च काञ्चनमणिरत्नानि तेषां–तन्मयी स्तूपिका–शिखरं यस्य तत्तथा नानाविधाभिः–नानाप्रकाराभिः पञ्चवर्णाभिर्घण्टाभिः पताकाभिश्च परि–सामस्त्येन मण्डितमग्रं–शिखरं यस्य तन्नानाविधपञ्चवर्ण्णघण्टापताकापरिमण्डिताग्रशिखरं, चपलं–चञ्चलं चिकचिकीयमानत्वात् मरीचिकवचं–किरणजालपरिक्षेपं विनिर्मुञ्चत् ' लाउल्लोइयमहिय'मिति लाइयं नाम–यद्भूमेर्गोमयादिनोपलेपनं उल्लोइयं–कुड्यानां मालस्य च सेटिकादिभिः सम्मृष्टीकरणं लाउल्लोइयाभ्यामिव महितं–पूजितं लाउल्लोइयमहियं, तथा गोशीर्षेण–गोशीर्षनामकचन्दनेन दर्दरेण–बहलेन चपेटाकारेण वा दत्ताः पञ्चाङ्गुलयस्तला–हस्तका यत्र तद्गोशीर्षरक्तचन्दनदर्दरदत्तपञ्चाङ्गुलितलं, तथा उपचिता–निवेशिताः चन्दनकलशा–मङ्गलकलशा यत्र तदुपचितचन्दनकलशं, ' चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागमिति' चन्दनघटैः– चन्दनकलशैः सुकृतानि–सुष्ठु कृतानि शोभितानीति तात्पर्यार्थः, यानि तोरणानि तानि चन्दनघटसुकृतानि तानि तोरणानि प्रति द्वारदेशभागं–द्वारदेशभागे यत्र तत् चन्दनघटसुकृततोरणप्रतिद्वारदेशभागं, तथा ' आसत्तोसत्तविपुलवट्टवग्घारियमल्लदामकलाव 'मिति आ–अवाङ् अधोभूमौ लग्न इत्यर्थः, उत्सक्तं–ऊर्ध्वसक्तं उल्लोचतले उपरि सम्बद्ध इत्यर्थः विपुलो–विस्तीर्णः वृत्तो–वर्त्तुलः वग्घारिय इति–प्रलम्बितो माल्यदामकलापः–पुष्पमालासमूहो यत्र तदासक्तोत्सक्तविपुलवृत्तप्रलम्बितमाल्यदामकलापं, तथा पञ्चवर्णेन सरसेन–सच्छायेन सुरभिणा मुक्तेन–क्षिप्तेन पुष्पपुञ्जलक्षणेनोपचारेण–पूजया कलितं पञ्चवर्णसरससुरभिमुक्तपुष्पपुञ्जोपचारकलितं, 'कालागुरुपवरकुन्दुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगन्धुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूय' मिति प्राग्वत्, तथा अप्सरोगणानां सङ्घः–समुदायस्तेन सम्यग्–रमणीयतया विकीर्ण्णं–व्याप्तमप्सरोगणसङ्घविकीर्ण्णं, तथा दिव्यानां त्रुटितानाम् आतोद्यानां–वेणुवीणामृदङ्गादीनां ये

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं



शब्दास्तैः सम्प्रणादितं–सम्यक्–श्रोत्रमनोहारितया प्रकर्षेण नादितं–शब्दवद् दिव्यत्रुटितशब्दसम्प्रणादितं, ' अच्छं जाव पडिरूव'मिति यावच्छब्दकरणात् ' अच्छं सण्हं घट्ठं मट्ठं नीरयं निम्मलं निप्पंकं निक्कंकडच्छायं सप्पभं समिरियं सउज्जोयं पासाइयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं ' मिति द्रष्टव्यं, एतच्च प्राग्वद्व्याख्येयं। ' तस्स णमि 'त्यादि, तस्य ' णमि ' ति प्राग्वत् प्रेक्षागृहमण्डपस्यान्तः–मध्ये बहुसमरमणीयं भूमिभागं विकुर्वन्ति, तद्यथा–आलिंगपुष्करामिति वे त्यादि, तदेव तावद्वक्तव्यं यावन्मणिस्पर्शसूत्रपर्यन्तः, तथा चाह–'जाव मणीणं फासो' इति। 'तस्स णमि'त्यादि, तस्य णमिति पूर्ववत् प्रेक्षागृहमण्डपस्य उल्लोकम्–उपरिभागं विकुर्वन्ति पद्मलताभक्तिचित्रं ' जाव पडिरूवमि ' ति, यावच्छब्दकरणात् ' अच्छं सण्ह'मित्यादिविशेषणकदम्बकपरिग्रहः। ' तस्स णमि ' त्यादि, तस्य–बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र ' ण 'मिति पूर्ववत् एकं महान्तं वज्रमयमक्षपाटं विकुर्वन्ति, तस्य चाक्षपाटकस्य बहुमध्यदेशभागे तत्रैकां महतीं मणिपीठिकां विकुर्व्वन्ति, अष्टौ योजनान्यायामविष्कम्भाभ्यां चत्वारि योजनानि बाहुल्येन–उच्चैस्त्वेनेति भावः, कथंभूतां तां विकुर्वन्तीत्यत आह'सर्वमणिमयीं' सर्वात्मना मणिमयीं यावत्करणादच्छामित्यादिविशेषणसमूहपरिग्रहः, तस्याश्च मणिपीठिकाया उपर्यत्र महदेकं सिंहासनं विकुर्वन्ति, तस्य च सिंहासनस्यायमेतद्रूपो वर्णावासः प्रज्ञप्तः, तद्यथा–तपनीयमयाः चक्कला रजतमयाः सिंहास्तैरुपशोभितं सिंहासनमुच्यते, सौवर्णिकाः–सुवर्णमयाः पादाः नानामणिमयानि पादशीर्षकाणि–पादानामुपरितना अवयवविशेषाः, जम्बूनदमयानि गात्राणि वज्रमया–वज्ररत्नापूरिताः सन्धयो–गात्राणां सन्धिमेलाः नानामणिमयं वेच्चं–तज्जातः ' से णं सीहासण इत्यादि' तत् सिंहासनमीहामृगऋषभतुरगनरमकरव्यालककिन्नररुरुसरभचमरवनलतापद्मलताभक्तिचित्रं '[सं] सारसारोवचियमणिरयणपायपीढ'मिति [सं]सारसारैः–प्रधानैः मणिरत्नैरुपचितेन पादपीठेन सह यत्तत्तथा, प्राकृतत्वाच्च पदोपन्यासव्य-

७

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [१५]

दीप अनुक्रम [१५]

त्ययः 'अच्छरयमउममूरगनवतयकुसन्तलिम्बकेसरपच्चत्थुयाभिरामे इति' अस्तरकम्–आच्छादकं मृदु यस्य मसूरकस्य तदस्तरकमृदु, विशेषणस्य परनिपातः प्राकृतत्वात्, नवा त्वक् येषां ते नवत्वचः कुशान्ताः–दर्भपर्यन्ता नवत्वचश्च ते कुशान्ताश्च नवत्वकुशान्ताः–प्रत्यग्रत्वगृदर्भपर्यन्तरूपाणि लिम्बानि–कोमलानि नमनशीलानि च केसराणि मध्ये यस्य मसूरकस्य तत् नवत्वकुशान्तलिम्बकेशरम् आस्तरकमृदुना मसूरकेण नवत्वकुशान्तलिम्बकेसरेण प्रत्यवस्तुतम्–आच्छादितं सत् यदभिरामं तत्तथा, विशेषणपूर्वापरनिपातो यादृच्छिकः प्राकृतत्वात्, 'आईणगरुअबूरनवणीयतूलफासे' इति पूर्ववत्, तथा 'सुविरइयरयत्ताणे' तथा सुष्ठु विरचितं सुविरचितं रजस्त्राणमुपरि यस्य तत्सुविरचितरजस्त्राणं, 'उवचियखोमियदुगुल्लपट्टपडिच्छयण'मिति, उपचितं–परिकर्मितं यत्क्षौमं दुकूलं–कार्पासिकं वस्त्रं परिच्छादनं रजस्त्राणस्योपरि द्वितीयमाच्छादनं यस्य तत्तथा, तत उपरि 'रत्तंसुयसंवुडे' इति रक्तांशुकेन–अतिरमणीयेन रक्तेन वस्त्रेण संवृतम्–आच्छादितमत एव सुरम्यं, 'पासाइए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे' इति प्राग्वत् ॥

तस्स णं सिंहासणस्स उवरि एत्थ णं महेगं विजयदूसं विउव्वंति, संखंक(संख)कुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसंनिगासं सव्वरयणामयं अच्छं सण्हं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं । तस्स णं सीहासणस्स उवरिं विजयदूसस्स य बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं (महं एगं) वयरामयं अंकुसं विउव्वंति, तस्सिं च णं वयरामयंसि अंकुसंसि कुंभिक्के मुत्तादामं विउव्वंति । से णं कुंभिक्के मुत्तादामे अन्नेहिं चउहिं अद्धकुंभिक्केहिं मुत्तादामेहिं तदद्धुच्चत्तपमाणेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते । ते णं दामा तवणिज्ज-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

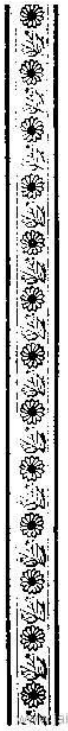
सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

प्रत सूत्रांक [१५]

दीप अनुक्रम [१५]



लंबूसगा सुवण्णपयरगमंडियग्गा णाणामणिरयणविविहहारद्धहारउवसोभियसमुदाया ईसिं अण्णमण्णमसंपत्ता वाएहिं पुव्वावरदाहिणुत्तरागएहिं मंदाय मंदाय एइज्जमाणाणि २ पलंबमाणाणि २ पेज्जंज[पज्झंझ]माणाणि २ उरालेणं मणुन्नेणं मणहरेणं कण्णमणणिव्वुतिकरेणं सद्देणं ते पएसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा सिरीए अतीव २ उवसोभेमाणा चिट्ठंति। तए णं से आभिओगिए देवे तस्स सिंहासणस्स अवरुत्तरेणं उत्तरेणं उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं सूरिआभस्स देवस्स चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तारि भद्दासणसाहस्सीओ विउवइ, तस्स णं सीहासणस्स पुरच्छिमेणं एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं चत्तारि भद्दासणसाहस्सीओ विउवइ, तस्स णं सीहासणस्स दाहिणपुरच्छिमेणं एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स अब्भिंतरपरिसाए अट्ठण्हं देवसाहस्सीणं अट्ठ भद्दासणसाहस्सीओ विउवइ, एवं दाहिणेणं मज्झिमपरिसाए दसण्हं देवसाहस्सीणं दस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरपरिसाए बारसण्हं देवसाहस्सीणं बारस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति पच्चत्थिमेणं सत्तण्हं अणियाहिवतीणं सत्त भद्दासणे विउव्वति, तस्स णं सीहासणस्स चउदिसिं एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं सोलस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति, तंजहा–पुरच्छिमेणं चत्तारि साहस्सीओ दाहिणेणं चत्तारि साहस्सीओ पच्चत्थिमे णं चत्तारि साहस्सीओ उत्तरेणं



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

प्रत सूत्रांक [१५]

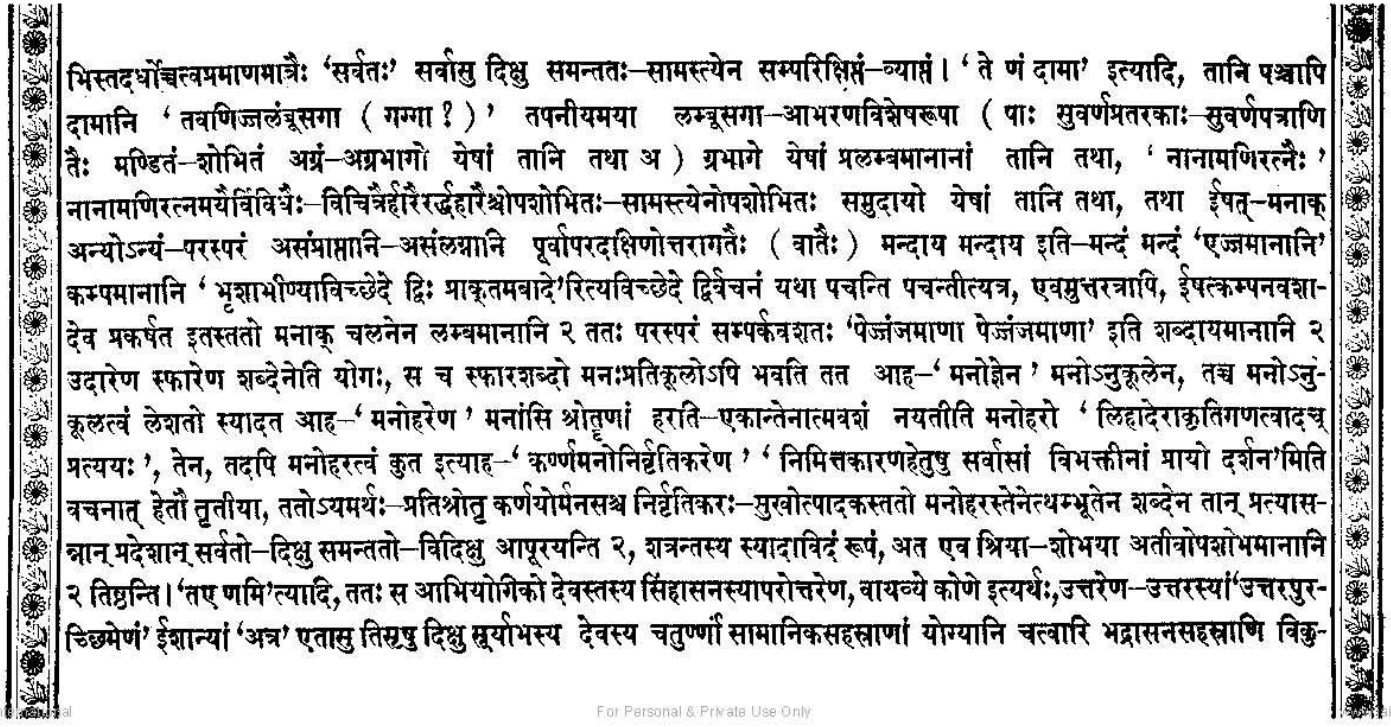
दीप अनुक्रम [१५]

चत्तारि साहस्सीओ । तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, से जहानामए अइरुग्गयस्स वा हेमंतियबालियसूरियस्स वा खयरिंगालाण वा रत्तिं पज्जलियाण वा जावाकुसुमवणस्स वा किंसुयवणस्स वा पारियायवणस्स वा सव्वतो समंता संकुसुमियस्स, भवेयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, तस्स णं दिव्वस्स जाणविमाणस्स एत्तो इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं पण्णत्ते, गंधो य फासो य जहा मणीणं । तए णं से आभिओगिए देवे दिव्वं जाणविमाणं विउव्वइ २ त्ता जेणेव सुरियाभे देवे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं जाव पच्चप्पिणंति ॥ (सू० १५)

'तस्स णमि'त्यादि, तस्य सिंहासनस्योपर्युल्लोके 'अत्र' अस्मिन् स्थाने महदेकं विजयदूष्यं–वस्त्रविशेषः, आह च जीवाभिगममूलटीकाकृत्–'विजयदूष्यं वस्त्रविशेष' इति, तं विकुर्वन्ति–स्वशक्त्या निष्पादयन्ति, कथम्भूतमित्याह– 'शङ्खकुन्ददकरजोऽमृतमथितफेनपुञ्जसन्निकाशं' शङ्खः प्रतीतः, कुन्देति–कुन्दकुसुमं दकरजः–उदककणाः अमृतस्य–क्षीरोदधिजलस्य मथितस्य यः फेनपुञ्जो–डिण्डीरोत्करः तत्सन्निकाशं–तत्समप्रभं, पुनः कथम्भूतमित्याह–'सव्वरयणामयं' सर्वात्मना रत्नमयं 'अच्छं सण्हं पासाइयमि'त्यादिविशेषणजालं प्राग्वत् । 'तस्स णमि'त्यादि, तस्य सिंहासनस्योपरि तस्य विजयदूष्यस्य बहुमध्यदेशभागेऽत्र महान्तमेकं वज्रमयं–वज्ररत्नमयमङ्कुशम्–अङ्कुशाकारं मुक्तादामावलम्बनाश्रयं विकुर्वन्ति, तस्मिंश्च वज्रमयेऽङ्कुशे महदेकं कुम्भाग्रं–मगधदेशप्रसिद्धं कुम्भपरिमाणं मुक्तादाम विकुर्वन्ति । 'से णमि'त्यादि, तत्कुम्भाग्रं मुक्तादाम अन्यैश्चतुर्भिः कुम्भाग्रैः–कुम्भपरिमाणैर्मुक्तादाम-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं



भिस्तदर्धोच्चत्वप्रमाणमात्रैः 'सर्वतः' सर्वासु दिक्षु समन्ततः–सामस्त्येन सम्परिक्षिप्तं–व्याप्तं। 'ते णं दामा' इत्यादि, तानि पञ्चापि दामानि 'तवणिज्जलंबूसगा (गग्गा ?)' तपनीयमया लम्बूसगा–आभरणविशेषरूपा (पाः सुवर्णप्रतरकाः–सुवर्णपत्राणि तैः मण्डितं–शोभितं अग्रं–अग्रभागो येषां तानि तथा अ) ग्रभागे येषां प्रलम्बमानानां तानि तथा, 'नानामणिरत्नैः' नानामणिरत्नमयैर्विविधैः–विचित्रैर्हारैरर्द्धहारैश्चोपशोभितः–सामस्त्येनोपशोभितः समुदायो येषां तानि तथा, तथा ईषत्–मनाक् अन्योऽन्यं–परस्परं असंप्राप्तानि–असंलग्नानि पूर्वापरदक्षिणोत्तरागतैः (वातैः) मन्दाय मन्दाय इति–मन्दं मन्दं 'एज्जमानानि' कम्पमानानि 'भृशाभीष्णाविच्छेदे द्विः प्राकृतमवादे'रित्यविच्छेदे द्विर्वचनं यथा पचन्ति पचन्तीत्यत्र, एवमुत्तरत्रापि, ईषत्कम्पनवशादेव प्रकर्षत इतस्ततो मनाक् चलनेन लम्बमानानि २ ततः परस्परं सम्पर्कवशतः 'पेज्जंजमाणा पेज्जंजमाणा' इति शब्दायमानानि २ उदारेण स्फारेण शब्देनेति योगः, स च स्फारशब्दो मनःप्रतिकूलोऽपि भवति तत आह–'मनोज्ञेन' मनोऽनुकूलेन, तच्च मनोऽनुकूलत्वं लेशतो स्यादत आह–'मनोहरेण' मनांसि श्रोतृणां हरति–एकान्तेनात्मवशं नयतीति मनोहरो 'लिहादेराकृतिगणत्वादच्' प्रत्ययः', तेन, तदपि मनोहरत्वं कुत इत्याह–'कर्णमनोनिर्वृतिकरेण' 'निमित्तकारणहेतुषु सर्वासां विभक्तीनां प्रायो दर्शन'मिति वचनात् हेतौ तृतीया, ततोऽयमर्थः–प्रतिश्रोतृ कर्णयोर्मनसश्च निर्वृतिकरः–सुखोत्पादकस्ततो मनोहरस्तेनेत्थम्भूतेन शब्देन तान् प्रत्यासन्नान् प्रदेशान् सर्वतो–दिक्षु समन्ततो–विदिक्षु आपूरयन्ति २, शत्रन्तस्य स्यादाविदं रूपं, अत एव श्रिया–शोभया अतीवोपशोभमानानि २ तिष्ठन्ति। 'तए णमि'त्यादि, ततः स आभियोगिको देवस्तस्य सिंहासनस्यापरोत्तरेण, वायव्ये कोणे इत्यर्थः, उत्तरेण–उत्तरस्यां 'उत्तरपुरच्छिमेणं' ईशान्यां 'अत्र' एतासु तिसृषु दिक्षु सूर्याभस्य देवस्य चतुर्णां सामानिकसहस्राणां योग्यानि चत्वारि भद्रासनसहस्राणि विकु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

व्वेति, पूर्वस्यां चतसृणामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां चत्वारि भद्रासनसहस्राणि दक्षिणपूर्वस्यामभ्यन्तरपर्षदोऽष्टानां देवसहस्राणां योग्यानि अष्टौ भद्रासनसहस्राणि दक्षिणस्यां मध्यमपर्षदो दशानां देवसहस्राणां योग्यानि दश भद्रासनसहस्राणि, दक्षिणापरस्यां नैर्ऋतकोण इत्यर्थः, बाह्यपर्षदो द्वादशानां देवसहस्राणां द्वादश भद्रासनसहस्राणि पश्चिमायां सप्तानामनीकाधिपतीनां सप्त भद्रासनानि विकुर्वति। तदनन्तरं तस्य सिंहासनस्य चतसृषु दिक्षु अत्र सामानिकादिदेवभद्रासनानां पृष्ठतः सूर्याभस्य देवस्य सम्बन्धिनां षोडशानामात्मरक्षकदेवसहस्राणां योग्यानि षोडश भद्रासनसहस्राणि विकुर्वति, तद्यथा–चत्वारि भद्रासनसहस्राणि पूर्वस्यां चत्वारि दक्षिणतश्चत्वारि पश्चिमायां चत्वारि उत्तरतः सर्वसङ्ख्यया सप्ताधिकानि चतुःपञ्चाशत्सहस्राणि ५४००७ भद्रासनानां विकुर्वति। 'तस्स णं दिव्वस्से'त्यादि, तस्य 'णमि'ति पूर्ववत् दिव्यस्य यानविमानस्यायम्–अनन्तरं वक्ष्यमाणस्वरूपो वर्णावासो–वर्णकनिवेशः प्रज्ञप्तः, तद्यथा–'से जहानामए' इत्यादि, स यथानाम अचिरोद्गतस्य–क्षणमात्रमुद्गतस्य 'हैमन्तिकस्य' शिशिरकालभाविनो बालसूर्यस्य स ह्यत्यन्तमारक्तो भवति दीप्यमानश्चेत्युपादानं, वाशब्दाः सर्वेऽपि समुच्चये, खादिराङ्गाराणि वा 'रत्ति'मिति सप्तम्यर्थे द्वितीया प्राकृतत्वात् यथा–'उय विणयभत्तिल्ले पूरेमसिसिरे दहे गए सूरे कत्तो रत्तिं सुद्धे पाणियसद्धा सउणयाणमि' त्यत्र, ततोऽयमर्थः–रात्रौ प्रज्वलितानां जपाकुसुमवनस्य वा किंशुकवनस्य वा पारिजातवनस्य वा सर्वतः–सर्वासु दिक्षु समन्ततः–सामस्त्येन 'सङ्कुसुमितस्य' सम्यक् कुसुमितस्य, अत्रान्तरे शिष्यः पृच्छति–यादृग्रूप एतेषां वर्णः 'भवेयारूवे सिया' इति स्यात्–कथञ्चिद् भवेदेतद्रूपस्तस्य दिव्यस्य यानविमानस्य वर्णः ?। सूरिराह–'नो इणट्ठे समट्ठे, तस्स णं दिव्वस्स जाणविमाणस्स एत्तो इट्ठतराए चेव कंततराए चेव मणुन्नतराए चेव मणामतराए चेव वण्णे पण्णत्ते' इति प्राग्वत् व्याख्येयम्, 'गंधो फासो जहा मणीण'मिति गन्धः स्पर्शः यथा प्राग् मणीनामुक्तस्तथा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य दिव्ययान करणं

प्रत सूत्रांक [१५]

दीप अनुक्रम [१५]

वक्तव्यः, स चैवं–'तस्स णं दिव्वस्स जाणविमाणस्स इमे एयारूवे गंधे पण्णत्ते, तंजहा–से जहानामए कोट्ठपुडाण वा तगरपुडाण वा' इत्यादि । 'तए णं से आभिओगिए देवे' इत्यादि, यावत्करणात् 'करयलपरिग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ वद्धावित्ता एयमाणत्तियमि'ति द्रष्टव्यम् ॥

तए णं से सूरिआभे देवे आभिओगस्स देवस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए दिव्वं जिणिंदाभिगमणजोग्गं उत्तरवेउव्वियरूवं विउव्वति २ त्ता चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं दोहिं अणीएहिं, तंजहा–गंधव्वणीएण य णट्टाणीएण य सद्धिं संपरिवुडे तं दिव्वं जाणविमाणं अणुपयाहिणीकरेमाणे २ पुरच्छिमिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं दुरूहति दुरूहित्ता जेणेव सिंहासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे । तए णं तस्स सूरिआभस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ तं दिव्वं जाणविमाणं अणुपयाहिणीकरेमाणा उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं दुरूहंति दुरूहित्ता पत्तेयं २ पुव्वणत्थेहिं भद्दासणेहिं णिसीयंति, अवसेसा देवा य देवीओ य तं दिव्वं जाणविमाणं जाव दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं दुरूहंति २ त्ता पत्तेयं २ पुव्वणत्थेहिं भद्दासणेहिं निसीयंति । तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स तं दिव्वं जाणविमाणं दुरूढस्स समाणस्स अट्ठट्ठमंगलगा पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिता, तंजहा–सोत्थियसिरिवच्छ जाव दप्पणा ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त-वन्दनार्थं सूर्याभदेवस्य गमनं

प्रत सूत्रांक [१६]

दीप अनुक्रम [१६]

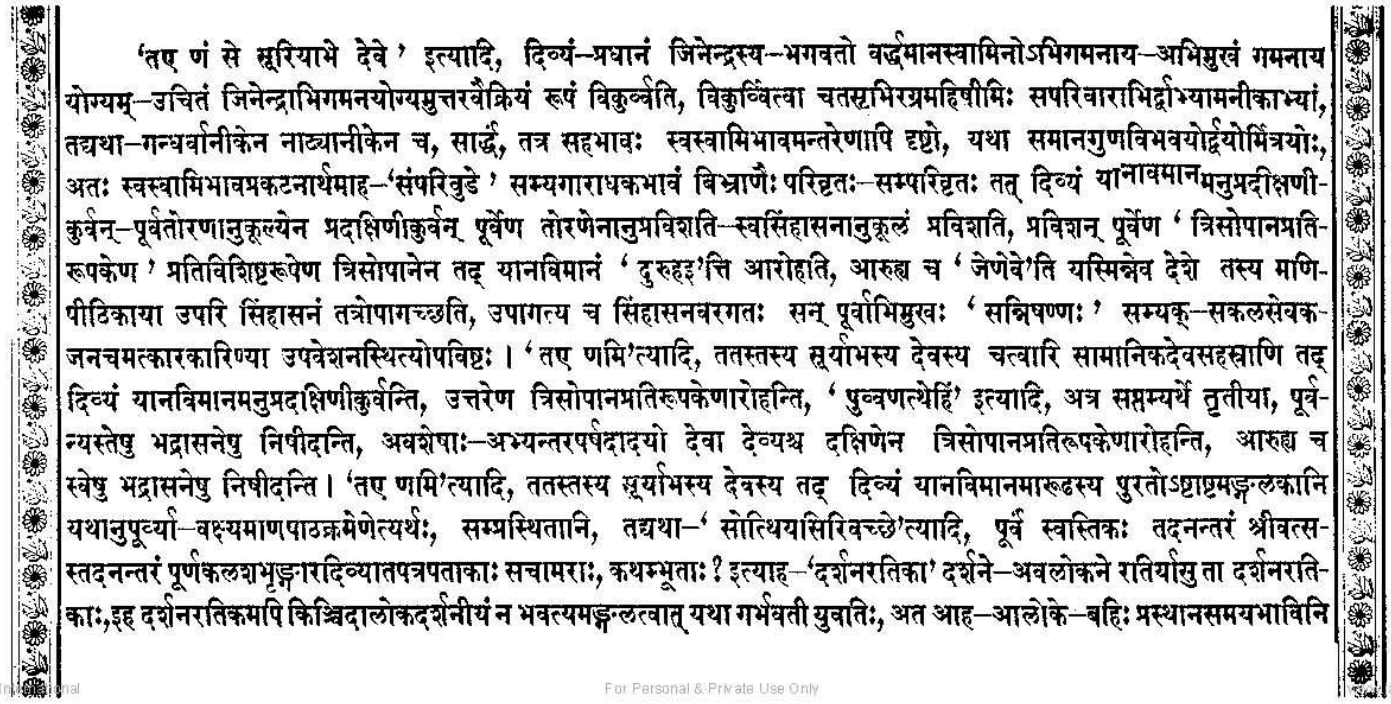
तयणतरं च णं पुण्णकलसभिंगार दिव्वा य छत्तपडागा सचामरा दंसणरतिया आलोयदरिसणिज्जा वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागा ऊसिया गगणतलमणुलिहंती पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया । तयणंतरं च णं वेरुलियभिसंतविमलदंडं पलंबकोरंटमल्लदामोवसोभितं चंदमंडलनिभं समुस्सियं विमलमायवत्तं पवरसीहासणं च मणिरयणभत्तिचित्तं सपायपीढं सपाउयाजोयसमाउत्तं बहुकिंकरामरपरिग्गहियं पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थियं । तयाणंतरं च णं वइरामयवट्टलट्ठसंठियसुसिलिट्ठपरिघट्ठमट्ठसुपतिट्ठिए विसिट्ठे अणेगवरपंचवण्णकुडभीसहस्सुस्सिए [परिमंडियाभिरामे] वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागच्छत्तातिच्छत्तकलिते तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे जोअणसहस्समूसिए महतिमहालए महिंदज्झए पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिए । तयाणंतरं च णं सुरूवणेवत्थपरिकच्छिया सुसज्जा सव्वालंकारभूसिया महया भडचडगहपहगरेणं पंचअणीयाहिवईणो पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया । [तयाणंतरं च णं बहवे आभिओगिया देवा देवीओ य सएहिं २ रूवेहिं सएहिं २ विसेसेहिं सएहिं २ विंदोहिं सएहिं २ णेज्जाएहिं सएहिं २ णेवत्थेहिं पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया] तयाणंतरं च णं सूरियाभविमाणवासिणो बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य सविड्ढीए जाव रूवेणं सूरियाभं देवं पुरतो पासतो य मग्गतो य समणुगच्छंति ॥ सू० १६ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त-वन्दनार्थं सूर्याभदेवस्य गमनं

प्रत सूत्रांक [१६]

दीप अनुक्रम [१६]



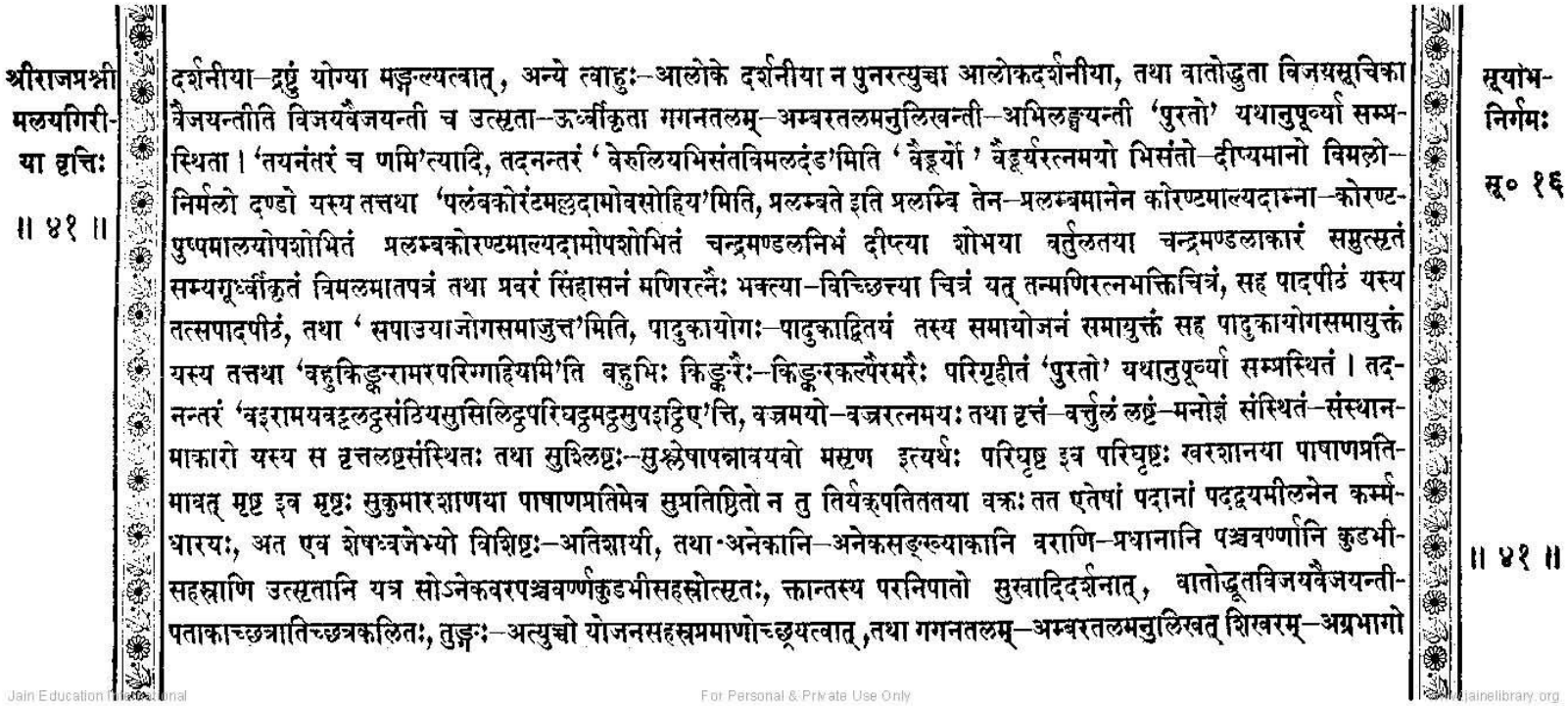
'तए णं से सूरियाभे देवे' इत्यादि, दिव्यं–प्रधानं जिनेन्द्रस्य–भगवतो वर्द्धमानस्वामिनोऽभिगमनाय–अभिमुखं गमनाय योग्यम्–उचितं जिनेन्द्राभिगमनयोग्यमुत्तरवैक्रियं रूपं विकुर्व्वति, विकुर्व्वित्वा चतसृभिरग्रमहिषीभिः सपरिवाराभिर्द्वाभ्यामनीकाभ्यां, तद्यथा–गन्धर्वानीकेन नाट्यानीकेन च, सार्द्धं, तत्र सहभावः स्वस्वामिभावमन्तरेणापि दृष्टो, यथा समानगुणविभवयोर्द्वयोर्मित्रयोः, अतः स्वस्वामिभावप्रकटनार्थमाह–'संपरिवुडे' सम्यगाराधकभावं बिभ्राणैः परिवृतः–सम्परिवृतः तत् दिव्यं यानावमान मनुप्रदीक्षणीकुर्वन्–पूर्वतोरणानुकूल्येन प्रदक्षिणीकुर्वन् पूर्वेण तोरणेनानुप्रविशति–स्वसिंहासनानुकूलं प्रविशति, प्रविशन् पूर्वेण 'त्रिसोपानप्रतिरूपकेण' प्रतिविशिष्टरूपेण त्रिसोपानेन तद् यानविमानं 'दुरुहइ'त्ति आरोहति, आरुह्य च 'जेणेवे'ति यस्मिन्नेव देशे तस्य मणिपीठिकाया उपरि सिंहासनं तत्रोपागच्छति, उपागत्य च सिंहासनवरगतः सन् पूर्वाभिमुखः 'सन्निषण्णः' सम्यक्–सकलसेवकजनचमत्कारकारिण्या उपवेशनस्थित्योपविष्टः। 'तए णमि'त्यादि, ततस्तस्य सूर्याभस्य देवस्य चत्वारि सामानिकदेवसहस्राणि तद् दिव्यं यानविमानमनुप्रदक्षिणीकुर्वन्ति, उत्तरेण त्रिसोपानप्रतिरूपकेणारोहन्ति, 'पुव्वणत्थेहिं' इत्यादि, अत्र सप्तम्यर्थे तृतीया, पूर्वन्यस्तेषु भद्रासनेषु निषीदन्ति, अवशेषाः–अभ्यन्तरपर्षदादयो देवा देव्यश्च दक्षिणेन त्रिसोपानप्रतिरूपकेणारोहन्ति, आरुह्य च स्वेषु भद्रासनेषु निषीदन्ति। 'तए णमि'त्यादि, ततस्तस्य सूर्याभस्य देवस्य तद् दिव्यं यानविमानमारूढस्य पुरतोऽष्टाष्टमङ्गलकानि यथानुपूर्व्या–वक्ष्यमाणपाठक्रमेणेत्यर्थः, सम्प्रस्थितानि, तद्यथा–'सोत्थियसिरिवच्छे'त्यादि, पूर्वं स्वस्तिकः तदनन्तरं श्रीवत्सस्तदनन्तरं पूर्णकलशभृङ्गारदिव्यातपत्रपताकाः सचामराः, कथम्भूताः? इत्याह–'दर्शनरतिका' दर्शने–अवलोकने रतिर्यासु ता दर्शनरतिकाः,इह दर्शनरतिकमपि किञ्चिदालोकदर्शनीयं न भवत्यमङ्गल्यत्वात् यथा गर्भवती युवतिः, अत आह–आलोके–बहिः प्रस्थानसमयभाविनि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवन्त-वन्दनार्थं सूर्याभदेवस्य गमनं

प्रत सूत्रांक [१६]

दीप अनुक्रम [१६]



श्रीराजप्रश्नीयमलयगिरीया वृत्तिः ॥ ४१ ॥

दर्शनीया–द्रष्टुं योग्या मङ्गल्यत्वात्, अन्ये त्वाहुः–आलोके दर्शनीया न पुनरत्युच्चा आलोकदर्शनीया, तथा वातोद्धुता विजयसूचिका वैजयन्तीति विजयवैजयन्ती च उत्सृता–ऊर्ध्वीकृता गगनतलम्–अम्बरतलमनुलिखन्ती–अभिलङ्घयन्ती 'पुरतो' यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थिता। 'तयनंतरं च णमि'त्यादि, तदनन्तरं 'वेरुलियभिसंतविमलदंड'मिति 'वैडूर्यो' वैडूर्यरत्नमयो भिसंतो–दीप्यमानो विमलो–निर्मलो दण्डो यस्य तत्तथा 'पलंबकोरंटमल्लदामोवसोहिय'मिति, प्रलम्बते इति प्रलम्बि तेन–प्रलम्बमानेन कोरण्टमाल्यदाम्ना–कोरण्टपुष्पमालयोपशोभितं प्रलम्बकोरण्टमाल्यदामोपशोभितं चन्द्रमण्डलनिभं दीप्त्या शोभया वर्तुलतया चन्द्रमण्डलाकारं समुत्सृतं सम्यगूर्ध्वीकृतं विमलमातपत्रं तथा प्रवरं सिंहासनं मणिरत्नैः भक्त्या–विच्छित्त्या चित्रं यत् तन्मणिरत्नभक्तिचित्रं, सह पादपीठं यस्य तत्सपादपीठं, तथा 'सपाउयाजोगसमाजुत्त'मिति, पादुकायोगः–पादुकाद्वितयं तस्य समायोजनं समायुक्तं सह पादुकायोगसमायुक्तं यस्य तत्तथा 'बहुकिङ्करामरपरिग्गहियमि'ति बहुभिः किङ्करैः–किङ्करकल्पैरमरैः परिगृहीतं 'पुरतो' यथानुपूर्व्या सम्प्रस्थितं। तदनन्तरं 'वइरामयवट्टलट्ठसंठियसुसिलिट्ठपरिघट्ठमट्ठसुपइट्ठिए'त्ति, वज्रमयो–वज्ररत्नमयः तथा वृत्तं–वर्तुलं लष्टं–मनोज्ञं संस्थितं–संस्थानमाकारो यस्य स वृत्तलष्टसंस्थितः तथा सुश्लिष्टः–सुश्लेषापन्नावयवो मसृण इत्यर्थः परिघृष्ट इव परिघृष्टः खरशानया पाषाणप्रतिमावत् मृष्ट इव मृष्टः सुकुमारशाणया पाषाणप्रतिमेव सुप्रतिष्ठितो न तु तिर्यक्पतिततया वक्रः तत एतेषां पदानां पदद्वयमीलनेन कर्म्मधारयः, अत एव शेषध्वजेभ्यो विशिष्टः–अतिशायी, तथा अनेकानि–अनेकसङ्ख्याकानि वराणि–प्रधानानि पञ्चवर्णानि कुडभीसहस्राणि उत्सृतानि यत्र सोऽनेकवरपञ्चवर्णकुडभीसहस्रोत्सृतः, क्तान्तस्य परनिपातो सुखादिदर्शनात्, वातोद्धूतविजयवैजयन्तीपताकाच्छत्रातिच्छत्रकलितः, तुङ्गः–अत्युच्चो योजनसहस्रप्रमाणोच्छ्रयत्वात्, तथा गगनतलम्–अम्बरतलमनुलिखत् शिखरम्–अग्रभागो

सूर्याभ-निर्गमः सू० १६

॥ ४१ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	भगवन्त-वन्दनार्थं सूर्याभदेवस्य गमनं

प्रत सूत्रांक [१६]

दीप अनुक्रम [१६]

यस्य स तथा योजनसहस्रमुत्सृतः अत एव 'महइमहालए' इति, अतिशयेन महान् महेन्द्रध्वजः 'पुरतो' यथानुपूर्व्या संप्रस्थितः । तदनन्तरं 'सुरूवनेवत्थपरिकच्छिया' इति, सुरूपं नेपथ्यं परिकक्षितं–परिगृहीतं यैस्ते तथा, तथा सुष्ठु–अतिशयेन सज्जाः–परिपूर्णाः स्वसामग्रीसमायुक्ततया प्रगुणीभूताः–सर्वालङ्कारविभूषिताः 'महता भडचडगरपहकरेणं'ति महता–अतिशयेन भटचटकरपहकरेण–चटकरप्रधानभटसमूहेन पञ्चानीकानि पञ्चानीकाधिपतयः 'पुरतो' यथाऽनुपूर्व्या सम्प्रस्थिताः । तदनन्तरं च सूर्याभविमानवासिनो बहवो वैमानिका देवा देव्यश्च सर्वर्ध्या यावत्करणात् 'सव्वजुईए सव्वबलेण'मित्यादि परिग्रहः, सूर्याभं देवं पुरतः पार्श्वतो मार्गतः –पृष्ठतः समनुगच्छति ।

तए णं से सूरियाभे देवे तेणं पंचाणीयपरिक्खित्तेणं वइरामयवट्टलट्ठसंठिएण जाव जोयणसहस्समूसिएणं महतिमहालतेणं महिंदज्झएणं पुरतो कड्ढिज्जमाणेणं चउहिं सामाणियसहस्सेहिं जाव सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहि य बहूहिं सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं सोधम्मस्स कप्पस्स मज्झंमज्झेणं तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं उवदंसेमाणे २ पडिजागरेमाणे २ जेणेव सोहम्मकप्पस्स उत्तरिल्ले णिज्जाणमग्गे तेणेव उवागच्छति, २ जोयणसयसाहस्सितेहिं विग्गहेहिं ओवयमाणे वीतीवयमाणे ताए उक्किट्ठाए जाव तिरियमसंखिज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणे २ जेणेव नंदीसरवरदीवे जेणेव दाहिणपुरच्छिमिल्ले रतिकरपव्वते

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य भगवत् महावीर पार्श्वे आगमनं

तेणेव उवागच्छति २ त्ता तं दिव्वं देविड्ढिं जाव दिव्वं देवाणुभावं पडिसाहरेमाणे २ पडिसंखेवेमाणे २ जेणेव जंबूदीवे २ जेणेव भारहे वासे जेणेव आमलकप्पा नयरी जेणेव अंबसालवणे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता समणं भगवं महावीरं तेणं दिव्वेणं जाणविमाणेणं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ त्ता समणस्स भगवतो महावीरस्स उत्तरपुरच्छिमे दिसिभागे तं दिव्वं जाणविमाणं ईसिं चउरंगुलमसंपत्तं धरणितलंसि ठवेइ ठवित्ता चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं दोहिं अणीयाहिं तंजहा गंधव्वाणिएण य णट्टाणिएण य सद्धिं संपरिवुडे ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ पुरच्छिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहति। तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहति, अवसेसा देवा य देवीओ य ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति। तए णं से सूरियाभे देवे चउहिं अग्गमहिसीहिं जाव सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहि य बहूहिं सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सविड्ढीए जाव णाइयरवेणं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति २ त्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति २ त्ता वंदति नमंसति वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–अहं णं भंते! सूरियाभे देवे देवाणुप्पियाणं वंदामि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य भगवत् महावीर पार्श्वे आगमनं

प्रत सूत्रांक [१७-१९]

दीप अनुक्रम [१७-१९]

णमंसामि जाव पज्जुवासामि (सू० १७) सूरियाभाति समणे भगवं महावीरे सूरियाभं देवं एवं वयासी–पोराणमेयं सूरियाभा ! जीयमेयं सूरियाभा ! किच्चमेयं सूरियाभा ! करणिज्जमेयं सूरियाभा ! आइण्णमेयं सूरियाभा ! अब्भणुण्णायमेयं सूरियाभा ! जे णं भवणवइवाणमंतरजोइसवेमाणिया देवा अरहंते भगवंते वंदंति नमंसंति वन्दित्ता नमंसित्ता तओ पच्छा साइं साइं नामगोत्ताइं साहिंति, तं पोराणमेयं सूरियाभा ! जाव अब्भणुन्नायमेयं सूरियाभा ! (सू० १८) तए णं से सूरियाभे देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ जाव समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति वंदित्ता नमंसित्ता णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासति ॥ (सू० १९ ॥)

'तए ण'मित्यादि ततः स सूर्याभो देवः तेन पञ्चानीकपरिक्षिप्तेन यथोक्तविशेषणविशिष्टेन महेन्द्रध्वजेन पुरतः प्रकृष्यमाणेन चतुर्भिः सामानिकसहस्रैश्चतसृभिः सपरिवाराभिरग्रमहिषीभिस्तिसृभिः पर्षद्भिः सप्तभिरनीकाधिपतिभिः षोडशभिरात्मरक्षदेवसहस्रैरन्यैश्च बहुभिः सूर्याभविमानवासिभिर्वैमानिकैर्देवैर्देवीभिश्च सार्द्धं सम्परिवृतः सर्वर्द्ध्या सर्वद्युत्या यावत्करणात्–'सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूसाए सव्वविभूइए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फवत्थगंधमल्लालंकारेणं सव्वदिव्वतुडियसद्दसन्निनाएणं महया इड्ढीए महया जुइए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडियजमगसमयपडुप्पवाइयरवेणं संखपणवपडहभेरिझल्लरिखरमुहिहुडुक्कमुरयमुइंगदुंदुभिनिग्घोसनाइयरवेण' मिति परिगृह्यते, सौधर्मस्य कल्पस्य मध्येन तां दिव्यां देवर्द्धिं दिव्यां देवद्युतिं दिव्यां देवानुभूतिं 'लाले-

८

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेव-कृत् भगवत् महावीरस्य पर्युपासना

प्रत सूत्रांक [१७-१९]

दीप अनुक्रम [१७-१९]

माणे २ 'इति उपलालयन् २ लीलया उपभुञ्जान इति भावः, येनैव सौधर्मस्य कल्पस्योत्तरार्हो निर्याणमार्गो–निर्गमनमार्गस्तेनैव पार्श्वेनोपागच्छति, 'ताए उक्किट्ठाए' इत्यादि पूर्ववद्यावत् दिव्यया देवगत्या योजनशतसहस्रकैः–योजनलक्षप्रमाणैर्विग्रहैः–क्रमैरवपतन्–अधस्तादवतरन् व्यतिव्रजंश्च–गच्छंश्च तिर्यग् असङ्ख्येयानां द्वीपसमुद्राणां मध्यंमध्येन 'जेणेव'त्ति नन्दीश्वरो द्वीपः यस्मिन् प्रदेशे यस्मिन्नेव च प्रदेशे तस्मिन्नन्दीश्वरे द्वीपे दक्षिणपूर्वः–आग्नेयकोणवर्त्ती रतिकरनामा पर्वतस्तस्मिन्नुपागच्छति, उपागत्य च तां दिव्यां देवर्द्धिं यावद् दिव्यं देवानुभावं शनैः २ प्रतिसंहरन् २ एतदेव पर्यायेण व्याचष्टे–प्रतिसङ्क्षिपन् २ यस्मिन् प्रदेशे जम्बूद्वीपो नाम द्वीपः तत्र च जम्बूद्वीपे यस्मिन् प्रदेशे भारतवर्षं तस्मिंश्च भारतवर्षे यस्मिन् प्रदेशे आमलकल्पा नगरी तस्याश्चाऽऽमलकल्पाया नगर्या बहिर्यस्मिन्प्रदेशे आम्रशालवनं चैत्यं तस्मिंश्च चैत्ये यस्मिन् प्रदेशे श्रमणो भगवान् महावीरः ' तेणेव'ति तत्रोपागच्छति, सर्वत्र तृतीया सप्तम्यर्थे द्रष्टव्या प्राकृतत्वात्, उपागत्य च श्रमणं भगवन्तं महावीरं तेन–प्रागुक्तस्वरूपेण दिव्येन यानविमानेन सह त्रिःकृत्वः–त्रीन् वारान् आदक्षिणप्रदक्षिणीकरोति, आदक्षिणप्रदक्षिणीकृत्य च श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यापेक्षया य उत्तरपूर्वो दिग्भागस्तमपक्रामति–गच्छति अपक्रम्य च तद् दिव्यं यानविमानमीषद् एतदेव प्रकटयति–चतुरङ्गुलं, चतुर्भिरङ्गुलैरित्यर्थः असम्प्राप्तं सत् धरणीतले स्थापयति स्थापयित्वा चतसृभिरग्रमहिषीभिः सपरिवाराभिः द्वाभ्यामनीकाभ्यां तद्यथा–गन्धर्वानीकेन नाट्यानीकेन च सार्द्धं सम्परिवृतस्तस्माद् दिव्यात् यानविमानात् पूर्वेण त्रिसोपानप्रतिरूपकेण प्रत्यवतरति, चत्वारि सामानिकदेवसहस्राण्युत्तरेण, शेषा दक्षिणेन। 'तए णमि' त्यादि, ' वंदामि नमंसामि जाव पज्जुवासामी'त्यत्र यावच्छब्दकरणात् 'सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेमि' इति परिग्रहः, ततः ' सूरियाभाई' इत्यादि, सूरियाभात् आदिः–मुख्यः पर्युपासकतया यस्य स

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेव-कृत् भगवत् महावीरस्य पर्युपासना

प्रत सूत्रांक [१७-१९]

दीप अनुक्रम [१७-१९]

सूर्याभादिः श्रमणो भगवान् महावीरस्तं सूर्याभं देवमेवमवादीत्–'पोराणमेयमि'त्यादि प्राग्वत्, 'नचासन्ने' इत्यादि, नात्यासन्नः–नातिनिकटोऽवग्रहपरिहारात् नात्यासन्ने वा स्थाने वर्त्तमान इति गम्यम् ' नाइदूरे ' इति नं–नैवातिदूरः–अतिविप्रकृष्टोऽनौचित्यपरिहारात् नातिदूरे वा ' सुस्सूसमाणे' इति भगवद्वचनानि श्रोतुमिच्छन् ' अभिमुहे' इति अभि–भगवन्तं लक्ष्यीकृत्य मुखमस्येति अभिमुखो, भगवतः सम्मुख इत्यर्थः, विनयेन हेतुना ' पंजलिउडे' इति प्रकृष्टः–प्रधानो ललाटतटघटितत्वेन अञ्जलिः–हस्तन्यासविशेषः कृतो येन स प्राञ्जलिकृतः, सुखादिदर्शनात् क्तान्तस्य परनिपातः, पर्युपास्ते–सेवते ।

तए णं समणे भगवं महावीरे सूरियाभस्स देवस्स तीसे य महतिमहालियाए परिसाए जाव परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया (सू० २०) तए णं से सूरियाभे देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हयहियए उट्ठाए उट्ठेति उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ णमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–अहन्नं भंते ! सूरियाभे देवे किं भवसिद्धिए अभवसिद्धिए ? सम्मद्दिट्ठी मिच्छद्दिट्ठी ? परित्तसंसारिते अणंतसंसारिए ? सुलभबोहिए दुलभबोहिए ? आराहते विराहते ? चरिमे अचरिमे ?, सूरियाभाइ समणे भगवं महावीरे सूरियाभं देवं एवं वदासी–सूरियाभा ! तुमं णं भवसिद्धिए णो अभवसिद्धिते जाव चरिमे णो अचरिमे (सू० २१) तए णं से सूरियाभे देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ चित्तमाणंदिए परमसोमणस्से समणं भगवं महावीरं वंदति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेव-कृत् भगवत् महावीरस्य पर्युपासना

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

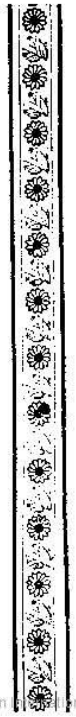
नमंसति २ एवं वदासी–तुब्भे णं भंते ! सव्वं जाणह सव्वं पासह (सव्वओ जाणह सव्वओ पासह) सव्वं कालं जाणह सव्वं कालं पासह सव्वे भावे जाणह सव्वे भावे पासह जाणंति णं देवाणुप्पिया मम पुव्विं वा पच्छा वा ममेयरूवं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभागं लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयंति, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं भत्तिपुव्वगं गोयमातियाणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइंदिव्वं देवाणुभावं दिव्वं बत्तीसतिबद्धं नट्टविहिं उवदंसित्तए (सू० २२) तए णं समणे भगवं महावीरे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे सूरियाभस्स देवस्स एयमट्ठं णो आढाति णो परियाणति तुसिणीए संचिट्ठति । तए णं से सूरियाभे देवे समणं भगवं महावीरं दोच्चंपि एवं वयासी–तुब्भे णं भंते ! सव्वं जाणह जाव उवदंसित्तए तिकट्टु समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ वंदति नमंसति २ त्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अतिक्कमति २ त्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणति २ त्ता संखिज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सरति २ त्ता अहाबायरे० २ अहासुहुमे० २ दोच्चंपि विउव्वियसमुग्घाएणं जाव बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं विउव्वति, से जहानामए आलिंगपुक्खरे इ वा जाव मणीणं फासो, तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे पिच्छाघरमंडवं विउव्वति, अणेगखंभसयसंनिविट्ठं वण्णतो बहुसमरमणिज्जभूमिभागं विउव्वइ उल्लोयं अक्खाडगं च मणिपेढियं च विउव्वति, तीसे णं मणि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	सूर्याभदेव-कृत् भगवत् महावीरस्य पर्युपासना एवं नृत्य-प्रदर्शनं

प्रत सूत्रांक [२०-२३]

दीप अनुक्रम [२०-२३]



पेढियाए उवरि सीहासणं सपरिवारं जाव दामा चिट्ठंति । तए णं से सूरियाभे देवे समणस्स भगवतो महावीरस्स आलोए पणामं करेति २ त्ता खणुजाणउ मे भगवंतिकट्टु सीहासणवरगए तित्थयराभिमुहे सण्णिसण्णे । तए णं से सूरियाभे देवे तप्पढमयाए णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहनिउणोवचियमिसिमिसिंतविरातियमहाभरणकडगतुडियवरभूसणुज्जलं पीवरं पलंबं दाहिणं भुयं पसारेति । तओ णं सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं सरिसलावण्णरूवजोवनगुणोववेयाणं एगाभरणवसणगहियणिज्जोआणं दुहतोसंवलियग्गाणियत्थाणं आविद्धतिलयामेलाणं पिणिद्धगेविज्जकंचुयाणं उप्पीलियचित्तपट्टपरियरसफेणकावत्तरइयसंगयपलंववत्थंतचित्तचिल्लगनियंसणाणं एगावलिकंठरइयमोभंतवच्छपरिहत्थभूसणाणं अट्ठसयं णट्टसज्जाणं देवकुमाराणं णिग्गच्छति । तयाणंतरं च णं णाणामणि जाव पीवरं पलंबं वामं भुयं पसारेति, तओ णं सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वतीणं सरिसलावण्णरूवजोवणगुणोववेयाणं एगाभरणवसणगहियनिज्जोयाणं दुहतोसंवेल्लियग्गनियत्थीणं आविद्धतिलयामेलाणं पिणद्धगेवेज्जकंचुतीणं णाणामणिरयणभूसणविराइयंगमंगाणं चंदाणणाणं चंदद्धसमनिलाडाणं चंदाहियसोमदंसणाणं उक्का इव उज्जोवेमाणीणं सिंगारागारचारुवेसाणं हसियभणियचिट्ठियविलाससललियसंलावनिउणजुत्तोवयारकुसलाणं गहियाउज्जाणं अट्ठसयं नट्टसज्जाणं देवकुमारियाणं णिग्गच्छइ । तए णं



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

प्रत सूत्रांक [२०-२३]

दीप अनुक्रम [२०-२३]

से सूरियाभे देवे अट्ठसयं संखाणं विउव्वति अट्ठसयं संखवायाणं विउव्वइ अट्ठसयं सिंगाणं विउव्वइ अट्ठसयं सिंगवायाणं विउव्वइ अट्ठसयं संखियाणं विउव्वइ अट्ठसयं संखियवायाणं विउव्वइ अट्ठसयं खरमुहीणं विउव्वइ अट्ठसयं खरमुहिवाइयाणं विउव्वइ अट्ठसयं पेयाणं विउव्वति अट्ठसयं पेयावायगाणं अट्ठसयं पीरपीरियाणं विउव्वइ एवमाइयाइं एगूणपण्णं आउज्जविहाणाइं विउव्वइ २ त्ता तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीयाओ य सद्दावेंति, तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीयो य सूरियाभेणं देवेणं सद्दाविया समाणा हट्ठ जाव जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छन्ति तेणेव २ त्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावित्ता एवं वयासी–संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं अम्हेहिं कायवं, तए णं से सूरियाभे देवे ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य एवं वयासी–गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया! समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेह करित्ता वंदह नमंसह वंदित्ता नमंसित्ता गोयमाइयाणं समणाणं निग्गंथाणं तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं दिव्वाणुभावं दिव्वं बत्तीसइबद्धं णट्टविहिं उवदंसेह उवदंसित्ता खिप्पामेव एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह । तए णं ते बहवे देवकुमारा देवकुमारियो य सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठजाव करयल जाव पडिसुणंति २ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति २ समणं भगवं महावीरं जाव नमंसित्ता जेणेव गोयमादिया समणा निग्गंथा तेणेव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

प्रत सूत्रांक [२०-२३]

दीप अनुक्रम [२०-२३]

उवागच्छंति, तए णं ते बहवे देवकुमारा देवकुमारियो य समामेव समोसरणं करेंति, समा २ त्ता समामेव पंतिओ बंधंति, समामेव पंतिओ बंधित्ता समामेव पंतिओ नमंसंति समामेव २ सित्ता समामेव पंतीओ अवणमंति २ त्ता समामेव उन्नमंति २ एवं सहितामेव ओनमंति एवं सहितामेव उन्नमंति सहियामेव उण्णमित्ता थिमियामेव ओणमंति थिमियामेव उन्नमन्ति संगयामेव ओनमंति संगयामेव उन्नमंत्ति २ त्ता समामेव पसरंति २ त्ता समामेव आउज्जविहाणाइं गेण्हंति समामेव पवाएंसु पगाइंसु पणच्चिंसु, किं ते ?, उरेण मंदं सिरेण तारं कंठेण वितारं तिविहं तिसमयेरयगरइयं गुंजावक्ककुहरोवगूढं रत्तं तिठाणकरणसुद्धं सकुहरगुंजंतवंसतंतीतलतालल्लयगहसुसंपउत्तं महुरं समं सललियं मणोहरं मिउरिभियपयसंचारं सुरइ सुणइ वरचारुरूवं दिव्वं णट्टसज्जं गेयं पगीया वि होत्था, किं ते ?, उद्धमंताणं संखाणं सिंगाणं संखियाणं खरमुहीणं पेयाणं परपिरियाणं आहंमंताणं पणवाणं पडहाणं अप्फालिज्जमाणाणं भंभाणं होरंभाणं [वीणाणं विपंची(पंची)णं] तालिज्जंताणं भेरीणं झल्लरीणं दुंदुहीणं आलिवंताणं [मुरयाणं] मुइंगाणं नन्दीमुइंगाणं उत्तालिज्जंताणं आलिंगाणं कुंतुंबाणं गोमुहीणं मद्दलाणं मुच्छिज्जंताणं वीणाणं विपंचीणं वल्लकीणं कुट्टिज्जंताणं महंतीणं कच्छभीणं चित्तवीणाणं सारिज्जंताणं बद्धीसाणं सुघोसाणं णंदिघोसाणं फुट्टिज्जंतीणं भामरीणं छब्भामरीणं परिवायणीणं छिप्पंतीणं तूणाणं तूंबवीणाणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

प्रत सूत्रांक [२०-२३]

दीप अनुक्रम [२०-२३]

आमोडिज्जंताणं आमोताणं कुंभाणं नउलाणं अच्छिज्जंतीणं मुगुंदाणं हुडुक्कीणं विचिक्कीणं वाइज्जंताणं करडाणं डिंडिमाणं किणियाणं कडंबाणं वाइज्जंताणं दद्दरगाणं दद्दरिगाणं कुतुंबाणं कलसियाणं मडुयाणं आवडिज्जंताणं तलाणं तालाणं कंसतालाणं घट्टिज्जंताणं रिंगिरिसियाणं लत्तियाणं मगरियाणं सुसुमारियाणं फूमिज्जंताणं वंसाणं वेलूणं वालीणं परिल्लीणं बद्धगाणं, तए णं से दिव्वे गीए दिव्वे नट्टे दिव्वे वाइए एवं अब्भुए सिंगारे उराले मणुन्ने मणहरे गीते मणहरे नट्टे मणहरे वातिए उप्पिंजलभूते कहकहभूते दिव्वे देवरमणे पवत्तेयावि होत्था, तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स सोत्थियसिरिवच्छणंदियावत्तवद्धमाणगभद्दासणकलसमच्छदप्पणमंगल्लभत्तिचित्तं णामं दिव्वं नट्टविधिं उवदंसेंति (सू. २३)

नाट्यदर्शनम् सू० २३

ततः श्रमणो भगवान् महावीरः सूर्याभस्य देवस्य श्वेतस्य राज्ञो धारणीप्रमुखानां च देवीनां तस्याश्च 'महइमहालियाए' इति अतिशयेन महत्या 'इसिपरिसाए' इति ऋषयः—त्रिकालदर्शिनस्तेषां पर्षत् तस्याः, अवध्यादिजिनपर्षद इत्यर्थः, मुनिपर्षदो—यथोक्तानुष्ठानानुष्ठायिसाधुपर्षदः 'जतिपरिसाए' इति यतन्ते उत्तरगुणेषु विशेषत इति यतयो—विचित्रद्रव्याद्यभिग्रहाद्युपेताः साधवस्तेषां पर्षदो यतिपर्षदः, 'विदुपरिसाए' इति विद्वत्परिषदः—अनेकविज्ञानपर्षदो देवपर्षदः इक्ष्वाकुपर्षदः क्षत्रियपर्षदः कौरव्यपर्षदः कथम्भूताया इत्याह—'अणेगसयाए' इति अनेकानि पुरुषाणां शतानि सङ्ख्यया यस्यां सा अनेकशता तस्याः 'अणेगवंदाए' इति अनेकानि वृन्दानि यस्याः सा तथा तस्याः, 'अणेगसयवंदपरिवाराए' इति अनेकशतानि—अनेकशतसङ्ख्यानि वृन्दानि परिवारो

॥ ४६ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

प्रत सूत्रांक [२०-२३]

दीप अनुक्रम [२०-२३]

यस्याः सा तथा तस्याः, 'महतिमहालियाए परिसाए' अतिशयेन महत्या पर्षदः 'ओहबले' इति ओघेन–प्रवाहेण बलं यस्य, न तु कथयतो बलहानिरुपजायते इति भावः, 'एवं जहा उववाइए तहा भाणियव्वमि'ति, एवं यथा औपपातिके ग्रन्थे तथा वक्तव्यं, तच्चैवं–'अइबले महाबले अपरिमियबलवीरियतेयमाहप्पकंतिजुत्ते सारदनवथणियमहुरगंभीरकुंचनिग्घोसदुंदुभिस्सरे उरेवित्थडाए कंठेवट्ठियाए सिरेसमावन्नाए अगरलाए अमम्मणाए पुडविसयमहुरगंभीरगाहिगाए सव्वक्खरसन्निवाइयाए गिराए सव्वभासाणुगामिणीए सव्वसंसयविमोयणीए अपुणरुत्ताए सरस्सईए जोयणनीहारिणा सरेणं अद्धमागहाए भासाए भासइ, अरिहाधम्मं परिकहेइ, तंजहा–अत्थि लोए अत्थि अलोए अत्थि जीवे अत्थि अजीवेत्यादि, तावत् यावत् तए णं सा महइमहालिया मणुस्सपरिसा समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठा समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ करित्ता वंदइ नमंसइ २ त्ता एवं वयासी–सुयक्खाए णं भंते ! निग्गंथे पावयणे, नत्थि णं केई समणे माहणे वा एरिसं धम्ममाइक्खित्तए, एवं वइत्ता जामेव दिसिं पाउब्भूता तामेव दिसिं पडिगया। तए णं सेए राया समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठचित्तमाणंदिए जाव हरिसवसविसप्पमाणहियए समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता पसिणाइं पुच्छइ पुच्छित्ता अट्ठाइं परियाएइ परियाइत्ता उट्ठाए उट्ठेइ उट्ठित्ता समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ २ एवं वयासी–सुयक्खाए णं भंते ! निग्गंथे पावयणे जाव एरिसं धम्ममाइक्खित्तए, एवं वइत्ता हत्थिं दुरूहइ दुरूहित्ता समणस्स भगवतो महावीरस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ पडिनिक्खमित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगते" इति, इदं च प्रायः सकलमपि सुगमं नवरं यामेव दिशमवलम्ब्य, किमुक्तं भवति ?–यतो दिशः सकाशात् प्रादुर्भूतः–समवसरणे

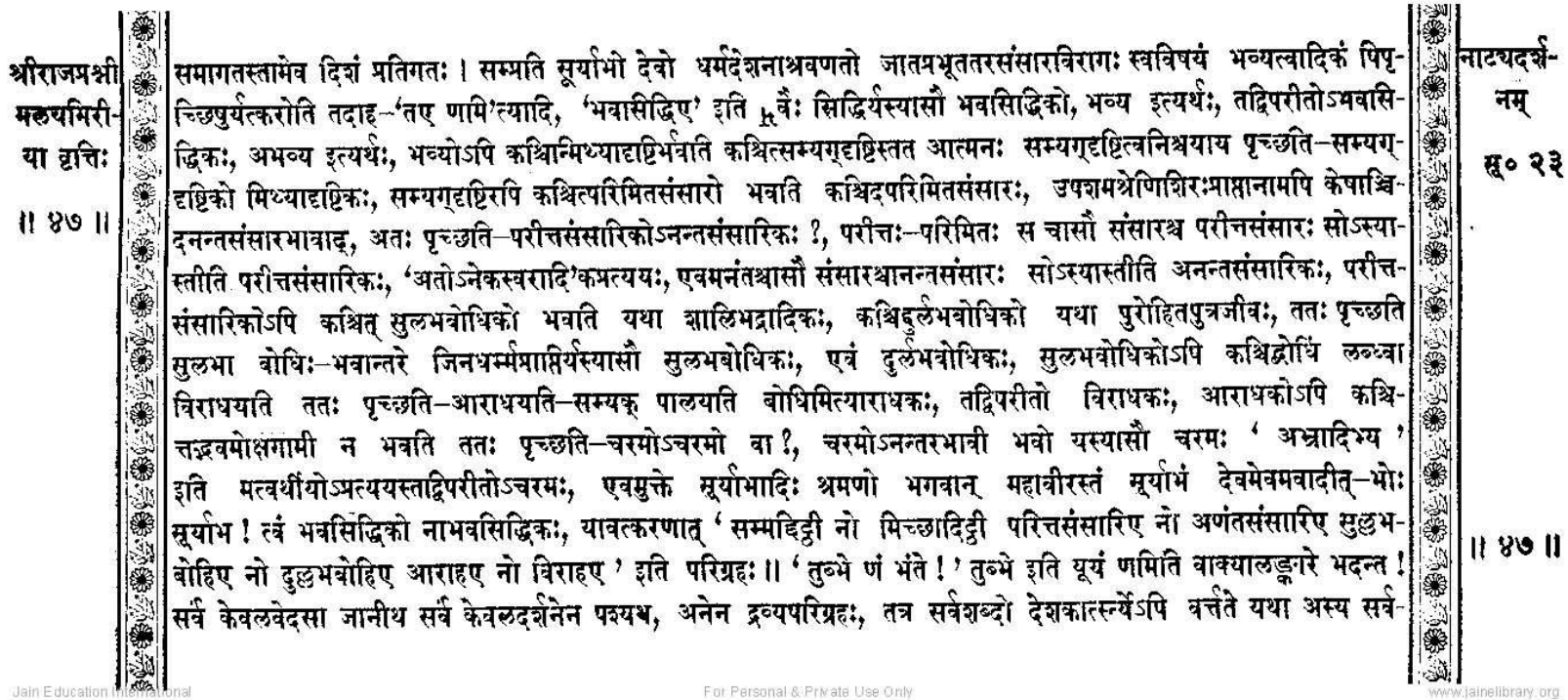
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [२०-२३]

दीप अनुक्रम [२०-२३]



समागतस्तामेव दिशं प्रतिगतः । सम्प्रति सूर्याभो देवो धर्मदेशनाश्रवणतो जातप्रभूततरसंसारविरागः स्वविषयं भव्यत्वादिकं पिपृच्छिषुर्यत्करोति तदाह–'तए णमि'त्यादि, 'भवसिद्धिए' इति भवैः सिद्धिर्यस्यासौ भवसिद्धिको, भव्य इत्यर्थः, तद्विपरीतोऽभवसिद्धिकः, अभव्य इत्यर्थः, भव्योऽपि कश्चिन्मिथ्यादृष्टिर्भवति कश्चित्सम्यग्दृष्टिस्तत आत्मनः सम्यग्दृष्टित्वनिश्चयाय पृच्छति–सम्यग्दृष्टिको मिथ्यादृष्टिकः, सम्यग्दृष्टिरपि कश्चित्परिमितसंसारो भवति कश्चिदपरिमितसंसारः, उपशमश्रेणिशिरःप्राप्तानामपि केषाञ्चिदनन्तसंसारभावाद्, अतः पृच्छति–परीत्तसंसारिकोऽनन्तसंसारिकः ?, परीत्तः–परिमितः स चासौ संसारश्च परीत्तसंसारः सोऽस्यास्तीति परीत्तसंसारिकः, 'अतोऽनेकस्वरादि'कप्रत्ययः, एवमनंतश्चासौ संसारश्चानन्तसंसारः सोऽस्यास्तीति अनन्तसंसारिकः, परीत्तसंसारिकोऽपि कश्चित् सुलभबोधिको भवति यथा शालिभद्रादिकः, कश्चिद्दुर्लभबोधिको यथा पुरोहितपुत्रजीवः, ततः पृच्छति सुलभा बोधिः–भवान्तरे जिनधर्म्मप्राप्तिर्यस्यासौ सुलभबोधिकः, एवं दुर्लभबोधिकः, सुलभबोधिकोऽपि कश्चिद्बोधिं लब्ध्वा विराधयति ततः पृच्छति–आराधयति–सम्यक् पालयति बोधिमित्याराधकः, तद्विपरीतो विराधकः, आराधकोऽपि कश्चित्तद्भवमोक्षगामी न भवति ततः पृच्छति–चरमोऽचरमो वा ?, चरमोऽनन्तरभावी भवो यस्यासौ चरमः ' अभ्रादिभ्य ' इति मत्वर्थीयोऽत्ययस्तद्विपरीतोऽचरमः, एवमुक्ते सूर्याभादिः श्रमणो भगवान् महावीरस्तं सूर्याभं देवमेवमवादीत्–भोः सूर्याभ ! त्वं भवसिद्धिको नाभवसिद्धिकः, यावत्करणात् ' सम्मद्दिट्ठी नो मिच्छादिट्ठी परित्तसंसारिए नो अणंतसंसारिए सुलभबोहिए नो दुल्लभबोहिए आराहए नो विराहए ' इति परिग्रहः ॥ ' तुब्भे णं भंते ! ' तुब्भे इति यूयं णमिति वाक्यालङ्कारे भदन्त ! सर्वं केवलवेदसा जानीथ सर्वं केवलदर्शनेन पश्यथ, अनेन द्रव्यपरिग्रहः, तत्र सर्वशब्दो देशकात्स्न्येंऽपि वर्त्तते यथा अस्य सर्व-

॥ ४७ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

प्रत सूत्रांक [२०-२३]

दीप अनुक्रम [२०-२३]

स्यापि ग्रामस्यायमधिपतिरिति सचराचरविषयज्ञानदर्शनप्रतिपादनार्थमाह–' सव्वतो जाणह सव्वओ पासह ' सर्वतः–सर्वत्र दिक्षु ऊर्ध्वमधो लोकेऽलोके चेति भावः, जानीथ पश्यथ च, अनेन क्षेत्रपरिग्रहः, तत्र सर्वद्रव्यसर्वक्षेत्रविषयं वार्त्तमानिकमात्रमपि ज्ञानं दर्शनं वा सम्भाव्येत ततः सकलकालविषयज्ञानदर्शनप्रतिपादनार्थमाह–सर्वकालम्–अतीतमनागतं वर्त्तमानं च जानीथ पश्यथ, एतेन कालपरिग्रहः, तत्र कश्चित् सर्वद्रव्यसर्वक्षेत्रसर्वकालविषयमपि ज्ञानं सर्वपर्यायविषयं न सम्भावयेत् यथा मीमांसकादिः अत आह–सर्वान् भावान्–पर्यायान् स्वद्रव्यमात्मीयान् परकीयांश्च केवलवेदसा जानीथ केवलदर्शनेन पश्यथ, अथ भावा दर्शनविषया न भवन्ति ततः कथमुक्तं–' सव्वे भावे पासह ' इति ?, नैष दोषः, उत्कलितरूपतया हि ते भावा दर्शनविषया न भवन्ति, अनुत्कलितरूपतया तु ते भवन्त्येव, तथा चोक्तम्–" निर्विशेषं विशेषाणां, ग्रहो दर्शनमुच्यते,"इति, ततो 'जाणंति ण'मितिपूर्ववत् देवानां प्रियाः पूर्वमपि अनन्तरमुपदर्श्यमाननाट्यविधेः पश्चादपि च उपदर्श्यमाननाट्यविधेः, उत्तरकालं मम एतद्रूपां दिव्यां देवर्द्धिं दिव्यां देवद्युतिं दिव्यं देवानुभावं लब्धं (लब्धं) देशान्तरगतमपि किञ्चिद्भवति तत आह–प्राप्तं, प्राप्तमपि किञ्चिदन्तरायवशादनात्मवशं भवति तत आह–अभिसमन्वागतं, तत 'इच्छामि णमि'त्यादि, इच्छामि णमितिपूर्ववत् देवानां प्रियाणां पुरतो भक्तिपूर्वकं–बहुमानपुरस्सरं गौतमादीनां श्रमणानां निर्ग्रन्थानां दिव्यां देवर्द्धिं दिव्यां देवद्युतिं दिव्यं देवानुभावमुपदर्शयितुं द्वात्रिंशद्विधं–द्वात्रिंशत्प्रकारं नाट्यावधं–नाट्यविधानमुपदर्शयितुमिति । ' तए णमि'त्यादि, ततः श्रमणो भगवान् महावीरः सूर्याभेण देवेन एवमुक्तः सन् सूर्याभस्य देवस्यैनम्–अनन्तरोदितमर्थं नाद्रियते–न तदर्थकरणायादरपरो भवति, नापि परिजानाति–अनुमन्यते, स्वतो वीतरागत्वात् गौतमादीनां च नाट्यविधेः स्वाध्यायादिविघातकारित्वात्, केवलं तूष्णीकोऽवतिष्ठते, एवं द्वितीयमपि वारं, तृतीयमपि वारमुक्तः सन् भगवानेवमवतिष्ठति ।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

प्रत सूत्रांक [२०-२३]

दीप अनुक्रम [२०-२३]

'तए णमि'त्यादि, ततः पारिणामिक्या बुध्या तत्त्वमवगम्य मौनमेव भगवत उचितं न पुनः किमपि वक्तुं, केवलं मया भक्तिरात्मीयोपदर्शनीयेति प्रमोदातिशयतो जातपुलकः सन् सूर्याभो देवः श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते–स्तौति नमस्यति–कायेन वन्दित्वा नमस्थित्वा च 'उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागमि'त्यादि सुगमं, नवरं बहुसमभूमिवर्णनप्रेक्षागृहमण्डपवर्णनमणिपीठिकासिंहासनतदुपर्युल्लोचाङ्कुशमुक्तादामवर्णनानि च प्राग्वद् भावनीयानि । 'तए णमि'त्यादि, ततः सूर्याभो देवस्तीर्थङ्करस्य भगवतः आलोके प्रणामं करोति, कृत्वा चानुजानातु भगवान् मामित्यनुज्ञापनां कृत्वा सिंहासनवरगतः सन् तीर्थकराभिमुखः सन्निषण्णः । 'तए णमि'त्यादि, ततः सूर्याभो देवः 'तत्प्रथमतया' तस्य–नाट्यविधेः प्रथमतायां दक्षिणं भुजं प्रसारयति, कथम्भूतमित्याह–'नानामणिकणगरयणविमलमहारिहनिपुणोवचियमिसिमिसिंतविरइयमहाभरणकडगतुडियथवरभूसणुज्जलं' इति नानाविधानि मणिकनकरत्नानि येषु तानि नानामणिकनकरत्नानि, मणयो नानाविधाश्चन्द्रकान्तादयः कनकानि नानाविधानि नानावर्णतया रत्नानि नानाविधानि कर्केतनादीनि, तथा विमलानि–निर्मलानि तथा महान्तमुपभोक्तारमर्हन्ति यदिवा महम्–उत्सवं क्षणमर्हन्तीति महार्हाणि तथा निपुणं–निपुणबुद्धिगम्यं यथा भवति एवं 'ओविया' इति परिकर्मितानि 'मिसिमिसंतात्ति' दीप्यमानानि विरचितानि महाभरणानि यानि कटकानि–कलाचिकाभरणानि तुटितानि–बाहुरक्षका अन्यानि च यानि वरभूषणानि तैरुज्ज्वलं–भास्वरं तथा पीवरं–स्थूलं प्रलम्बं–दीर्घं । 'तए णमि'त्यादि, ततः–तस्माद् दक्षिणभुजात् अष्टशतम्–अष्टाधिकं शतं देवकुमाराणां निर्गच्छति, कथम्भूतानामित्याह–सदृशानां, समानाकाराणामित्यर्थः, तत्राकारेण कस्यचि(श्चि)त् सदृशोऽपि वर्णतः सदृशो न भवति ततः सदृग्वर्णत्वक्प्रतिपादनार्थमाह–' सरित्तयाण'मिति, सदृशी–सदृग् वर्णत्वक् येषां ते तथा, सदृक्त्वगपि कश्चित् वयसा विसदृशः सम्भाव्येत तत आह–' सरिच्वयाणं '

॥ ४८ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

प्रत सूत्रांक [२०-२३]

दीप अनुक्रम [२०-२३]

सदृक्–समानं वयो येषां ते तथा तेषां 'सरिसलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेयाण'मिति सदृशेन लावण्येन–लवणिम्ना अतिसुभगया शरीरकान्त्येति भावः, रूपेण–आकृत्या यौवनेन–यौवनिकया गुणैः–दक्षत्वप्रियंवदत्वादिभिरुपपेताः सदृशलावण्यरूपयौवनगुणोपपेतास्तेषां, 'एगाभरणवसनगहियनिज्जोगाणमि'ति एकः–समानः आभरणवसनादिः–आभरणवसनलक्षणो गृहीतो निर्योगः–उपकरणमर्थो नाट्योपकरणं यैस्ते तथा तेषां, 'दुहओ संवेल्लियग्गनियत्थाणं'ति द्विधातो–द्वयोः पार्श्वयोः संवेल्लितानि–संवृत्तानि अग्राणि यस्य तद् द्विधातःसंवेल्लिताग्रं न्यस्तं सामर्थ्यादुत्तरीयं यैस्ते तथा तेषां, तथा 'उप्पीलियचित्तपट्टपरियरसफेणगावत्तरइयसंगयपलंबवत्थंतचित्तचिल्लगनियंसणाण'मिति, उत्पीडितः–अत्यन्तावबद्धश्चित्रपट्टो–विचित्रवर्णपट्टरूपः परिकरो यैस्ते तथा यस्मिन्नावर्त्तने फेनविनिर्गमो भवति स सफेनकावर्त्त उच्यते ततः सफेनकावर्त्तेन रचिता सङ्गता–नाट्यविधावुपपन्नाः प्रलम्बा वस्त्रान्ता यस्य निवसनस्य तत्तथा तत् चित्रं–चित्रवर्णं चिल्लगं–देदीप्यमानं निवसनं–परिधानं येषां ते तथा, ततः पूर्वपदेन विशेषणसमासस्तेषां, 'एगावलिकंठरइयसोभंतवच्छपरिहत्थभूसणाण' मिति, एकावलिर्या कण्ठे रचिता तया शोभमानं वक्षो येषां ते तथा, परिहत्थशब्दो देश्यः परिपूर्णवाचकः, पडिहत्थानि–पूर्णानि भूषणानि येषां ते तथा, ततः पूर्वपदेन कर्म्मधारयस्तेषां, 'नट्टसज्जाणं' नृत्ये सज्जाः–प्रगुणीभूता नृत्यसज्जास्तेषां । तदनन्तरं च यथोक्तविशेषणविशिष्टं वामं भुजं प्रसारयति, तस्माद्–वामभुजात् अष्टशतं देवकुमारिकाणां विनिर्गच्छति, कथम्भूतामित्याह–' सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं सरिसलावण्णरूवजोव्वणगुणोववेयाणं एगाभरणवसणगहियनिज्जोईणं दुहतोसंवेल्लियग्गनियत्थीणमि'ति पूर्ववत् ' आविद्धतिलयामेलाणं ' आविद्धस्तिलक आमेलश्च–शेखरको यकाभिस्ता आविद्धतिलकामेलास्तासां ' पिणद्धगेवेज्जकञ्चुकाण'मिति, पिनद्धं ग्रैवेयकं–ग्रीवाभरणं कञ्चुकश्च यकाभिस्तास्तथा तासां,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

'नानामणिकणगरयणभूसणविराइयंगमंगीण'मिति, नानाविधानि मणिकनकरत्नानि येषु भूषणेषु तानि नानामणिकनकरत्नानि तैर्नानामणिकनकरत्नैर्भूषणैर्विराजितान्यङ्गप्रत्यङ्गानि–अङ्गप्रत्यङ्गानि यासां तास्तथा तासां, 'चंदाणगाणं चन्दद्धसण्ठिआलाणं चन्दाहियसोमदंसणाणं उक्का इव उज्जोवेमाणीण'मिति सुगमं 'सिङ्गारागारचारुवेसाणं हसियभणियचिट्ठियविलाससललियसंलावणिउणजुत्तोवयारकुसलाणं गहियाउज्जाणं नट्टसज्जाण'मिति पूर्ववत्। 'तए णं से सूरियाभे देवे' इत्यादि, ततः (स) सूर्याभो देवोऽष्टशतं शङ्खानां विकुर्वति, अष्टशतं शङ्खवादकानाम् १, अष्टशतं शृङ्गाणामष्टशतं शृङ्गवादकानां २ अष्टशतं शङ्खिकानां अष्टशतं शङ्खिकावादकानां२, ह्रस्वः शङ्खो जात्यन्तरात्मकः शङ्खिका, तस्या हि स्वरो मनाक् तीक्ष्णो भवति, न तु शङ्खवद्गतिगम्भीरः, तथा अष्टशतं खरमुखीनां–काहलानां अष्टशतं खरमुखीवादकानाम् ३, अष्टशतं पेयानां, पेया नाम महती काहला, अष्टशतं पेयवादकानां ४, अष्टशतं पीरिपीरिकाणां–कोलिकपुटावनद्धमुखवाद्यविशेषरूपाणामष्टशतं पीरिपीरिवादकानां ५ अष्टशतं पणवानां, पणवो–भाण्डपटहो लघुपटहो वा अष्टशतं पणववादकानां ६ अष्टशतं पटहानां अष्टशतं पटहवादकानां ७ अष्टशतं भम्भानां भम्भा–ढक्का अष्टशतं भम्भावादकानां ८ अष्टशतं होरम्भाणां, होरम्भा–महाढक्का अष्टशतं होरम्भावादकानां ९ अष्टशतं भेरीणां–ढक्काकृतिवाद्यविशेषरूपाणामष्टशतं भेरीवादकानां १० अष्टशतं झल्लरीणां झल्लरीनाम-चर्मावनद्धा विस्तीर्णवलयाकारा अष्टशतं झल्लरीवादकानां ११ अष्टशतं दुन्दुभीनामष्टशतं दुन्दुभिवादकानां दुन्दुभिर्मेर्याकारा सङ्कटमुखी देवातोद्यविशेषः १२ अष्टशतं मुरुजानां महाप्रमाणो मर्दलो मुरुजः अष्टशतं मुरुजवादकानां १३ अष्टशतं मृदङ्गानां लघुमर्दलो मृदङ्गोऽष्टशतं मृदङ्गवादकानां १४ अष्टशतं नन्दीमृदङ्गानां नन्दीमृदङ्गो नाम एकतः सङ्कीर्णोऽन्यत्र विस्तृतो मुरजविशेषः, अष्टशतं नन्दीमृदङ्गवादकानां १५ अष्टशतमालिङ्गानां आलिङ्गो–मुरजवाद्यविशेष एवाष्टश-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

तथालिङ्गवादकानां १६ अष्टशतं कुस्तुम्बाना कुस्तुम्बः–चर्मावनद्धपुटो वाद्यविशेषः अष्टशतं कुस्तुम्बवादकानां १७ अष्टशतं गोमुखीनां, गोमुखी लोकतोऽवसेया, अष्टशतं गोमुखीवादकानां १८ अष्टशतं मर्दलानां, मर्दलः–उभयतः समः, अष्टशतं मर्दलवादकानां १९ अष्टशतं विपञ्चीनां, विपञ्ची–त्रितन्त्री वीणा, अष्टशतं विपञ्चीवादकानां २०, अष्टशतं वल्लकीनां, वल्लकी–सामान्यतो वीणा, अष्टशतं वल्लकीवादकानां २१ अष्टशतं भ्रामरीणामष्टशतं भ्रामरीवादकानां २२ अष्टशतं षड्भ्रामरीणामष्टशतं षड्भ्रामरीवादकानां २३ अष्टशतं परिवादिनीनां परिवादिनी–सप्ततन्त्री वीणा अष्टशतं परिवादिनीवादकानां २४ अष्टशतं बद्धीसानामष्टशतं बद्धीसावादकानां २५ अष्टशतं सुघोषाणामष्टशतं सुघोषावादकानां २६ अष्टशतं नन्दिघोषाणामष्टशतं नन्दीघोषवादकानां २७ अष्टशतं महतीनां, महती–शततन्त्रिका वीणा अष्टशतं महतीवादकानां २८ अष्टशतं कच्छभीनामष्टशतं कच्छभीवादकानां २९ अष्टशतं चित्रवीणानां अष्टशतं चित्रवीणावादकानां ३० अष्टशतमामोदानामष्टशतं आमोदवादकानां ३१ अष्टशतं झल्लीनामष्टशतं झल्लीवादकानां ३२ अष्टशतं नकुलानां अष्टशतं नकुलवादकानां ३३ अष्टशतं तूणानामष्टशतं तूणावादकानां ३४ अष्टशतं तुम्बवीणानां तुम्बयुक्ता वीणा या तुम्बवीणा अद्यकल्यप्रसिद्धा अष्टशतं तुम्बवीणावादकानां ३५ अष्टशतं मुकुन्दानां, मुकुन्दो–मुरुजवाद्यविशेषो योऽतिलीनं प्रायो वाद्यते अष्टशतं मुकुन्दवादकानां ३६ अष्टशतं हुडुक्कानामष्टशतं हुडुक्कावादकानां हुडुक्का प्रतीता ३७, अष्टशतं चिविचिकीनामष्टशतं चिविचिकीवादकानां ३८, अष्टशतं करटीनामष्टशतं करटीवादकानां, करटी प्रतीता ३९ अष्टशतं डिण्डिमानामष्टशतं डिण्डिमवादकानां, प्रथमप्रस्तावनास्तवकः पणवविशेषः डिण्डिमः ४०, अष्टशतं किणितानामष्टशतं किणितवादकानां ४१ अष्टशतं कडवानामष्टशतं कडवावादकानां, कडवा–करटिका ४२, अष्टशतं दर्दरकाणामष्टशतं दर्दरवादकानां, दर्दरकः

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [२०-२३]

दीप अनुक्रम [२०-२३]

प्रतीतः ४३, अष्टशतं दर्दरिकाणामष्टशतं दर्दरिकावादकानां लघुदर्दरको दर्दरिका ४४ अष्टशतं कुस्तुम्बराणामष्टशतं कुस्तुम्बरवादकानां ४५ अष्टशतं कलशिकानामष्टशतं कलशिकावादकानां ४६, अष्टशतं कलशानामष्टशतं कलशवादकानां ४७, अष्टशतं तालानामष्टशतं तालवादकानां ४८, अष्टशतं कांस्यतालानामष्टशतं कांस्यतालवादकानां ४९, अष्टशतं रिंगिसिकानामष्टशतं रिंगिसिकावादकानां ५०, अष्टशतमङ्गरिकाणामष्टशतमङ्गरिकावादकानां ५१, अष्टशतं शिशुमारिकाणामष्टशतं शिशुमारिकावादकानां ५२, अष्टशतं वंशानामष्टशतं वंशवादकानां ५३ अष्टशतं बालीनामष्टशतं बालीवादकानां, वाली–तूणविशेषः, स हि मुखे दत्त्वा वाद्यते ५४, अष्टशतं वेणूनामष्टशतं वेणुवादकानां ५५, अष्टशतं परिलीनामष्टशतं परिलीवादकानां ५६, अष्टशतं बद्धकानामष्टशतं बद्धकवादकानां, बद्धकस्तूणविशेषः ५७, अव्याख्यातास्तु भेदा लोकतः प्रत्येतव्याः, एवमादीनि बहून्यातोद्यानि आतोद्यवादकांश्च विकुर्वति, सर्वसङ्ख्यया तु मूलभेदापेक्षयाऽऽतोद्यभेदा एकोनपञ्चाशत्, शेषास्तु भेदा एतेष्वेवान्तर्भवन्ति, यथा वंशातोद्यविधाने बालीवेणुपरिलीबद्धगा इति। 'एवमाइयाइं एगुणपण्णं आतोज्जविहाणाइं विउव्वइ' इति, विकुर्व्वित्वा च तान् स्वयंविकुर्वितान् देवकुमारान् देवकुमारिकाश्च शब्दयति, ते च शब्दिता हृष्टतुष्टानन्दितचित्ताः सूर्याभसमीपमागच्छन्ति, आगत्य च करतलपरिगृहीतं दशनखं शिरसावर्त्तं च मस्तकेऽञ्जलिं कृत्वा जयेन विजयेन वर्द्धापयित्वा एवमवादिषुः–सन्दिशन्तु देवानां प्रिया यदस्माभिः कर्त्तव्यं, ततः स सूर्याभो देवस्तान् बहून् देवकुमारान् देवकुमारिकाश्च एवमवादीत्–गच्छत यूयं देवानां प्रियाः श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रिकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणं कुरुत कृत्वा च वन्दध्वं नमस्यत वन्दित्वा नमस्यित्वा गौतमादीनां श्रमणानां निर्ग्रन्थानां तां देवजनमसिद्धां दिव्यां देवर्द्धिं दिव्यां देवद्युतिं दिव्यं देवानुभावं दिव्यं द्वात्रिंशद्विधं नाट्यविधिमुपदर्शयत, उपदर्श्य चैतामाज्ञप्तिकां क्षिप्रमेव प्रत्यर्पयत। 'तए णमि'-

॥ ५० ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

प्रत सूत्रांक [२०-२३]

दीप अनुक्रम [२०-२३]

त्यादि, ततस्ते बहवो देवकुमारा देवकुमारिकाश्च सूर्याभेन देवेन एवमुक्ताः सन्तो हृष्टा यावत्प्रतिशृण्वन्ति, अभ्युपगच्छन्तीत्यर्थः, प्रतिश्रुत्य च यत्र श्रमणो भगवान्महावीरस्तत्रोपागच्छति उपागत्य च श्रमणं भगवन्तं महावीरं त्रिःकृत्व आदक्षिणप्रदक्षिणीकुर्वन्ति कृत्वा च वन्दन्ते नमस्यन्ति वन्दित्वा नमस्यित्वा च यस्मिन्प्रदेशे गौतमादयः श्रमणास्तत्र समकालमेव–एककालमेव समवसरन्ति, मिलन्तीत्यर्थः, समवसृत्य च समकमेव–एककालमेव अवनमन्ति–अधो नीचा भवन्ति, अवनम्य च समकमेव उन्नमन्ति, ऊर्ध्वमवतिष्ठन्ते इति भावः, तदनन्तरं चैवं क्रमेण सहितं सङ्गतं स्तिमितं चावनमनमुन्नमनं च वाच्यम्, अमीषां च सहितादीनां भेदः सम्यक्कौशलोपेतनाट्योपाध्यायादेवागन्तव्यः, ततः स्तिमितं समकमुन्नम्य समकमेव प्रसरन्ति, प्रसृत्य च समकमेव यथायोगमातोद्यविधानानि गृह्णन्ति, गृहीत्वा च समकमेव प्रवादितवन्तः समकमेव प्रगीतवन्तः समकमेव प्रनर्तितवन्तः, 'किन्ते' इत्यादि, किञ्च ते देवकुमारा देवकुमारिकाश्च एवं प्रगीता अप्यभवन्निति योगः, कथमित्याह–'उरेण मंद'मिति, सर्वत्र सप्तम्यर्थे तृतीया, उरसि मन्दं यथा भवति एवं प्रगीताः, 'शिरेण तारं कण्ठेन वितार'मिति शिरसि कण्ठे च तारं अतिशयेन यथावल्लक्षणोपेतं, किमुक्तं भवति?–उरसि प्रथमतो गीतमुत्क्षिप्यते उत्क्षेपकाले च गीतं मन्दं भवति, 'आदिमिउमारभंता' इति वचनात्, अन्यथा गीतगुणक्षतेः, तत उक्तं 'उरसि मन्द'मिति, ततो गायतां मूर्द्धानमभिन्नन् स्वर उच्चैस्तरो भवति, स्थानकं च द्वितीयं तृतीयं वा समधिरोहति, ततः शिरसि तारमित्युक्तं, शिरसश्च प्रतिनिवृत्तः सन् स्वरः कण्ठे घुलति घुलंश्चातिमधुरो भवति ततः कण्ठे वितारमित्युक्तं तिविहंतिसमयरेयागरइयमिति, 'गुंजावंककुहरोवगूढं' गुञ्जनं गुञ्जा गुञ्जाप्रधानानि यानि अवक्राणि–शब्दमार्गाप्रतिकूलानि कुहराणि तेषूपगूढं गुञ्जावक्रकुहरोपगूढं, किमुक्तं भवति?–तेषां देवकुमाराणां देवकुमारिकाणां च तस्मिन् प्रेक्षागृहमण्डपे गायता गीतं तेषु प्रेक्षागृहमण्डपस-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

प्रत सूत्रांक [२०-२३]

दीप अनुक्रम [२०-२३]

क्केष्वन्येषु च कुहरेषु स्वानुरूपाणि प्रतिशब्दसहस्राण्युत्थापयद्वर्त्तते इति, 'रत्तमि'ति रक्तं इह यत् गेयरागानुरक्तेन गीतं गीयते तत् रक्तमिति तद्विदां प्रसिद्धं, ' तिट्ठाणकरणसुध्ध'मिति त्रीणि स्थानानि–उरःप्रभृतीनि तेषु करणेन–क्रियया शुद्धं त्रिस्थानकरणशुद्धं, तद्यथा–उरःशुद्धं कण्ठशुद्धं शिरोविशुद्धं च, तत्र यदि उरसि स्वरः स्वभूमिकानुसारेण विशालो भवति तत उरोविशुद्धं स एव यदि कण्ठे वर्त्तितो भवति अस्फुटितश्च ततः कण्ठविशुद्धं यदि पुनः शिरः प्राप्तः सन् सानुनासिको भवति ततः शिरोविशुद्धं, यदि वा यत उरःकण्ठशिरोभिः श्लेष्मणा अव्याकुलितैर्विशुद्धैर्गीयते तत उरःकण्ठशिरोविशुद्धत्वात्त्रिस्थानकरणविशुद्धं, तथा सकुहरो गुञ्जन् यो वंशो ये च तन्त्रीतलतालललयग्रहास्तेषु सुष्ठु–अतिशयेन सम्प्रयुक्तं सकुहरगुञ्जद्वंशतन्त्रीतलतालललयग्रहसुसम्प्रयुक्तं, किमुक्तं भवति ?–सकुहरे वंशे गुञ्जति तन्त्र्यां च वाद्यमानायां यद्वंशतन्त्रीस्वरेणाविरुद्धं तत् सकुहरगुञ्जद्वंशतन्त्रीसुसम्प्रयुक्तं, तथा परस्परहतहस्ततलस्वरानुवर्त्ति यत् तत् तलसुसम्प्रयुक्तं, यत् मुरजकंशिकादीनामातोद्यानामाहतानां यो ध्वनिः पादोत्क्षेपो यश्च नृत्यतां नर्त्तिकापादोत्क्षेपस्तेन समं तत् तालसुसम्प्रयुक्तं, तथा शृङ्गमयो दारुमयो दन्तमयो वा योऽङ्गुलिकौशिकस्तेनाहतायास्तन्त्र्याः स्वरप्रकारो लयस्तमनुसरन् गेयलयसुसम्प्रयुक्तं, तथा यः प्रथमं वंशतन्त्र्यादिभिः स्वरो गृहीतस्तन्मार्गानुसारि ग्रहसुसम्प्रयुक्तं, तथा ' महुरि'ति मधुरस्वरेण गीयमानं, मधुरं कोकिलारुतवत्, तथा 'सममि'ति तलवंशस्वरादिसमनुगतं समं 'सललियं'ति यत्स्वरघोलनाप्रकारेण ललतीव तत् सह ललितेन–ललनेन वर्त्तते इति सललितं, यदि वा इति यत् श्रोत्रेन्द्रियस्य शब्दस्पर्शनमतीव सूक्ष्ममुत्पादयति सुकुमारमिव च प्रतिभासते तत्सललितमिति, अत एव मनोहरं, पुनः कथम्भूतमित्याह–'मउरिभितपदसञ्चारं' तत्र मृदुर्मृदुनास्वरेण युक्तो न निष्ठुरेण तथा यत्र स्वरोऽक्षरेषु घोलनास्वरविशेषेषु च सञ्चरन् रङ्गतीव प्रतिभासते(स)पदसञ्चारो रिभित उच्यते, मृदुरि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

भितः पदेषु गेयनिबद्धेषु संचारो यत्र गेये तन्मृदुरिभितपदसञ्चारं, तथा 'सुरइ' इति शोभना रतिर्यस्मिन् श्रोतॄणां ततः सुरति तथा शोभना नतिर्नामोऽवसानो यस्मिन् तत् सुनति तथा वरं–प्रधानं चारु–विशिष्टचङ्गिमोपेतं रूपं–स्वरूपं यस्य तद्वरचारुरूपं दिव्यं–प्रधानं नृत्तप्रज्जं गेयं प्रगीता अप्यभवन्, 'किं ते' इत्यादि, किञ्च ते देवकुमारा देवकुमारिकाश्च प्रगीतवन्तः प्रनर्त्तितवन्तश्च 'उद्धुमंताणं संखाणमि'त्यादि, अत्र सर्वत्रापि षष्ठी सप्तम्यर्थे, ततोऽयमर्थो–यथायोगमुद्ध्मायमानादिषु शङ्खादिषु, इह शङ्खशृङ्गशङ्खिकाखरमुहीपेया पिरिपिरिकाणां वादनमुद्ध्मानमिति प्रसिद्धं, पणवपटहानामामोटनं भंभाहोरम्भाणामास्फालनं भेरीझल्लरीदुन्दुभीनां ताडनं मुरजमृदङ्गनन्दीमृदङ्गानामालपनं आलिङ्गकुस्तुम्बगोमुखीमर्दलानामुत्तालनं वीणाविपञ्चीवल्लकीनां मूर्च्छनं भ्रामरीषड्भ्रामरीपरिवादनीनां स्यन्दनं बध्वासा (वद्धीसा) सुघोषानन्दिघोषाणां सारणं महतीकच्छपीचित्रवीणानां कुट्टनं आमोदझञ्झानकुलानामामोटनं तुम्बतूणवीणानां स्पर्शनं मुकुन्दहुडुक्कविचिक्कीकडवानां मूर्च्छनं करटाडिंडिमकिणिककडंबानां वादनं दर्दरदर्दरिकाकुस्तुम्बरुकलसिकामडुक्कानामुत्ताडनं तलतालकंसतालानामाताडनं रिङ्गिरसिकालत्तिकामकरिकाशिशुमारिकाणां वादनं वंशवेणुवालीपिरलीपिरलीबध्वगानां फुंकनमत उक्तं 'उद्धुमंताणं संखाण'मित्यादि, 'तए णं से दिव्वे गीए' इत्यादि, यत एवं प्रगीतवन्त इत्यादि, ततो णमिति पूर्ववत् तदिव्यं गीतं दिव्यं वादितं दिव्यं नृत्तमभवदितियोगः, दिव्यं नाम प्रधानं, 'एवमब्भुए गीए' इत्यादि, 'अब्भुए गीए अब्भुए वाइए अब्भुए नट्टे' अद्भुतं–आश्चर्यकारि 'सिंगारे वाइए सिंगारे नट्टे' सिंगारं–शृङ्गारं शृङ्गाररसोपेतत्वात्, अथवा शृङ्गारं नामालङ्कृतमुच्यते, तत्र यदन्यान्यविशेषकरणेनालङ्कृतमिव गीतं वादनं नृत्तं वा तत् शृङ्गारमिति, 'उराले गीए उराले वाइए उराले नट्टे' उदारं–स्फारं परिपूर्णगुणोपेतत्वात्, नतु क्वचिदपि हीनं, 'मणुण्णे गीए मणुण्णे वाइए मणुन्ने नट्टे' मनोज्ञं–मनोऽनुकूलं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

प्रत सूत्रांक [२०-२३]

दीप अनुक्रम [२०-२३]

द्रष्टॄणां श्रोतॄणां च मनोनिर्वृतिकरमिति भावः, तच्च मनोनिर्वृतिकरत्वं सामान्यतोऽपि स्यात् अतः प्रकर्षविशेषप्रतिपादनार्थमाह– 'मणहर' इति, 'मणहरे गीए मणहरे वाइए मणहरे नट्टे' मनो हरति–आत्मवशं नयति तद्विदामप्यतिचमत्कारकारितयेति मनोहरम्, एतदेवाह –' उप्पिञ्जलभूते ' उप्पिंजलम्–आकुलकं उत्पिञ्जलभूते आकुलके भूते, किमुक्तं भवति ?–महर्द्धिकदेवानामप्यतिशायितया परमक्षोभोत्पादकत्वेन सकलदेवासुरमनुजसमूहचित्ताक्षेपकारीति, 'कहकहभूते ' इति कहकहेत्यनुकरणं, कहकहेति भूतं–प्राप्तं कहकहभूतं, किमुक्तं भवति ?–निरन्तरं तत्तद्विशेषदर्शनतः समुच्छलितप्रमोदभरपरवशसकलदिक्चक्रवालवर्त्तिप्रेक्षकजनकृतप्रशंसावचनबोलकोलाहलव्याकुलीभूतामिति, अत एव दिव्यं देवरमणमपि देवानामपि रमणं–क्रीडनं प्रवृत्तमभूत् । 'तए णं ते बहवे देवकुमारा य' इत्यादि, ततस्ते बहवो देवकुमारा देवकुमारिकाश्च श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य पुरतो गौतमादिश्रमणानां स्वस्तिकश्रीवत्सनन्द्यावर्त्तवर्द्धमानकभद्रासनकलशमत्स्यदर्पणरूपाणामष्टानां मङ्गलकानां भक्त्या–विच्छित्त्या चित्रम्–आलेखनमाकाराभिधानं वा यस्मिन् स स्वस्तिकश्रीवत्सनन्द्यावर्त्तवर्द्धमानकभद्रासनकलशमत्स्यदर्पणमङ्गलभक्तिचित्रः, एवं सर्वत्रापि व्युत्पत्तिमात्रं यथायोगं परिभावनीयं, सम्यग्भावना तु कर्त्तुं न शक्यते, यतोऽमीषां नाट्यविधीनां सम्यक् स्वरूपप्रतिपादनं पूर्वान्तर्गते नाट्यविधिप्राभृते, तच्चेदानीं व्यवच्छिन्नमिति प्रथमं दिव्यं नाट्यविधिमुपदर्शयति,

तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य सममेव समोसरणं करेंति २ त्ता तं चेव भाणियव्वं जाव दिव्वे देवरमणे पवत्तयावि होत्था, तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

प्रत सूत्रांक [२४-२५]

दीप अनुक्रम [२४-२५]

समणस्स भगवओ महावीरस्स आवडपच्चावडसेढिगसेढिसोत्थियसोवत्थिअपूसमाणगमच्छंडमगरंड-जारमारापुप्फुल्लावलिपउमपत्तसागरतरंगवसंतलतापउमलयभत्तिचित्तं णाम दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति। एवं च एक्केक्कियाए णट्टविहीए समोसरणादीया एसा वत्तव्वया जाव दिव्वे देवरमणे पवत्ते-वि यावि होत्था। तए णं ते बहवे देवकुमारा देवकुमारियाओ य समणस्स भगवतो महावीरस्स ईहामिहउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिंनररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्तं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ३। एगतो वक्कं दुहओ वक्कं [एगतो खुहं दुहओ खुहं] एगओ चक्कवालं दुहओ चक्कवालं चक्कद्धचक्कवालं ४ णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति चंदावलिपविभत्तिं च वलियावलिपविभत्तिं च हंसावलिपविभत्तिं च सूरावलिपविभत्तिं च एगावलिपविभत्तिं च तारावलिपविभत्तिं च मुत्तावलिपविभत्तिं च कणगावलिपविभत्तिं च रयणावलिपविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहं उवदंसेंति ५ चंदुग्गमणपविभत्तिं सूरुग्गमणपविभत्तिं च उग्गमणुग्गमणपविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहं उवदंसेति ६ चंदागमणपविभत्तिं च सूरागमणपविभत्तिं च आगमणागमणपविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहं उवदंसेंति ७ चंदावरण-पविभत्तिं च सूरावरणपविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहं उवदंसेंति ८ चंदत्थमणपविभत्तिं च सूरत्थमण-पविभत्तिं च अत्थमणऽत्थमणपविभत्तिं नाम दिव्वं णट्टविहं उवदंसेंति ९ चंदमंडलपविभत्तिं च सूरमं-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

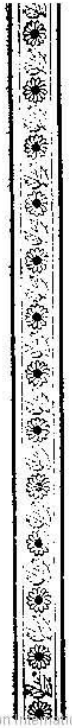
डलपविभत्तिं च नागमंडलपविभत्तिं च जक्खमंडलपविभत्तिं च भूतमंडलपविभत्तिं च [रक्खस० महोरग० गंधव्व० मंडलपविभत्तिं च] मंडलपविभत्तिं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति १० उसभललियवक्कंतं सीहललियवक्कंतं हयविलंबियं गयविलंबियं मत्तहयविलसियं मत्तगयविलसियं दुयविलंबियं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ११ सागरपविभत्तिं च नागरपविभत्तिं च सागरनागरपविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति १२ णंदापविभत्तिं च चंपापविभत्तिं च नन्दाचंपापविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं० १३ मच्छंडापविभत्तिं च मयरंडापविभत्तिं च जारापविभत्तिं च मारापविभत्तिं च मच्छंडामयरंडाजारामारापविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति १४ कत्तिककारपविभत्तिं च खत्तिखकारपविभत्तिं च गत्तिगकारपविभत्तिं च घत्तिघकारपविभत्तिं च ङत्तिङ्कारपविभत्तिं च ककारखकारगकारघकारङ्कारपविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति १५ एवं चकारवग्गोवि १६ टकारवग्गोवि १७ तकारवग्गोवि १८ पकारवग्गोवि १९ असोयपल्लवपविभत्तिं च अंबपल्लवपविभत्तिं च जंबूपल्लवपविभत्तिं च कोसंबपल्लवपविभत्तिं च पल्लव २ पविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति २० पउमलयापविभत्तिं च जाव सामलयापविभत्तिं च लयालयापविभत्तिं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति २१ दुयणामं णट्टविहिं उवदंसंति २२ विलंबियं णामं णट्टविहिं २३ दुयविलंबियं णामं णट्टविहिं २४ अंचियं २५ रिभियं २६ अंचियरि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

प्रत सूत्रांक [२४-२५]

दीप अनुक्रम [२४-२५]



भियं २७ आरभडं २८ भसोलं २९ आरभडभसोलं ३० उप्पयनिवयपवत्तं संकुचियं पसारियं रया (खेय)रइयभंतसंभंतणामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ३१। तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीयाओ य समागमेव समोसरणं करेंति जाव दिवे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स पुव्वभवचरियणिबद्धं च (देवलोयचरियनिबद्धं च) चवणचरियणिबद्धं च संहरणचरियनिबद्धं च जम्मणचरियनिबद्धं च अभिसेअचरियनिबद्धं च बालभावचरियनिबद्धं च जोव्वणचरियनिबद्धं च कामभोगचरियनिबद्धं च निक्खमणचरियनिबद्धं च तवचरणचरियनिबद्धं च (णाणुप्पाएचरियनिबद्धं च) तित्थपवत्तणचरियनिव्वरिनिव्वाणचरियनिबद्धं च चरिमचरियनिबद्धं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति ३२। तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीयाओ य चउव्विहं वाइत्तं वाएंति, तंजहा–ततं विततं घणं झुसिरं, तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य चउव्विहं गेयं गायंति, तंजहा–उक्खित्तं पायत्तं मंदायं रोइयावसाणं च। तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य चउव्विहं णट्टविहिं उवदंसन्ति, तंजहा–अंचियं रिभियं आरभडं भसोलं च, तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य चउव्विहं अभिणयं अभिणयंति, तंजहा–दिट्ठंतियं पाडिंतियं सामन्तोवणिवाइयं अंतोमज्झावसाणियं, तए णं ते



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

बहवे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य गोयमादियाणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुत्तिं दिव्वं देवाणुभागं दिव्वं बत्तीसइबद्धं नाडयं उवदंसित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ २ त्ता वंदंति नमंसंति वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छन्ति तेणेव उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति २ त्ता एवमाणत्तियं पच्चप्पिणंति (सू. २४) तए णं से सूरियाभे देवे तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं पडिसाहरइ पडिसाहरेत्ता खणेणं जाते एगे एगभूए तए णं से सूरियाभे देवे समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेइ वंदति णमंसति वंदित्ता णमंसित्ता नियगपरिवालसद्धिं संपरिवुडे तमेव दिव्वं जाणविमाणं दुरूहति दुरूहित्ता जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया ॥ (सू. २५)

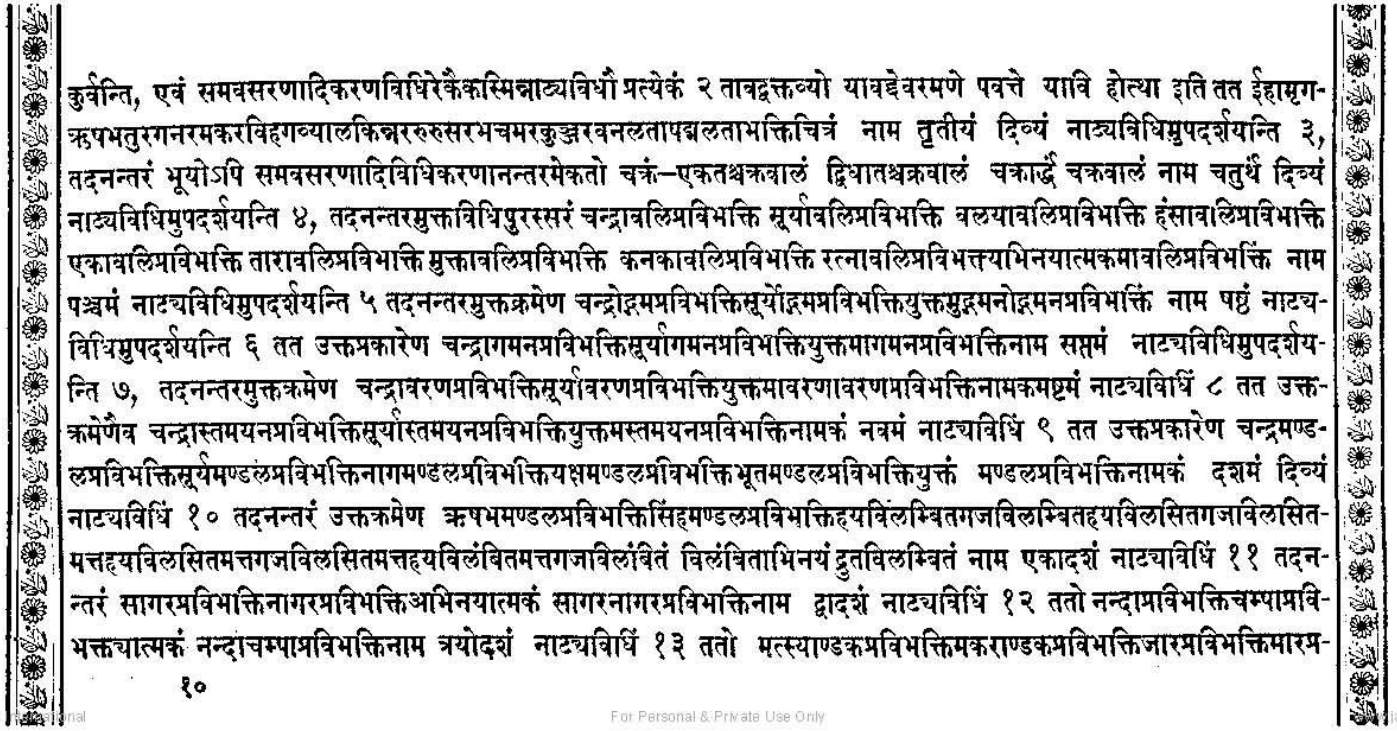
ततो द्वितीयं नाट्यविधिमुपदर्शयितुकामा भूयोऽपि प्रागुक्तप्रकारेण समकं समवसरणादिकं कुर्वन्ति, तथा चाह–' तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समकमेव समोसरणं करेंति ' इत्यादि प्रागुक्तं तदेव तावद्वक्तव्यं यावत् 'दिवे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था' इति । 'तए णमि'त्यादि, ततस्ते बहवो देवकुमारा देवकुमारिकाश्च श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य पुरतो गौतमादीनां श्रमणानां आवर्त्तप्रत्यावर्त्तश्रेणिप्रश्रेणिस्वस्तिकपुष्पमाणवकवर्द्धमानकमत्स्याण्डकमकराण्डकजारमारपुष्पावलिपद्मपत्रसागरतरङ्गवासन्तीलतापद्मलताभक्तिचित्रं नाम द्वितीयं नाट्यविधिमुपदर्शयन्ति २। तदनन्तरं तृतीयं नाट्यविधिमुपदर्शयितुं भूयस्तथैव समवसरणादिकं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

प्रत सूत्रांक [२४-२५]

दीप अनुक्रम [२४-२५]



कुर्वन्ति, एवं समवसरणादिकरणविधिरेकैकस्मिन्नाट्यविधौ प्रत्येकं २ तावद्वक्तव्यो यावद्देवरमणे पवत्ते यावि होत्था इति तत ईहामृग-ऋषभतुरगनरमकरविहगव्यालकिन्नररुरुसरभचमरकुञ्जरवनलतापद्मलताभक्तिचित्रं नाम तृतीयं दिव्यं नाट्यविधिमुपदर्शयन्ति ३, तदनन्तरं भूयोऽपि समवसरणादिविधिकरणानन्तरमेकतो चक्रं–एकतश्चक्रवालं द्विधातश्चक्रवालं चक्रार्द्धं चक्रवालं नाम चतुर्थं दिव्यं नाट्यविधिमुपदर्शयन्ति ४, तदनन्तरमुक्तविधिपुरस्सरं चन्द्रावलिप्रविभक्ति सूर्यावलिप्रविभक्ति वलयावलिप्रविभक्ति हंसावलिप्रविभक्ति एकावलिप्रविभक्ति तारावलिप्रविभक्ति मुक्तावलिप्रविभक्ति कनकावलिप्रविभक्ति रत्नावलिप्रविभक्त्यभिनयात्मकमावलिप्रविभक्तिं नाम पञ्चमं नाट्यविधिमुपदर्शयन्ति ५ तदनन्तरमुक्तक्रमेण चन्द्रोद्गमप्रविभक्तिसूर्योद्गमप्रविभक्तियुक्तमुद्गमनोद्गमनप्रविभक्तिं नाम षष्ठं नाट्य-विधिमुपदर्शयन्ति ६ तत उक्तप्रकारेण चन्द्रागमनप्रविभक्तिसूर्यागमनप्रविभक्तियुक्तमागमनप्रविभक्तिनाम सप्तमं नाट्यविधिमुपदर्शय-न्ति ७, तदनन्तरमुक्तक्रमेण चन्द्रावरणप्रविभक्तिसूर्यावरणप्रविभक्तियुक्तमावरणावरणप्रविभक्तिनामकमष्टमं नाट्यविधिं ८ तत उक्त-क्रमेणैव चन्द्रास्तमयनप्रविभक्तिसूर्यास्तमयनप्रविभक्तियुक्तमस्तमयनप्रविभक्तिनामकं नवमं नाट्यविधिं ९ तत उक्तप्रकारेण चन्द्रमण्ड-लप्रविभक्तिसूर्यमण्डलप्रविभक्तिनागमण्डलप्रविभक्तियक्षमण्डलप्रविभक्तिभूतमण्डलप्रविभक्तियुक्तं मण्डलप्रविभक्तिनामकं दशमं दिव्यं नाट्यविधिं १० तदनन्तरं उक्तक्रमेण ऋषभमण्डलप्रविभक्तिसिंहमण्डलप्रविभक्तिहयविलम्बितगजविलम्बितहयविलसितगजविलसित-मत्तहयविलसितमत्तगजविलसितमत्तहयविलंबितमत्तगजविलंबितं विलंबिताभिनयं द्रुतविलम्बितं नाम एकादशं नाट्यविधिं ११ तदन-न्तरं सागरप्रविभक्तिनागरप्रविभक्तिअभिनयात्मकं सागरनागरप्रविभक्तिनाम द्वादशं नाट्यविधिं १२ ततो नन्दाप्रविभक्तिचम्पाप्रवि-भक्त्यात्मकं नन्दाचम्पाप्रविभक्तिनाम त्रयोदशं नाट्यविधिं १३ ततो मत्स्याण्डकप्रविभक्तिमकराण्डकप्रविभक्तिजारप्रविभक्तिमारभ-

१०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

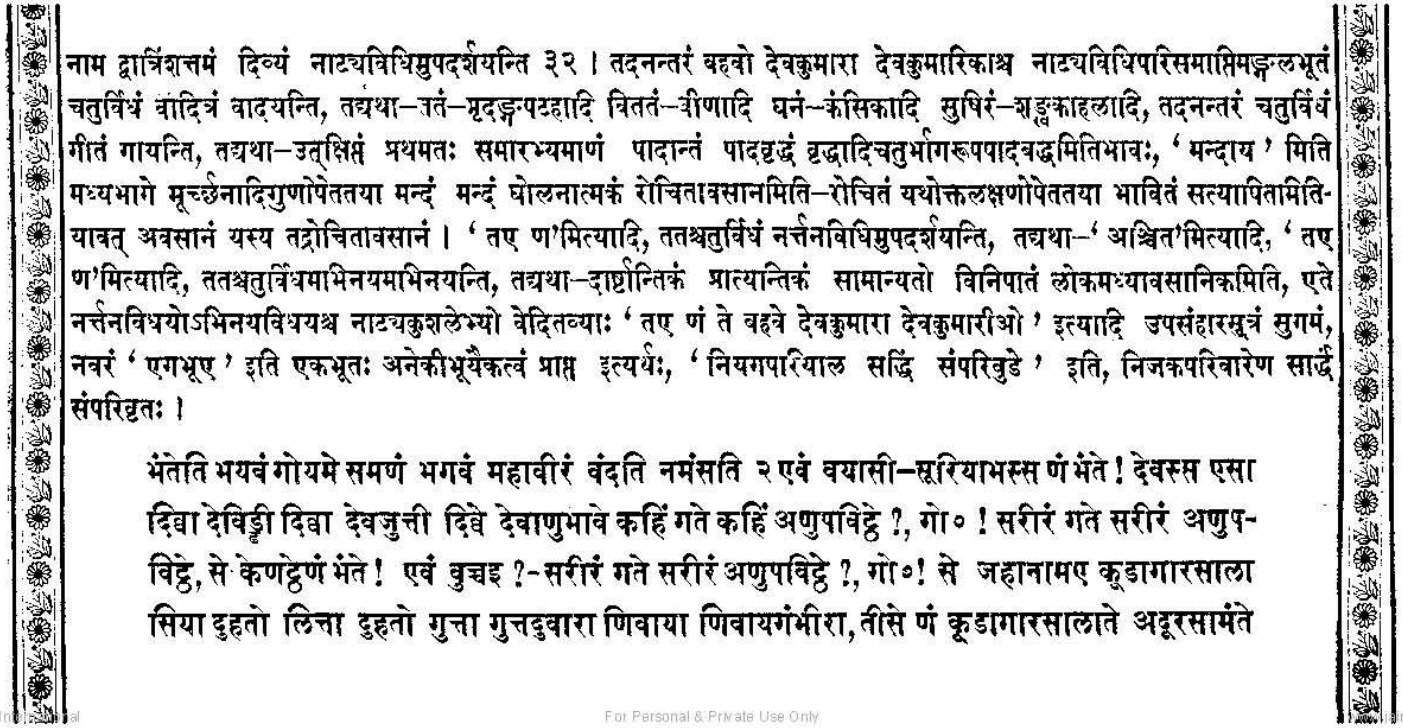
विभक्तियुक्तं मत्स्याण्डकमकराण्डकजारमारप्रविभक्तिनाम चतुर्दशं नाट्यविधिं १४ तदनन्तरं क्रमेण क इति ककारप्रविभक्तिः, ख इति खकारप्रवि० ग इति गकारप्र० घ इति घकारप्र० ङ इति ङकारप्रविभक्तिरित्येवं क्रमभाविककारादिप्रविभक्तिअभिनयात्मकं ककारखकारगकारघकारङकारप्रविभक्तिनामकं पञ्चदशं दिव्यं नाट्यविधिं १५ एवं चकारछकारजकारझकारञकारप्रविभक्तिनामकं षोडशं दिव्यं नाट्यविधिं १६ टकारठकारडकारढकारणकारप्रविभक्तिनामकं सप्तदशं दिव्यं नाट्यविधिं १७ तकारथकारदकारधकारनकारप्रविभक्तिनामकं अष्टादशं नाट्यविधिं १८ पकारफकारबकारभकारमकारप्रविभक्तिनामकमेकोनविंशतितमं दिव्यं नाट्यविधिं १९ ततोऽशोकपल्लवप्रविभक्त्याम्रपल्लवप्रविभक्तिजम्बूपल्लवप्रविभक्तिकोशम्बपल्लवप्रविभक्त्यभिनयात्मकं पल्लवप्रविभक्तिनामकं विंशतितमं दिव्यं नाट्यविधिं २० तदनन्तरं पद्मलताप्रविभक्तिनागलताप्रविभक्तिअशोकलताप्रविभक्तिचम्पकलताप्रविभक्तिचूतलताप्रविभक्तिवनलताप्रविभक्तिवासन्तीलताप्रविभक्तिकुन्दलताप्रविभक्तिअतिमुक्तकलताप्रविभक्तिश्यामलताप्रविभक्तिअभिनयात्मकं लताप्रविभक्तिनामकमेकविंशतितमं दिव्यं नाट्यविधिं २१ तदनन्तरं द्रुतं नाम द्वाविंशतितमं नाट्यविधिं २२ ततो विलम्बितं नाम त्रयोविंशतितमं २३ द्रुतविलम्बितं नाम चतुर्विंशतितमं २४ अञ्चितं नाम पञ्चविंशतितमं २५ रिभितं नाम षड्विंशतितमं २६ अञ्चितरिभितनाम सप्तविंशतितमं २७ आरभटं नाम अष्टाविंशतितमं २८ भसोलं नाम एकोनत्रिंशति(त्त)मं २९ आरभटभसोलं नाम त्रिंशत्तमं ३० तदनन्तरमुत्पातनिपातप्रसक्तं सङ्कुचितप्रसारितरेवकरचितं भ्रान्तसम्भ्रान्तं नाम एकत्रिंशत्तमं दिव्यं नाट्यविधिमुपदर्शयन्ति ३१ तदनन्तरं च श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य चरमपूर्वमनुष्यभवचरमच्यवनचरमगर्भसंहरणचरमभरतक्षेत्रावसर्पिणीतीर्थकरजन्माभिषेकचरमबालभावचरमयौवनचरमकामभोगचरमनिष्क्रमणचरमतपश्चरणचरमज्ञानोत्पादचरमतीर्थप्रवर्त्तनचरमपरिनिर्वाणनिबद्धं चरमनिबद्धं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुखः सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

प्रत सूत्रांक [२४-२५]

दीप अनुक्रम [२४-२५]



नाम द्वात्रिंशत्तमं दिव्यं नाट्यविधिमुपदर्शयन्ति ३२ । तदनन्तरं बहवो देवकुमारा देवकुमारिकाश्च नाट्यविधिपरिसमाप्तिमङ्गलभूतं चतुर्विधं वादित्रं वादयन्ति, तद्यथा–ततं–मृदङ्गपटहादि विततं–वीणादि घनं–कंसिकादि सुषिरं–शङ्खकाहलादि, तदनन्तरं चतुर्विधं गीतं गायन्ति, तद्यथा–उत्क्षिप्तं प्रथमतः समारभ्यमाणं पादान्तं पादवृद्धं वृद्धादिचतुर्भागरूपपादबद्धमितिभावः, 'मन्दाय' मिति मध्यभागे मूर्च्छनादिगुणोपेततया मन्दं मन्दं घोलनात्मकं रोचितावसानमिति–रोचितं यथोक्तलक्षणोपेततया भावितं सत्यापितामिति-यावत् अवसानं यस्य तद्रोचितावसानं । 'तए ण'मित्यादि, ततश्चतुर्विधं नर्त्तनविधिमुपदर्शयन्ति, तद्यथा–'अञ्चित'मित्यादि, 'तए ण'मित्यादि, ततश्चतुर्विधमभिनयमभिनयन्ति, तद्यथा–दार्ष्टान्तिकं प्रात्यन्तिकं सामान्यतो विनिपातं लोकमध्यावसानिकमिति, एते नर्त्तनविधयोऽभिनयविधयश्च नाट्यकुशलेभ्यो वेदितव्याः 'तए णं ते बहवे देवकुमारा देवकुमारीओ' इत्यादि उपसंहारसूत्रं सुगमं, नवरं 'एगभूए' इति एकभूतः अनेकीभूयैकत्वं प्राप्त इत्यर्थः, 'नियगपरियाल सद्धिं संपरिवुडे' इति, निजकपरिवारेण सार्द्धं संपरिवृतः ।

भंतेति भयवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसति २ एवं वयासी–सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स एसा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुत्ती दिव्वे देवाणुभावे कहिं गते कहिं अणुपविट्ठे ?, गो० ! सरीरं गते सरीरं अणुप-विट्ठे, से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ ?-सरीरं गते सरीरं अणुपविट्ठे ?, गो०! से जहानामए कूडागारसाला सिया दुहतो लित्ता दुहतो गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायगंभीरा, तीसे णं कूडागारसालाते अदूरसामंते

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भगवत् महावीरस्य संमुख: सूर्याभदेव-कृत् नाट्यविधि-दर्शनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [२६]

दीप अनुक्रम [२६]

त्थ णं महेगे जणसमूहे चिट्ठति, तए णं से जणसमूहे एगं महं अब्भवद्दलगं वा वासवद्दलगं वा महायं वा इज्जमाणं पासति २ त्ता तं कूडागारसालं अंतो अणुपविसित्ता णं चिट्ठइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति–सरीरं अणुपविट्ठे (सू. २६)

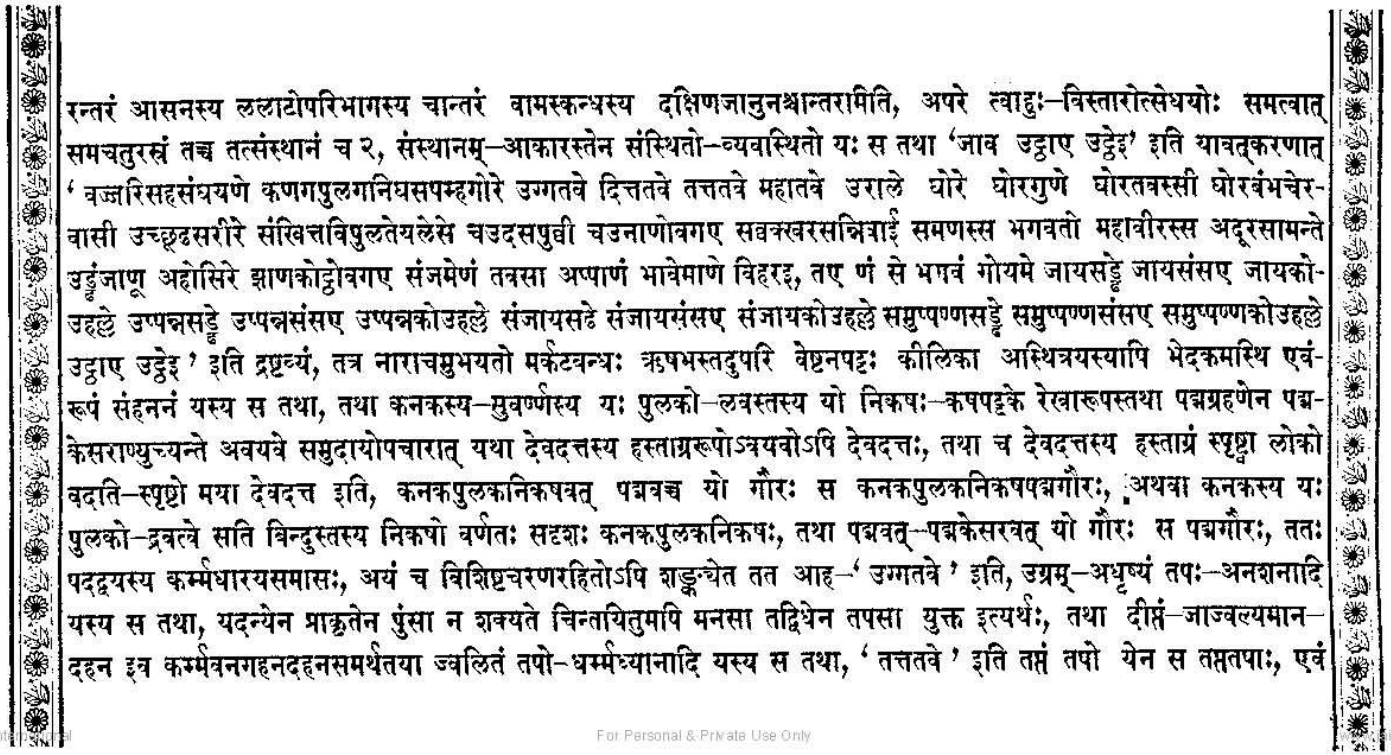
भदन्तेत्यामन्त्रणपुरस्सरं भगवान् गौतमः श्रमणं भगवन्तं महावीरं वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्थित्वा 'एवं' वक्ष्यमाणप्रकारेणावादीत्, पुस्तकान्तरे त्विदं वाचनान्तरं दृश्यते, 'तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स जिट्ठे अंतेवासी' इत्यादि, अस्य व्याख्या–तस्मिन् काले तस्मिन् समये णंशब्दो वाक्यालङ्कारार्थः, श्रमणस्य भगवतो महावीरस्य 'ज्येष्ठ' इति प्रथमोऽन्तेवासी–शिष्यः, अनेन पदद्वयेन तस्य सकलसङ्घाधिपतित्वमावेदयति, इन्द्रभूतिरिति मातापितृकृतं नामधेयं नामेतिप्राकृतत्वात् विभक्तिपरिणामेन नाम्नेति द्रष्टव्यं, एवमन्यत्रापि यथायोगं भावनीयम्, अन्तेवासी च किल विवक्षायां श्रावकोऽपि स्यादतस्तदाशङ्कान्यवच्छेदार्थमाह–'अनगारः' न विद्यते अगारं–गृहमस्येत्यनगारः, अयं च विगीतगोत्रोऽपि सम्भाव्येतात आह–गौतमो गोत्रेण गौतमाह्वयगोत्रसमन्वित इत्यर्थः, अयं च तत्कालोचितदेहपरिमाणापेक्षया न्यूनाधिकदेहोऽपि स्यादत आह–सप्तोत्सेधः–सप्तहस्तप्रमाणशरीरोच्छ्रायः, अयं चेत्थम्भूतो लक्षणहीनोऽपि शङ्क्येतातस्तदाशङ्कानपनोदार्थमाह–'समचउरंससंठाणसंठिए' इति, समाः–शरीरलक्षणशास्त्रोक्तप्रमाणाविसंवादिन्यश्चतस्रोऽस्रयो यस्य तत् समचतुरस्रं असयस्त्विह चतुर्दिग्विभागोपलक्षिताः शरीरावयवा द्रष्टव्याः, अन्ये त्वाहुः–समा–अन्यूनाधिकाश्चतस्रोऽप्यस्रयो यत्र तत् समचतुरस्रं तच्च तत् संस्थानं च, संस्थानम्–आकारः तच्च, वामदक्षिणजान्वो-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गौतमस्वामिनः वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२६]

दीप अनुक्रम [२६]



रन्तरं आसनस्य ललाटोपरिभागस्य चान्तरं वामस्कन्धस्य दक्षिणजानुनश्चान्तरामिति, अपरे त्वाहुः–विस्तारोत्सेधयोः समत्वात् समचतुरस्रं तच्च तत्संस्थानं च २, संस्थानम्–आकारस्तेन संस्थितो–व्यवस्थितो यः स तथा 'जाव उट्ठाए उट्ठेइ' इति यावत्करणात् ' वज्जरिसहसंघयणे कणगपुलगनिघसपम्हगोरे उग्गतवे दित्ततवे तत्ततवे महातवे उराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेर-वासी उच्छूढसरीरे संखित्तविपुलतेयलेसे चउदसपुव्वी चउनाणोवगए सव्वक्खरसन्निवाई समणस्स भगवतो महावीरस्स अदूरसामन्ते उड्ढंजाणू अहोसिरे झाणकोट्ठोवगए संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तए णं से भगवं गोयमे जायसड्ढे जायसंसए जायको-उहल्ले उप्पन्नसड्ढे उप्पन्नसंसए उप्पन्नकोउहल्ले संजायसड्ढे संजायसंसए संजायकोउहल्ले समुप्पण्णसड्ढे समुप्पण्णसंसए समुप्पण्णकोउहल्ले उट्ठाए उट्ठेइ ' इति द्रष्टव्यं, तत्र नाराचमुभयतो मर्कटबन्धः ऋषभस्तदुपरि वेष्टनपट्टः कीलिका अस्थित्रयस्यापि भेदकमस्थि एवं-रूपं संहननं यस्य स तथा, तथा कनकस्य–सुवर्णस्य यः पुलको–लवस्तस्य यो निकषः–कषपट्टके रेखारूपस्तथा पद्मग्रहणेन पद्म-केसराण्युच्यन्ते अवयवे समुदायोपचारात् यथा देवदत्तस्य हस्ताग्ररूपोऽवयवोऽपि देवदत्तः, तथा च देवदत्तस्य हस्ताग्रं स्पृष्ट्वा लोको वदति–स्पृष्टो मया देवदत्त इति, कनकपुलकनिकषवत् पद्मवच्च यो गौरः स कनकपुलकनिकषपद्मगौरः, अथवा कनकस्य यः पुलको–द्रवत्वे सति बिन्दुस्तस्य निकषो वर्णतः सदृशः कनकपुलकनिकषः, तथा पद्मवत्–पद्मकेसरवत् यो गौरः स पद्मगौरः, ततः पदद्वयस्य कर्म्मधारयसमासः, अयं च विशिष्टचरणरहितोऽपि शङ्कयेत तत आह–' उग्गतवे ' इति, उग्रम्–अधृष्यं तपः–अनशनादि यस्य स तथा, यदन्येन प्राकृतेन पुंसा न शक्यते चिन्तयितुमपि मनसा तद्विधेन तपसा युक्त इत्यर्थः, तथा दीप्तं–जाज्वल्यमान–दहन इव कर्म्मवनगहनदहनसमर्थतया ज्वलितं तपो–धर्म्मध्यानादि यस्य स तथा, ' तत्ततवे ' इति तप्तं तपो येन स तप्ततपाः, एवं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गौतमस्वामिनः वर्णनं

हि तेन तपस्तप्तं येन सर्वाण्यपि अशुभानि कर्म्माणि भस्मसात् कृतानीति 'महातवे' इति महान्–प्रशस्तमाशंसादोषरहितत्वात् तपो यस्य स महातपाः, तथा 'उराले' इति, उदारः–प्रधानः अथवा उरालो–भीष्मः उग्रादिविशिष्टतपःकरणतः पार्श्वस्थानामल्पसत्त्वानामतिभयानक इति भावः, तथा घोरो–निर्घृणः परीषहेन्द्रियादिरिपुगणविनाशनमधिकृत्य निर्दय इतियावत्, तथा घोरा–अन्यैर्दुरनुचरा गुणा मूलगुणादयो यस्य स घोरगुणः, तथा घोरैस्तपोभिस्तपस्वी घोरतपस्वी, 'घोरबंभचेरवासी' इति घोरं–दारुणमल्पसत्त्वैर्दुरनुचरत्वात् ब्रह्मचर्यं यत् तत्र वस्तुं शीलं यस्य स तथा, 'उच्छूढसरीरे' इति उच्छूढम्–उज्झितमिवोज्झितं संस्कारपरित्यागात् शरीरं येन स उच्छूढशरीरः, 'संखित्तविउलतेउलेसे' इति साङ्क्षिप्ता–शरीरान्तर्गतत्वेन ह्रस्वतां गता विपुला–विस्तीर्णा अनेकयोजनप्रमाणक्षेत्राश्रितवस्तुदहनसमर्थत्वात् तेजोलेश्या–विशिष्टतपोजन्यलब्धिविशेषप्रभवा तेजोज्वाला यस्य स तथा, 'चउदसपुवी' इति चतुर्दश पूर्वाणि विद्यन्ते यस्य तेनैव तेषां रचितत्वात् असौ चतुर्दशपूर्वी, अनेन तस्य श्रुतकेवलितामाह, स चावधिज्ञानादिविकलोऽपि स्यादत आह–'चउनाणोवगए' मतिश्रुतावधिमनःपर्यायज्ञानचतुष्टयसमन्वितः, उक्तविशेषणद्वययुक्तोऽपि कश्चिन्न समग्रश्रुतविषयव्यापिज्ञानो भवति चतुर्दशपूर्ववेदामापि षट्स्थानपतितत्वेन श्रवणादत आह–'सर्वाक्षरसन्निपाती' अक्षराणां सन्निपाताः–संयोगाः अक्षरसन्निपाताः सर्वे च ते अक्षरसन्निपाताश्च सर्वाक्षरसन्निपातास्ते यस्य ज्ञेयाः स तथा, किमुक्तं भवति ?–या काचित् जगति पदानुपूर्वी वाक्यानुपूर्वी वा संभवति ताः सर्वा अपि जानातीति, एवंगुणविशिष्टो भगवान् विनयराशिरिव साक्षादितिकृत्वा शिष्याचारत्वाच्च श्रमणस्य भगवतो महावीरस्यादूरसामन्ते विहरतीति योगः, तत्र दूरं–विप्रकृष्टं सामन्तं–सन्निकृष्टं तत्प्रतिषेधाददूरसामन्तं ततो नातिदूरे नातिनिकटे इत्यर्थः, किंविशिष्टः सन् तत्र विहरतीत्यत आह–'ऊड्ढंजाण अहोसिरे' ऊर्ध्वं

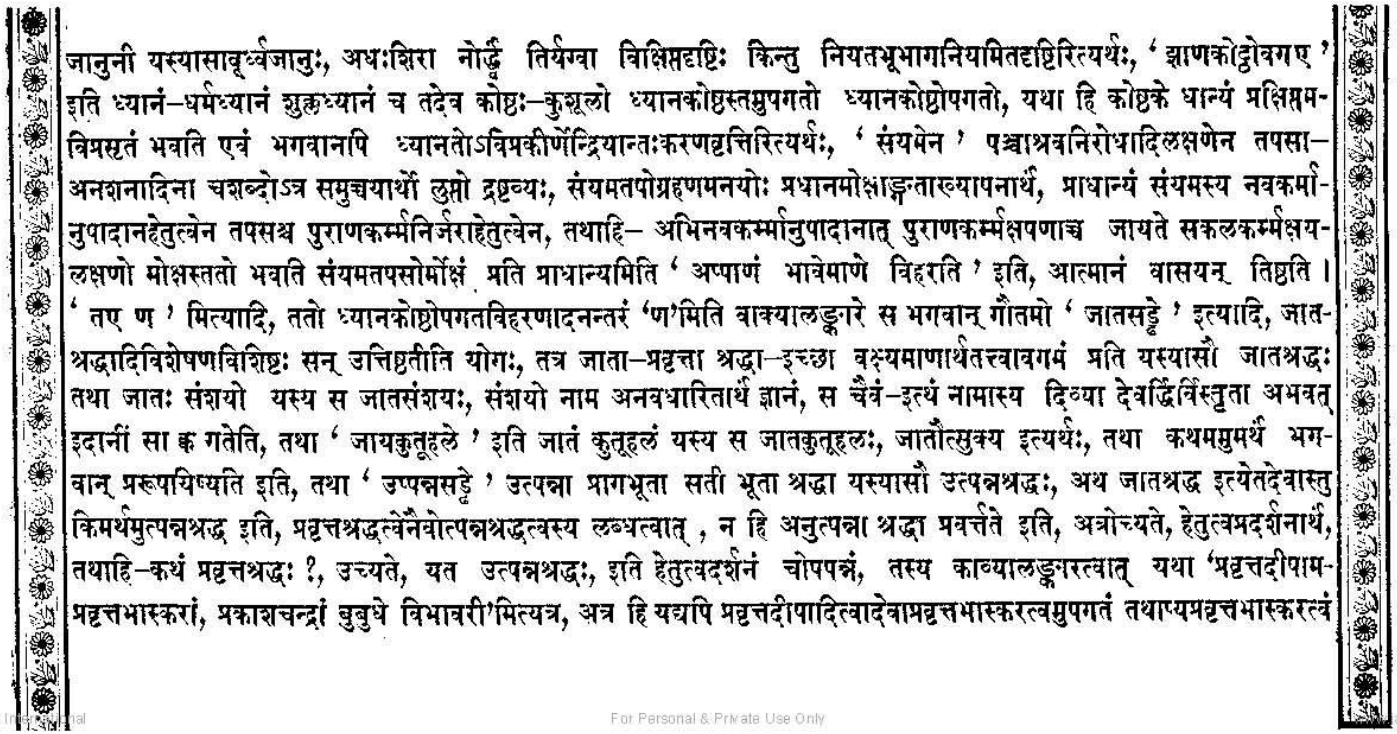
॥ ५७ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गौतमस्वामिनः वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२६]

दीप अनुक्रम [२६]



जानुनी यस्यासावूर्ध्वजानुः, अधःशिरा नोर्द्धं तिर्यग्वा विक्षिप्तदृष्टिः किन्तु नियतभूभागनियमितदृष्टिरित्यर्थः, ' झाणकोट्ठोवगए ' इति ध्यानं–धर्मध्यानं शुक्लध्यानं च तदेव कोष्ठः–कुशूलो ध्यानकोष्ठस्तमुपगतो ध्यानकोष्ठोपगतो, यथा हि कोष्ठके धान्यं प्रक्षिप्तमविप्रसृतं भवति एवं भगवानपि ध्यानतोऽविप्रकीर्णेन्द्रियान्तःकरणवृत्तिरित्यर्थः, ' संयमेन ' पञ्चाश्रवनिरोधादिलक्षणेन तपसा–अनशनादिना चशब्दोऽत्र समुच्चयार्थो लुप्तो द्रष्टव्यः, संयमतपोग्रहणमनयोः प्रधानमोक्षाङ्गताख्यापनार्थं, प्राधान्यं संयमस्य नवकर्मानुपादानहेतुत्वेन तपसश्च पुराणकर्म्मनिर्जराहेतुत्वेन, तथाहि– अभिनवकर्म्मानुपादानात् पुराणकर्म्मक्षपणाच्च जायते सकलकर्म्मक्षयलक्षणो मोक्षस्ततो भवति संयमतपसोर्मोक्षं प्रति प्राधान्यमिति ' अप्पाणं भावेमाणे विहरति ' इति, आत्मानं वासयन् तिष्ठति । ' तए ण ' मित्यादि, ततो ध्यानकोष्ठोपगतविहरणादनन्तरं 'ण'मिति वाक्यालङ्कारे स भगवान् गौतमो ' जातसड्ढे ' इत्यादि, जातश्रद्धादिविशेषणविशिष्टः सन् उत्तिष्ठतीति योगः, तत्र जाता–प्रवृत्ता श्रद्धा–इच्छा वक्ष्यमाणार्थतत्त्वावगमं प्रति यस्यासौ जातश्रद्धः तथा जातः संशयो यस्य स जातसंशयः, संशयो नाम अनवधारितार्थे ज्ञानं, स चैवं–इत्थं नामास्य दिव्या देवर्द्धिर्विस्तृता अभवत् इदानीं सा क्व गतेति, तथा ' जायकुतूहले ' इति जातं कुतूहलं यस्य स जातकुतूहलः, जातौत्सुक्य इत्यर्थः, तथा कथमसुमर्थं भगवान् प्ररूपयिष्यति इति, तथा ' उप्पन्नसड्ढे ' उत्पन्ना प्रागभूता सती भूता श्रद्धा यस्यासौ उत्पन्नश्रद्धः, अथ जातश्रद्ध इत्येतदेवास्तु किमर्थमुत्पन्नश्रद्ध इति, प्रवृत्तश्रद्धत्वेनैवोत्पन्नश्रद्धत्वस्य लब्धत्वात् , न हि अनुत्पन्ना श्रद्धा प्रवर्त्तते इति, अत्रोच्यते, हेतुत्वप्रदर्शनार्थं, तथाहि–कथं प्रवृत्तश्रद्धः ?, उच्यते, यत उत्पन्नश्रद्धः, इति हेतुत्वदर्शनं चोपपन्नं, तस्य काव्यालङ्कारत्वात् यथा 'प्रवृत्तदीपाम-प्रवृत्तभास्करां, प्रकाशचन्द्रां बुबुधे विभावरी'मित्यत्र, अत्र हि यद्यपि प्रवृत्तदीपादित्वादेवाप्रवृत्तभास्करत्वमुपगतं तथाप्यप्रवृत्तभास्करत्वं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	गौतमस्वामिनः वर्णनं

प्रवृत्तदीपत्वादेर्हेतुतयोपन्यस्तमिति सम्यक्, ' उप्पन्नसड्ढे उप्पन्नसंसये ' इति प्राग्वत्, तथा 'संजायसड्ढे' इत्यादि पदषट्कं प्राग्वत्, नवरमिह संशब्दः प्रकर्षादिवचनो वेदितव्यः, ' उट्ठाए उट्ठेइ ' त्ति उत्थानमुत्था–ऊर्द्ध वर्त्तनं तया उत्तिष्ठति, इह ' उट्ठेइ ' इत्युक्ते क्रियारम्भमात्रमपि प्रतीयेत यथा वक्तुमुत्तिष्ठते ततस्तद्व्यवच्छेदार्थमुत्थायेत्युक्तं उत्थया उत्थाय 'जेणेवे'त्यादि यस्मिन् दिग्भागे श्रमणो भगवान् महावीरो वर्त्तते ' तेणेवे'ति तस्मिन्नेव दिग्भागे उपागच्छति, उपागत्य च श्रमणं त्रिकृत्वः–त्रिवारान् आदक्षिण-प्रदक्षिणीकरोति, आदक्षिणप्रदक्षिणीकृत्य च वन्दते नमस्यति वन्दित्वा नमस्यित्वा एवमवादीत् । ' सूरियाभस्स णं भंते ! ' इत्यादि, ' कहिंगए' इति क्व गतः ?, तत्र गमनमन्तरप्रवेशाभावेऽपि दृष्टं यथा भित्तौ गतो धूलिरिति, एषोऽपि दिव्यानुभावो यद्येवं क्वचित्म-त्यासन्ने प्रदेशे गतः स्यात्ततो दृश्येत न चासौ दृश्यते, ततो भूयः पृच्छति–' कहिं अणुपविट्ठे ' इति क्वानुप्रविष्टः ? क्वान्तर्लीन इति भावः । भगवानाह–गौतम ! शरीरं गतः शरीरमनुप्रविष्टः पुनः पृच्छति–' सेकेणट्ठेण ' मित्यादि, अथ केनार्थेन–केन हेतुना भदन्त ! एवमुच्यते–शरीरं गतः शरीरमनुप्रविष्टः?, भगवानाह–गौतम ! ' से जहानामए ' इत्यादि, कूटस्येव–पर्वतशिखरस्येवाकारो यस्याः सा कूटाकारा, यस्या उपरि आच्छादनं शिखराकारं सा कूटाकारेति भावः, कूटाकारा चासौ शाला च कूटाकारशाला, यदिवा कूटाकारेण शिखराकृत्योपलक्षिता शाला कूटाकारशाला स्यात्, 'दुहतो लित्ता' इति बहिरन्तश्च गोमयादिना लिप्ता गुप्ता–बहिःप्राकारा-वृता गुप्तद्वारा द्वारस्थगनात् यदिवा गुप्ता गुप्तद्वारा–केषाञ्चित् द्वाराणां स्थगितत्वात् केषाञ्चिच्चास्थगितत्वादिति निवाता–वायोरप्रवे-शात् किल महद् गृहं निवातं प्रायो न भवति तत आह–निवातगम्भीरा–निवाता सती गम्भीरा निवातगम्भीरा, निवाता सती विशाला इत्यर्थः , ततस्तस्याः कूटाकारशालाया अदूरसामन्ते–नातिदूरे निकटे वा प्रदेशे महान् एकोऽन्यतरो जनसमूहस्तिष्ठति, स च एकं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

गौतमस्वामिनः वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२६]

दीप अनुक्रम [२६]

महत् अभ्ररूपं वार्दलं अभ्रवार्दलं, धाराभिपातरहितं सम्भाव्यवर्षं वार्दलमित्यर्थः, वर्षप्रधानं वार्दलकं वर्षवार्दलकं वर्षं कुर्वन्तं वार्दलकं महावातं वा 'एज्जमाण' मिति आयान्तं–आगच्छन्तं पश्यति, दृष्ट्वा च तं 'कूडागारसालं' द्वितीया षष्ठ्यर्थे तस्याः कूटाकारशालाया अन्तरं ततोऽनुप्रविश्य तिष्ठति, एवं सूर्याभस्यापि देवस्य सा तथा विशाला दिव्या देवर्धिर्दिव्या देवद्युतिर्दिव्यो देवानुभावः शरीरमनुप्रविष्टः 'से–एणट्ठेण' मित्यादि, अनेन प्रकारेण गौतम ! एवमुच्यते–' सूरियाभस्से ' त्यादि, भूयो गौतमः पृच्छति–

कहिं णं भंते ! सूरियाभस्स देवस्स सूरियाभे णामं विमाणे पन्नत्ते ?, गोयमा ! जंबूदीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जातो भूमिभागातो उड्ढं चंदिमसूरियगहगणणक्खत्ततारारूवाणं बहूइं जोयणाइं बहूइं जोयणसयाइं बहूइं जोयणसहस्साइं बहूइं जोयणसयसहस्साइं बहुईओ जोयणकोडीओ बहुईओ जोयणसयसहस्सकोडीओ उड्ढं दूरं वीतीवइत्ता एत्थ णं सोहम्मे कप्पे नामं कप्पे पन्नत्ते पाईणपडीणआयते उदीणदाहिणविच्छिण्णे अद्धचंदसंठाणसंठिते अच्चिमालिभासरासिवण्णाभे असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं इत्थ णं सोहम्माणं देवाणं बत्तीसं विमाणावाससयसहस्साइं भवंतीतिमक्खायं, ते णं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, तेसिणं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडिंसया पं० तंजहा–१ असोगवडिंसते २ सत्तवन्नवडिंसते ३ चंपकवडिंसते ४ चूयगवडिंसते ५ मज्झे सोहम्मवडिंसए, ते णं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

वडिंसगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, तस्स णं सोहम्मवडिंसगस्स महाविमाणस्स पुरच्छिमेणं तिरियमसंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं वीईवइत्ता एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सूरियाभे नामं विमाणे पन्नत्ते, अद्धत्तेरस जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं गुणयालीसं च सयसहस्साइं बावन्नं च सहस्साइं अद्ध य अडयाले जोयणसते परिक्खेवेणं, से णं एगेणं पागारेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते, से णं पागारे तिन्नि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले एगं जोयणसयं विक्खंभेणं मज्झे पन्नासं जोयणाइं विक्खंभेणं उप्पिं पणवीसं जोयणाइं विक्खंभेणं मूले विच्छिन्ने मज्झे संखित्ते उप्पिं तणुए गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वकणगामए अच्छे जाव पडिरूवे, से णं पागारे णाणा[माणि]विहपंचवन्नेहिं कविसीसएहिं उवसोभिते, तंजहा–किण्हेहिं नीलेहिं लोहितेहिं हालिद्देहिं सुक्किल्लेहिं कविसीसएहिं, ते णं कविसीसगा एगं जोयणं आयामेणं अद्धजोयणं विक्खंभेणं देसूणं जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं सव्वमणि(रयणा)मया अच्छा जाव पडिरूवा, सूरियाभस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए दारसहस्सं २ भवतीति मक्खायं, ते णं दारा पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेया वरकणगथूभियागा ईहामियउसभतुरगणरमगरविहगवालगकिन्नररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्ता खंभुग्गयवरवइरवेइया परिगयाभिरामा विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्तंपिव अच्चीसहस्समा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२७]

दीप अनुक्रम [२७]



लिणीया रूवगसहस्सकलिया भिसमाणा भिब्भिसमाणा चक्खुल्लोयणलेसा सुहफासा ससिरीयरूवा वन्नो दाराणं तेसिं होइ, तंजहा–वइरामया णिम्मा रिट्ठामया पइट्ठाणा वेरुलियमया सूइखंभा जायरूवोवचियपवरपंचवन्नमणिरयणकोट्टिमतला हंसगब्भमया एलुया गोमेज्जमया इंदकीला लोहियक्खमतीतो दारचेडीओ जोईरसमया उत्तरंगा लोहियक्खमईओ सूईओ वयरामया संधी नाणामणिमया समुग्गया वयरामया अग्गला अग्गलपासाया रययामयाओ आवत्तणपेढियाओ अंकुत्तरपासगा निरंतरियघणकवाडा भित्तीसु चेव भित्तिगुलिता छप्पन्ना तिण्णि होंति गोमाणसिया तइया णाणामणिरयणवालरूवगलीलट्ठिअसालभंजियागा वयरामया कुड्डा रययामया उस्सेहा सव्वतवणिज्जमया उल्लोया णाणामणिरयणजालपंजरमणिवंसगलोहियक्खपडिवंसगरययभोमा अंकामया पक्खा पक्खबाहाओ जोइरसामया वंसा वंसकवेल्लुयाओ रयणामयाओ पट्टियाओ जायरूवमईओ ओहाडणीओ वइरामईओ उवरिपुच्छणाओ सव्वसेयरययामयाच्छायणे अंकामया कणगकूडतवणिज्जथूभियागा सेया संखतलविमलनिम्मलदधिघणगोखीरफेणरययणिगरप्पगासा तिलगरयणद्धचंदचित्ता नाणामणिदामालंकिया अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्जवालुयापत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा (सूत्र २७)



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२७]

दीप अनुक्रम [२७]

क सूर्याभस्य देवस्य सूर्याभं विमानं प्रज्ञप्तं ?, भगवानाह–गौतम ! अस्मिन् जम्बूद्वीपे यो मन्दरः पर्वतस्तस्य दक्षिणतोऽस्या रत्नप्रभायाः पृथिव्या बहुसमरमणीयात् भूमिभागादूर्द्ध चन्द्रसूर्यग्रहगणनक्षत्रतारारूपाणामपि पुरतो बहूनि योजनानि बहूनि योजनशतानि ततो बुद्ध्या बहुबहुतरोल्लङ्घनेन बहूनि योजनसहस्राण्येवमेव बहूनि योजनशतसहस्राणि एवमेव च बह्वीर्योजनकोटीरेवमेव च बह्वीर्योजनकोटीकोटीरूर्द्ध दूरमुत्प्लुत्य अत्र–सार्द्धरज्जुप्रमाणे प्रदेशे सौधर्मो नाम कल्पः प्रज्ञप्तः, स च प्राचीनापाचीनायतः, पूर्वापरायतः इत्यर्थः, उदग्दक्षिणविस्तीर्णः, अर्द्धचन्द्रसंस्थानसंस्थितो, द्वौ हि सौधर्मेशानदेवलोकौ समुदितौ परिपूर्णचन्द्रमण्डलसंस्थानसंस्थितौ, तयोश्च मेरोर्दक्षिणवर्ती सौधर्मकल्प उत्तरवर्त्ती ईशानकल्पः ततो भवति सौधर्म्मकल्पः चन्द्रसंस्थानसंस्थितः, 'अच्चिमाली' इति अर्चींषि–किरणानि तेषां माला अर्चिर्माला सा अस्यास्तीति अर्चिर्मालीव किरणमालासङ्कुल इत्यर्थः, असङ्ख्येययोजनकोटीकोटीः 'आयामविक्खंभेणं' ति आयामश्च विष्कम्भश्चायामविष्कम्भं समाहारो द्वन्द्वस्तेन, आयामेन च विष्कम्भेन चेत्यर्थः, असङ्ख्येया योजनकोटीकोट्यः 'परिक्खेवेणं' परिधिना 'सव्वरयणामए' इति सर्वात्मना रत्नमयः 'जाव पडिरूवे' इति यावत्करणात् 'अच्छे सण्हे घट्टे मट्ठे' इत्यादिविशेषणकदम्बकपरिग्रहः, 'तत्थ ण' मित्यादि, तत्र सौधर्म्मे कल्पे द्वात्रिंशत् विमानशतसहस्राणि भवन्ति इत्याख्यातं मया शेषैश्च तीर्थकृद्भिः ॥ 'ते णं विमाणे' त्यादि, तानि विमानानि सूत्रे पुंस्त्वं प्राकृतत्वात् सर्वरत्नमयानि–सामस्त्येन रत्नमयानि 'अच्छानि' आकाशस्फटिकवदतिनिर्म्मलानि अत्रापि यावत्करणात् 'सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा नीरया' इत्यादि विशेषणजातं द्रष्टव्यं, तच्च प्रागेवानेकशो व्याख्यातं 'तेसिणं' मित्यादि, तेषां विमानानां बहुमध्यदेशभागे त्रयोदशप्रस्तटे सर्वत्रापि विमानावतंसकानां स्वस्वकल्पचरमप्रस्तटवर्तित्वात् पञ्चावतंसकाः–पञ्च विमानावतंसकाः प्रज्ञप्ताः, तद्यथा–अशोकावतंसकः–अशोकावतंसकनामा,

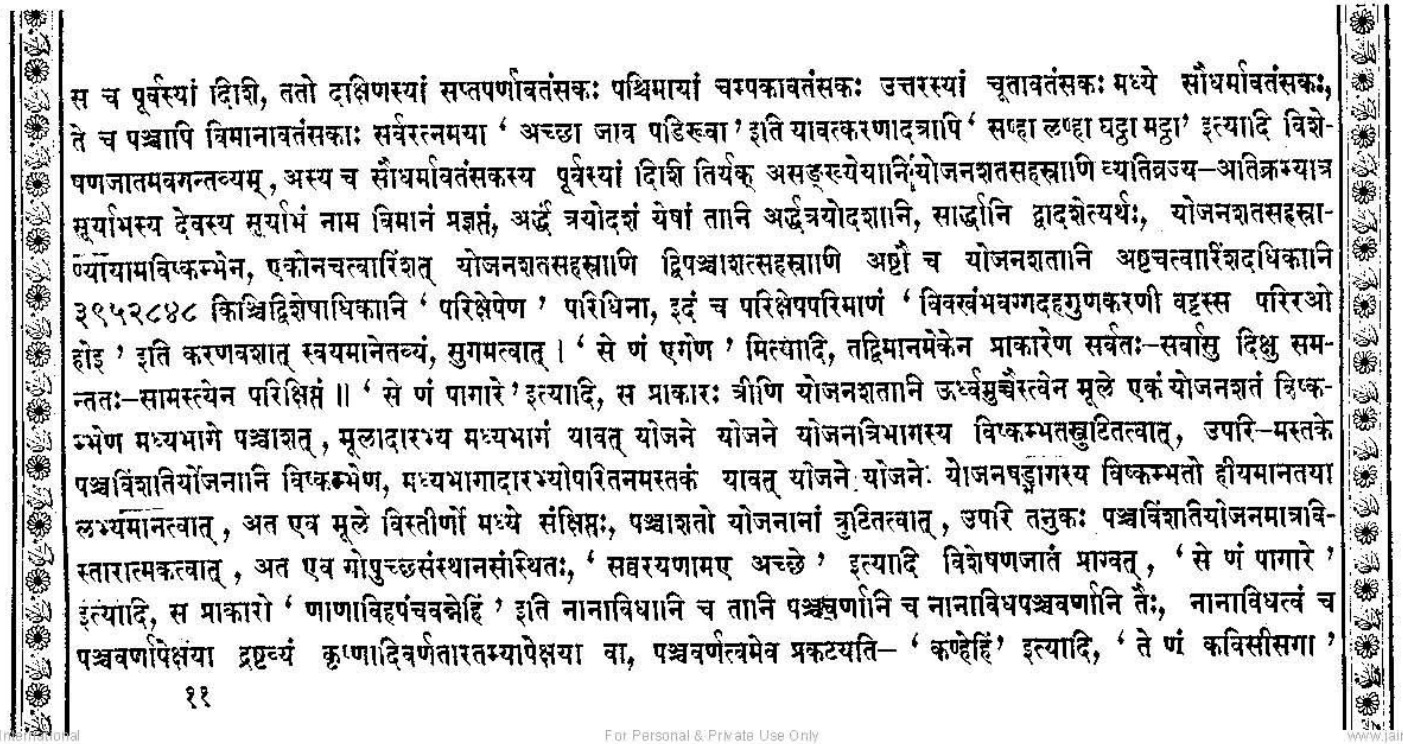
॥ ६० ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२७]

दीप अनुक्रम [२७]



स च पूर्वस्यां दिशि, ततो दक्षिणस्यां सप्तपर्णावतंसकः पश्चिमायां चम्पकावतंसकः उत्तरस्यां चूतावतंसकः मध्ये सौधर्मावतंसकः, ते च पञ्चापि विमानावतंसकाः सर्वरत्नमया 'अच्छा जाव पडिरूवा' इति यावत्करणादत्रापि 'सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा' इत्यादि विशेषणजातमवगन्तव्यम्, अस्य च सौधर्मावतंसकस्य पूर्वस्यां दिशि तिर्यक् असङ्ख्येयानि योजनशतसहस्राणि व्यतिव्रज्य–अतिक्रम्यात्र सूर्याभस्य देवस्य सूर्याभं नाम विमानं प्रज्ञप्तं, अर्द्धं त्रयोदशं येषां तानि अर्द्धत्रयोदशानि, सार्द्धानि द्वादशेत्यर्थः, योजनशतसहस्रायामविष्कम्भेन, एकोनचत्वारिंशत् योजनशतसहस्राणि द्विपञ्चाशत्सहस्राणि अष्टौ च योजनशतानि अष्टचत्वारिंशदधिकानि ३९५२८४८ किञ्चिद्विशेषाधिकानि 'परिक्षेपेण' परिधिना, इदं च परिक्षेपपरिमाणं 'विक्खंभवग्गदहगुणकरणी वट्टस्स परिरओ होइ' इति करणवशात् स्वयमानेतव्यं, सुगमत्वात्। 'से णं एगेणं' मित्यादि, तद्विमानमेकेन प्राकारेण सर्वतः–सर्वासु दिक्षु समन्ततः–सामस्त्येन परिक्षिप्तं ॥ 'से णं पागारे' इत्यादि, स प्राकारः त्रीणि योजनशतानि ऊर्ध्वमुच्चैस्त्वेन मूले एकं योजनशतं विष्कम्भेन मध्यभागे पञ्चाशत्, मूलादारभ्य मध्यभागं यावत् योजने योजने योजनत्रिभागस्य विष्कम्भतस्त्रुटितत्वात्, उपरि–मस्तके पञ्चविंशतियोजनानि विष्कम्भेन, मध्यभागादारभ्योपरितनमस्तकं यावत् योजने योजने योजनषड्भागस्य विष्कम्भतो हीयमानतया लभ्यमानत्वात्, अत एव मूले विस्तीर्णो मध्ये संक्षिप्तः, पञ्चाशतो योजनानां त्रुटितत्वात्, उपरि तनुकः पञ्चविंशतियोजनमात्रविस्तारात्मकत्वात्, अत एव गोपुच्छसंस्थानसंस्थितः, 'सव्वरयणामए अच्छे' इत्यादि विशेषणजातं प्राग्वत्, 'से णं पागारे' इत्यादि, स प्राकारो 'णाणाविहपंचवन्नेहिं' इति नानाविधानि च तानि पञ्चवर्णानि च नानाविधपञ्चवर्णानि तैः, नानाविधत्वं च पञ्चवर्णापेक्षया द्रष्टव्यं कृष्णादिवर्णतारतम्यापेक्षया वा, पञ्चवर्णत्वमेव प्रकटयति– 'कण्हेहिं' इत्यादि, 'ते णं कविसीसगा'

११

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२७]

दीप अनुक्रम [२७]

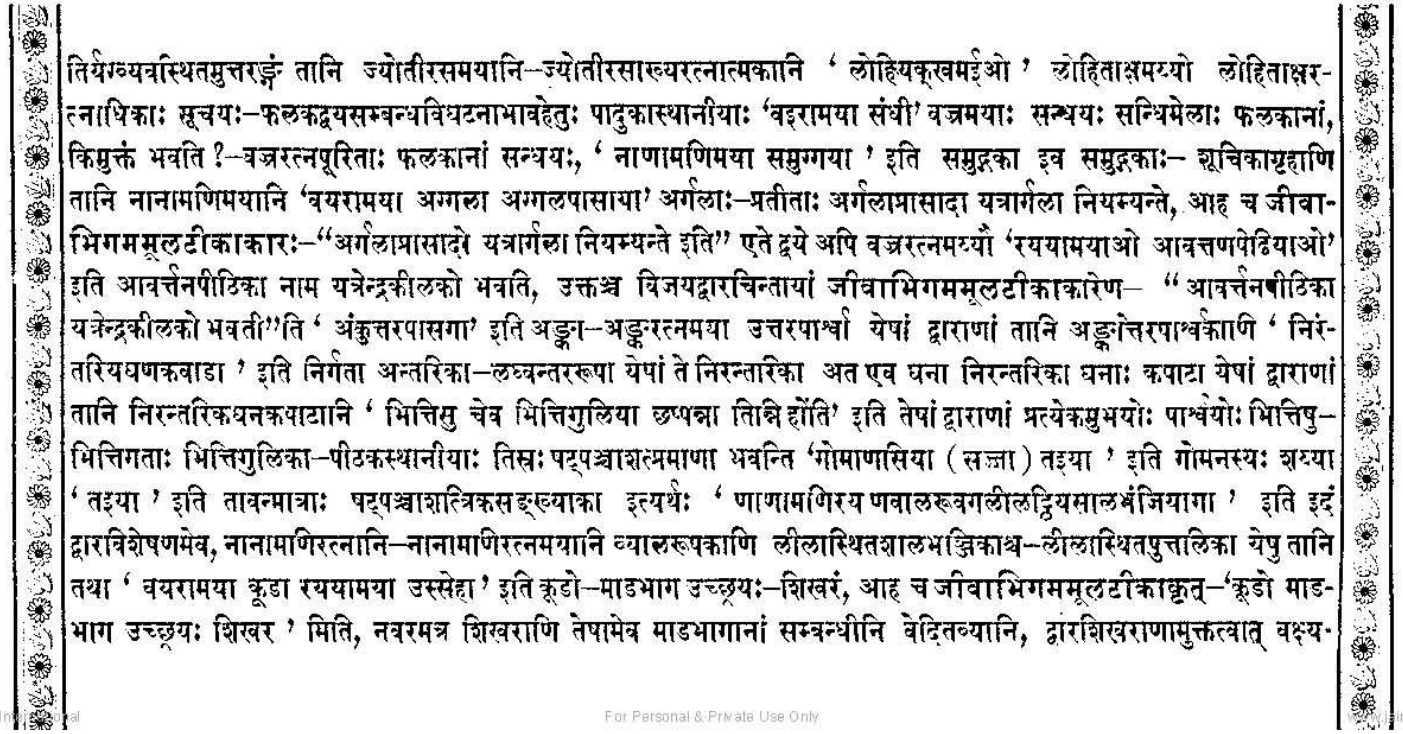
इत्यादि, तानि कापिशीर्षकाणि प्रत्येकं योजनमेकमायामतो–दैर्घ्येणार्द्धं योजनं विष्कम्भेण देशोनयोजनमुच्चैस्त्वेन 'सव्वरयणामया' इत्यादि विशेषणजातं प्राग्वत्। 'सूरियाभस्स ण' मित्यादि, एकैकस्यां बाहायां द्वारसहस्रामिति सर्वसङ्ख्यया चत्वारि द्वारसहस्राणि, तानि च द्वाराणि प्रत्येकं पञ्चयोजनशतान्यूर्द्धं उच्चैस्त्वेन अर्द्धतृतीयानि योजनशतानि विष्कम्भतः 'तावइयं चेवे' ति अर्द्धतृतीयान्येव योजनशतानि प्रवेशतः 'सेया' इत्यादि, तानि च द्वाराणि सर्वाण्युपरि श्वेतानि–श्वेतवर्णोपेतानि बाहुल्येनाङ्करत्नमयत्वात् 'वरकणगथूभियागा' इति वरकनका–वरकनकमयी स्तूपिका–शिखरं येषां तानि तथा, 'ईहामिगउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिन्नररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्ता खंभुग्गयवरवइरवेइयापरिगयाभिरामा विज्जाहरजमलजुयलजंतजुत्ताविव अच्चीसहस्समालिणीया रूवगसहस्सकलिया भिसमाणा भिब्भिसमाणा चक्खुल्लोयणलेसा सुहफासा सस्सिरीयरूवा' इति विशेषणजातं यानविमानवद्भावनीयं, 'वन्नो दाराणं तेसिं होइ' इति तेषां द्वाराणां वर्णः–स्वरूपं व्यावर्णनमयं भवति, तमेव कथयति–'तंजहे' त्यादि, तद्यथा–'वइरामया णिम्मा' इति नेमा नाम द्वाराणां भूमिभागादूर्द्धं निष्कामन्तः प्रदेशास्ते सर्वे वज्रमया–वज्ररत्नमयाः, वज्रशब्दस्य दीर्घत्वं प्राकृतत्वात्, एवमन्यत्रापि द्रष्टव्यं, 'रिट्ठामया पइट्ठाणा' रिष्ठमया–रिष्ठरत्नमयानि प्रतिष्ठानानि–मूलपादाः 'वेरुलियमया खंभा' इति वैडूर्यरत्नमयाः स्तम्भाः 'जायरूवोवचियपवरपंचवन्न[वर]मणिरयणकुट्टिमतला' जातरूपेण–सुवर्णेन उपचितैः–युक्तैः प्रवरैः–प्रधानैः पञ्चवर्णैर्मणिभिः–चन्द्रकान्तादिभिः रत्नैः–कर्केतनादिभिः कुट्टिमतलं–बद्धभूमितलं येषां ते तथा 'हंसगब्भमया एलुया' हंसगर्भमया–हंसगर्भाख्यरत्नमया एलुका–देहल्यः 'गोमेज्जमया इंदकीला' इति गोमेज्जकरत्नमया इन्द्रकीलाः, 'लोहियक्खमईओ' लोहिताक्षरत्नमय्यः 'वेडाओ' इति द्वारशाखा 'जोइरसमया उत्तरंगा' इति द्वारस्योपरि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२७]

दीप अनुक्रम [२७]



तिर्यग्व्यवस्थितमुत्तरङ्गं तानि ज्योतीरसमयानि–ज्योतीरसाख्यरत्नात्मकानि ' लोहियक्खमईओ ' लोहिताक्षमय्यो लोहिताक्षरत्नाधिकाः सूचयः–फलकद्वयसम्बन्धविघटनाभावहेतुः पादुकास्थानीयाः 'वइरामया संधी' वज्रमयाः सन्धयः सन्धिमेलाः फलकानां, किमुक्तं भवति ?–वज्ररत्नपूरिताः फलकानां सन्धयः, ' णाणामणिमया समुग्गया ' इति समुद्गका इव समुद्गकाः– शूचिकागृहाणि तानि नानामणिमयानि 'वयरामया अग्गला अग्गलपासाया' अर्गलाः–प्रतीताः अर्गलाप्रासादा यत्रार्गला नियम्यन्ते, आह च जीवाभिगममूलटीकाकारः–"अर्गलाप्रासादो यत्रार्गला नियम्यन्ते इति" एते द्वये अपि वज्ररत्नमय्यौ 'रययामयाओ आवत्तणपेढियाओ' इति आवर्त्तनपीठिका नाम यत्रेन्द्रकीलको भवति, उक्तञ्च विजयद्वारचिन्तायां जीवाभिगममूलटीकाकारेण– "आवर्त्तनपीठिका यत्रेन्द्रकीलको भवती"ति ' अंकुत्तरपासगा' इति अङ्क–अङ्करत्नमया उत्तरपार्श्वा येषां द्वाराणां तानि अङ्कोत्तरपार्श्वकाणि ' निरंतरियघणकवाडा ' इति निर्गता अन्तरिका–लघ्वन्तररूपा येषां ते निरन्तरिका अत एव घना निरन्तरिका घनाः कपाटा येषां द्वाराणां तानि निरन्तरिकघनकपाटानि ' भित्तिसु चेव भित्तिगुलिया छप्पन्ना तिन्नि होंति' इति तेषां द्वाराणां प्रत्येकमुभयोः पार्श्वयोः भित्तिषु–भित्तिगताः भित्तिगुलिका–पीठकस्थानीयाः तिस्रः षट्पञ्चाशत्प्रमाणा भवन्ति 'गोमाणसिया (सज्जा) तइया ' इति गोमनस्यः शय्या ' तइया ' इति तावन्मात्राः षट्पञ्चाशत्त्रिकसङ्ख्याका इत्यर्थः ' णाणामणिरयणवालरूवगलीलट्ठियसालभंजियागा ' इति इदं द्वारविशेषणमेव, नानामणिरत्नानि–नानामणिरत्नमयानि व्यालरूपकाणि लीलास्थितशालभञ्जिकाश्च–लीलास्थितपुत्तलिका येषु तानि तथा ' वयरामया कूडा रययामया उस्सेहा ' इति कूटो–माडभाग उच्छ्रयः–शिखरं, आह च जीवाभिगममूलटीकाकृत्–'कूडो माडभाग उच्छ्रयः शिखर ' मिति, नवरमत्र शिखराणि तेषामेव माडभागानां सम्बन्धीनि वेदितव्यानि, द्वारशिखराणामुक्तत्वात् वक्ष्य-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्राणत्वाच्च, ' सव्वतवणिज्जमया उल्लोया ' उल्लोका–उपरिभागाः सर्वतपनीयमयाः–सर्वात्मना तपनीयरूपसुवर्णविशेषमयाः ' नाणामणिरयणजालपंजरमणिवंसगलोहियक्खपडिवंसगरययभोमा ' इति मणयो–मणिमया वंशा येषु तानि मणिमयवंशकानि लोहिताख्यानि–लोहिताख्यमयाः प्रतिवंशा येषु तानि लोहिताख्यप्रतिवंशकानि रजता–रजतमयी भूमिर्येषां तानि रजतभूमानि प्राकृतत्वात्समासान्तः मणिवंशकानि लोहिताख्यप्रतिवंशकानि रजतभूमानि नानामणिरत्नानि–नानामणिरत्नमयानि जालपञ्जराणि–गवाक्षापरपर्यायाणि येषु तानि तथा, पदानामनन्वयोपनिपातः प्राकृतत्वात् , ' अंकामया पक्खा पक्खबाहाओ ' इति अङ्को–रत्नविशेषस्तन्मयाः पक्षास्तदेकदेशभूताः पक्षबाहवोऽपि तदेकदेशभूता एवाङ्कमय्यः, आह च जीवाभिगममूलटीकाकृत्–"अङ्कमयाः पक्षास्तदेकदेशभूता एवं पक्षबाहवोऽपि द्रष्टव्या " इति, ' जोईरसामया वंसा वंसकवेल्लुका य ' इति ज्योतीरसं नाम रत्नं तन्मया वंशाः–महान्तः पृष्ठवंशा ' वंसकवेल्लुया य ' इति महतां पृष्ठवंशानामुभयतस्तिर्यक् स्थाप्यमाना वंशाः कवेल्लुकानि प्रतीतानि ' रययामईओ पट्टिआओ ' इति रजतमय्यः पट्टिका–वंशानामुपरि कम्बास्थानीयाः ' जायरूवमईओ ओहाडणीयो ' जातरूपं–सुवर्णविशेषस्तन्मय्यः ' ओहाडणीओ ' अवघाटिन्यः आच्छादनहेतुकम्बोपरिस्थाप्यमानमहाप्रमाणीकिलिञ्जस्थानीयाः ' वयरामईओ उवरिं पुञ्छणाओ ' इति वज्रमय्यो–वज्ररत्नात्मिका अवघाटनीनामुपरि पुञ्छन्यो–निबिडतराच्छादनहेतुश्लक्ष्णतररतृणविशेषस्थानीयाः, उक्तं च जीवाभिगममूलटीकाकारेण–"ओहाडणाग्रहणं महत् क्षुल्लकं च पुञ्छना इति" 'सव्वसेयरययामयाच्छायणे' इति सर्वश्वेतं रजतमयं पुञ्छनीनामुपरि कवेल्लुकानामध आच्छादनं ' अङ्कमयकणगकूडतवणिज्जथूभियागा ' अङ्कमयानि बाहुल्येनाङ्करत्नमयानि पक्षरबाह्वादीनामङ्करत्नात्मकत्वात् कनकानि–कनकमयानि कूटानि–महान्ति शिखराणि येषां तानि कनककूटानि तप-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [२७] दीप अनुक्रम [२७]	सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२७]

दीप अनुक्रम [२७]

नीयानि–तपनीयस्तूपिकानि, ततः पदत्रयस्यापि कर्म्मधारयः, एतेन यत् प्राक् सामान्येन उत्क्षिप्तं ' सेयावरकणगधूभियागा ' इति तदेव प्रपञ्चतो भावितमिति, सम्प्रति तदेव श्वेतत्वमुपसंहारव्याजेन भूय उपदर्शयति–सेया–श्वेतानि, श्वेतत्वमेवोपमया द्रढयति– ' संखतलविमलनिम्मलदधिघणगोखीरफेणरययनिगरप्पगासा ' इति विगतं मलं विमलं यत् शङ्खतलं–शङ्खस्योपरितनो भागो यश्च निर्मलो दधिघनः–घनीभूतं दधि गोक्षीरफेनो रजतनिकरश्च तद्वत् प्रकाशः–प्रतिभासो येषां तानि तथा ' तिलगरयणद्धचंदचित्ता ' इति तिलकरत्नानि–पुण्ड्रविशेषास्तैरर्द्धचन्द्रैश्च चित्राणि–नानारूपाणि तिलकरत्नार्द्धचन्द्रचित्राणि, क्वचित् ' सङ्खतलविमलनिम्मलदहिघणगोखीरफेणरययनियरप्पगासद्धचंदचित्ताइं ' इति पाठः, तत्र पूर्ववत् पृथक् पृथक् व्युत्पत्तिं कृत्वा पश्चात् पदद्वयस्य २ कर्मधारयः, ' नाणामणिदामालंकिया ' इति नानामणयो–नानामणिमयानि दामानि–मालास्तैरलङ्कृतानि नानामणिदामालङ्कृतानि अन्तर्बहिश्च श्लक्ष्णानि–श्लक्ष्णपुद्गलस्कन्धनिर्मापितानि ' तवणिज्जवालुयापत्थडा ' इति तपनीयाः–तपनीयमय्यो या बालुकाः–सिकतास्तासां प्रस्तटः–प्रस्तरो येषु तानि तथा ' सुहफासा ' इति सुखः–सुखहेतुः स्पर्शो येषु तानि सुखस्पर्शानि सश्रीकरूपाणि प्रासादीयानीत्यादि प्राग्वत् ।

तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ निसीहियाए सोलस २ चंदणकलसपरिवाडीओ पन्नत्ताओ, ते णं चंदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा सुरभिवरवारिपडिपुण्णा चंदनकयचच्चागा आविद्धकंठेगुणा पउमुप्पलपिहाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा महया २ इंदकुंभसमाणा पन्नत्ता समणाउसो!, तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस २ णागदंतपरिवाडीओ पन्नत्ताओ, ते णं णागदंता

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

मुत्ताजालंतरुसियहेमजालगवक्खजालखिंखिणी(घंटा)जालपरिक्खित्ता अब्भुग्गया अभिणिसिट्ठा तिरियसुसंपग्गहिया अहेपन्नगद्धरूवा पन्नगद्धसंठाणसंठिया सव्ववयरामया अच्छा जाव पडिरूवा महया महया गयदंतसमाणा पन्नत्ता समणाउसो !, तेसु णं णागदंतएसु बहवे किण्हसुत्तवद्धवट्टवग्घारितमल्लदामकलावा णील०लोहित०हालिद्द०सुक्किलसुत्तवट्टवग्घारितमल्लदामकलावा, ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा सुवण्णपयरमंडियगा जाव कन्नमणणिव्वुत्तिकरेणं सद्देणं ते पदेसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा २ सिरीए अईव २ उवसोभेमाणा चिट्ठंति । तेसिणं णागदंताणं उवरिं अन्नाओ सोलस सोलस नागदंतपरिवाडीओ पं०, ते णं णागदंता तं चेव जाव महता २ गयदंतसमाणा पन्नत्ता समणाउसो !, तेसु णं णागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कगा पन्नत्ता, तेसु णं रययामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलियामईओ धूवघडीओ पं०, ताओ णं धूवघडीओ कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामाओ सुगंधवरगंधियातो गंधवट्टिभूयाओ ओरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं घाणमणणिव्वुइकरेणं गंधेणं ते पदेसे सव्वओ समंता जाव चिट्ठंति । तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस सोलस सालभंजियापरिवाडीओ पन्नत्ताओ, ताओ णं सालभंजियाओ लीलट्ठियाओ सुपइट्ठियाओ सुअलंकियाओ णाणाविहरागवसणाओ णाणामल्लपिणद्धाओ मुट्ठिगिज्झसुमज्झाओ आमेलगजमलजुयलवट्टियअब्भुन्नयपीणर-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० २८ स्थाने सू० २७ मुद्रितं

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२८]

दीप अनुक्रम [२८]

इयसंठियपीवरपओहराओ रत्तावंगाओ असियकेसीओ मिउविसयपसत्थलक्खणसंवेल्लियग्गसिर-
याओ ईसिं असोगवरपायवसमुट्ठियाओ वामहत्थग्गहियग्गसालाओ ईसिं अद्धच्छिकडक्खचिट्ठिएणं
लूसमाणीओ विव चक्खुल्लोयणलेसेहिं अन्नमन्नं खेज्जमाणिओ (विव) पुढविपरिणामाओ सासयभावमुवग-
याओ चन्दाणणाओ चंदविलासिणीओ चंदद्धसमणिडालाओ चंदाहियसोमदंसणाओ उक्का(विव उज्जो-
वेमाणाओ) विज्जुवणामिरियसूरदिप्पंततेयअहिययरसन्निकासाओ सिंगारागारचारुवेसाओ पासा०
दरसि० (पडि० अभि०) चिट्ठंति (सूत्रम् २७)

तेषां द्वाराणां प्रत्येकमुभयोः पार्श्वयोरेकैकनैषेधिकीभावेन 'दुहतो' इति द्विधातो द्विप्रकारायां नैषेधिक्यां, नैषेधिकी–निषीदनस्थानं, आह च जीवाभिगममूलटीकाकृत् –"नैषेधिकी निषीदनस्थान"मिति, प्रत्येकं षोडश २ [कलश] परिपाट्यः प्रज्ञप्ताः, ते च चन्दनकलशा 'वरकमलपइट्ठाणा' इति वरं–प्रधानं यत्कमलं तत् प्रतिष्ठानम्–आधारो येषां ते वरकमलप्रतिष्ठानाः, तथा सुरभिवरवारिप्रतिपूर्णाश्चन्दनकृतचर्चाकाः–चन्दनकृतोपरागाः 'आविद्धकण्ठेगुणा' इति आविद्धः–आरोपितः कण्ठे गुणो–रक्तसूत्ररूपो येषां ते आविद्धकण्ठेगुणाः, कण्ठेकालवत् सप्तम्या अलुक्, 'पउमुप्पल-पिहाणा' इति पद्ममुत्पलं च यथायोगं पिधानं येषां ते पद्मोत्पलपिधानाः 'सव्वरयणामया अच्छा सण्हा लण्हा' इत्यादि यावत् 'पडिरूवगा' इति विशेषणकदम्बकं प्राग्वत् 'महया' इति अतिशयेन महान्तः कुम्भानामिन्द्र इन्द्रकुम्भो राजदन्तादिदर्शना-दिन्द्रशब्दस्य पूर्वनिपातः महाँश्चासौ इन्द्रकुम्भश्च तस्य समाना महेन्द्रकुम्भसमानाः–महाकलशप्रमाणाः प्रज्ञप्ता हे श्रमण! हे आयुष्मन्।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूल-संपादने अत्र सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० २८ स्थाने सू० २७ मुद्रितं

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२८]

दीप अनुक्रम [२८]

'तेसिणं दाराण' मिति तेषां द्वाराणां प्रत्येकमुभयोः पार्श्वयोरेकैकनैषेधिकीभावेन या द्विधा नैषेधिकी तस्यां प्रत्येकं षोडश षोडश नागदन्तपरिपाट्यः प्रज्ञप्ताः, नागदन्ता–अङ्कुटकाः, ते च नागदन्ता 'मुत्ताजालंतरुसियहेमजालगवक्खजालखिखिणि(घंटा)जालपरिक्खित्ता' इति मुक्ताजालानामन्तरेषु यानि उत्सृतानि–लम्बमानानि हेमजालानि–सुवर्णमयदामसमूहा यानि च गवाक्षजालानि-गवाक्षाकृतिरत्नविशेषमालासमूहा यानि च किङ्किणीघण्टाजालानि–क्षुद्रघण्टासमूहास्तैः परिक्षिप्ताः–सर्वतो व्याप्ताः 'अब्भुग्गया' इति अभिमुखमुद्गताः अग्रिमभागे मनाक् उन्नता इति भावः 'अभिनिसिट्ठा' इति अभिमुखं–बाह्यभागाभिमुखं निसृष्टा–निर्गता अभिनिसृष्टाः 'तिरियसुसंपरिग्गहिया' इति तिर्यक् भित्तिप्रदेशैः सुष्ठु–अतिशयेन सम्यक्–मनागप्यचलनेन परिगृहीताः सुसम्परिगृहीताः, 'अहेपन्नगद्धरूवा' इति अधः–अधस्तनं यत् पन्नगस्य सर्पस्यार्द्धं तस्येव रूपम्–आकारो येषां ते अधःपन्नगार्धरूपाः अधःपन्नगार्द्धवदतिसरला दीर्घाश्चेति भावः, एतदेव व्याचष्टे–'पन्नगार्द्धसंस्थानसंस्थिता': अधःपन्नगार्द्धसंस्थानाः 'सव्ववयरामया' सर्वात्मना वज्रमया 'अच्छा सण्हा' इत्यारभ्य 'जाव पडिरूवा' इति विशेषणजातं प्राग्वत्, 'महया' इति अतिशयेन महान्तो गजदन्तसमाना–गजदन्ताकाराः प्रज्ञप्ता हे श्रमण! हे आयुष्मन्!! 'तेसु णं णागदंतएसु बहवे किण्हसुतवद्धा' तेषु नागदन्तकेषु बहवः कृष्णसूत्रबद्धा 'वग्घारिय' इति अवलम्बिता माल्यदामकलापाः–पुष्पमालासमूहा बहवो नीलसूत्रावलम्बितमाल्यदामकलापा एवं लोहितहारिद्रशुक्लसूत्रबद्धा अपि वाच्याः। 'ते णं दामा' इत्यादि, तानि दामानि 'तवणिज्जलंबूसगा' इति तपनीयः–तपनीयमयो लम्बूसगो–दाम्नामग्रिमभागे मण्डनाविशेषो येषां तानि तथा, जाव लंबूसकानि, 'सुवन्नपयरगमंडिया' इति पार्श्वतः सामस्त्येन सुवर्णप्रतरेण–सुवर्णपत्रकेण मण्डितानि सुवर्णप्रतरमण्डितानि 'नाणाविहमणिरयणविविहहारउवसोहियसमुदया' इति नानारूपाणां मणीनां रत्नानां च

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० २९ स्थाने सू० २७ मुद्रितं

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२८]

दीप अनुक्रम [२८]

विविधा–विचित्रवर्णा हारा–अष्टादशसरिका अर्द्धहारा–नवसरिकास्तैरुपशोभितः समुदायो येषां तानि तथा 'जाव सिरीए अईव २ उवसोभेमाणा चिट्ठंति' इति अत्र यावत्करणादेवं परिपूर्णः पाठो द्रष्टव्यः 'ईसिमप्पोण्णमसंपत्ता पुव्वावरदाहिणुत्तरागएहिं वाएहिं मंदायं मंदायं एइज्जमाणा पइज्जमाणा पलंबमाणा पझंझमाणा ओरालेण मणुण्णेणं मणहरेणं कण्णमणनिव्वुइकरेणं सद्देणं ते पएसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा २ सिरीए अईव २ उवसोभेमाणा चिट्ठंति' एतच्च प्रागेव यानविमानवर्णने व्याख्यातमिति न भूयो व्याख्यायते। 'तेसि णं णागदंताण'मित्यादि, तेषां नागदन्तानामुपरि प्रत्येकमन्याः षोडश षोडश नागदन्तपरिपाट्यः प्रज्ञप्ताः ते च नागदन्ता यावत्करणात् 'मुत्ताजालंतरुसियहेमजालगवक्खजालद्धचंदचित्तखिखिणिघंटाजालपरिक्खित्ता' इत्यादि प्रागुक्तं सर्वं द्रष्टव्यं यावत् गजदन्तसमानाः प्रज्ञप्ता हे श्रमण! हे आयुष्मन्!' तेसु णं णागदंतएसु'। इत्यादि, तेषु नागदन्तकेषु बहूनि रजतमयानि सिक्कानि प्रज्ञप्तानि, तेषु वररजतमयेषु सिक्केषु बहवो–बह्व्यो वैडूर्यमय्यो–वैडूर्यरत्नात्मिका धूपघटिकाः 'कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंते'त्यादि प्राग्वत् नवरं 'घाणमणनिव्वुइकरेण'मिति घ्राणेन्द्रियमनोनिर्वृतिकरेण। 'तेसि ण' मित्यादि, तेषां द्वाराणां प्रत्येकमुभयोः पार्श्वयोरेकैकेनैषेधिकीभावेन द्विधातो–द्विप्रकारायां नैषेधिक्यां षोडश षोडश शालभञ्जिकापरिपाट्यः प्रज्ञप्ताः, ताश्च शालभञ्जिका लीलया–ललिताङ्गनिवेशरूपया स्थिता लीलास्थिताः, 'सुपइट्ठियाओ' इति सुमनोज्ञतया प्रतिष्ठिताः सुप्रतिष्ठिताः 'सुअलंकियाओ' सुष्ठु–अतिशयेन रमणीयतया अलङ्कृताः स्वलङ्कृताः 'णाणाविहरागवसणाओ' इति नानाविधो–नानाप्रकारो रागो येषां तानि नानाविधरागाणि तानि वसनानि–वस्त्राणि यासां तास्तथा 'नानामल्लपिनद्धाओ' इति नानारूपाणि माल्यानि–पुष्पाणि पिनद्धानि–आविद्धानि यासां ता नानामाल्यपिनद्धाः, क्वान्तस्य परनिपातः सुखादिदर्शनात्,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

'मुट्ठिगिज्झसुमज्झाओ' इत मुष्टिग्राह्यं सुष्ठु-शोभनं मध्यं-मध्यभागो यासां तास्तथा, 'आमेलगजमलजुगलवट्टियअब्भुन्नयपीणरइयसंठियपीवरपओहराओ' पीनं-पीवरं रचितं संस्थितं-संस्थानं यकाभ्यां तौ पीनरचितसंस्थानौ आमेलकः-आपीडः शेखरक इत्यर्थः तस्य यमलयुगलं-समश्रेणिकं यद्युगलं तद्वत् वर्त्तितौ-बद्धस्वभावावुपचितकठिनभावाविति भावः अभ्युन्नतौ पीनरचितसंस्थानौ च पयोधरौ यासां तास्तथा, 'रत्तावंगाओ' इति रक्तोऽपाङ्गो-नयनोपान्तरूपो यासां तास्तथा, 'असियकेसिओ' इति असिताः-कृष्णाः केशा यासां ता असितकेश्यः, एतदेव सविशेषमाचष्टे-'मिउविसयपसत्थलक्खणसंवेल्लियग्गसिरयाओ' मृदवः-कोमला विशदा-निर्मलाः प्रशस्तानि-शोभनानि अस्फुटिताग्रत्वप्रभृतीनि लक्षणानि येषां ते प्रशस्तलक्षणाः 'संवेल्लितं' संवृतमग्रं येषां ते संवेल्लिताग्राः शिरोजाः-केशा यासां ता मृदुविशदप्रशस्तलक्षणसंवेल्लिताग्रशिरोजाः, 'ईसिं असोगवरपायवसमुट्ठियाओ' ईषत्-मनाक् अशोकवरपादपे समुपस्थिताः-आश्रिता ईषदशोकवरपादपसमुपस्थितास्तथा 'वामहत्थग्गहियग्गसालाओ' वामहस्तेन गृहीतमग्रं शालायाः-शाखायाः अर्थादशोकपादपस्य यकाभिस्ता वामहस्तगृहीताग्रशालाः 'ईसिं अद्धच्छिकडक्खचिट्ठिएणं लूसमाणीओ विवे'ति ईषत्-मनाक् अर्द्धं-तिर्यक् वलितमक्षि येषु कटाक्षरूपेषु चेष्टितेषु तैर्मुष्णन्त्य इव सुरजनानां मनांसि 'चक्खुल्लोयणलेसेहिं य अन्नमन्नं खिज्जमाणीओ विव 'अन्योऽन्यं परस्परं चक्षुषां लोकनेन-आलोकनेन ये लेशाः-संश्लेषस्तैः खिद्यमाना इव, किमुक्तं भवति ? -एवंनामानस्ति(म)र्यग्वलिताक्षिकटाक्षैः परस्परमवलोकमाना अवतिष्ठन्ति यथा नूनं परस्परं सौभाग्यासहनतस्तिर्यग्वलिताक्षिकटाक्षैः परस्परं खिद्यन्ति इवेति, 'पुढविपरिणामाओ' इति पृथिवीपरिणामरूपाः शाश्वतभावमुपगता विमानवत् 'चंदाणणाओ ' इति चन्द्र इवाननं-मुखं यासां तास्तथा 'चंदविलासिणीओ' इति चन्द्रवत् मनोहरं विलसन्तीत्येवंशीलाश्च-

॥ ६५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [२८]

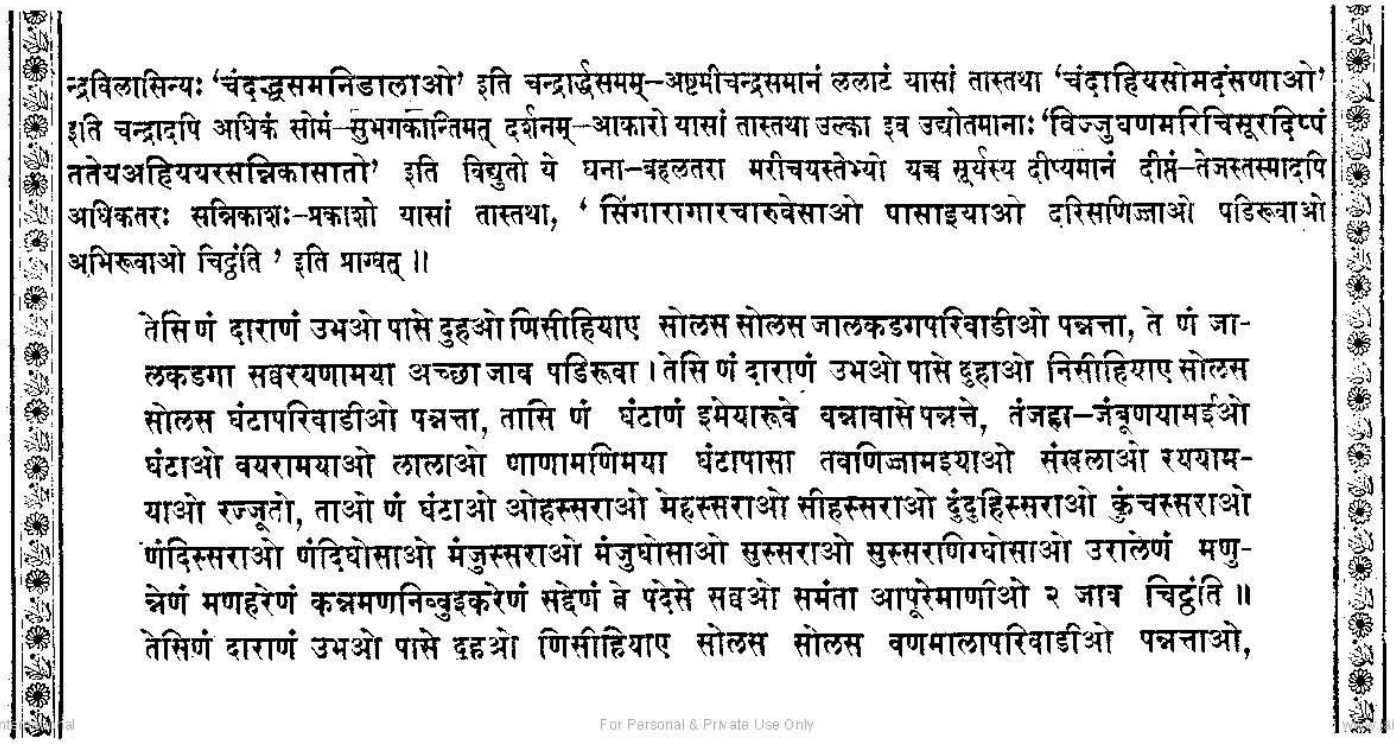
दीप अनुक्रम [२८]

मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० २९ स्थाने सू० २७ मुद्रितं

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२९]

दीप अनुक्रम [२९]



न्द्रविलासिन्यः 'चंदद्धसमनिडालाओ' इति चन्द्रार्द्धसमम्–अष्टमीचन्द्रसमानं ललाटं यासां तास्तथा 'चंदाहियसोमदंसणाओ' इति चन्द्रादपि अधिकं सोमं–सुभगकान्तिमत् दर्शनम्–आकारो यासां तास्तथा उल्का इव उद्योतमानाः 'विज्जुघणमरिचिसूरदिप्पं ततेयअहिययरसन्निकासातो' इति विद्युतो ये घना–बहलतरा मरीचयस्तेभ्यो यच्च सूर्यस्य दीप्यमानं दीप्तं–तेजस्तस्मादपि अधिकतरः सन्निकाशः–प्रकाशो यासां तास्तथा, 'सिंगारागारचारुवेसाओ पासाइयाओ दरिसणिज्जाओ पडिरूवाओ अभिरूवाओ चिट्ठंति' इति प्राग्वत् ॥

तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस सोलस जालकडगपरिवाडीओ पन्नत्ता, ते णं जालकडगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा। तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहाओ निसीहियाए सोलस सोलस घंटापरिवाडीओ पन्नत्ता, तासि णं घंटाणं इमेयारूवे वन्नावासे पन्नत्ते, तंजहा–जंबूणयामईओ घंटाओ वयरामयाओ लालाओ णाणामणिमया घंटापासा तवणिज्जामइयाओ संखलाओ रययामयाओ रज्जूतो, ताओ णं घंटाओ ओहस्सराओ मेहस्सराओ सीहस्सराओ दुंदुहिस्सराओ कुंचस्सराओ णंदिस्सराओ णंदिघोसाओ मंजुस्सराओ मंजुघोसाओ सुस्सराओ सुस्सरणिग्घोसाओ उरालेणं मणुन्नेणं मणहरेणं कन्नमणनिव्वुइकरेणं सद्देणं ते पदेसे सव्वओ समंता आपूरेमाणीओ २ जाव चिट्ठंति ॥ तेसिणं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस सोलस वणमालापरिवाडीओ पन्नत्ताओ,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२९]

दीप अनुक्रम [२९]

ताओ णं वणमालाओ णाणामणिमयदुमलयाकिसलयपल्लवसमाउलाओ छप्पयपरिभुज्जमाणा सोहंतसस्सिरीयाओ पासाईयाओ ४। तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस २ पगंठगा पन्नत्ता, ते णं पगंठगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं पणवीसं जोयणसयं बाहल्लेणं सव्ववयरामया अच्छा जाव पडिरूवा। तेसि णं पगंठगाणं उवरिं पत्तेयं २ पासायवडेंसगा पन्नत्ता, ते णं पासायवडेंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पणवीसं जोयणसयं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसिअपहसिया इव विविहमणिरयणभत्तिचित्ता वाउद्धुयविजयवेजयंतपडागछत्ताइछत्तकलिया तुंगा गगणतलमणुलिहंतसिहरा जालंतरयणपंजरुम्मिलियव्व मणिकणगथूभियागा वियसियसयवत्तपोंडरीया तिलगरयणद्धचंदचित्ता णाणामणिदामालंकिया अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्जवालुयापत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासादीया दरिसणिज्जा जाव दामा उवरिं पगंठगाणं झया छत्ताइछत्ता। तेसि णं दाराणं उभओ पासे सोलस सोलस तोरणा पन्नत्ता, णाणामणिमया णाणामणिमएसु खंभेसु उवणिविट्ठसन्निविट्ठा जाव पउमहत्थगा, तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो सालभंजियाओ पन्नत्ताओ, जहा हेट्ठा तहेव तेसि णं तोरणाणं पुरओ नागदंता पन्नत्ता जहा हेट्ठा जाव दामा, तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो हयसंघाडा गयसंघाडा नरसंघाडा किन्नरसंघाडा किंपुरिससंघाडा महोरगसंघाडा गंधव्वसंघाडा उसभसंघाडा

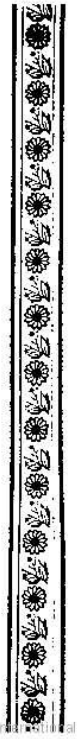
॥ ६६ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० २९ स्थाने सू० २७ मुद्रितं
सूर्याभविमानस्य वर्णनं

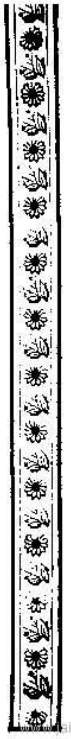
प्रत सूत्रांक [२९]

दीप अनुक्रम [२९]



सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एवं वीही पंतीओ मिहुणाइं। तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो पउ-
मलयाओ जाव सामलयाओ णिच्चं कुसुमियाओ सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवाओ। तेसि णं तोर-
णाणं पुरओ दो दो अक्खय (दिसा) सोवत्थिया पन्नत्ता, सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, तेसि णं
तोरणाणं पुरओ दो दो चंदणकलसा पन्नत्ता, ते णं चंदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा तदेव। तेसि णं
तोरणाणं पुरतो दो दो भिंगारा पन्नत्ता, ते णं भिंगारा वरकमलपइट्ठाणा जाव महया मत्तगयमुहाकि-
तिसमाणा पन्नत्ता समणाउसो!। तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो आयंसा पन्नत्ता, तेसि णं आयंसाणं
इमेयारूवे वन्नावासे पन्नत्ते, तंजहा–तवणिज्जमया पगंठगा वेरुलियमया सुरया वइरामया दोवारंगा
णाणामणिमया मंडला अणुग्घसितनिम्मलाते छायाते समणुबद्धा चंदमंडलपडिणिकासा महया
अद्धकायसमाणा पन्नत्ता समणाउसो!। तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो वइरनाभथाला पं० अच्छ-
तिच्छडियसालितंदुलणहसंदिट्ठपडिपुन्ना इव चिट्ठंति सव्वजंबूणयमया जाव पडिरूवा महया महया
रहचक्कवालसमाणा पं० समणाउसो!। तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो पातीओ, ताओ णं पाईओ
अच्छोदगपरिहत्थाओ णाणामणिपंचवन्नस्स फलहरियगस्स बहुपडिपुन्नाओ विव चिट्ठंति सव्वरयणा-
मईओ अच्छा जाव पडिरूवाओ महया महया गोकलिंजरचक्कसमाणीओ पन्नत्ताओ समणाउसो!।

१२



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [२९]

दीप अनुक्रम [२९]

तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो सुपइट्ठा पन्नत्ता णाणाविहभंडविरइया इव चिट्ठंति सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा । तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो मणगुलियाओ पन्नत्ताओ, तासि णं मणगुलियासु बहवे सुवन्नरूप्पमया फलगा पन्नत्ता, तेसु णं सुवन्नरूप्पमएसु फलगेसु बहवे वयरामया नागदंतया पन्नत्ता, तेसु णं वयरामएसु णागदंतएसु बहवे वयरामया सिक्कगा पन्नत्ता, तेसु णं वयरामएसु सिक्कगेसु किण्हसुत्तसिक्कगवच्छिता णीलसुत्तसिक्कगवच्छिया लोहियसुत्तसिक्कगवच्छिया हालिद्दसुत्तसिक्कगवच्छिया सुक्किलसुत्तसिक्कगवच्छिया बहवे वायकरगा पन्नत्ता सव्वे वेरुलियमया अच्छा जाव पडिरूवा । तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो चित्ता रयणकरंडगा पं०, से जहाणामए रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चित्ते रयणकरंडए वेरुलियमणिफलिहपडलपच्चोयडे साते पहाते ते पतेसे सव्वतो समंता ओभासति उज्जोवेति तवति भासति एवमेव तेवि चित्ता रयणकरंडगा साते पभाते ते पएसे सव्वओ समंता ओभासंति उज्जोवेंति तवंति पगासंति, तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो हयकंठा गयकंठा नरकंठा किन्नरकंठा किंपुरिसकंठा महोरगकंठा गंधव्वकंठगा उसभकंठा सव्ववयरामया अच्छा जाव पडिरूवा, तेसु णं हयकंठएसु जाव उसभकंठएसु दो दो पुप्फचंगेरीओ (मल्लचंगेरीओ) चुन्नचंगेरीओ (गंधचंगेरीओ)वत्थचंगेरीओ आभरणचंगेरीओ सिद्धत्थचंगेरीओ लोमहत्थचंगेरीओ पन्नत्ताओ सव्वरयणामयाओ अच्छाओ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० २९ स्थाने सू० २८ मुद्रितं

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२९]

दीप अनुक्रम [२९]

जाव पडिरूवाओ, तासु णं पुप्फचंगेरीआसु जाव लोमहत्थचंगेरीसु दो दो पुप्फपडगाइं जाव लोमहत्थपडलगाइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं जाव पडिरूवाइं । तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो सीहासणा पन्नत्ता, तेसि णं सीहासणाणं वन्नओ जाव दामा, तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो रुप्पमया छत्ता पन्नत्ता, ते णं छत्ता वेरुलियविमलदंडा जंबूणयकन्निया वइरसंधी मुत्ताजालपरिगया अट्ठसहस्सवरकंचणसलागा दद्दरमलयसुगंधी सव्वोउयसुरभी सीयलच्छाया मंगलभत्तिचित्ता चंदागारोवमा । तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो चामराओ पन्नत्ताओ, ताओ णं चामराओ (चंदप्पभवेरुलियवरनानामणिरयणखचियचित्तदण्डाओ) णाणामणिकणगरयणविमलमहरिहतवणिज्जुज्जलविचित्तदंडाओ वल्लियाओ संखंककुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगासाओ सुहुमरययदीहवालाओ सव्वरयणामयाओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ। तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो दो तेल्लसमुग्गा कोट्ठसमुग्गा पत्तसमुग्गा चोयगस० तगरस० एलास० हरियालस० हिंगुलयस० मणोसिलास० अंजण० सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा ॥ सू० २८ ॥

'तेसि णं' मित्यादि तेषां द्वाराणां प्रत्येकमुभयोः पार्श्वयोरेकैकनैषेधिकीभावेन या द्विधा नैषेधिकी तस्यां षोडश षोडश जालकटकाः प्रज्ञप्ताः, जालकटको—जालककीर्णो रम्यसंस्थानः प्रदेशविशेषः, ते च जालकटकाः 'सव्वरयणामया अच्छा सण्हा जाव पडिरूवा' इति प्राग्वत् । 'तेसि णं' मित्यादि, तेषां द्वाराणां प्रत्येकमुभयोः पार्श्वयोर्द्विधातो नैषेधिक्यां षोडश घण्टापरिपाट्यः प्रज्ञप्ताः, तासां

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने एवं सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० २९ स्थाने सू० २८ मुद्रितं

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [२९]

दीप अनुक्रम [२९]

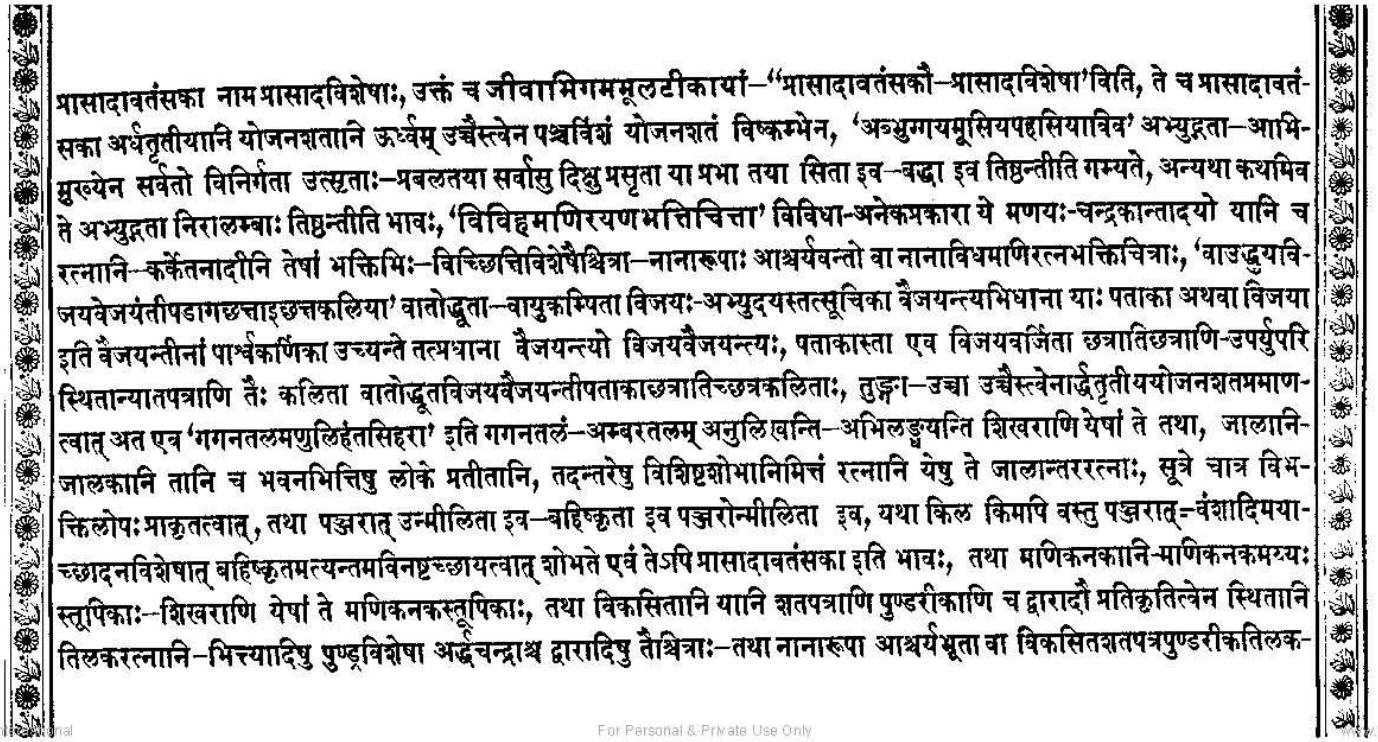
च घण्टानामयमेतद्रूपो वर्णावासो–वर्णकनिवेशः प्रज्ञप्तः, तद्यथा–जम्बूनदमय्यो घण्टा वज्रमय्यो लालाः नानामणिमया घण्टापार्श्वाः तपनीयमय्यः शुङ्कुला यासु ता अवलम्बितास्तिष्ठन्ति रजतमय्यो रज्जवः 'ताओ णं घण्टाओ' इत्यादि, ताश्च घण्टा ओघेन–प्रवाहेण स्वरो यासां ता ओघस्वरा मेघस्येवातिदीर्घः स्वरो यासां ता मेघस्वराः हंसस्येव मधुरः स्वरो यासां ता हंसस्वराः, एवं क्रौञ्च-स्वराः सिंहस्येव च प्रभूतदेशव्यापी स्वरो यासां ताः सिंहस्वराः एवं दुन्दुभिस्वरा द्वादशविधतूर्यसङ्घातो नन्दिः नन्दिस्वराः नन्दि-वत् घोषो–ह्रादो यासां ता नन्दिघोषाः मञ्जूः–प्रियः स्वरो यासां ता मञ्जूस्वरा, एवं मञ्जूघोषाः, किं बहुना ?, सुस्वराः सुस्वरघोषाः, 'उरालेण'मित्यादि प्राग्वत् ॥ 'तेसि ण'मित्यादि, तेषां द्वाराणां प्रत्येकमुभयोः पार्श्वयोः द्विधातो नैषेधिक्यां षोडश २ वनमालापरिपाट्यः प्रज्ञप्ताः, ताश्च वनमाला नानाद्रुमाणां नानालतानां च यानि किशलयानि ये च पल्लवास्तैः समाकुलाः–सम्मिश्राः ' छप्पयपरिभुज्जमाणा सोभन्तसस्सिरीया ' इति षट्पदैः परिभुज्यमानाः सत्यः शोभमानाः षट्पदपरिभुज्यमानशोभमानाः अत एव सश्रीकाः 'पासाईया' इत्यादि पदचतुष्टयं प्राग्वत्॥ 'तेसि णं दाराण' मित्यादि, तेषां द्वाराणां प्रत्येकमुभयोः पार्श्वयोरेकैकनैषेधिकीभावेन या द्विधा नैषेधिकी तस्यां षोडश २ प्रकण्ठकाः प्रज्ञप्ताः, प्रकण्ठको नाम पीठविशेषः, आह च जीवाभिगममूलटीकाकारः–'प्रकण्ठौ पीठविशेषा'विति, ते च प्रकण्ठकाः प्रत्येकमर्द्धतृतीयानि योजनशतान्यायामवि-ष्कम्भाभ्यां पञ्चविंशं–पञ्चविंशत्यधिकं योजनशतं 'बाहल्येन' पिण्डभावेन 'सव्ववयरामया' इति सर्वात्मना ते प्रकण्ठकाः वज्रमया–वज्ररत्नमया, ' अच्छा सण्हा ' इत्यादि विशेषणजातं प्राग्वत्, ' तेसि णं पगंठगाण' मित्यादि, तेषां प्रकण्ठकानां उपरि प्रत्येकं प्रत्येकं–इह एकं प्रति प्रत्येकमित्याभिमुख्ये वर्त्तमानः प्रतिशब्दः समस्यते, ततो वीप्साविवक्षायां द्विर्वचनं, प्रासादावतंसकाः प्रज्ञप्ताः,

॥ ६८ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० २९ स्थाने सू० २८ मुद्रितं

सूर्याभविमानस्य वर्णनं



प्रासादावतंसका नाम प्रासादविशेषाः, उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायां–"प्रासादावतंसकौ–प्रासादविशेषा'विति, ते च प्रासादावतंसका अर्धतृतीयानि योजनशतानि ऊर्ध्वम् उच्चैस्त्वेन पञ्चविंशं योजनशतं विष्कम्भेन, 'अब्भुग्गयमूसियपहसियाविव' अभ्युद्गता–आभिमुख्येन सर्वतो विनिर्गता उत्सृताः–प्रबलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता या प्रभा तया सिता इव–बद्धा इव तिष्ठन्तीति गम्यते, अन्यथा कथमिव ते अभ्युद्गता निरालम्बाः तिष्ठन्तीति भावः, 'विविहमणिरयणभत्तिचित्ता' विविधा-अनेकप्रकारा ये मणयः-चन्द्रकान्तादयो यानि च रत्नानि–कर्केतनादीनि तेषां भक्तिभिः–विच्छित्तिविशेषैश्चित्रा–नानारूपाः आश्चर्यवन्तो वा नानाविधमणिरत्नभक्तिचित्राः, 'वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागछत्ताइछत्तकलिया' वातोद्धूता–वायुकम्पिता विजयः-अभ्युदयस्तत्सूचिका वैजयन्त्यभिधानाः पताकाः अथवा विजया इति वैजयन्तीनां पार्श्वकर्णिका उच्यन्ते तत्प्रधाना वैजयन्त्यो विजयवैजयन्त्यः, पताकास्ता एव विजयवर्जिता छत्रातिछत्राणि-उपर्युपरि स्थितान्यातपत्राणि तैः कलिता वातोद्धूतविजयवैजयन्तीपताकाछत्रातिच्छत्रकलिताः, तुङ्गा–उच्चा उच्चैस्त्वेनार्द्धतृतीययोजनशतप्रमाणत्वात् अत एव 'गगनतलमणुलिहंतसिहरा' इति गगनतलं–अम्बरतलम् अनुलिखन्ति–अभिलङ्घयन्ति शिखराणि येषां ते तथा, जालानिजालकानि तानि च भवनभित्तिषु लोके प्रतीतानि, तदन्तरेषु विशिष्टशोभानिमित्तं रत्नानि येषु ते जालान्तररत्नाः, सूत्रे चात्र विभक्तिलोपः प्राकृतत्वात्, तथा पञ्जरात् उन्मीलिता इव–बहिष्कृता इव पञ्जरोन्मीलिता इव, यथा किल किमपि वस्तु पञ्जरात्-वंशादिमयाच्छादनविशेषात् बहिष्कृतमत्यन्तमविनष्टच्छायत्वात् शोभते एवं तेऽपि प्रासादावतंसका इति भावः, तथा मणिकनकाानि-मणिकनकमय्यः स्तूपिकाः–शिखराणि येषां ते मणिकनकस्तूपिकाः, तथा विकसितानि यानि शतपत्राणि पुण्डरीकाणि च द्वारादौ प्रतिकृतित्वेन स्थितानि तिलकरत्नानि–भित्त्यादिषु पुण्ड्रविशेषा अर्द्धचन्द्राश्च द्वारादिषु तैश्चित्राः–तथा नानारूपा आश्चर्यभूता वा विकसितशतपत्रपुण्डरीकतिलक-

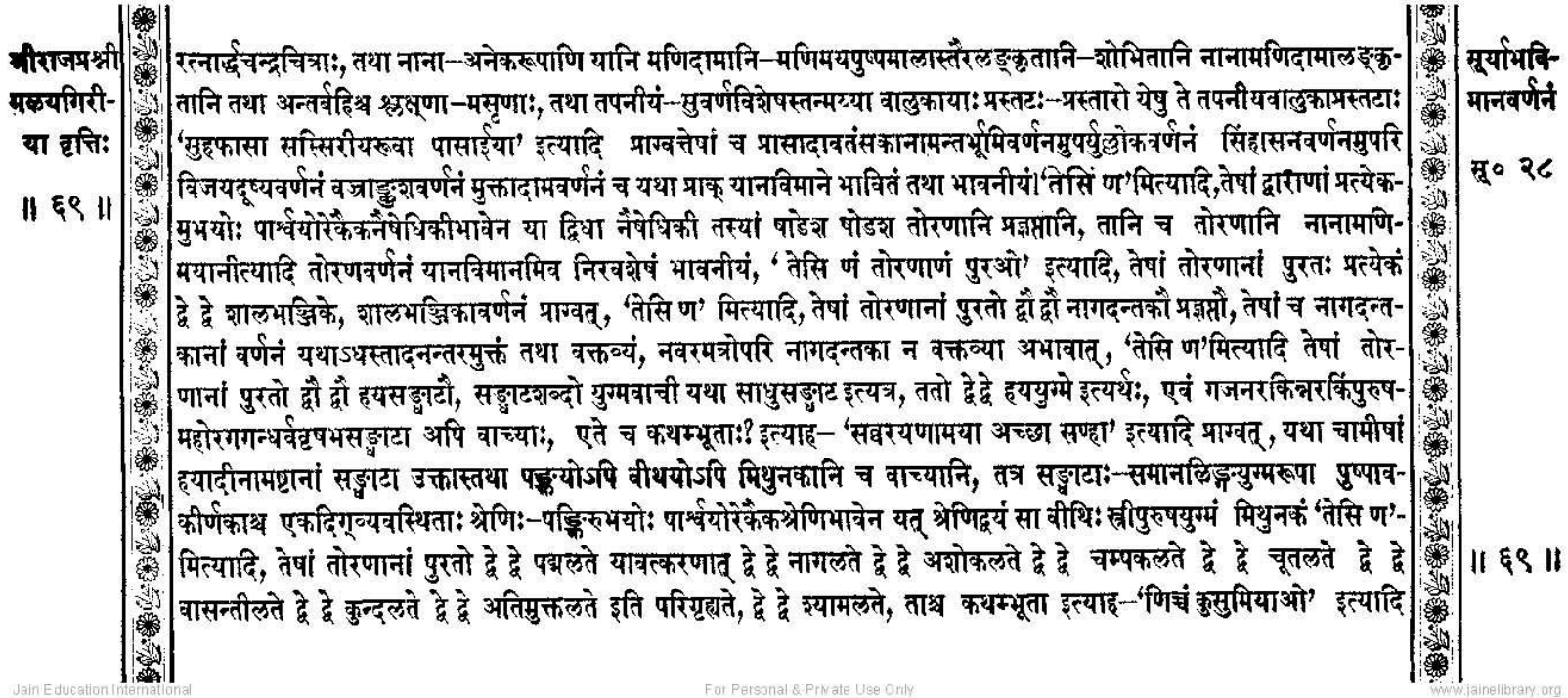
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [२९]

दीप अनुक्रम [२९]



श्रीराजप्रश्नीयमलयगिरीया वृत्तिः ॥ ६९ ॥

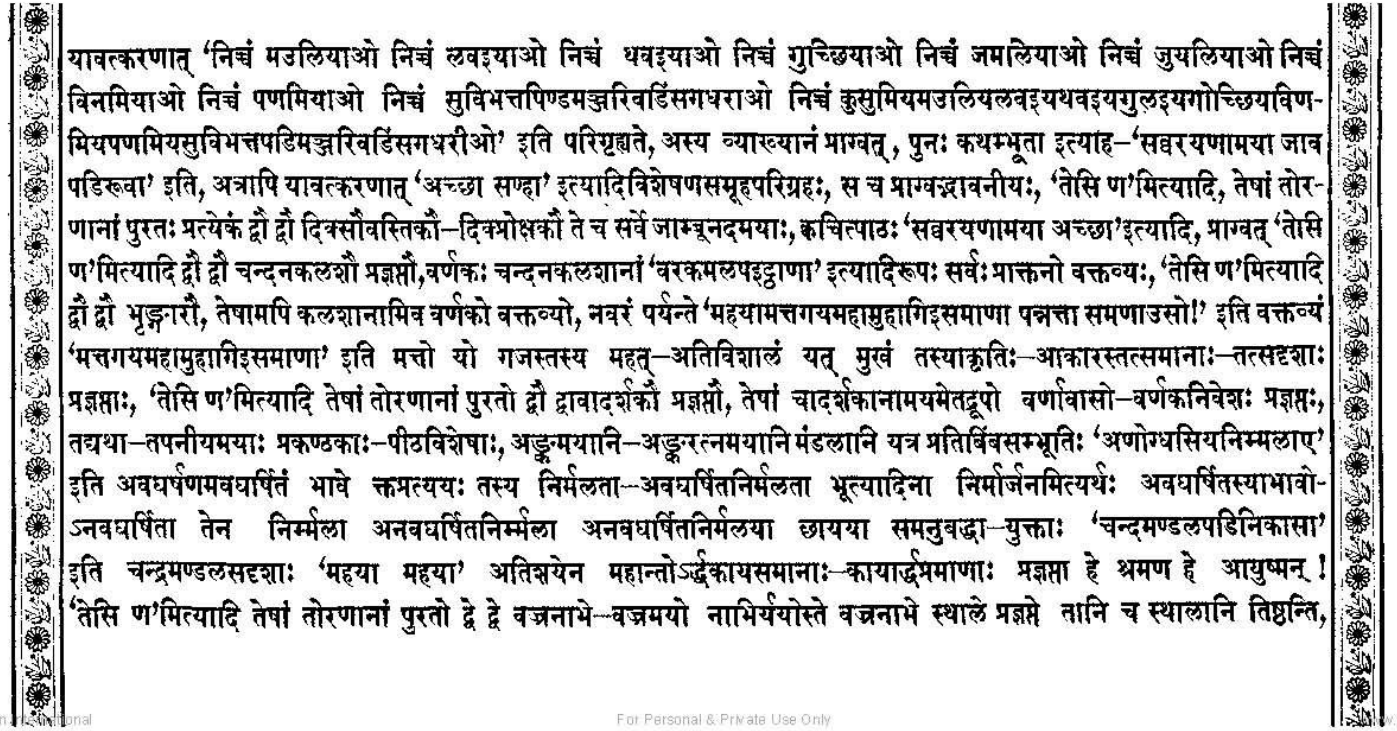
रत्नार्द्धचन्द्रचित्राः, तथा नाना–अनेकरूपाणि यानि मणिदामानि–मणिमयपुष्पमालास्तैरलङ्कृतानि–शोभितानि नानामणिदामालङ्कृतानि तथा अन्तर्बहिश्च श्लक्ष्णा–मसृणाः, तथा तपनीयं–सुवर्णविशेषस्तन्मय्या वालुकायाः प्रस्तटः–प्रस्तारो येषु ते तपनीयवालुकाप्रस्तटाः 'सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासाईया' इत्यादि प्राग्वत्तेषां च प्रासादावतंसकानामन्तर्भूमिवर्णनमुपर्युल्लोकवर्णनं सिंहासनवर्णनमुपरि विजयदूष्यवर्णनं वज्राङ्कुशवर्णनं मुक्तादामवर्णनं च यथा प्राक् यानविमाने भावितं तथा भावनीयं।'तेसिं ण'मित्यादि,तेषां द्वाराणां प्रत्येकमुभयोः पार्श्वयोरेकैकनैषेधिकीभावेन या द्विधा नैषेधिकी तस्यां षोडश षोडश तोरणानि प्रज्ञप्तानि, तानि च तोरणानि नानामणिमयानीत्यादि तोरणवर्णनं यानविमानमिव निरवशेषं भावनीयं, ' तेसि णं तोरणाणं पुरओ' इत्यादि, तेषां तोरणानां पुरतः प्रत्येकं द्वे द्वे शालभञ्जिके, शालभञ्जिकावर्णनं प्राग्वत्, 'तेसि ण' मित्यादि, तेषां तोरणानां पुरतो द्वौ द्वौ नागदन्तकौ प्रज्ञप्तौ, तेषां च नागदन्तकानां वर्णनं यथाऽधस्तादनन्तरमुक्तं तथा वक्तव्यं, नवरमत्रोपरि नागदन्तका न वक्तव्या अभावात्, 'तेसि ण'मित्यादि तेषां तोरणानां पुरतो द्वौ द्वौ हयसङ्घाटौ, सङ्घाटशब्दो युग्मवाची यथा साधुसङ्घाट इत्यत्र, ततो द्वे द्वे हययुग्मे इत्यर्थः, एवं गजनरकिन्नरकिंपुरुषमहोरगगन्धर्ववृषभसङ्घाटा अपि वाच्याः, एते च कथम्भूताः? इत्याह– 'सव्वरयणामया अच्छा सण्हा' इत्यादि प्राग्वत्, यथा चामीषां हयादीनामष्टानां सङ्घाटा उक्तास्तथा पङ्क्तयोऽपि वीथयोऽपि मिथुनकानि च वाच्यानि, तत्र सङ्घाटाः–समानलिङ्गयुग्मरूपा पुष्पावकीर्णकाश्च एकदिग्व्यवस्थिताः श्रेणिः–पङ्क्तिरुभयोः पार्श्वयोरेकैकश्रेणिभावेन यत् श्रेणिद्वयं सा वीथिः स्त्रीपुरुषयुग्मं मिथुनकं 'तेसि ण'मित्यादि, तेषां तोरणानां पुरतो द्वे द्वे पद्मलते यावत्करणात् द्वे द्वे नागलते द्वे द्वे अशोकलते द्वे द्वे चम्पकलते द्वे द्वे चूतलते द्वे द्वे वासन्तीलते द्वे द्वे कुन्दलते द्वे द्वे अतिमुक्तलते इति परिगृह्यते, द्वे द्वे श्यामलते, ताश्च कथम्भूता इत्याह–'णिच्चं कुसुमियाओ' इत्यादि

सूर्याभविमानवर्णनं सू० २८ ॥ ६९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० २९ स्थाने सू० २८ मुद्रितं

सूर्याभविमानस्य वर्णनं



यावत्करणात् 'निच्चं मउलियाओ निच्चं लवइयाओ निच्चं थवइयाओ निच्चं गुच्छियाओ निच्चं जमलियाओ निच्चं जुयलियाओ निच्चं विनमियाओ निच्चं पणमियाओ निच्चं सुविभत्तपिण्डमञ्जरिवडिंसगधराओ निच्चं कुसुमियमउलियलवइयथवइयगुलइयगोच्छियविणमियपणमियसुविभत्तपडिमञ्जरिवडिंसगधरीओ' इति परिगृह्यते, अस्य व्याख्यानं प्राग्वत्, पुनः कथम्भूता इत्याह–'सव्वरयणामया जाव पडिरूवा' इति, अत्रापि यावत्करणात् 'अच्छा सण्हा' इत्यादिविशेषणसमूहपरिग्रहः, स च प्राग्वद्भावनीयः, 'तेसि ण'मित्यादि, तेषां तोरणानां पुरतः प्रत्येकं द्वौ द्वौ दिक्सौवस्तिकौ–दिक्मोक्षकौ ते च सर्वे जाम्बूनदमयाः, क्वचित्पाठः 'सव्वरयणामया अच्छा'इत्यादि, प्राग्वत् 'तेसि ण'मित्यादि द्वौ द्वौ चन्दनकलशौ प्रज्ञप्तौ,वर्णकः चन्दनकलशानां 'वरकमलपइट्ठाणा' इत्यादिरूपः सर्वः प्राक्तनो वक्तव्यः, 'तेसि ण'मित्यादि द्वौ द्वौ भृङ्गारौ, तेषामपि कलशानामिव वर्णको वक्तव्यो, नवरं पर्यन्ते 'महयामत्तगयमहामुहागिइसमाणा पन्नत्ता समणाउसो!' इति वक्तव्यं 'मत्तगयमहामुहागिइसमाणा' इति मत्तो यो गजस्तस्य महत्–अतिविशालं यत् मुखं तस्याकृतिः–आकारस्तत्समानाः–तत्सदृशाः प्रज्ञप्ताः, 'तेसि ण'मित्यादि तेषां तोरणानां पुरतो द्वौ द्वावादर्शकौ प्रज्ञप्तौ, तेषां चादर्शकानामयमेतद्रूपो वर्णावासो–वर्णकनिवेशः प्रज्ञप्तः, तद्यथा–तपनीयमयाः प्रकण्ठकाः–पीठविशेषाः, अङ्कमयानि–अङ्करत्नमयानि मंडलानि यत्र प्रतिबिंबसम्भूतिः 'अणोग्घसियनिम्मलाए' इति अवघर्षणमवघर्षितं भावे क्तप्रत्ययः तस्य निर्मलता–अवघर्षितनिर्मलता भूत्यादिना निर्मार्जनमित्यर्थः अवघर्षितस्याभावोऽनवघर्षिता तेन निर्म्मला अनवघर्षितनिर्म्मला अनवघर्षितनिर्मलया छायया समनुबद्धा–युक्ताः 'चन्दमण्डलपडिनिकासा' इति चन्द्रमण्डलसदृशाः 'महया महया' अतिशयेन महान्तोऽर्द्धकायसमानाः–कायार्द्धप्रमाणाः प्रज्ञप्ता हे श्रमण हे आयुष्मन्! 'तेसि ण'मित्यादि तेषां तोरणानां पुरतो द्वे द्वे वज्रनाभे–वज्रमयो नाभिर्ययोस्ते वज्रनाभे स्थाले प्रज्ञप्ते तानि च स्थालानि तिष्ठन्ति,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	सूर्याभविमानस्य वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

'अच्छत्तिच्छडियतंदुलनहसंदट्ठपडिपुन्ना इव चिट्ठंति' 'अच्छा' निर्मलाः शुद्धाः स्फटिकवत् त्रिच्छटिताः–त्रीन् वारान् छटिताः अत एव 'नखसन्दष्टाः' नखाः–नखिकाः सन्दष्टा मुशलादिभिः छटिता येषां ते तथा सुखादिदर्शनात् क्तान्तस्य परनिपातः अच्छैस्त्रिच्छटितैः शालितण्डुलैर्नखसन्दष्टैः परिपूर्णाः, पृथ्वीपरिणामरूपाणि तानि तथा केवलमेवमाकाराणीत्युपमा, तथा चाह–'सव्वजम्बूणयमया' सर्वात्मना जम्बूनदमयानि 'अच्छा सण्हा' इत्यादि प्राग्वत् 'महया महया' इति अतिशयेन महान्ति रथचक्रसमानानि प्रज्ञप्तानि हे श्रमण! हे आयुष्मन्! 'तेसि ण'मित्यादि तेषां तोरणानां पुरतो द्वे द्वे 'पाईओ' इति पाड्यौ प्रज्ञप्ते, ताश्च पाड्यः 'सच्छोदगपडिहत्थाओ' इति स्वच्छपानीयपरिपूर्णाः ' णाणाविहस्स फलहरियस्स बहुपडिपुन्नाविवे ' ति अत्र षष्ठी तृतीयार्थे 'बहु पडिपुन्ने'ति चैकवचनं प्राकृतत्वात्, नानाविधैः फलहरितैर्हरितफलैर्बहु–प्रभूतं प्रतिपूर्णा इव तिष्ठन्ति न खलु तानि फलानि किं तु तथारूपाः शाश्वतभावमुपागताः पृथ्वीपरिणामास्ततः उपमानमिति, ' सव्वरयणामईओ ' इत्यादि प्राग्वत्, 'महये'ति अतिशयेन महत्यो गोकलिञ्जगचक्रसमानाः प्रज्ञप्ताः हे श्रमण हे आयुष्मन्!, ' तेसि ण'मित्यादि तेषां तोरणानां पुरतो द्वौ सुप्रतिष्ठकौ–आधारविशेषौ प्रज्ञप्तौ, ते च सुप्रतिष्ठकाः सुसर्वौषधिप्रतिपूर्णा नानाविधैः पञ्चवर्णैः प्रसाधनभाण्डैश्च बहुपरिपूर्णा इव तिष्ठन्ति, उपमाभावना प्राग्वत्, 'सव्वरयणामइओ' इत्यादि तथैव, 'तेसि ण' मित्यादि तेषां तोरणानां पुरतो द्वे द्वे मनोगुलिका नाम पीठिका, उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायां–"मनोगुलिका नाम पीठिके"ति, ताश्च मनोगुलिकाः सर्वात्मना वैडूर्यमय्यो 'अच्छा' इत्यादि प्राग्वत्। 'तासु णं मणोगुलियासु बहवे' इत्यादि तासु मनोगुलिकासु सुवर्णमयानि रूप्यमयानि च फलकानि प्रज्ञप्तानि, तेषु सुवर्णरूप्यमयेषु फलकेषु बहवो वज्रमया नागदन्तकाः–अङ्कुटकाः [सिक्केषु] तेषु च नागदन्तकेषु बहूनि रजतमयानि सिक्कानि प्रज्ञप्तानि, तेषु च

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [२९] दीप अनुक्रम [२९]	मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० २९ स्थाने सू० २८ मुद्रितं सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [२९]

दीप अनुक्रम [२९]

रजतमयेषु बहवो वातकरका–जलशून्याः करका प्रज्ञप्ताः, तद्यथा–'किण्हसुत्ते'त्यादि गवच्छं–आच्छादनं गवच्छा सञ्जाता एषिति गवच्छिकाः(ताः)कृष्णसूत्रैः–कृष्णसूत्रमयैर्गवच्छिकै(तै)रिति गम्यते, सिक्ककेषु गवच्छिताः कृष्णसूत्रसिक्कगगवच्छिता एवं नीलसूत्रसिक्कगगवच्छिता इत्याद्यपि भावनीयं, ते च वातकरकाः सर्वात्मना वैडूर्यमया 'अच्छा' इत्यादि प्राग्वत् । 'तेसि ण' मित्यादि, तेषां तोरणानां पुरतो द्वौ द्वौ चित्रौ–आश्चर्यभूतौ रत्नकरण्डकौ प्रज्ञप्तौ 'से जहानामए' इत्यादि, स यथा नाम राज्ञश्चतुरन्तचक्रवर्त्तिनः–चतुर्षु पूर्वापरदक्षिणोत्तररूपेषु अन्तेषु–पृथिवीपर्यन्तेषु चक्रेण वर्त्तितुं शीलं यस्य तस्यैव चित्रः–आश्चर्यभूतो नानामणिमयत्वेन नानावर्णो वा 'वेरुलियनाणामणिफलियपडलपच्चोयडे' इति बाहुल्येन वैडूर्यमणिमयः 'फलिहपडलपच्चोयडे' इति स्फटिकपटलावच्छादितः 'साए पभाए' इत्यादि स यथा राज्ञश्चतुरन्तचक्रवर्त्तिनः प्रत्यासन्नान् प्रदेशान् सर्वतः सर्वासु दिक्षु समन्ततः–सामस्त्येन अवभासयति एतदेव पर्यायत्रयेण व्याचष्टे–उद्योतयति तापयति प्रभासयति 'एवमेवे'त्यादि सुगमं 'तेसि णं तोरणाण'मित्यादि, तेषां तोरणानां पुरतो द्वा द्वौ हयकण्ठप्रमाणौ रत्नविशेषौ एवं गजनरकिन्नरकिंपुरुषमहोरगगन्धर्ववृषभकण्ठा अपि वाच्याः, उक्तं च जीवाभिगममूलटीकाकारेण–"हयकण्ठौ–हयकण्ठप्रमाणौ रत्नविशेषौ एवं सर्वेऽपि कण्ठा वाच्या" इति, तथा चाह– 'सवरयणामया' इति, सर्वे रत्नमया–रत्नविशेषरूपा 'अच्छा' इत्यादि प्राग्वत् । 'तेसि ण' मित्यादि तेषां तोरणानां पुरतो द्वौ द्वौ पुष्पचङ्गेर्यौ प्रज्ञप्ते एवं माल्यचूर्णगन्धवस्त्राभरणसिद्धार्थकलोमहस्तकचङ्गेर्योऽपि वक्तव्याः, एताश्च सर्वा अपि सर्वात्मना रत्नमया 'अच्छा'इत्यादि प्राग्वत्, एवं पुष्पादीनामष्टानां पटलकान्यपि द्विद्विसङ्ख्याकानि वाच्यानि, 'तेसि णं तोरणाण' मित्यादि, तेषां तोरणानां पुरतो द्वे द्वे सिंहासने प्रज्ञप्ते, तेषां च सिंहासनानां वर्णकः प्रागुक्तो निरवशेषो वक्तव्यः, 'तेसि ण'मित्यादि, तेषां तोर-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

णानां पुरतो द्वे द्वे छत्रे रूप्यमये प्रज्ञप्ते, तानि च छत्राणि वैडूर्यरत्नमयविमलदण्डानि जाम्बूनदकर्णिकानि वज्रसन्धीनि–वज्ररत्नापूरितदण्डशलाकासन्धीनि मुक्ताजालपरिगतानि अष्टौ सहस्राणि–अष्टसहस्रसङ्ख्या वरकाञ्चनशलाका–वरकाञ्चनमय्यः शलाका येषु तानि, तथा 'दद्दरमलयसुगंधिसवोउयसुरभिसीयलछाया' इति दर्दरः–चीवरावनद्धं–कुण्डिकादिभाजनमुखं तेन गालितास्तत्र पक्का वा ये मलय इति–मलयोद्भवं श्रीखण्डं तत्सम्बधिनः सुगन्धा ये गन्धवासास्तद्वत् सर्वेषु ऋतुषु सुरभिः शीतला च छाया येषां तानि तथा, 'मंगलभत्तिचित्ता' अष्टानां स्वस्तिकादीनां मङ्गलानां भक्त्या–विच्छित्त्या चित्रम्–आलेखो येषां तानि तथा 'चंदागारोवमा' चन्द्राकारः–चन्द्राकृतिः सा उपमा येषां तानि तथा, चन्द्रमण्डलवत् वृत्तानीति भावः, 'तेसि ण' मित्यादि, तेषां तोरणानां पुरतो द्वे द्वे चामरे प्रज्ञप्ते, तानि च चामराणि 'चंदप्पभवेरुलियवयरनाणामणिरयणखचितचित्तदंडाओ' इति चन्द्रप्रभः–चन्द्रकान्तो वज्रं वैडूर्यं च प्रतीतं चन्द्रप्रभवज्रवैडूर्याणि शेषाणि च नानामणिरत्नानि खचितानि येषु ते तथा एवंरूपाश्चित्रा–नानाकारा दण्डा येषां चामराणां तानि तथा, 'सुहुमरययदीहवालाओ' इति सूक्ष्मा रजतमया दीर्घा वाला येषां तानि तथा, 'शंखंककुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निकासाओ' इति 'शङ्खः' प्रतीतः अङ्कः–रत्नविशेषः 'कुंदे'ति कुन्दपुष्पं दकरज–उदककणाः अमृतमथितफेणपुञ्जः–क्षीरोदजलमथनसमुत्थः फेनपुञ्जस्तेषामिव सन्निकाशः–प्रभा येषां तानि तथा, 'अच्छा' इत्यादि प्राग्वत् ।'तेसि णं तोरणाण' मित्यादि, तेषां तोरणानां पुरतो द्वौ द्वौ तैलसमुद्गकौ–सुगन्धितैलाधारविशेषौ, उक्तं च जीवाभिगममूलटीकाकारेण–"तैलसमुद्गकौ–सुगन्धितैलाधारौ" एवं कोष्ठादिसमुद्गका अपि वाच्याः, अत्र सङ्ग्रहणिगाथा–तिल्ले कोट्ठ समुग्गे पत्ते चोए य तगर एलाय । हरियाले हिंगुलए मणोसिला अंजणसमुग्गा ॥१॥ 'सव्वरयणामया' इति एते सर्वेऽपि सर्वात्मना रत्नमया 'अच्छा'इत्यादि प्राग्वत् ।

॥ ७१ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० २९ स्थाने सू० २८ मुद्रितं

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३०]

दीप अनुक्रम [३०]

सूरियाभे णं विमाणे एगमेगे दारे अट्ठसयं चक्कज्झयाणं अट्ठसयं मिगज्झयाणं गरुडज्झयाणं छत्तज्झयाणं पिच्छज्झयाणं सउणिज्झयाणं सीहज्झयाणं उसभज्झयाणं अट्ठसयं सेयाणं चउविसाणाणं नागवरकेऊणं एवमेव सपुव्वावरेणं सूरियाभे विमाणे एगमेगे दारे असीयं केउसहस्सं भवतीति मक्खायं, सूरियाभे विमाणे पण्णट्ठिं पण्णट्ठिं भोमा पन्नत्ता, तेसि णं भोमाणं भूमिभागा उल्लोया य भाणियव्वा, तेसि णं भोमाणं च बहुमज्झदेसभागे पत्तेयं पत्तेयं सीहासणे, सीहासणवन्नतो सपरिवारो, अवसेसेसु भोमेसु पत्तेयं पत्तेयं भद्दासणा पन्नत्ता। तेसि णं दाराणं उत्तमागारा सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोभिया, तंजहा–रयणेहिं जाव रिट्ठेहिं, तेसि णं दाराणं उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा सझया जाव छत्तातिछत्ता, एवमेव सपुव्वावरेणं सूरियाभे विमाणे चत्तारि दारसहस्सा भवंतीतिमक्खायं, अभोगवणे सत्तिवणे चंपगवणे चूयगवणे, सूरियाभस्स विमाणस्स चउद्दिसिं पंच जोयणसयाइं अबाहाए चत्तारि वणसंडा पन्नत्ता, तंजहा–पुरच्छिमेणं असोगवणे दाहिणेणं सत्तवन्नवणे पच्चत्थिमेणं चंपगवणे उत्तरेणं चूयगवणे, ते णं वणसंडा साइरेगाइं अद्धतेरस जोयणसयसहस्साइं आयामेणं पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं पत्तेयं पत्तेयं पागारपरिक्खित्ता किण्हा किण्हाभासा वणसंडवन्नओ ॥ सू० २९ ॥

' सूरियाभे णं विमाणे एगमेगे दारे अट्ठसयं चक्कज्झयाण ' मित्यादि, तस्मिन् सूर्याभे विमाने एकैकस्मिन् द्वारे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

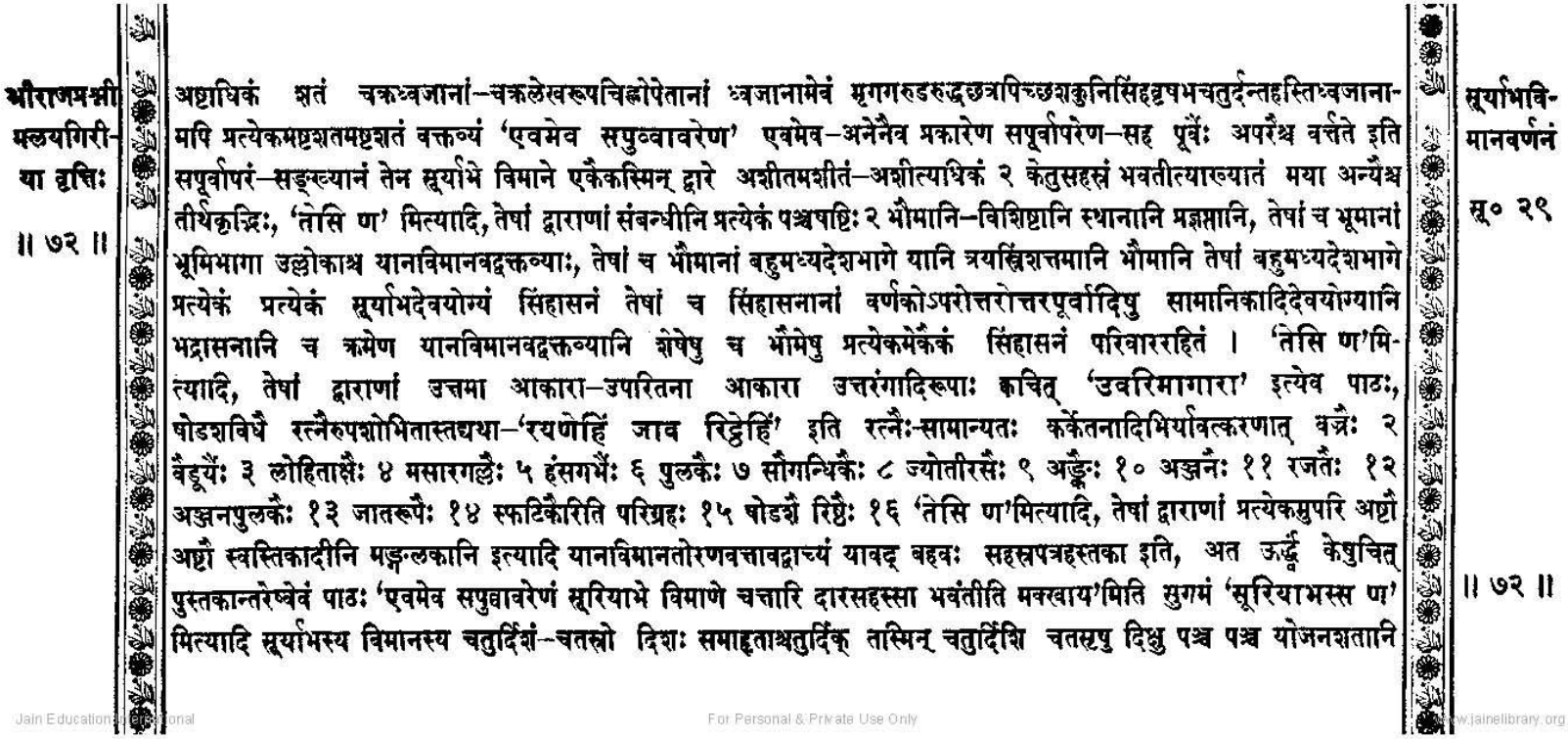
मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० ३० स्थाने सू० २९ मुद्रितं

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [३०]

दीप अनुक्रम [३०]



भौराजप्रश्नी मलयगिरी-या वृत्तिः

॥ ७२ ॥

अष्टाधिकं शतं चक्रध्वजानां–चक्रलेखरूपचिह्नोपेतानां ध्वजानामेवं मृगगरुडरुद्धछत्रपिच्छशकुनिसिंहवृषभचतुर्दन्तहस्तिध्वजानामपि प्रत्येकमष्टशतमष्टशतं वक्तव्यं 'एवमेव सपुव्वावरेण' एवमेव–अनेनैव प्रकारेण सपूर्वापरेण–सह पूर्वैः अपरैश्च वर्त्तते इति सपूर्वापरं–सङ्ख्यानं तेन सूर्याभे विमाने एकैकस्मिन् द्वारे अशीतमशीतं–अशीत्यधिकं २ केतुसहस्रं भवतीत्याख्यातं मया अन्यैश्च तीर्थकृद्भिः, 'तेसि ण' मित्यादि, तेषां द्वाराणां संबन्धीनि प्रत्येकं पञ्चषष्टिः २ भौमानि–विशिष्टानि स्थानानि प्रज्ञप्तानि, तेषां च भूमानां भूमिभागा उल्लोकाश्च यानविमानवद्वक्तव्याः, तेषां च भौमानां बहुमध्यदेशभागे यानि त्रयस्त्रिंशत्तमानि भौमानि तेषां बहुमध्यदेशभागे प्रत्येकं प्रत्येकं सूर्याभदेवयोग्यं सिंहासनं तेषां च सिंहासनानां वर्णकोऽपरोत्तरोत्तरपूर्वादिषु सामानिकादिदेवयोग्यानि भद्रासनानि च क्रमेण यानविमानवद्वक्तव्यानि शेषेषु च भौमेषु प्रत्येकमेकैकं सिंहासनं परिवाररहितं । 'तेसि ण'मित्यादि, तेषां द्वाराणां उत्तमा आकारा–उपरितना आकारा उत्तरंगादिरूपाः क्वचित् 'उवरिमागारा' इत्येव पाठः, षोडशविधै रत्नैरुपशोभितास्तद्यथा–'रयणेहिं जाव रिट्ठेहिं' इति रत्नैः-सामान्यतः कर्केतनादिभिर्यावत्करणात् वज्रैः २ वैडूर्यैः ३ लोहिताक्षैः ४ मसारगल्लैः ५ हंसगर्भैः ६ पुलकैः ७ सौगन्धिकैः ८ ज्योतीरसैः ९ अङ्कैः १० अञ्जनैः ११ रजतैः १२ अञ्जनपुलकैः १३ जातरूपैः १४ स्फटिकैरिति परिग्रहः १५ षोडशै रिष्टैः १६ 'तेसि ण'मित्यादि, तेषां द्वाराणां प्रत्येकमुपरि अष्टौ अष्टौ स्वस्तिकादीनि मङ्गलकानि इत्यादि यानविमानतोरणवत्तावद्वाच्यं यावद् बहवः सहस्रपत्रहस्तका इति, अत ऊर्द्धं केषुचित् पुस्तकान्तरेष्वेवं पाठः 'एवमेव सपुव्वावरेणं सूरियाभे विमाणे चत्तारि दारसहस्सा भवंतीति मक्खाय'मिति सुगमं 'सूरियाभस्स ण' मित्यादि सूर्याभस्य विमानस्य चतुर्दिशं–चतस्रो दिशः समाहृताश्चतुर्दिक् तस्मिन् चतुर्दिशि चतसृषु दिक्षु पञ्च पञ्च योजनशतानि

सूर्याभविमानवर्णनं सू० २९

॥ ७२ ॥

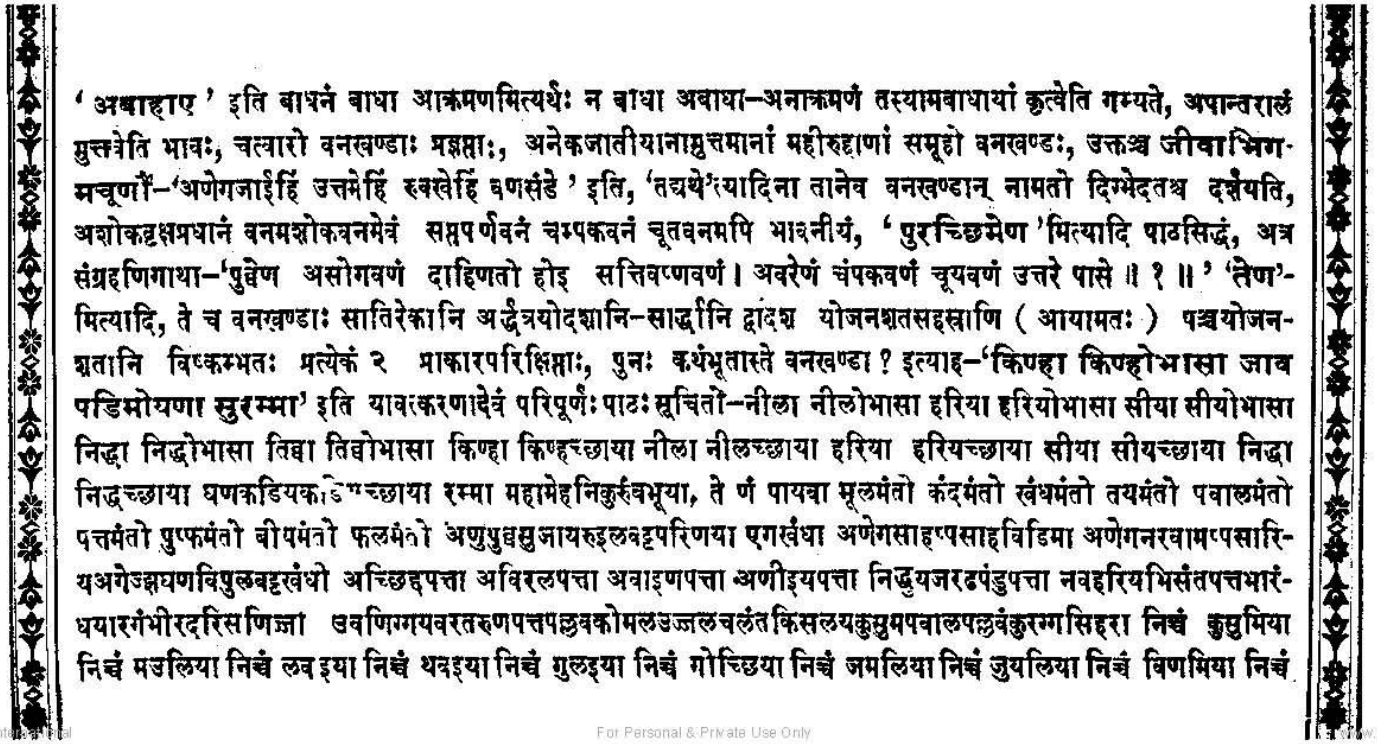
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० ३० स्थाने सू० २९ मुद्रितं

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३०]

दीप अनुक्रम [३०]



'अबाहाए' इति बाधनं बाधा आक्रमणमित्यर्थः न बाधा अबाधा–अनाक्रमणं तस्यामबाधायां कृत्वेति गम्यते, अपान्तरालं मुक्त्वेति भावः, चत्वारो वनखण्डाः प्रज्ञप्ताः, अनेकजातीयानामुत्तमानां महीरुहाणां समूहो वनखण्डः, उक्तश्च जीवाभिगमचूर्णौ–'अणेगजाईहिं उत्तमेहिं रुक्खेहिं वणसंडे' इति, 'तद्यथे'त्यादिना तानेव वनखण्डान् नामतो दिग्भेदतश्च दर्शयति, अशोकवृक्षप्रधानं वनमशोकवनमेवं सप्तपर्णवनं चम्पकवनं चूतवनमपि भावनीयं, 'पुरच्छिमेण'मित्यादि पाठसिद्धं, अत्र संग्रहणिगाथा–'पुव्वेण असोगवणं दाहिणतो होइ सत्तिवण्णवणं। अवरेणं चंपकवणं चूयवणं उत्तरे पासे ॥ १ ॥' 'तेण'मित्यादि, ते च वनखण्डाः सातिरेकाणि अर्द्धत्रयोदशानि–सार्द्धानि द्वादश योजनशतसहस्राणि (आयामतः) पञ्चयोजनशतानि विष्कम्भतः प्रत्येकं २ प्राकारपरिक्षिप्ताः, पुनः कथंभूतास्ते वनखण्डा ? इत्याह–'किण्हा किण्होभासा जाव पडिरूवा सुरम्मा' इति यावत्करणादेवं परिपूर्णः पाठः सूचितो–नीला नीलोभासा हरिया हरियोभासा सीया सीयोभासा निद्धा निद्धोभासा तिव्वा तिव्वोभासा किण्हा किण्हच्छाया नीला नीलच्छाया हरिया हरियच्छाया सीया सीयच्छाया निद्धा निद्धच्छाया घणकडियकडिच्छाया रम्मा महामेहनिकुरुंबभूया, ते णं पायवा मूलमंतो कंदमंतो खंधमंतो तयमंतो पवालमंतो पत्तमंतो पुप्फमंतो बीयमंतो फलमंतो अणुपुव्वसुजायरुइलवट्टपरिणया एगखंधा अणेगसाहप्पसाहविडिमा अणेगनरवामप्पसारियअगेज्झघणविपुलबद्धखंधो अच्छिद्दपत्ता अविरलपत्ता अवाइणपत्ता अणीइयपत्ता निद्धुयजरढपंडुपत्ता नवहरियभिसंतपत्तभारंधयारगंभीरदरिसणिज्जा उवणिग्गयवरतरुणपत्तपल्लवकोमलउज्जलचलंतकिसलयकुसुमपवालपल्लवंकुरग्गसिहरा निच्चं कुसुमिया निच्चं मउलिया निच्चं लवइया निच्चं थवइया निच्चं गुलइया निच्चं गोच्छिया निच्चं जमलिया निच्चं जुयलिया निच्चं विणमिया निच्चं

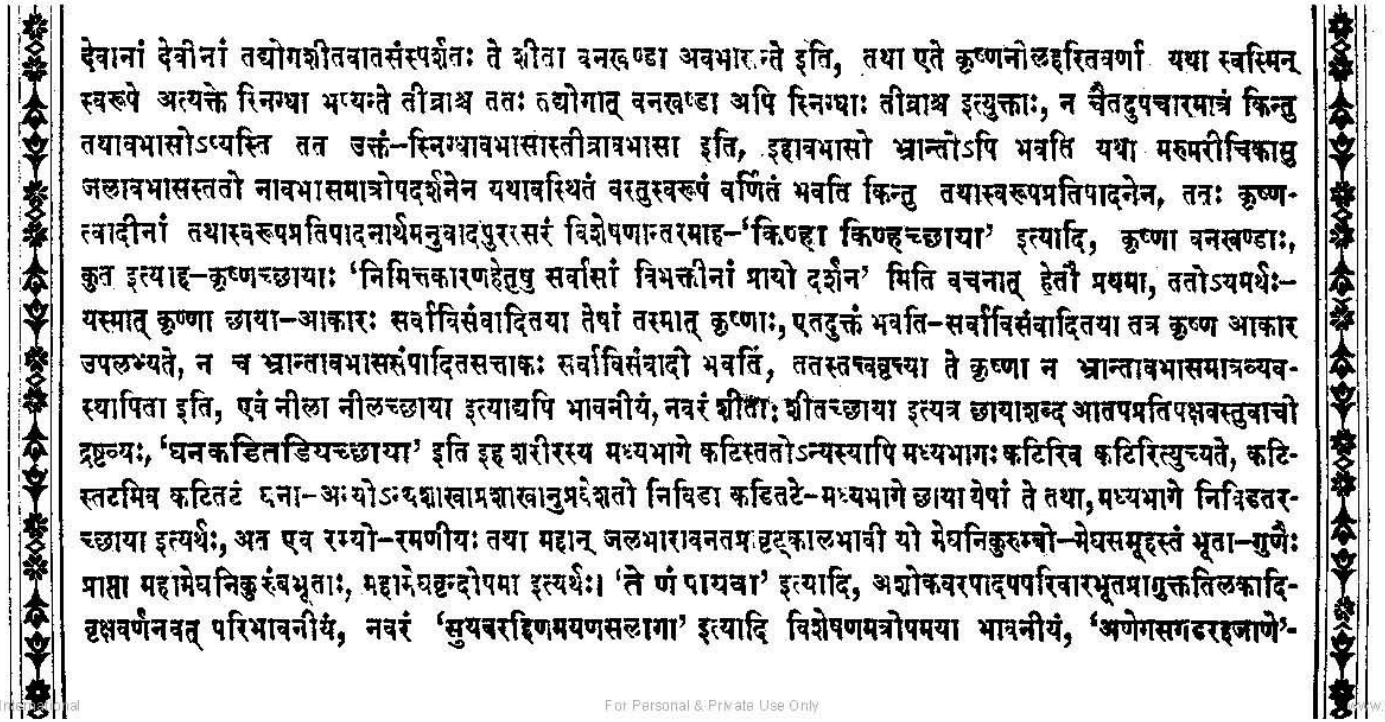
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

पणमिया निचं कुसुमियमउलियलवइयथवइयगुलइयगोच्छियजमलियजुवलियविणमियपणमियसुविभत्तपडिमंजरिवडंसयधरा सुयवरहिणमयणसलागाकोइलकोरकभिंगारककोंडलजीवंजीवकनंदीमुखकविंजलपिंगलक्खगकारंडचक्कवागकलहंससारसअणेगसउणमिहुणविचरियसद्दइयमहुरसरनाइयसंपिंडियदरियभमरमहुयरिपहकरपरिलेंतछप्पयकुसुमासवलोलमहुरगुमगुमंतगुंजंतदेसभागा अभिंतरपुप्फफलबाहिरपत्तोच्छन्ना पुत्तेहि य पुप्फेहि य उवच्छन्नपलिच्छन्ना नीरोगका मउफासा अकंटगा णाणाविहगुच्छगुम्ममंडवगोवसहिया विचित्तसुहकेउभूया वावितुक्खरणिदीहियासु य सुनिवेसियरम्मजालघरगा पिंडिमनीहारिमसुगंधिसुरभिमणहरं च गंधद्धणिं मुयंता सुहकेऊ केउबहुला अणेगसगडरहजाणजुग्गगिल्लिथिल्लिसीयसंदमाणीपडिमोयणा सुरम्मा इति' अस्य व्याख्या–इह प्रायो वृक्षाणां मध्यमे वयसि वर्त्तमानानि पत्राणि कृष्णानि भवन्ति ततस्तद्योगात् वनखण्डा अपि कृष्णाः, न चोपचारमात्रात्ते कृष्णा इति व्यपदिश्यन्ते किन्तु तथा प्रतिभासनात्, तथा चाह–'कृष्णावभासा'यावति भागे कृष्णावभासपत्राणि सन्ति तावति भागे ते वनखण्डाः कृष्णा अवभासन्ते, ततः कृष्णोऽवभासो येषां ते कृष्णावभासा इति, तथा हरितत्वमतिक्रान्तानि कृष्णत्वमसंप्राप्तानि पत्राणि नीलानि तद्योगाद्वनखण्डा अपि नीलाः, न चैतदुपचारमात्रेणोच्यते किन्तु तथावभासात्, तथा चाह नीलावभासाः, समासः प्राग्वत्, यौवने तान्येव पत्राणि किसलयत्वं रक्तत्वं चातिक्रान्तानि ईषत् हरितालाभानि पाण्डूनि सन्ति हरितानीति व्यपदिश्यन्ते, ततस्तद्योगात् वनखण्डा अपि हरिताः, न चैतदुपचारमात्रादुच्यते, किन्तु तथाप्रतिभासात्, तथा चाह–हरितावभासाः, तथा बाल्यादतिक्रान्तानि वृक्षाणां पत्राणि शीतानि भवन्ति ततस्तद्योगाद्वनखण्डा अपि शीता इत्युक्ताः, न च न ते गुणतस्तथा किन्तु तथैव, तथा चाह–शीतावभासाः, अधोभागवर्त्तिनां वैमानिक-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	सूर्याभविमानस्य वर्णनं



देवानां देवीनां तद्योगशीतवातसंस्पर्शतः ते शीता वनखण्डा अवभासन्ते इति, तथा एते कृष्णनीलहरितवर्णा यथा स्वस्मिन् स्वरूपे अत्यक्ते स्निग्धा भण्यन्ते तीव्राश्च ततः तद्योगात् वनखण्डा अपि स्निग्धाः तीव्राश्च इत्युक्ताः, न चैतदुपचारमात्रं किन्तु तथावभासोऽप्यस्ति तत उक्तं–स्निग्धावभासास्तीव्रावभासा इति, इहावभासो भ्रान्तोऽपि भवति यथा मरुमरीचिकासु जलावभासस्ततो नावभासमात्रोपदर्शनेन यथावस्थितं वस्तुस्वरूपं वर्णितं भवति किन्तु तथास्वरूपप्रतिपादनेन, ततः कृष्णत्वादीनां तथास्वरूपप्रतिपादनार्थमनुवादपुरस्सरं विशेषणान्तरमाह–'किण्हा किण्हच्छाया' इत्यादि, कृष्णा वनखण्डाः, कुत इत्याह–कृष्णच्छायाः 'निमित्तकारणहेतुषु सर्वासां विभक्तीनां प्रायो दर्शन' मिति वचनात् हेतौ प्रथमा, ततोऽयमर्थः–यस्मात् कृष्णा छाया–आकारः सर्वाविसंवादितया तेषां तस्मात् कृष्णाः, एतदुक्तं भवति–सर्वाविसंवादितया तत्र कृष्ण आकार उपलभ्यते, न च भ्रान्तावभाससंपादितसत्ताकः सर्वाविसंवादी भवति, ततस्तच्चवृत्त्या ते कृष्णा न भ्रान्तावभासमात्रव्यवस्थापिता इति, एवं नीला नीलच्छाया इत्याद्यपि भावनीयं, नवरं शीताः शीतच्छाया इत्यत्र छायाशब्द आतपप्रतिपक्षवस्तुवाचो द्रष्टव्यः, 'घनकडितडियच्छाया' इति इह शरीरस्य मध्यभागे कटिस्ततोऽन्यस्यापि मध्यभागः कटिरिव कटिरित्युच्यते, कटिस्तटमिव कटितटं घना–अन्योऽन्यशाखाप्रशाखानुप्रवेशतो निविडा कडितटे–मध्यभागे छाया येषां ते तथा, मध्यभागे निबिडतरच्छाया इत्यर्थः, अत एव रम्यो–रमणीयः तथा महान् जलभारावनतत्वाद्वृष्टिकालभावी यो मेघनिकुरम्बो–मेघसमूहस्तं भूता–गुणैः प्राप्ता महामेघनिकुरंबभूताः, महामेघवृन्दोपमा इत्यर्थः। 'ते णं पायवा' इत्यादि, अशोकवरपादपपरिवारभूतप्रायुक्तितिलकादिवृक्षवर्णनवत् परिभावनीयं, नवरं 'सुयबरहिणमयणसलागा' इत्यादि विशेषणमत्रोपमया भावनीयं, 'अणेगसगडरहजाणे'-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

त्यादि तदाकारभावतः ॥ (सू. ३०) ॥

तेसिं णं वणसंडाणं अंतो बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा, से जहा नामए आलिंगपुक्खरेति वा जाव णाणाविहपंचवण्णेहिं मणीहि य तणेहि य उवसोभिया, तेसिं णं गंधो फासी णेयव्वो जहक्कमं, तेसि णं भंते! तणाण य मणीण य पुव्वावरदाहिणुत्तरातेहिं वातेहिं मंदाणं एइयाणं वेइयाणं कंपियाणं चालियाणं फंदियाणं घट्टियाणं खोभियाणं उदीरिदाणं केरिसए सद्दे भवति?, गोयमा! से जहा नामए सीयाए वा संदमाणीए वा रहस्स वा सच्छत्तस्स सज्झयस्स सघंटस्स सपडागस्स सतोरणवरस्स सनंदिघोसस्स सखिखिणिहेमजालपरिक्खित्तस्स हेमवयचित्ततिणिसकणगणिज्जुत्तदारुयायस्स संपिनद्धचक्कमंडलधुरागस्स कालायससुकयणेमिजंतकम्मस्स आइण्णवरतुरगसुसंपउत्तस्स कुसलणरच्छेयसारहिसुसंपग्गहियस्स सरसयबत्तीसतोणपरिमंडियस्स सकंकडावयंसगस्स सचावसरपहरणावरणभरियजुज्झसज्जस्स रायंगणंसि वा रायंतेउरंसि वा रम्मंसि वा मणिकुट्टिमतलंसि अभिक्खणं अभिघट्टिज्जमाणस्स वा नियट्टिज्जमाणस्स वा ओरालमणोण्णा कण्णमणनिव्वुइकरा सद्दा सव्वओ समंता अभिणिस्सवंति, भवेयारूवे सिया?, णो इणट्ठे समट्ठे, से जहाणामए वेयालीयवीणाए उत्तरमंदामुच्छियाए अंके सुपइट्ठियाए कुसलनरनारिसुसंपरिग्गहियाते चंदणकोणपरियट्टियाए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंसि मंदायं मंदायं वेइयाए पवेइयाए चालि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० ३१-३२ स्थाने सू० ३० मुद्रितं

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३१-३२]

दीप अनुक्रम [३१-३२]

याए घट्टियाए खोभियाए उदीरियाए ओराला मणुण्णा मणहरा कण्णमणनिव्वुइकरा सद्दा सव्वओ समंता अभिनिस्सवंति, भवेयारूवे सिया ?, णो इणट्ठे समट्ठे, से जहानामए किन्नराण वा किंपुरिसाण वा महोरगाण वा गंधव्वाण वा भद्दसालवणगयाणं वा नंदणवणगयाणं वा सोमणसवणगयाणं वा पंडगवणगयाणं वा हिमवंतगच्छंगयमलयमंदरगिरिगुहासमन्नागयाण वा एगओ सन्निहियाणं समागयाणं सन्निसन्नाणं समुवविट्ठाणं पमुइयपक्कीलियाणं गीयरइगंधव्वहसियमणाणं गज्जं पज्जं कत्थं गेयं पयबद्धं पायबद्धं उक्खित्तायपयत्तायं मंदायं रोइयावसाणं सत्तसरसमन्नागयं छदोसविप्पमुक्कं एक्कारसालंकारं अट्ठगुणोववेयं गुंजंतवंसकुहरोवगूढं रत्तं तिट्ठाणकरणसुद्धं सकुहरगुंजंतवंसतंतीतलताललयगहसुसंपउत्तं महुरं समं सुललियमणोहरं मउयरिभियपयसंचारं सुणंतिं वरचारुरूवं दिव्वं णट्टं सज्जं गेयं पगीयाणं, भवेयारूवे सिया ?, हंता सिया ॥ (सू० ३१)

तेसि णं वणसंडाणं तत्थ तत्थ तहिं देसे देसे बहूओ खुड्डागखुड्डियाओ वावीयाओ पुक्खरिणीओ दीहियाओ गुंजालियाओ सरपंतिआओ बिलपंतियाओ अच्छाओ सण्हाओ रययामयकूलाओ समतीराओ रयतामयपासाणाओ तवणिज्जतलाओ सुवण्णसुब्भरययवालुयाओ वेरुलियमणिफालियपडलपच्चोयडाओ सुओयारसुउत्तराओ णाणामणिसुबद्धाओ चउक्कोणाओ अणुपुव्वसुजायवप्पगंभीरसीयलजलाओ संछन्नपत्तभिसमुणालाओ बहुउप्पलकुमुयनलिणसुभगसोगंधियपोंडरीयसय-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

वत्तसहस्सपत्तकेसरफुल्लोवचियाओ छप्पयपरिभुज्जमाणकमलाओ अच्छविमलसलिलपुण्णाओ अप्पेगइयाओ आसवोयगाओ अप्पेगइयाओ खोरोयगाओ अप्पेगइयाओ घओयगाओ अप्पेगइयाओ खीरोयगाओ अप्पेगइआओ खारोयगाओ अप्पेगतियातो उयगरसेण पण्णत्ताओ पासादीयाओ दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ तासि णं वावीणं जाव बिलपंतीणं पत्तेयं २ चउद्दिसिंचत्तारि तिसोपाणपडिरूवगा पण्णत्ता, तेसि णं तिसोपाणपडिरूवगाणं वन्नओ, तोरणाणं झया छत्ताइछत्ता य णेयव्वा, तासु णं खुड्डाखुड्डियासु वावीसु जाव बिलपंतियासु तत्थ २ देसे बहवे उप्पायपव्वयगा नियइपव्वयगा जगइपव्वया दारुइज्जपव्वयगा दगमंडवा दगणालगा दगमंचगा उसड्डा खुड्डखुड्डगा अंदोलगा पक्खंदोलगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, तेसु णं उप्पायपव्वएसु जाव पक्खंदोलएसु बहूइं हंसासणाइं कोंचासणाइं गरुलासणाइं उण्णयासणाइं पणयासणाइं दीहासणाइं पक्खासणाइं भद्दासणाइं उसभासणाइं सीहासणाइं पउमासणाइं दिसासोवत्थियाइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं जाव पडिरूवाइं, तेसु णं वणसंडेसु तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे बहवे आलियघरगा मालियघरगा कयलिघरगा लयाघरगा अच्छणघरगा पिच्छणघरगा मंडणघरगा पसाहणघरगा गब्भघरगा मोहनघरगा सालघरगा जालघरगा चित्तघरगा कुसुमघरगा गंधघरगा आयंसघरगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, तेसु णं आलियघरगेसु जाव गंधव०

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० ३१-३२ स्थाने सू० ३० मुद्रितं

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३१-३२]

दीप अनुक्रम [३१-३२]

तहिं २ घरएसु बहुइं हंसासण जाव दिसासोवत्थिआसणाइं सद्दरयणामयाइं जाव पडिरुवाइं। तेसु णं वणसंडेसु तत्थ तत्थ देसे २ तहिं २ बहवे जातिमंडवगा जूहियमंडवगा णवमालियमंडवगा वासंतिमंडवगा सूरमल्लियमंडवगा दहिवासुयमंडवगा तंबोलिमंडवगा मुद्दियामंडवगा णागलया-मंडवगा अतिमुत्तयलयामंडवगा आप्फोवगामालुयामंडवगा अच्छा सद्दरयणामया जाव पडिरू-वाओ, तेसु णं जालिमंडवएसु जाव मालुयामंडवएसु बहवे पुढविसिलापट्टगा हंसासणसंठिया जाव दिसासोवत्थियासणसंठिया अण्णे य बहवे मंसलघट्ठविसिट्ठसंठाणसंठिया पुढविसिलाप-ट्टगा पण्णत्ता समणाउओ !, आईणगरुयबूरणवणीयतूलफासा सद्दरयणामया अच्छा जाव पडि-रूवा, तत्थ णं बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य आसयंति सयंति चिट्ठंति निसीयंति तुयट्टंति हसंति रमंति ललंति कीलंति किट्टंति मोहेंति पुरा पोराणाणं सुचिण्णाण सुपडिक्कंताण सुभाण कडाण कम्माण कल्लाणं फलविवागं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति (सू० ३२)

'तेसि णं वणसंडाण' मित्यादि, तेषां वनखण्डानामन्तः-मध्ये बहुसमरमणीया भूमिभागाः प्रज्ञप्ताः, तेषां च भूमिभागानां 'से जहा नामए 'आलिंगपुक्खरे इ वा' इत्यादि वर्णनं प्रागुक्तं तावद्वाच्यं यावन्मणीनां स्पर्शो, नवरमत्र तृणा-न्यपि वक्तव्यानि, तानि चैवं-'नाणाविहपंचवण्णेहि मणीहि य तणेहि य उवसोभिया, तंजहा-किण्हेहि य नीलेहि य जाव सु-क्किले, तत्थ णं जे ते कण्हा तणा य मणी य तेसि णं अयमेयारूवे वन्नावासे पन्नत्ते, से जहानामए जीमूतेइ वा' इत्यादि। सम्प्रति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

तेषां मणीनां तृणानां च वातेरितानां शब्दरूपप्रतिपादनार्थमाह–' तेसि णं भंते ! तणाण य मणीण य ' इत्यादि, तेषां णमिति पूर्ववत् भदन्त !–परमकल्याणयोगिन् तृणानां पूर्वापरदक्षिणोत्तरगतैर्वातैर्मन्दायंति-मन्दं मन्दं एजितानां-कम्पितानां व्येजितानां–विशेषतः कम्पितानां, एतदेव पर्यायशब्देन व्याचष्टे-कम्पितानां चालितानां–इतस्ततो मनाक् विक्षिप्तानां, एतदेव पर्यायेण व्याचष्टे–स्पन्दितानां, तथा घट्टितानां-परस्परं संघर्षयुक्तानां, कथं घट्टिता इत्याह–क्षोभितानां, स्वस्थानाच्चालनमपि कुत इत्याह–उदीरिता नामुत्-प्राबल्येन प्रेरितानां, कीदृशः शब्दः प्रज्ञप्तः ?, भगवानाह–' ' गोयमे ' त्यादि, गौतम ! स यथानामकः शिबिकाया वा स्यन्दमानिकाया वा रथस्य वा, तत्र सिबिया जम्पानविशेषरूपा उपरिच्छादिता कोष्ठाकारा, तथा दीर्घो जम्पानविशेषः पुरुषसप्रमाणावकाशदा या स्यन्दमानिका, अनयोश्च शब्दः पुरुषोत्पाटितयोः क्षुद्रहेमघण्टिकादिचलनवशतो वेदितव्यः, रथश्चेह संग्रामरथः प्रत्येयोऽद्रेतनविशेषणानामन्यथाऽसंभवात्, तस्य च फलकवेदिका यस्मिन् काले ये पुरुषास्तदपेक्षया ततिप्रमाणाऽवसेया, तस्य च रथस्य विशेषणान्यभिधत्ते–' सच्छत्तस्स ' इत्यादि, सच्छत्रस्य सध्वजस्य सघण्टाकस्य–उभयपार्श्ववर्तिलम्बमहाप्रमाणघण्टोपेतस्य सपताकस्य सह तोरणवरैः-प्रधानतोरणैः यस्य ससतोरणवरस्तस्य, सह नन्दीघोषो–द्वादशतूर्यनिनादो यस्य स सनन्दिघोषस्तस्य, तथा सह किङ्किण्यः-क्षुद्रघण्टा येषामिति सकिङ्किणीकानि, हेमजालानि–यानि हेममयदामसमूहारतैः सर्वासु दिक्षु पर्यन्तेषु-बहिःप्रदेशेषु परिक्षिप्तो–व्याप्तस्तस्य, तथा हैमवतं–हिमवत्पर्वतभावि चित्रं-विचित्रमनोहारिविशेषोपेतं तिनिशतरसंबन्धि कनकविच्छुरितं दारु-काष्ठं यस्य स हैमवतचित्रतैनिशकनकनिर्युक्तदारुकस्तस्य, सूत्रे च द्वितीयः ककारः स्वार्थिकः पूर्वस्य च दीर्घत्वं प्राकृतत्वात्, तथा सुष्ठु–अतिशयेन सम्यक् पिनद्धं–

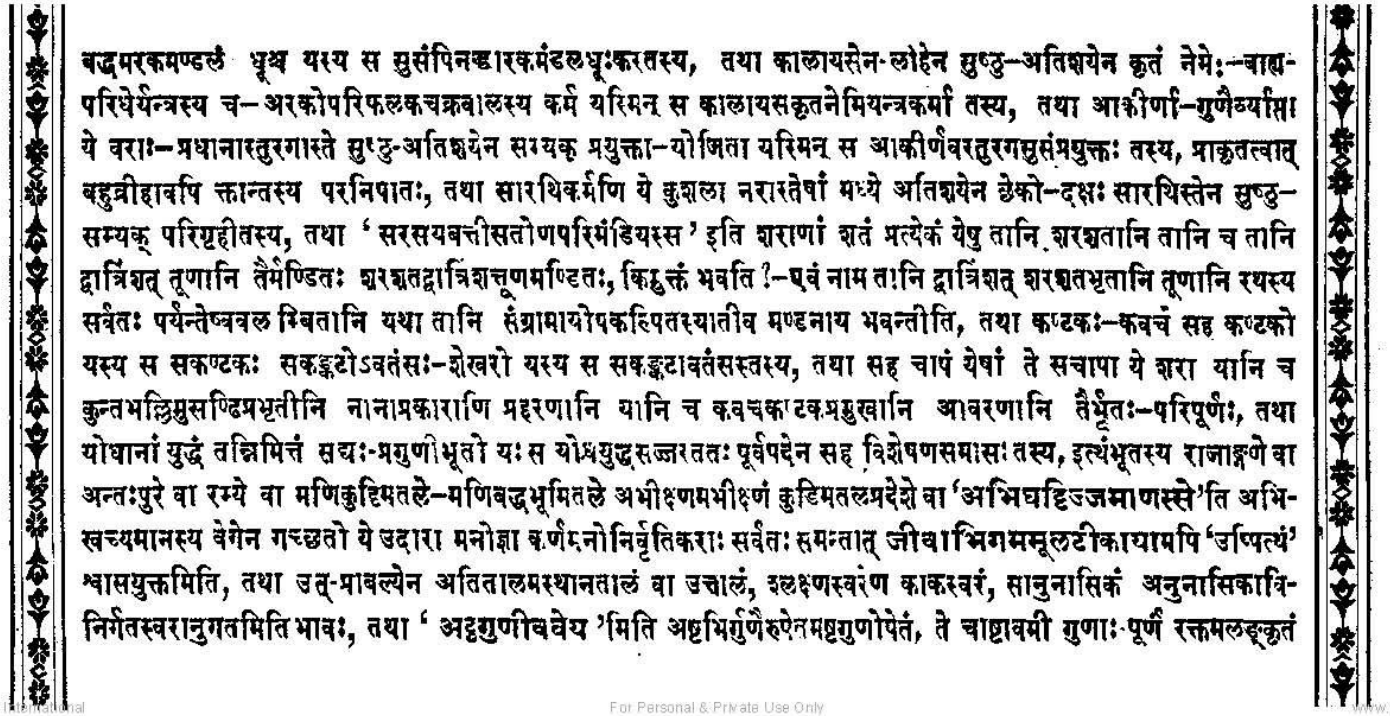
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० ३१-३२ स्थाने सू० ३० मुद्रितं

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३१-३२]

दीप अनुक्रम [३१-३२]



बद्धमरकमण्डलं धूश्च यस्य स सुसंपिनद्धारकमंडलधूःकरतस्य, तथा कालायसेन-लोहेन सुष्ठु–अतिशयेन कृतं नेमेः–बाह्य-परिधेर्यन्त्रस्य च–अरकोपरिफलकचक्रवालस्य कर्म यस्मिन् स कालायसकृतनेमियन्त्रकर्मा तस्य, तथा आकीर्णा–गुणैर्व्याप्ता ये वराः–प्रधानास्तुरगास्ते सुष्ठु-अतिशयेन सम्यक् प्रयुक्ता–योजिता यस्मिन् स आकीर्णवरतुरगसुसंप्रयुक्तः तस्य, प्राकृतत्वात् बहुव्रीहावपि क्तान्तस्य परनिपातः, तथा सारथिकर्मणि ये कुशला नरास्तेषां मध्ये अतिशयेन छेको–दक्षः सारथिस्तेन सुष्ठु–सम्यक् परिगृहीतस्य, तथा 'सरसयवत्तीसतोणपरिमंडियस्स' इति शराणां शतं प्रत्येकं येषु तानि शरशतानि तानि च तानि द्वात्रिंशत् तूणानि तैर्मण्डितः शरशतद्वात्रिंशत्तूणमण्डितः, किमुक्तं भवति ?–एवं नाम तानि द्वात्रिंशत् शरशतभृतानि तूणानि रथस्य सर्वतः पर्यन्तेष्ववलम्बितानि यथा तानि संग्रामायोपकल्पितस्यातीव मण्डनाय भवन्तीति, तथा कण्टकः–कवचं सह कण्टको यस्य स सकण्टकः सकङ्कटोऽवतंसः–शेखरो यस्य स सकङ्कटावतंसस्तस्य, तथा सह चापं येषां ते सचापा ये शरा यानि च कुन्तभल्लिमुसण्ढिप्रभृतीनि नानाप्रकाराणि प्रहरणानि यानि च कवचकाटकप्रमुखानि आवरणानि तैर्भृतः–परिपूर्णः, तथा योधानां युद्धं तन्निमित्तं सद्यः-प्रगुणीभूतो यः स योधयुद्धसज्जस्ततः पूर्वपदेन सह विशेषणसमासः तस्य, इत्थंभूतस्य राजाङ्गणे वा अन्तःपुरे वा रम्ये वा मणिकुट्टिमतले–मणिबद्धभूमितले अभीक्ष्णमभीक्ष्णं कुट्टिमतलप्रदेशे वा 'अभिघट्टिज्जमाणस्से'ति अभि-हन्यमानस्य वेगेन गच्छतो ये उदारा मनोज्ञा कर्णमनोनिर्वृतिकराः सर्वतः समन्तात् जीवाभिगममूलटीकायामपि 'उप्पित्थं' श्वासयुक्तमिति, तथा उत्-प्राबल्येन अतितालमस्थानतालं वा उत्तालं, श्लक्ष्णस्वरेण काकस्वरं, सानुनासिकं अनुनासिकावि-निर्गतस्वरानुगतमिति भावः, तथा 'अट्ठगुणोववेय'मिति अष्टभिर्गुणैरुपेतमष्टगुणोपेतं, ते चाष्टावमी गुणाः-पूर्णं रक्तमलङ्कृतं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

व्यक्तमविघुष्टं मधुरं समं सललितं च, तथा चोक्तम्–" पुणं रत्तं च अलंकियं च वत्तं तहेव अविघुट्ठं। महुरं समं सललियं अट्ठ गुणा होंति गेयस्स ॥१॥" तत्र यत् स्वरकलाभिः परिपूर्णं गीयते तत्पूर्णं, गेयरागानुरक्तेन यत् गीयते तत् रक्तं, अन्योऽन्यस्वरविशेषकरणेन यदलङ्कृतमिव गीयते तदलङ्कृतं, अक्षरस्वरस्फुटकरणतो व्यक्तं, विस्वरं क्रोशतीव विघुष्टं न तथा अविघुष्टं, मधुरस्वरेण गीयमानं मधुरं कोकिलारुतवत्, तालवंशस्वरादिसमनुगतं समं, तथा यत् स्वरघोलनाप्रकारेण ललतीव तत् सह ललितेन–ललनेन वर्त्तत इति सललितं, यदिवा यत् श्रोत्रेन्द्रियस्य शब्दस्य स्पर्शनमतीव सूक्ष्ममुत्पादयति सुकुमारमिव च प्रतिभासते तत् सललितं। इदानीमेतेषामेवाष्टानां मध्ये कियतो गुणान् अन्यच्च प्रतिपिपादयिषुरिदमाह–'रत्तं तिट्ठाणकरणं सुद्धं' तत् 'कुहरगुंजंतवंसतंतीतलतालल्लयगहसुसंपउत्तं महुरं समं सललियं मणोहरं मउयरिभियपयसंचारं सुरइं सुनंदिं वरचारुरूवं दिव्वं नट्टं सज्जं गेयं पगीयाण'मिति यथा प्राक् नाट्यविधौ व्याख्यातं तथा भावनीयं 'जारिसए सद्दे हवइ' प्रगीतानां-गातुमारब्धवतां यादृशः शब्दोऽतिमनोहरो भवति–स्यात्–कथंचिद्भवेदेतद्रूपस्तेषां तृणानां मणीनां च शब्दः ?, एवमुक्ते भगवानाह–गौतम ! स्यादेवंभूतः शब्दः ॥ (सू० ३१)

'तेसि णं वणसंडाण' मित्यादि, तेषां 'ण'मिति वाक्यालङ्कारे वनखण्डानां मध्ये तत्र तत्र देशे 'तत्र तत्रे' ति तस्यैव देशस्य तत्र तत्र एकदेशे 'बहूई' इति बहव्यः 'खुड्डाखुड्डियाओ' इति क्षुल्लिकाक्षुल्लिका लघवो लघवो इत्यर्थः, वाप्यश्चतुरस्राः पुक्खरिण्यो वृत्ताकारा अथवा पुष्कराणि विद्यंते यासु ताः पुष्करिण्यो दीर्घिका–ऋज्व्यो नद्यः वक्रा नद्यो गुञ्जालिकाः, बहूनि केवलकेवलानि पुष्पादकीर्णकानि सरांसि एकपङ्क्त्या व्यवस्थितानि सरःपङ्क्तिः सललितास्ता बह्व्यः सरःपङ्क्-

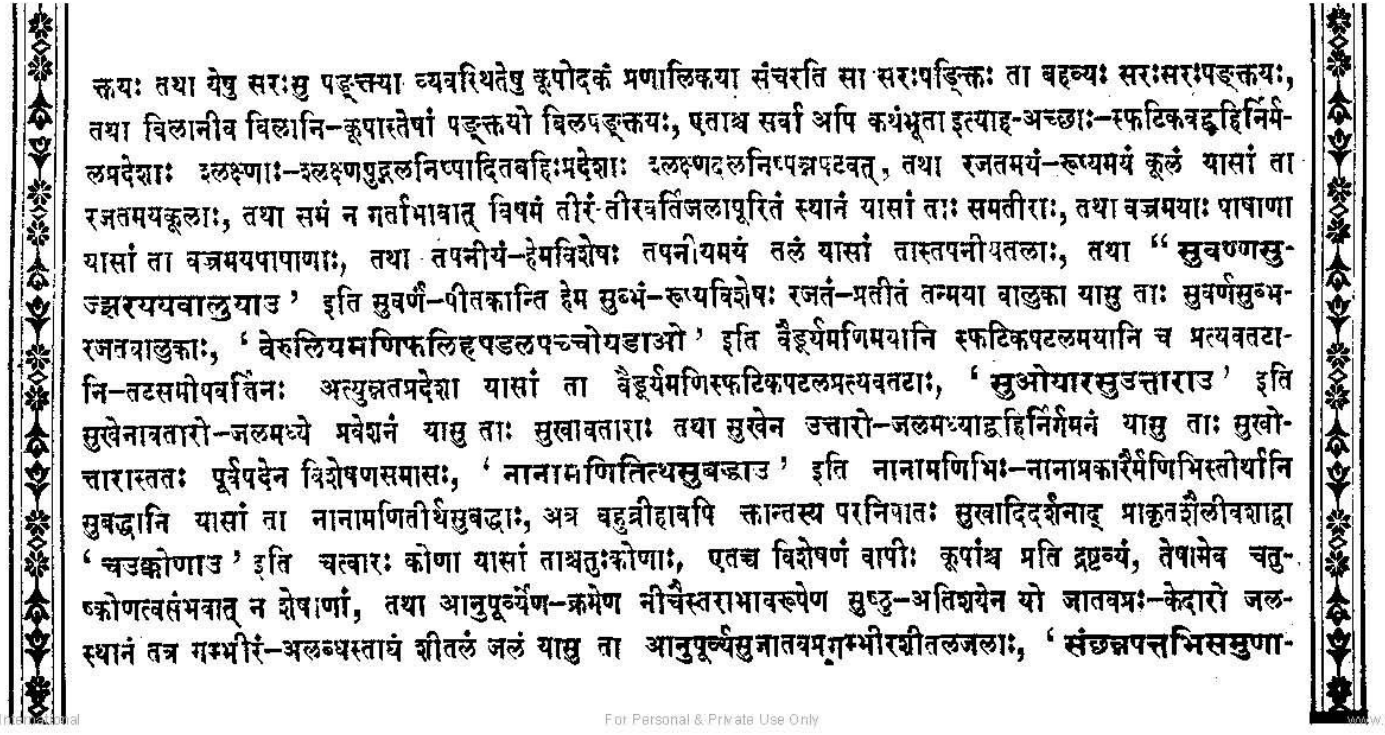
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० ३१-३२ स्थाने सू० ३० मुद्रितं

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३१-३२]

दीप अनुक्रम [३१-३२]



क्तयः तथा येषु सरःसु पङ्क्त्या व्यवस्थितेषु कूपोदकं प्रणालिकया संचरति सा सरःपङ्क्तिः ता बहव्यः सरःसरःपङ्क्तयः, तथा विलानीव विलानि–कूपास्तेषां पङ्क्तयो विलपङ्क्तयः, एताश्च सर्वा अपि कथंभूता इत्याह-अच्छाः–स्फटिकवद्बहिर्निर्मलप्रदेशाः श्लक्ष्णाः–श्लक्ष्णपुद्गलनिष्पादितबहिःप्रदेशाः श्लक्ष्णदलनिष्पन्नपटवत्, तथा रजतमयं–रूप्यमयं कूलं यासां ता रजतमयकूलाः, तथा समं न गर्ताभावात् विषमं तीरं-तीरवर्तिजलापूरितं स्थानं यासां ताः समतीराः, तथा वज्रमयाः पाषाणा यासां ता वज्रमयपाषाणाः, तथा तपनीयं–हेमविशेषः तपनीयमयं तलं यासां तास्तपनीयतलाः, तथा "**सुवण्णसुज्झरययवालुयाउ**' इति सुवर्णं–पीतकान्ति हेम सुब्भं–रूप्यविशेषः रजतं–प्रतीतं तन्मया वालुका यासु ताः सुवर्णसुब्भरजतवालुकाः, '**वेरुलियमणिफलिहपडलपच्चोयडाओ**' इति वैडूर्यमणिमयानि स्फटिकपटलमयानि च प्रत्यवततानि–तटसमीपवर्तिनः अत्युन्नतप्रदेशा यासां ता वैडूर्यमणिस्फटिकपटलप्रत्यवततटाः, '**सुओयारसुउत्ताराउ**' इति सुखेनावतारो–जलमध्ये प्रवेशनं यासु ताः सुखावतारा: तथा सुखेन उत्तारो–जलमध्याद्बहिर्निर्गमनं यासु ताः सुखोत्तारास्ततः पूर्वपदेन विशेषणसमासः, '**नानामणितित्थसुबद्धाउ**' इति नानामणिभिः–नानाप्रकारैर्मणिभिस्तीर्थानि सुबद्धानि यासां ता नानामणितीर्थसुबद्धाः, अत्र बहुव्रीहावपि क्तान्तस्य परनिपातः सुखादिदर्शनाद् प्राकृतशैलीवशाद्वा '**चउक्कोणाउ**' इति चत्वारः कोणा यासां ताश्चतुःकोणाः, एतच्च विशेषणं वापीः कूपांश्च प्रति द्रष्टव्यं, तेषामेव चतुष्कोणत्वसंभवात् न शेषाणां, तथा आनुपूर्व्येण–क्रमेण नीचैस्तराभावरूपेण सुष्ठु–अतिशयेन यो जातवप्रः–केदारो जलस्थानं तत्र गम्भीरं–अलब्धस्ताधं शीतलं जलं यासु ता आनुपूर्व्यसुजातवप्रगम्भीरशीतलजलाः, '**संछन्नपत्तभिसमुणा-**

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	सूर्याभविमानस्य वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

लाउ' इति संछन्नानि–जलेनान्तरितानि पत्रबिसमृणालानि यासु ताः संछन्नपत्रबिसमृणालाः, इह बिसमृणालसाहचर्यात् पत्राणि पद्मिनीपत्राणि द्रष्टव्यानि, बिसानि–कन्दाः मृणालानि–पद्मनालाः, तथा बहुभिरुत्पलकुमुदनलिनसुभगसौगन्धिकपुण्डरीकशतपत्रसहस्रपत्रैः केसरैः–केसरप्रधानैः फुल्लैः–विकसितैरुपचिता बहूत्पलकुमुदनलिनसुभगसौगन्धिकपुण्डरीकशतपत्रसहस्रपत्रकेसरफुल्लोपचिताः, तथा षट्पदैः भ्रमरैः परिभुज्यमानकमलाः, तथा अच्छेन–स्वरूपतः स्फटिकवत् शुद्धेन विमलेन–आगन्तुकमलरहितेन सलिलेन पूर्णा अच्छविमलसलिलपूर्णाः, तथा पडिहत्था–अतिरेकिता अतिप्रभूता इत्यर्थः 'पडिहत्थमुद्धुमायं अतिरियं जाणमाउण्ण' मिति वचनात्, उदाहरणं चात्र–'घणपडिहत्थं गयणं सराइ नवसलिलउद्धुमायाइं। अइरेइयं मह उण चिंताए मण तुहं विरहे ॥ १ ॥' इति, भ्रमन्तो मत्स्यकच्छपा यत्र ताः परिहत्यभ्रमन्मत्स्यकच्छपाः, तथा अनेकैः शकुनिमिथुनकैः प्रविचरिता–इतस्ततो गमनेन सर्वतो व्याप्ताः अनेकशकुनिमिथुनकप्रविचरितास्ततः पूर्वपदेन विशेषणसमासः, एता वाप्यादयः सरस्सरःपङ्क्तिपर्यन्ताः 'प्रत्येकं प्रत्येकं' प्रति प्रत्येकमत्राभिमुख्ये प्रतिशब्दस्ततो वीप्साविवक्षायां पश्चात्प्रत्येकशब्दस्य द्विर्वचनमिति, पद्मवरवेदिकया परिक्षिप्ताः, प्रत्येकं प्रत्येकं वनखण्डपरिक्षिप्ताः, 'अप्पेगइयाउ' इत्यादि, अपिर्बाढार्थे वाढमेककाः–काश्चन वाप्यादय आसवमिव–चन्द्रहासादिपरमासवमिव उदकं यासां ता आसवोदकाः, अप्येकका वारुणस्य-वारुणसमुद्रस्येव उदकं यासां ता वारुणोदकाः, अप्येककाः क्षीरमिव उदकं यासां ताः क्षीरोदकाः, अप्येकका घृतमिव उदकं यासां ता घृतोदकाः, अप्येककाः क्षोद इव-इक्षुरस इव उदकं यासां ताः क्षोदोदकाः, अप्येककाः स्वाभाविकेन उदकरसेन प्रज्ञप्ताः, 'पासाइया' इत्यादि विशेषणचतुष्टयं प्राग्वत्। 'तासि णं' मित्यादि, तासां क्षुल्लिकानां वापीनां यावद्वि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

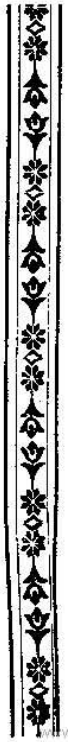
प्रत सूत्रांक [३१-३२] दीप अनुक्रम [३१-३२]	मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० ३१-३२ स्थाने सू० ३० मुद्रितं सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३१-३२]

दीप अनुक्रम [३१-३२]



लपङ्क्तीनामिति यावत्शब्दात् पुष्करिण्यादिपरिग्रहः, प्रत्येकं चतुर्दिशं चत्वारि एकैकस्यां दिशि एकैकस्य भावात् त्रिसोपान-प्रतिरूपकाणि-प्रतिविशिष्टरूपाणि त्रिसोपानानि, त्रयाणां सोपानानां समाहारस्त्रिसोपानं, तानि प्रज्ञप्तानि, तेषां च त्रिसोपानप्रतिरूपकाणामयं-वक्ष्यमाणः एतद्रूपः-अनन्तरं वक्ष्यमाणस्वरूपो वर्णकनिवेशः प्रज्ञप्तस्तद्यथा वज्ररत्नमया वंगा इत्यादि प्राग्वत्। 'तेसि णं' तेषां त्रिसोपानप्रतिरूपकाणां प्रत्येकं तोरणानि प्रज्ञप्तानि, तोरणवर्णकस्तु निरवशेषो यानविमानवद्भावनीयो यावत् बहवः सहस्रपत्रहस्तका इति, ' तासि ण 'मित्यादि, तासां क्षुल्लिकाक्षुल्लिकानां यावद् बिलपङ्क्तीनां, अत्रापि यावच्छब्दात् पुष्करिण्यादिपरिग्रहः, तत्र तत्र देशे तस्यैव देशस्य तत्र तत्र एकदेशे बहव उत्पातपर्वता यत्रागत्य बहवः सूर्याभविमानवासिनो वैमानिका देवा देव्यश्च विचित्रक्रीडानिमित्तं वैक्रियशरीरमारचयंति, ' नियइपव्वया ' इति नियत्या–नैयत्येन व्यवस्थिताः पर्वता नियतिपर्वताः, क्वचित् ' नियय्यपव्वया ' इति पाठः, तत्र नियताः–सदा भोग्यत्वेनावस्थिताः पर्वता नियतपर्वताः, यत्र सूर्याभविमानवासिनो वैमानिका देवा देव्यश्च भवधारणीयेनैव वैक्रियशरीरेण सदा रममाणा अवतिष्ठन्ते इति भावः, ' जगईपव्वया ' इति जगतीपर्वतकाः पर्वतविशेषाः, दारुपर्वतका-दारुनिर्मापिता इव पर्वतकाः, ' दगमंडवा ' इति दकमण्डपाः–स्फाटिकाः मंडपाः, उक्तं च जीवाभिगममूलटीकायां–" दगमण्डपाः–स्फाटिका मण्डपा" इति, एवं दकमञ्चकाः दकमालका दकप्रासादाः, एते च दकमण्डपादयः केचित् 'उसडा' इति उत्सृता उच्चा इत्यर्थः, केचित् 'खुड्डा खुड्ड'त्ति क्षुल्लकाः क्षुल्लका इति, तथा अन्दोलकाः पक्ष्यन्दोलकाश्च, इह यत्रागत्य मनुष्या आत्मानमन्दोलयति तेऽन्दोलका इति लोके प्रसिद्धाः, यत्र तु पक्षिण आगत्यात्मानमन्दोलयंति ते पक्ष्यन्दोलकाः, तत्र अन्दोलकाः पक्ष्यन्दोलकाश्च तेषु वनखण्डेषु तत्र २ प्रदेशे देव-



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

क्रीडायोग्या बहवः सन्ति, एते च उत्पातपर्वतादयः कथंभूता ? इत्याह–' सर्वरत्नमयाः ' सर्वात्मना रत्नमयाः, अच्छा सण्हा इत्यादि विशेषणकदम्बकं प्राग्वत्। 'तेसु ण 'मित्यादि, तेषु उत्पातपर्वतेषु यावत्पक्ष्यन्दोलकेषु, यावत्करणान्नियतिपर्वतकादिपरिग्रहः, बहूनि हंसासनादीनि आसनानि, तत्र येषामासनानामधो भागे हंसा व्यवस्थिता यथा सिंहासने सिंहाः तानि हंसासनानि, एवं क्रोञ्चासनानि गरुडासनानि च भावनीयानि, उन्नतासनानि–उच्चासनानि प्रणतासनानि–निम्नासनानि दीर्घासनानि–शय्यारूपाणि भद्रासनानि येषामधो भागे पीठिकाबन्धः पक्ष्यासनानि येषामधो भागे नानास्वरूपाः पक्षिणः, एवं मकरासनानि सिंहासनानि च भावनीयानि, पद्मासनानि–पद्माकाराणि आसनानि, 'दिसासोवत्थियासणाणि' येषामधो भागे दिक्सौवस्तिका आलिखिताः सन्ति, अत्र यथाक्रममासनानां संग्रहणिगाथा–'हंसे कोंचे गरुडे उण्णय पणए य दीह भद्दे य। पक्खे मयरे पउमे सीह दिसासोत्थि वारसमे ॥१॥' इति,तानि सर्वाण्यपि कथंभूतानीत्यत आह–'सव्वरयणामयाई'त्यादि प्राग्वत्। 'तेसि ण 'मित्यादि, तेषु वनखण्डेषु मध्ये तत्र २ प्रदेशे तस्यैव देशस्य तत्र तत्र एकदेशे बहूनि 'आलिगृहकाणि' आलिः-वनस्पतिविशेषः तन्मयानि गृहकाणि आलिगृहकाणि, मालिरपि वनस्पतिविशेषः तन्मयानि गृहकाणि मालिगृहकाणि, कदलीगृहकाणि लतागृहकाणि च प्रतीतानि, ' अच्छणघरकाणि ' इति अवस्थानगृहकाणि येषु यदा तदा वा आगत्य सुखासिकया अवतिष्ठन्ति, प्रेक्षणकगृहकाणि यत्रागत्य प्रेक्षणकानि विदधति निरीक्षन्ते च, मज्जनकगृहकाणि यत्रागत्य स्वेच्छया मज्जनकं कुर्वन्ति, ' प्रसाधनगृहकाणि ' यत्रागत्य स्वं परं च मण्डयन्ति ' गर्भगृहकाणि ' गर्भगृहाकाराणि ' मोहणघराइ'न्ति मोहनं–मैथुनसेवा ' रमियं मोहणरयाइं ' इति नाममालावचनात् तत्प्रधानानि गृहकाणि मोहनगृहकाणि, वासभव-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० ३१-३२ स्थाने सू० ३० मुद्रितं

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३१-३२]

दीप अनुक्रम [३१-३२]

नानीति भावः, शालागृहकाणि–पट्टशालाप्रधानानि, जालगृहकाणि–गवाक्षयुक्तानि गृहकाणि, कुसुमगृहकाणि–कुसुमप्रकरोपचितानि गृहकाणि, चित्रगृहकाणि–चित्रप्रधानानि गृहकाणि गन्धर्वगृहकाणि–गीतनृत्ययोग्यानि गृहकाणि आदर्शगृहकाणि–आदर्शमयानीव गृहकाणि, एतानि च कथंभूतानीत्यत आह–' सव्वरयणामया' इत्यादि विशेषणकदम्बकं प्राग्वत् । 'तेसि ण' मित्यादि, तेषु आलिगृहकेषु यावदादर्शगृहकेषु, अत्र यावत्शब्दात् मालिगृहकादिपरिग्रहः, 'बहूनि हंसासनानि' इत्यादि प्राग्वत्। ' तेसि ण ' मित्यादि, तेषु वनखण्डेषु तत्र तत्र देशे तस्यैव देशस्य तत्र तत्र एकदेशे बहवो जातिमण्डपका यूथिकामण्डपका मल्लिकामण्डपका नवमालिकामण्डपका वासंतीमण्डपका दधिवासुकामण्डपकाः, दधिवासुका–वनस्पतिविशेषस्तन्मया मण्डपका दधिवासुकामण्डपकाः, सूरुल्लिरपि वनस्पतिविशेषः तन्मया मण्डपकाः२, ताम्बूली–नागवल्ली तन्मया मण्डपकास्तांबूलीमण्डपकाः, नागो–द्रुमविशेषः, स एव लता नागलता, इह यस्य तिर्यक् तथाविधा शाखा प्रशाखा वा न प्रसृता सा लतेत्यभिधीयते नागलतामया मण्डपका नागलतामण्डपकाः, अतिमुक्तमण्डपकाः, 'अप्फोया' इति वनस्पतिविशेषस्तन्मया मण्डपका अप्फोयामण्डपकाः, मालुका–एकास्थिकफला वृक्षविशेषास्तद्युक्ता मण्डपका मालुकामण्डपकाः, एते च कथंभूता इत्याह–' सव्वरयणामया ' इत्यादि प्राग्वत्। ' तेसि ण ' मित्यादि, तेषु जातिमण्डपकेषु यावन्मालुकामण्डपकेषु जावशब्दात् यूथिकामण्डपकादिपरिग्रहः, बहवः शिलापट्टकाः प्रज्ञप्तास्तद्यथा–अप्येकका हंसासनवत् संस्थिता हंसासनसंस्थिता यावदप्येकका दिक्सौवस्तिकासनसंस्थिताः, यावत्करणात् ' अप्पेगइया हंसासणसंठिया अप्पेगइया गरुडासणसंठिया अप्पेगइया उण्णयासणसंठिया अप्पेगइया पणयासणसंठिया अप्पेगइया दीहासणसंठिया अप्पेगइया भद्दासणसंठिया अप्पेगइया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

पक्खा० अप्पे आयंसासणसंठिया अप्पेगइया उसभासणसंठिया अप्पेगइया सिहासणसंठिया अप्पेगइया पउमासणसंठिया' इति परिग्रहः, अन्ये च बहवः शिलापट्टका यानि विशिष्टचिन्हानि विशिष्टनामानि च वराणि-प्रधानानि शयनानि आसनानि च तद्वत् संस्थिता वरशयनासनविशिष्टसंस्थानसंस्थिताः, क्वचित् 'मांसलसुघट्ठविसिट्ठसंठाणसंठिया' इति पाठः, तत्रान्ये च बहवः शिलापट्टकाः मांसलाः अकठिना इत्यर्थः सुघृष्टा अतिशयेन मसृणा इतिभावः विशिष्टसंस्थानसंस्थिताश्चेति, 'आईणगरूयबूरनवणीयतूलफासमउया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा' इति प्राग्वत्, तत्र तेषु उत्पादपर्वतादिगतईसासनादिषु यावन्नानारूपसंस्थानसंस्थितपृथ्वीशिलापट्टकेषु णमिति पूर्ववत् बहवः सूर्याभविमानवासिनो देवा देव्यश्च यथासुखमासते शेरते–दीर्घकायप्रसारणेन वर्त्तन्ते न तु निद्रां कुर्वंति, तेषां देवयोनिकत्वेन निद्राया अभावात्, तिष्ठन्ति–ऊर्ध्वस्थानेन वर्त्तन्ते निषीदन्ति–उपविशंति तुयट्टंति–लम्बवर्त्तनं कुर्वन्ति, वामपार्श्वतः परावृत्य दक्षिणपार्श्वेनावतिष्ठन्ति दक्षिणपार्श्वतो वा परावृत्य वामपार्श्वेनेति भावः, रमन्ते–रतिमाबध्नन्ति ललन्ति–मनईप्सितं यथा भवति तथा वर्त्तन्त इति भावः, क्रीडन्ति–यथासुखमितस्ततो गमनविनोदेन गीतनृत्यादिविनोदेन वा तिष्ठन्ति मोहन्ति-मैथुनसेवां कुर्वन्ति इत्येवं 'पुरापोराणाण' मित्यादि पुरा-पूर्वं प्राग्भवे इति भावः कृतानां कर्मणामिति योगः, अत एव पौराणानां सुचीर्णानां-सुचरितानां, इह सुचरितजनितं कर्मापि कार्ये कारणोपचारात् सुचरितं, ततोऽयं भावार्थः–विशिष्टतथाविधधर्मानुष्ठानविषयाप्रमादकरणक्षान्त्यादिसुचरितजनितानामिति, तथा सुपराक्रान्तानां, अत्रापि कार्ये कारणोपचारात् सुपराक्रान्तिजनितानि सुपराक्रान्तानि इत्युक्तं, किमुक्तं भवति ?–सकलसत्त्वमैत्रीसत्यभाषणपरद्रव्यानपहारसुशीलादिरूपसुप-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मूल-संपादने अत्र शिर्षक-स्थाने सूत्र-क्रमांकने एका स्खलना दृश्यते–यत् सू० ३१-३२ स्थाने सू० ३० मुद्रितं

सूर्याभविमानस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३१-३२]

दीप अनुक्रम [३१-३२]

राक्रमजनितानामिति, अत एव शुभानां शुभफलानां, इह किंश्चिदशुभफलमपि इंद्रियमतिविपर्यासात् शुभफलं प्रतिभासते ततस्तात्त्विकशुभत्वप्रतिपत्त्यर्थमस्यैव पर्यायशब्दमाह–कल्याणानां, तत्त्वदृत्त्या तथाविधविशिष्टफलदायिनां, अथवा कल्याणानां अनर्थोपशमकारिणां कल्याणरूपं फलविपाकं 'पच्चणुब्भवमाणा' प्रत्येकमनुभवन्तो विहरन्ति-आसते ॥ (सू० ३२) ॥

तेसि णं वणसंडाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं२ पासायवडंसगा पण्णत्ता, ते णं पासायवडेंसगा पंचजोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसियपहसिया इव तहेव बहुसमरमणिज्जभूमिभागो उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं, तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओमट्ठितीया परिवसंति, तंजहा–असोए सत्तपण्णे चंपए चूए। सूरियाभस्स णं देवविमाणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, तंजहा–वणसंडविहूणे जाव बहवे वेमाणिया देवा देवीओ य आसयंति जाव विहरंति, तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसे एत्थ णं महेगे उवगारियालयणे पण्णत्ते, एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलस सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसं जोयणसए तिन्नि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचिविसेसूणं परिक्खेवेणं, जोयणबाहल्लेणं, सव्वजंबूणयामए अच्छे जाव पडिरूवे ॥ (सू० ३३) ॥

'तेसि णं' मित्यादि, तेषां वनखण्डानां बहुमध्यदेशभागे प्रत्येकं प्रत्येकं प्रासादावतंसका इति, अवतंसक इव-शे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	सूर्याभविमानस्य वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [३३]

दीप अनुक्रम [३३]

खरक इवावतंसकः प्रासादानामवतंसक इव प्रासादावतंसकः प्रासादविशेष इति भावः, ते च प्रासादावतंसकाः पञ्च योजनशतान्यूर्ध्वमुच्चैस्त्वेन अर्द्धतृतीयानि योजनशतानि विष्कम्भतः, तेषां च 'अब्भुग्गयमूसियपहसियाविव' इत्यादिविशेषणजातं प्राग्वत्, भूमिवर्णनं उल्लोकवर्णनं सपरिवारं च प्राग्वत्, 'तत्थ ण' मित्यादि, तत्र-तेषु वनखण्डेषु प्रत्येकमेकैकदिग्भावेन चत्वारो देवा महर्द्धिका यावत्करणात् 'महज्जुइया महाबला महासुक्खा महाणुभावा' इति परिग्रहः, पल्योपमस्थितिकाः परिवसन्ति, तद्यथा–'असोए' इत्यादि, अशोकवने अशोकः सप्तपर्णवने सप्तपर्णः चंपकवने चंपकश्चूतवने चूतः' 'ते ण' मित्यादि, ते अशोकादयो देवाः स्वकीयस्य वनखण्डस्य स्वकीयस्य प्रासादावतंसकस्य, सूत्रे बहुवचनं प्राकृतत्वात्, प्राकृते हि वचनव्यत्ययोऽपि भवतीति, स्वस्वकीयानां सामानिकदेवानां स्वासां स्वासामग्रमहिषीणां सपरिवाराणां स्वासां स्वासां परिषदां स्वेषां स्वेषामनीकानां स्वेषां स्वेषामनीकाधिपतीनां स्वेषां स्वेषामात्मरक्षाणां 'आहेवच्चं पोरेवच्चं' इत्यादि प्राग्वत्, 'सूरियाभस्स ण' मित्यादि, सूर्याभस्य विमानस्यान्तः–मध्यभागे बहुसमरमणीयो भूमिभागः प्रज्ञप्तः, तस्य 'से जहानामए आलिंगपुक्खरेइ वा' इत्यादि यानविमान इव वर्णनं तावद्वाच्यं यावन्मणीनां स्पर्शः, तस्य बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र सुपहत् एकं उपकारिकालयनं प्रज्ञप्तं, विमानाधिपतिसत्कप्रासादावतंसकादीन् उपकरोति-उपष्टम्भात्युपकारिका, विमानाधिपतिसत्कप्रासादावतंसकादीनां पीठिका, अन्यत्र स्त्रियमुपकार्योपकारिकेति प्रसिद्धा, उक्तं च-"गृहस्थानं स्मृतं राज्ञामुपकार्योपकारिके"ति, उपकारिकालयनमिव उपकारिकालयनं, तत् एकं योजनशतसहस्रमायामविष्कम्भाभ्यां त्रीणि योजनशतसहस्राणि षोडश सहस्राणि द्वे योजनशते सप्तविंशत्यधिके अष्टा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

विंशं धनुःशतं त्रयोदश अङ्गुलान्यर्द्धाङ्गुलं परिक्षेपतः, इदं च परिक्षेपप्रमाणं जबूद्वीपपरिक्षेपप्रमाणवत् क्षेत्रसमासटीकातः परिभावनीयम् ॥

से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेण य सवतो समंता संपरिक्खित्ते, सा णं पउमवरवेइया अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं पंचधणुसयाइं विक्खंभेणं उवकारियलेणसमा परिक्खेवेणं, तीसे णं पउमवरवेइयाए इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तंजहा–वयरामया णिम्मा रिट्ठामया पतिट्ठाणा वेरुलियामया खंभा सुवण्णरुप्पमया फलगा लोहियक्खमइओ सूईओ नाणामणिमया कडेवरा णाणामणिमया कडेवरसंघाडगा णाणामणिमया रूवा णाणामणिमया रूवसंघाडगा अंकामया पक्खबाहाओ जोइरसामया वंसा वंसकवेलुगा रइयामइओ पट्टियाओ जातरूवमई ओहाडणी वइरामया उवरिपुच्छणी सव्वरयणामई अच्छायणे, सा णं पउमवरवेइया एगमेगेणं हेमजालेणं गवक्खजालेणं खिखिणीजालेणं घंटाजालेणं मुत्ताजालेणं मणिजालेणं कणगजालेणं रयणजालेणं पउमजालेणं सवतो समंता संपरिक्खित्ता, ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा जाव चिट्ठंति। तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ२ देसे २ तहिं २ बहवे हयसंघाडा जाव उसभसंघाडा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा पासादीया ४ जाव वीहीतो पंतीतो भिहुणाणि लयाओ। से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति–पउमवरवेइया २ ?, गोयमा ! परमवरवेइया णं तत्थ २ देसे २ तहिं २ वेइयासु वेइयाबाहासु य वेइयफलतेसु य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्ति:

वेइयपुडंतरेसु य खंभेसु खंभबाहासु खंभसीसेसु खंभपुडंतरेसु सुयीसु सुयीमुखेसु सूईफलएसु सूई-पुडंतरेसु पक्खेसु पक्खबाहासु पक्खपेरंतेसु पक्खपुडंतरेसु बहुयाइं उप्पलाइं पउमाइं कुमुयाइं णलिणाइं सुभगाइं सोगंधियाइं पुंडरीयाइं महापुंडरीयाणि सयवत्ताइं सहस्सवत्ताइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं पडिरूवाइं महया वासिक्कयछत्तसमाणाइं पण्णत्ताइं समणाउसो!, से एएणं अट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चइ–पउमवरवेइया २। पउमवरवेइया णं भंते! किं सासया०?, गोयमा! सिय सासया सिय असासया, से केणट्ठेणं भंते! एवं वुच्चइ–सिय सासया सिय असासया?, गोयमा! दव्वट्ठयाए सासया वन्नपज्जवेहिं गंधपज्जवेहिं रसपज्जवेहिं फासपज्जवेहिं असासया, से तेणट्ठेणं गोयमा! एवं वुच्चति–सिय सासया सिय असासया। पउमवरवेइया णं भंते! कालओ केवचिरं होइ?, गोयमा! ण कयावि णासि ण कयावि णत्थि न कयावि न भविस्सइ, भुविं च हवइ य भविस्सइ य, धुवा णिइया सासया अक्खया अव्वया अवट्ठिया णिच्चा पउमवरवेइया। से णं वणसंडे देसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवालविक्खंभेणं उवयारियालेणसमे परिक्खेवेणं, वणसंडवण्णतो भाणितव्वो जाव विहरंति। तस्स णं उवयारियालेणस्स चउद्दिसिं चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता वण्णओ, तोरणा झया छत्ताइच्छत्ता, तस्स णं उवयारियालयणस्स उवरिं बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीणं फासो॥ (सू० ३४)

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तच्च एकया पद्मवरवेदिकया एकेन वनखण्डेन सर्वतः–सर्वासु दिक्षु समन्ततः–सामस्त्येन सम्यग् परिक्षिप्तं 'सा णं पउमवरवेइया' इत्यादि, सा पद्मवरवेदिका अर्द्धं योजनमूर्ध्वमुच्चैस्त्वेन पञ्च धनुःशतानि विष्कम्भतः परिक्षेपेण 'उपकारिकालयनसमाना' उपकारिकालयनपरिक्षेपपरिमाणा प्रज्ञप्ता, 'तीसे णं' मित्यादि, तस्याः–पद्मवरवेदिकाया अयमेतद्रूपो 'वर्णावासो' वर्णैः–श्लाघा यथावस्थितस्वरूपकीर्त्तनं तस्यावासो–निवासो ग्रन्थपद्धतिरूपो वर्णावासो, वर्णकनिवेश इत्यर्थः, प्रज्ञप्तो मया शेषतीर्थकरैश्च, तद्यथेत्यादिना तमेव दर्शयति, इह सूत्रपुस्तकेष्वन्यथाऽतिदेशबहुलः पाठो दृश्यते ततो मा भून्मतिसंमोह इति विनेयजनानुग्रहाय पाठ उपदर्श्यते–'वयरामया णिम्मा रिट्ठामया पइट्ठाणा वेरुलियामया खंभा सुवन्नरुप्पमया फलया लोहियक्खमईओ सूईओ वइरामया संधी नानामणिमया कडेवरा णाणामणिमया कलेवरसंघाडा नानामणिमया रूवा नानामणिमया रूवसंघाडा अंकामया पक्खा अंकामया पक्खबाहाओ जोईरसामया वंसा वंसकवेल्लुया रईयामइओ पट्टियाओ जायरूवमई ओहाडणी वयरामइ उवरिपुंछणी सव्वरयणामए अच्छायणे' एतत् सर्वं द्वारवत् भावनीयं, नवरं कलेवराणि–मनुष्यशरीराणि कलेवरसंघाटा–मनुष्यशरीरयुग्मानि रूपाणि–रूपकाणि रूपसंघाटा–रूपकयुग्मानि, 'सा णं पउमवरवेइया तत्थ२देसे एगमेगेणं हेमजालेणं एगमेगेणं गवक्खजालेणं एगमेगेणं घंटाजालेणं एगमेगेणं खिंखिणीजालेणं एगमेगेणं मुत्तजालेणं एगमेगेणं कणगजालेणं एगमेगेणं मणिजालेणं एगमेगेणं रययजालेणं एगमेगेणं सव्वरयणजालेणं एगमेगेणं पउमजालेणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता, ते णं जाला तवणिज्जलंबूसगा सुवन्नपयरमंडिया नानामणिरयणविविहहारद्धहारउवसोभियसमुद्दयरूवा इसिमन्नमन्नमसंपत्ता पुव्वावरदाहिणुत्तरागएहिं वाएहिं मंदायं मंदायमेइज्जमाणा एइज्जमाणा पलंबमाणा२ पझुंझमा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

णा पङ्क्तिमाणा ओरालेणं मणुन्नेणं मणहरेण कण्णमणणिव्वुइकरेणं सद्देणं ते पदेसे सव्वतो समंता आपूरेमाणा सिरीए उवसोभेमाणा चिट्ठंति, तीसे पउमवरवेइयाए तत्थ२ देसे तहिं२ हयसंघाडा नरसंघाडा किंनरसंघाडा किंपुरिससंघाडा महोरगसंघाडा गंधव्वसंघाडा उसभसंघाडा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एवं पंतीओवि वीहीओवि मिहुणाई, तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ२ देसे तहिं२ बहुयाओ पउमलयाओ णागलयाओ असोगलयाओ चंपगलयाओ वणलयाओ वासंतियलयाओ अइमुत्तगलयाओ कुंदलयाओ सामलयाओ निच्चं कुसुमियाओ निच्चं मउलियाओ निच्चं लवइयाओ निच्चं थवइयाओ णिच्चं गुलइयाओ निच्चं गोच्छियाओ णिच्चं जमलियाओ निच्चं जुयलियाओ निच्चं विणमियाओ निच्चं पणमियाओ निच्चं सुविभत्तपडिमंजरिवडंसगधरीओ निच्चं कुसुमियमउलियलवइयथवइयगुलइयगोच्छियजमलियजुयलियविणमियपणमियसुविभत्तपडिमंजरिवडंसगधरीओ सव्वरयणामईओ अच्छा जाव पडिरूवाओ' इति, अस्य व्याख्या–'सा' एवंस्वरूपा 'ण' मिति वाक्यालङ्कारे पद्मवरवेदिका तत्र२ प्रदेशे एकैकेन हेमजालेन–सर्वात्मना हेममयेन लम्बमानेन दामसमूहेन एकैकेन गवाक्षजालेन–गवाक्षाकृतिरत्नविशेषदामसमूहेन एकैकेन किङ्किणीजालेन, किङ्किण्यः–क्षुद्रघण्टिकाः, एकैकेन घण्टाजालेन–किङ्किण्यपेक्षया किंचिन्महत्यो घण्टा घण्टाः, तथा एकैकेन मुक्ताजालेन–मुक्ताफलमयेन दामसमूहेन एकैकेन मणिजालेन–मणिमयेन दामसमूहेन एकैकेन कनकजालेन–कनकः–पीतरूपः सुवर्णविशेषः तन्मयेन दामसमूहेन एवमेकैकेन रत्नजालेन एकैकेन पद्मजालेन सर्वरत्नमयपद्मात्मकेन दामसमूहेन सर्वतः सर्वासु दिक्षु समन्ततः–सर्वासु विदिक्षु परिक्षिप्ता–व्याप्ता, एतानि च दामसमूहरूपाणि हेमजालादीनि जालानि लम्बमानानि वेदितव्यानि, तथा चाह–' ते णं जाला ' इत्यादि, तानि सूत्रे पुंस्त्वनिर्देशः प्राकृत-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

त्वात्, प्राकृते हि लिङ्गमनियतं, णमिति वाक्यालङ्कारे, हेमजालादीनि जालानि, क्वचित् दामा इति पाठः, तत्र तावत् हेमजालादिरूपा दामान इति, ' तवणिज्जलंबूसगा ' इत्यादि हयसंघाटादिसूत्रं लतासूत्रं च प्राग्वत् । सम्प्रति पद्मवरवेदिकाशब्दप्रवृत्तिनिमित्तं जिज्ञासुः पृच्छति–' से केणट्ठेणं भंते ! ' इत्यादि, सेशब्दोऽथशब्दार्थे, केनार्थेन–केन कारणेन भदन्त ! एवमुच्यते–पद्मवरवेदिका पद्मवरवेदिकेति, किमुक्तं भवति ?-पद्मवरवेदिकेत्येवंरूपस्य शब्दस्य तत्र प्रवृत्तौ किं निमित्तमिति, एवमुक्ते भगवानाह-गौतम ! पद्मवरवेदिकायां तत्र तत्र एकदेशे तस्यैव देशस्य तत्र तत्र एकदेशे वेदिकासु–उपवेशनयोग्यमत्तवारणरूपासु वेदिकाबाहासु–वेदिकापार्श्वेषु 'वेइयपुडंतरेसु' इति द्वे वेदिके वेदिकापुटं तेषामन्तराणि–अपान्तरालानि तानि वेदिकापुटान्तराणि तेषु, तथा स्तम्भेषु सामान्यतः स्तम्भबाहासु–स्तम्भपार्श्वेषु ' खंभसीसेसु ' इति स्तम्भशीर्षेषु ' स्तम्भपुटंतरेसु ' इति द्वौ स्तम्भौ स्तम्भपुटं तेषामन्तराणि स्तम्भपुटान्तराणि तेषु, सूचीषु–फलकसंबन्धविघटनाभावहेतुपादुकास्थानीयासु तासामुपरीतितात्पर्यार्थः, ' सूईमुहेसु ' इति यत्र प्रदेशे सूची फलकं भित्त्वा मध्ये प्रविशति तत्प्रत्यासन्नो देशः सूचीमुखं तेषु, तथा सूचीफलकेषु सूचीभिः संबन्धिनो ये फलकप्रदेशास्तेऽप्युपचारात् सूचिफलकानि तेषु सूचीनामधउपरिवर्त्तमानेषु, तथा ' सूईपुडंतरेसु' इति द्वे सूच्यौ सूचीपुटं तदन्तरेषु, पक्षाः पक्षबाहा वेदिकैकदेशविशेषास्तेषु, बहूनि उत्पलानि-गर्दभकानि पद्मानि–सूर्यविकासीनि कुमुदानि–चन्द्रविकासीनि नलिनानि–ईषद्रक्तानि पद्मानि सुभगानि–पद्मविशेषरूपाणि सौगन्धिकानि–कल्हाराणि पुण्डरीकाणि–सिताम्बुजानि तान्येव महान्ति महापुण्डरीकाणि शतपत्राणि–पत्रशतकलितानि सहस्रपत्राणि–पत्रसहस्रोपेतानि, शतपत्रसहस्रपत्रे च पद्मविशेषौ पत्रसंख्याविशेषाच्च पृथगुपात्ते, एतानि सर्वरत्नमयानि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [३४]

दीप अनुक्रम [३४]

'अच्छा' इत्यादि विशेषणजातं प्राग्वत्, 'महया वासिकछत्तसमाणाइं' इति महान्ति-महाप्रमाणानि वार्षिकाणि-वर्षाकाले पानीयरक्षार्थं यानि कृतानि वार्षिकाणि तानि च तानि छत्राणि च तत्समानानि प्रज्ञप्तानि हे श्रमण! हे आयुष्मन्!, 'से एएणमट्ठेण' मित्यादि, तदेतेन अर्थेन-अन्वर्थेन गौतम! एवमुच्यते-पद्मवरवेदिकेति, तेषु तेषु यथोक्तरूपेषु प्रदेशेषु यथोक्तरूपाणि पद्मानि पद्मवरवेदिकाशब्दस्य प्रवृत्तिनिमित्तमिति भावः, व्युत्पत्तिश्चैवं-पद्मवरा-पद्मप्रधाना वेदिका पद्मवरवेदिकेति। 'पउमवरवेइया णं भंते! किं सासया' इत्यादि, पद्मवरवेदिका 'ण' मिति पूर्ववत् किं शाश्वती उताशाश्वती, आवन्तत्तया सूत्रे निर्देशः प्राकृतत्वात्, किं नित्या उतानित्येतिभावः, भगवानाह-गौतम! स्यात् शाश्वती स्यादशाश्वती, कथंचिन्नित्या कथञ्चिदनित्या इत्यर्थः, स्याच्छब्दो निपातः कथंचिदित्येतदर्थवाची, 'से केणट्ठेण' मित्यादि प्रश्नसूत्रं सुगमं, भगवानाह-गौतम! द्रव्यार्थतया-द्रव्यास्तिकनयमतेन शाश्वती, द्रव्यास्तिकनयो हि द्रव्यमेव तात्त्विकमभिमन्यते न पर्यायान्, द्रव्यं चान्वयि परिणामित्वात् अन्वयित्वाच्च सकलकालभावीति भवति द्रव्यार्थतया शाश्वती, वर्णपर्यायैस्तत्तदन्यसमुत्पद्यमानवर्णविशेषरूपैः, एवं गन्धपर्यायैः रसपर्यायैः स्पर्शपर्यायैः उपलक्षणमेतत् तत्तदन्यपुद्गलविघटनोच्चटनैश्च अशाश्वती, किमुक्तं भवति?-पर्यायास्तिकनयमतेन पर्यायप्राधान्यविवक्षायामशाश्वती, पर्यायाणां प्रतिक्षणभावितया कियत्कालभावितया विनाशित्वात्, 'से एएणट्ठेण' मित्याद्युपसंहारवाक्यं सुगमं, इह द्रव्यास्तिकनयवादी स्वमतप्रतिष्ठापनार्थमेवमाह-नात्यन्तासत उत्पादो नापि सतो नाशः 'नासतो विद्यते भावो, नाभावो विद्यते सतः' इति वचनात्, यौ तु दृश्येते प्रतिवस्तु उत्पादविनाशौ तदाविर्भावतिरोभावमात्रं, यथा सर्पस्य उत्फणत्वविफणत्वे, तस्मात्सर्वं वस्तु नित्यमिति, एवं च तन्मतचिन्तायां संशयः-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

किं घटादिवत् द्रव्यार्थतया शाश्वती उत सकलकालमेकरूपेति, ततः संशयापनोदार्थं भगवन्तं भूयः पृच्छति–'पउमवरवेइया ण' मित्यादि, पद्मवरवेदिका प्राग्वत् भदन्त ! कालतः कियच्चिरं–कियन्तं कालं यावद्भवति ?, एवंरूपा हि कियन्तं कालमवतिष्ठति इति ?, भगवानाह–गौतम ! न कदाचिन्नासीत् सर्वदैवासीदिति भावः अनादित्वात्, तथा न कदाचिन्न भवति, सर्वदैव वर्त्तमानकालचिन्तायां भवतीति भावः सदैव भावात्, तथा न कदाचिन्न भविष्यति, किंतु भविष्यच्चिन्तायां सर्वदैव भविष्यतीति प्रतिपत्तव्यं, अपर्यवसितत्वात्, तदेवं कालत्रयचिन्तायां नास्तित्वप्रतिषेधं विधाय सम्प्रत्यस्तित्वं प्रतिपादयति–'भुविं च' इत्यादि, अभूच्च भवति च भविष्यति चेति, एवं त्रिकालावस्थायित्वात् ध्रुवा मेर्वादिवत् ध्रुवत्वादेव सदैव स्वस्वरूपनियता नियतत्वादेव च शाश्वती–शश्वद्भवनस्वभावा शाश्वतत्वादेव च सततं गङ्गासिन्धुप्रवाहप्रवृत्तावपि पौण्डरीकह्रद इवानेकपुद्गलविचटनेऽपि तावन्मात्रान्यपुद्गलोच्चटनसंभवादक्षया, न विद्यते क्षयो–यथोक्तस्वरूपाकारपरिभ्रंशो यस्याः सा अक्षया, अक्षयत्वादेव अव्यया–अव्ययशब्दवाच्या मनागपि स्वरूपचलनस्य जातुचिदप्यभावात्, अव्ययत्वादेव सदैव स्वस्वप्रमाणेऽवस्थिता, मानुषोत्तराद्बहिः समुद्रवत्, एवं स्वप्रमाणे सदावस्थानेन चिन्त्यमाना नित्या धर्मास्तिकायादिवत्, 'से ण' मित्यादि, सा 'ण' मिति वाक्यालङ्कारे पद्मवरवेदिका एकेन वनखण्डेन सर्वतः समन्तात् परिक्षिप्ता, स च वनखण्डो देशोने द्वे योजने चक्रवालविष्कम्भतः उपकारिकालयनपरिक्षेपपरिमाणो, वनखण्डवर्णकः 'किण्हे किण्होभासे' इत्यादिरूपः समस्तोऽपि प्राग्वत् यावद्विहरन्ति, 'तस्स ण' मित्यादि, तस्य-उपकारिकालयनस्य 'चउद्दिसं'ति चतुर्दिशि-चतसृषु दिक्षु एकैकस्यां दिशि एकैकभावेन चत्वारि त्रिसोपानप्रतिरूपकाणि–प्रतिविशिष्टरूपकाणि त्रिसोपानानि प्रज्ञप्तानि,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [३४]

दीप अनुक्रम [३४]

त्रिसोपानवर्णको यानविमानवत् वक्तव्यः, तेषां च त्रिसोपानप्रतिरूपकाणां पुरतः प्रत्येकमेकैकं तोरणं, तोरणवर्णकोऽपि तथैव, 'तस्स ण' मित्यादि, तस्य उपकारिकालयनस्य 'बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे' इत्यादिना भूमिभागवर्णनकं यानविमानवर्णकवत्तावद्वाच्यं यावन्मणीनां स्पर्शः ॥ (सूत्र ३४)

तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महेगे पासायवडेंसए पण्णत्ते, से णं पासायवडिंसते पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसिय वण्णतो भूमिभागो उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं, अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता, से णं मूलपासायवडेंसगे अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तयद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता, ते णं पासायवडेंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पणवीसं जोयणसयं विक्खंभेणं जाव वण्णओ, ते णं पासायवडिंसया अण्णेहिं चउहिं पासायवडिंसएहिं तयद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता, ते णं पासायवडेंसया पणवीसं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसिय वण्णओ भूमिभागे उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं, अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता, ते णं पासायवडेंसगा अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तदद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता, ते णं पासायवडेंसगा बावट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेणं एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च विक्खंभेणं वण्णओ उल्लोओ

सू० ३५

॥ ८५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [३५]

दीप अनुक्रम [३५]

सीहासणं सपरिवारं पासायउवरिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिछत्ता ॥ (सू० ३५) ॥

तस्य च बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागे अत्र महानेको मूलप्रासादावतंसकः प्रज्ञप्तः, स च पञ्च योजनशतान्यूर्ध्वमुच्चैस्त्वेन अर्द्धतृतीयानि योजनशतानि विष्कम्भतः 'अब्भुग्गयमूसियपहसियाविवे'त्यादि तस्य वर्णनं मध्येभूमिभागवर्णनमुल्लोकवर्णनं द्वारबहिःस्थितप्रासादवद्भावनीयं, तस्य च मूलप्रासादावतंसकस्य बहुमध्ये देशभागेऽत्र महती एका मणिपीठिका प्रज्ञप्ता, अष्टौ योजनान्यायामविष्कम्भाभ्यां चत्वारि योजनानि बाहल्यतः सर्वात्मना मणिमयी अच्छा इत्यादि विशेषणकदम्बकं प्राग्वत् । 'तीसे णं' मित्यादि, तस्याश्च मणिपीठिकाया उपरि महदेकं सिंहासनं प्रज्ञप्तं, तस्य सिंहासनस्य वर्णनं, परिवारभूतानि शेषाणि भद्रासनानि प्राग्वदुक्तव्यानि, 'से णं' मित्यादि, स मूलप्रासादावतंसकोऽन्यैश्चतुर्भिः प्रासादावतंसकैस्तदर्द्धोच्चत्वप्रमाणैः सर्वतः समन्ततः परिक्षिप्तः, तदर्द्धोच्चत्वप्रमाणमेव दर्शयति–अर्द्धतृतीयानि योजनशतान्यूर्ध्वमुच्चैस्त्वेन, पञ्चविंशं योजनशतं विष्कम्भेन, तेषामपि 'अब्भुग्गयमूसियपहसियाविवे' त्यादि स्वरूपवर्णनं मध्यभूमिभागवर्णनमुल्लोकवर्णनं च प्राग्वत्, तेषां च प्रासादावतंसकानां बहुमध्यदेशभागे प्रत्येकं २ सिंहासनं प्रज्ञप्तं, तेषां च सिंहासनानां वर्णनं प्राग्वत्, नवरमत्र शेषाणि परिवारभूतानि भद्रासनानि वक्तव्यानि, 'ते णं पासायवडेंसया' इत्यादि, ते प्रासादावतंसका अन्यैश्चतुर्भिः प्रासादावतंसकैः 'तयद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं' तेषां मूलप्रासादावतंसकपरिवारभूतानां प्रासादावतंसकानां यदर्द्धं तदुच्चत्वप्रमाणमात्रैः–मूलप्रासादावतंसकापेक्षया चतुर्भागमात्रप्रमाणैः सर्वतः समन्तात्संपरिक्षिप्ताः, तदर्धोच्चत्वप्रमाणमेव दर्शयति–'ते णं' मित्यादि, ते प्रासादावतंसकाः पंचविंशं योजनशतमूर्ध्वमुच्चैस्त्वेन द्वाषष्टियो-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जनानि अर्द्धयोजनं च विष्कम्भतः, तेषामपि 'अब्भुग्गयमूसियपहसियाविवे'त्यादि स्वरूपवर्णनं मध्यभागे भूमिवर्णनमुल्लोकवर्णनं सिंहासनवर्णनं च सर्वं प्राग्वत्, केवलमत्रापि सिंहासनं सपरिवारं वक्तव्यं, 'ते ण' मित्यादि, ते च प्रासादावतंसका अन्यैश्चतुर्भिः प्रासादावतंसकैस्तदर्द्धोच्चत्वप्रमाणैः-अनन्तरोक्तप्रासादावतंसकार्द्धोच्चत्वप्रमाणैर्मूलप्रासादावतंसकापेक्षया(अष्ट)भागप्रमाणैः सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्ताः, तदर्द्धोच्चत्वप्रमाणमेव दर्शयति–'ते ण' मित्यादि, ते च प्रासादावतंसका द्वाषष्टियोजनानि अर्धयोजनं च ऊर्ध्वमुच्चैस्त्वेन एकत्रिंशतं योजनानि क्रोशं च विष्कम्भतः, एषामपि 'अब्भुग्गयमूसिए'त्यादि स्वरूपवर्णनं मध्यभागे भूमिवर्णनं उल्लोकवर्णनं सिंहासनवर्णनं च परिवाररहितं प्राग्वत्, 'ते ण' मित्यादि, तेऽपि प्रासादावतंसका अन्यैश्चतुर्भिः प्रासादावतंसकैस्तदर्द्धोच्चत्वप्रमाणैः-अनन्तरोक्तप्रासादावतंसकार्द्धोच्चत्वप्रमाणैर्मूलप्रासादावतंसकापेक्षया षोडशभागप्रमाणैः सर्वतः समंतात् संपरिक्षिप्ताः, तदर्धोच्चत्वप्रमाणमेव दर्शयति–एकत्रिंशद्योजनानि क्रोशं च ऊर्ध्वमुच्चैस्त्वेन पञ्चदश योजनानि अर्द्धतृतीयांश्चैव क्रोशान् विष्कम्भतः, एतेषामपि स्वरूपादिवर्णनमनन्तरोक्तं, 'ते ण' मित्यादि, तेऽपि च प्रासादावतंसका अन्यैश्चतुर्भिः प्रासादावतंसकैस्तदर्द्धोच्चत्वप्रमाणैः-अनन्तरोक्तप्रासादावतंसकार्द्धोच्चत्वप्रमाणैः सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्ताः, तदर्द्धोच्चत्वप्रमाणमेव दर्शयति–पंचदश योजनानि अर्द्धतृतीयांश्च क्रोशान् ऊर्ध्वमुच्चैस्त्वेन देशोनान्यष्टौ योजनानि विष्कम्भेन, एषामेव स्वरूपव्यावर्णनं भूमिभागवर्णनं उल्लोकवर्णनं सिंहासनवर्णनं च परिवारवर्जितं प्राग्वत् ॥ (सू० ३५)

तस्स णं मूलपासायवडेंसयस्स उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं सभा सुहम्मा पण्णत्ता, एगं जायणसयं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [३६]

दीप अनुक्रम [३६]

आयामेणं पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं बावत्तरिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अणेगखंभसयसंनिविट्ठा अब्भुग्गयसुकयवरवेइयातोरणवररइयसालिभंजिया जाव अच्छरगणसंघविप्पकिण्णा पासादीया ४, सभाए णं सुहम्माए तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता, तंजहा-पुरत्थिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं, ते णं दारा सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं तावतियं चेव पवेसेणं सेया वरकणगथूभियागा जाव वणमालाओ, तेसि णं दाराणं उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्ताइछत्ता, तेसि णं दाराणं पुरओ पत्तेयं २ मुहमंडवा पण्णत्ता, ते णं मुहमंडवा एगं जोयणसयं आयामेणं पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं वण्णओ सभाए सरिसो, तेसि णं मुहमंडवाणं तिदिसिं ततो दारा पण्णत्ता, तंजहा-पुरत्थिमेणं दाहिणेणं उत्तरेणं, ते णं दारा सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं सेया वरकणगथूभियागा जाव वणमालाओ। तेसि णं मुहमंडवाणं भूमिभागा उल्लोया, तेसि णं मुहमंडवाणं उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्ताइछत्ता। तेसि णं मुहमंडवाणं पुरतो पत्तेयं २ पेच्छाघरमंडवे पण्णत्ते, मुहमंडववत्तव्वया जाव दारा भूमिभागा उल्लोया। तेसि णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं २ वइरामए अक्खाडए पण्णत्ते, तेसि णं वयरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभागे पत्तेयं२ मणिपेढिया पण्णत्ता, ताओ णं मणिपेढियातो अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जो-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ, तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं पत्तेयं २ सीहासणे पण्णत्ते, सीहासणवण्णओ सपरिवारो, तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिछत्ता, तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ पत्तेयं २ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ, ताओ णं मणिपेढियातो सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमइओ अच्छाओ पडिरूवाओ, तेसि णं उवरिं पत्तेयं २ थूभे पण्णत्ते, ते णं थूभा सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सेया संखंककुंददगरयअमयमहियफेण-पुंजसंनिगासा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, तेसि णं थूभाणं उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिछत्ता, तेसि णं थूभाणं चउद्दिसिं पत्तेयं २ मणिपेढियातो पण्णत्ताओ, ताओ णं मणिपेढियातो अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवातो, तेसि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि जिणपडिमातो जिणुस्सेहपमाणमेत्ताओ संपलियंक-निसन्नाओ थूभाभिमुहीओ सन्निक्खित्ताओ चिट्ठंति, तंजहा–उसभा १ वद्धमाणा २ चंदाणणा ३ वारिसेणा४, तेसि णं थूभाणं पुरतो पत्तेयं २ मणिपेढियातो पण्णत्ताओ, ताओ णं मणिपेढियातो सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमईओ जाव पडिरूवातो, तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं पत्तेयं २ चेइयरुक्खे पण्णत्ते, ते णं चेइयरुक्खा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

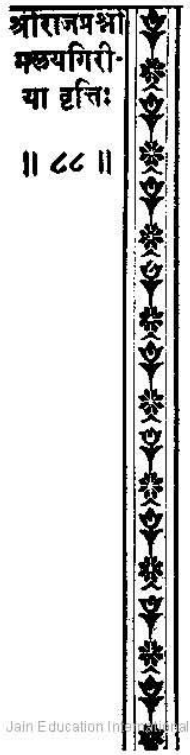
प्रत सूत्रांक [३६]

दीप अनुक्रम [३६]

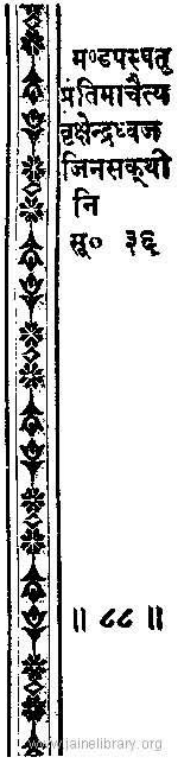
उच्चत्तेणं अट्ठ जोयणाइं उव्वेहेणं दो जोयणाइं खंधा अडजोयणं विक्खंभेणं छजोयणाइं विडिमा बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता, तेसि णं चेइयरुक्खाणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तंजहा–वयरामया मूला रययसुपइट्ठिया सुविडिमा रिट्ठामयविउला कंदा वेरुलिया रुइला खंधा सुजायवरजायरूवपढमगा विसालसाला नाणामणिमयरयणविविहसाहप्पसाहवेरुलियपत्ततवणिज्जपत्तबिंटा जंबूणयरत्तमउयसुकुमालपवालसोभिया वरंकुरग्गसिहरा विचित्तमणिरयणसुरभिकुसुमफलभरेणनमियसाला अहियं मणनयणणिव्वुइकरा अमयरससमरसफला सच्छाया सप्पभा सस्सिरीया सउज्जोया पासाईया ४, तेसि णं चेइयरुक्खाणं उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्ताइछत्ता, तेसि णं चेइयरुक्खाणं पुरतो पत्तेयं २ मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ, ताओ णं मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ, तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं पत्तेयं २ महिंदज्झया पण्णत्ता, ते णं महिंदज्झया सट्ठिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं जोयणं उव्वेहेणं जोयणं विक्खंभेणं वइरामया वट्टलट्ठसुसिलिट्ठपरिघट्ठमट्ठसुपतिट्ठिया विसिट्ठा अणेगवरपंचवण्णकुडभिसहस्सपरिमंडियाभिरामा वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागा छत्ताइच्छत्तकलिया तुंगा गयणतलमभिलंघमाणसिहरा पासादीया ४, अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिछत्ता, तेसि णं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्ति:



महिंदज्झयाणं पुरतो पत्तेयं २ नंदा पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ, ताओ णं पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयं आयामेणं पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं दस जोयणाइं उव्वेहेणं अच्छाओ जाव वण्णओ एगइयाओ उदगरसेणं पण्णत्ताओ, पत्तेयं २ पउमवरवेइयापरिक्खित्ताओ पत्तेयं २ वणसंडपरिक्खित्ताओ, तासि णं णंदाणं पुक्खरिणीणं तिदिसिं तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता, तिसोवाणपडिरूवगाणं वण्णओ, तोरणा झया छत्तातिछत्ता। सभाए णं सुहम्माए अडयालीसं मणोगुलियासाहस्सीओ पण्णत्ताओ, तंजहा–पुरच्छिमेणं सोलससाहस्सीओ पच्चच्छिमेणं सोलससाहस्सीओ दाहिणेणं अट्ठसाहस्सीओ उत्तरेणं अट्ठसाहस्सीओ, तासु णं मणोगुलियासु बहवे सुवण्णरूप्पमया फलगा पण्णत्ता, तेसु णं सुवन्नरुप्पमएसु फलगेसु बहवे वइरामया णागदंता पण्णत्ता, तेसु णं वइरामएसु णागदंतएसु किण्हसुत्तबद्धवग्घारियमल्लदामकलावा चिट्ठंति, सभाए णं सुहम्माए अडयालीसं गोमाणसियासाहस्सीओ पन्नत्ताओ, जह मणोगुलिया जाव णागदंतगा, तेसु णं णागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कगा पण्णत्ता, तेसु णं रययामएसु सिक्कगेसु बहवे वेरुलियामइओ धूवघडियाओ पण्णत्ताओ, ताओ णं धूवघडियाओ कालागुरुपवरजावचिट्ठंति, सभाए णं सुहम्माए अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीहिं उवसोभिए मणिफासो य उल्लोयओ य, तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता सोलस जोयणाइं आयामवि-



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [३६]

दीप अनुक्रम [३६]

क्खंभेणं अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमयी जाव पडिरूवा, तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं माणवए चेइयखंभे पण्णत्ते, सट्ठिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं जोयणं उव्वेहेणं जोयणं विक्खंभेणं अड-यालीसं अंसिए अडयालीसं सइकोडीए अडयालीसं सइविग्गहिए सेसं जहा महिंदज्झयस्स, माणवगस्स णं चेइयखंभस्स उवरिं बारस जोयणाइं ओगाहेत्ता हेट्ठावि बारस जोयणाइं वज्जेत्ता मज्झे वत्तीसाए जोयणेसु एत्थ णं बहवे सुवण्णरुप्पमया फलगा पण्णत्ता, तेसु णं सुवण्णरुप्पा-मएसु फलएसु बहवे वइरामया णागदंता पण्णत्ता, तेसु णं वइरामएसु नागदंतेसु बहवे रय-यामया सिक्कगा पण्णत्ता, तेसु णं रयतामएसु सिक्कएसु बहवे वइरामया गोलवट्टसमुग्गया पण्णत्ता, तेसु णं वयरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहवे जिणसकहाओ संनिक्खित्ताओ चिट्ठंति। तातो णं सूरियाभस्स देवस्स अन्नेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ जाव पज्जु-वासणिज्जातो माणवगस्स चेइयखंभस्स उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता ॥ (सू० ३६)

'तस्स ण' मित्यादि, तस्य मूलप्रासादावतंसकस्य 'उत्तरपुरच्छिमेणं' ति उत्तरपूर्वस्यामीशानकोणे इत्यर्थः, अत्र सभा सुधर्मा प्रज्ञप्ता, सुधर्मा नाम विशिष्टच्छन्दकोपेता, सा एकं योजनशतमायामतः पञ्चाशत् योजनानि विष्कम्भतः द्वासप्ततियोजनानि ऊर्ध्वमुच्चैस्त्वेन, कथंभूता सा ? इत्याह–'अणेगे' त्यादि, अनेकस्तम्भशतसन्निविष्टा 'अब्भुग्गयसुक-यवयरवेइयातोरणवररइयसालिभंजियासुसिलिट्ठविसिट्ठलट्ठसंठियपसत्थवेरुलियविमलखंभा' इति, अभ्यु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्ति:

द्रता–अतिरमणीयतया द्रष्टृणां प्रत्यभिमुखं उत्-प्राबल्येन स्थिता सुकृतेव सुकृता निपुणशिल्पिरचितेतिभावः, अभ्युद्गता चासौ सुकृता च अभ्युद्गतसुकृता वज्रवेदिका-द्वारमुण्डिकोपरि वज्ररत्नमया वेदिका तोरणं च अभ्युद्गतसुकृतं यत्र सा तथा, वराभिः–प्रधानाभिः रचिताभिः रतिदाभिर्वा शालभञ्जिकाभिः सुश्लिष्टाः-संबद्धा विशिष्टं–प्रधानं लष्टं–मनोज्ञं संस्थितं–संस्थानं येषां ते विशिष्टलष्टसंस्थिताः प्रशस्ताः–प्रशंसास्पदीभूता वैडूर्यस्तम्भा-वैडूर्यरत्नमयाः स्तम्भा यस्यां सा तथा, वररचितशालभञ्जिकासुश्लिष्टविशिष्टलष्टसंस्थितप्रशस्तवैडूर्यस्तम्भास्ततः पूर्वपदेन कर्मधारयः समासः, तथा नानामणिकनकरत्नानि खचितानि यत्र स नानामणिकनकरत्नखचितः, क्तान्तस्य परनिपातः सुखादिदर्शनात्, नानामणिकनकरत्नखचित उज्ज्वलो–निर्मलो बहुसमः–अत्यन्तसमः सुविभक्तो निचितो–निविडो रमणीयश्च भूमिभागो यस्यां सा नानामणिकनकखचितरत्नोज्ज्वलबहुसमसुविभक्त (निचित) भूमिभागा, 'ईहामियउसभतुरगनरमगरविहगवालगकिन्नररुरुसरभचमरकुंजरवणलयपउमलयभत्तिचित्ता खंभुग्गयवइरवेइयाभिरामा विज्जाहरजमलजुगलजंतजुत्तावि अच्चीसहस्समालिणीया रूवगसहस्सकलिया भिसिमीणा भिब्भिसमीणा चक्खुल्लोयणलेसा सुहफासा सस्सिरीयरूवा कंचणमणिरयणथूभियागा नानाविहपंचवण्णघंटापडागपरिमंडियग्गसिहरा धवला मरीइकवचं विणिम्मुयंती लाउल्लोइयमहिया गोसीससरससुरभिरत्तचंदणदद्दरदिन्नपंचंगुलितला उपचियचंदणकलसचंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागा आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावा पंचवण्णसरससुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलिया कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवडज्झंतमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया अच्छरगणसंघसंविकिण्णा दिव्वतुडियसद्दसंपणादिया सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा 'इति प्राग्वत्। 'सभाए ण' मित्यादि, सभायाश्च सुधर्मायास्त्रिदिशि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [३६]

दीप अनुक्रम [३६]

तिसृषु दिक्षु एकैकस्यां दिशि एकैकद्वारभावेन त्रीणि द्वाराणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा–एकं पूर्वस्यामेकं दक्षिणस्यामेकमुत्तरस्यां, तानि च द्वाराणि प्रत्येकं षोडश २ योजनान्यूर्ध्वमुच्चैस्त्वेन अष्टौ योजनानि विष्कम्भतः 'तावइयं चेवे'ति तावन्त्येवाष्टौ योजनानीतिभावः प्रवेशेन, 'सेया वरकणगथूभिया'इत्यादि प्रागुक्तद्वारवर्णनं तदेव तावद्वक्तव्यं यावद्वनमाला इति, तेषां च द्वाराणां पुरतः प्रत्येकं २ मुखमण्डपाः प्रज्ञप्ताः, ते च मुखमण्डपा एकं योजनशतमायामतः पञ्चाशत् योजनानि विष्कम्भतः सातिरेकाणि षोडश योजनानि ऊर्ध्वमुच्चैस्त्वेन, एतेषामपि 'अणेगखंभसयसंनिविट्ठा' इत्यादि वर्णनं सुधर्मसभाया इव निरवशेषं द्रष्टव्यं, तेषां च मुखमण्डपानां पुरतः प्रत्येकं २ प्रेक्षागृहमण्डपाः प्रज्ञप्ताः, ते च प्रेक्षागृहमण्डपा आयामविष्कम्भोच्चैस्त्वैः प्राग्वत् तावद्वाच्यं यावन्मणीनां स्पर्शः, तेषां च बहुरमणीयानां भूमिभागानां बहुमध्यदेशभागे प्रत्येकं २ वज्रमयोऽक्षपाटकः प्रज्ञप्तः, तेषां च वज्रमयानामक्षपाटकानां बहुमध्यदेशभागे प्रत्येकं २ मणिपीठिका अष्ट योजनान्यायामविष्कम्भाभ्यां चत्वारि योजनानि बाहल्येन–पिण्डभावेन सर्वात्मना मणिमयाः 'अच्छाओ' इत्यादि विशेषणजातं प्राग्विव। तासां च मणिपीठिकानामुपरि प्रत्येकं २ सिंहासनं प्रज्ञप्तं, तेषां च सिंहासनानां वर्णनं परिवारश्च प्राग्वद्वक्तव्यः, तेषां च प्रेक्षागृहमण्डपानामुपरि अष्टावष्टौ मङ्गलकानि बहवः कृष्णचामरध्वजा इत्यादि प्राग्वत्, तेषां प्रेक्षागृहमण्डपानां पुरतः प्रत्येकं २ मणिपीठिका प्रज्ञप्ता, ताश्च मणिपीठिकाः प्रत्येकं षोडश योजनान्यायामविष्कम्भाभ्यामष्टौ योजनानि बाहल्येन सर्वात्मना मणिमयाः 'अच्छा' इत्यादि विशेषणकदम्बकं प्राग्वत्, तासां च मणिपीठिकानामुपरि प्रत्येकं २ चैत्यस्तूपः प्रज्ञप्तः, ते च चैत्यस्तूपाः षोडश योजनान्यायामविष्कम्भाभ्यां सातिरेकाणि षोडश योजनान्यूर्ध्वमुच्चैस्त्वेन 'संखंके'त्यादि तद्वर्णनं सुगमं, तेषां च चैत्यस्तूपानामुपर्यष्टावष्टौ स्वस्तिकादीनि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

मङ्गलकानि 'जाव सहस्सपत्तहत्थया' इति-यावत्करणात् 'तेसिं चेइयथूभाणं उप्पिं बहवे किण्हचामरज्झया जाव सुकिल्लचामरज्झया अच्छा सण्हा रुप्पपट्टवइरदंडा जमलजामलगंधी सुरूवा पासाइया जाव पडिरूवा, तेसिं चेइयथूभाणं उप्पिं बहवे छत्ताइच्छत्ता पडागा घंटाजुगला उप्पलहत्थगा जाव सयसहस्सपत्तहत्थगा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा' इति, एतच्च समस्तं प्राग्वत्। 'तेसि णं' मित्यादि, तेषां चैत्यस्तूपानां प्रत्येकं २ 'चउद्दिसिं'ति चतुर्दिशि–चतसृषु दिक्षु एकैकस्यां दिशि एकैकमणिपीठिकाभावेन चतस्रो मणिपीठिकाः प्रज्ञप्ताः अष्टौ योजनान्यायामविष्कम्भाभ्यां चत्वारि योजनानि बाहल्येन सर्वात्मना मणिमया अच्छा इत्यादि प्राग्वत्, तासां च मणिपीठिकानामुपरि एकैकप्रतिमाभावेन चतस्रो जिनप्रतिमा जिनोत्सेधप्रमाणमात्राः, जिनोत्सेध उत्कर्षतः पञ्च धनुःशतानि जघन्यतः सप्त हस्ताः, इह तु पञ्च धनुःशतानि संभाव्यन्ते, 'पलियंकसंनिसन्नाउ'इति पर्यङ्कासनसन्निषण्णाः, स्तूपाभिमुख्यः संनिक्षिप्ताः, तथा जगत्स्थितिस्वाभाव्येन सम्यग्निवेशितास्तिष्ठन्ति, तद्यथा-ऋषभा वर्द्धमाना चन्द्रानना वारिषेणा इति, 'तेसि णं' मित्यादि, तेषां चैत्यस्तूपानां पुरतः प्रत्येकं २ मणिपीठिकाः प्रज्ञप्ताः, ताश्च मणिपीठिकाः षोडश योजनान्यायामविष्कम्भाभ्यामष्टौ योजनानि बाहल्यतः 'सव्वमणिमइओ' इत्यादि प्राग्वत्, तासां च मणिपीठिकानामुपरि प्रत्येकं २ चैत्यवृक्षा अष्टौ योजनान्यूर्ध्वमुच्चैस्त्वेनार्द्धयोजनमुद्वेधेन–उण्डत्वेन द्वे योजने उच्चैस्त्वेन स्कन्धः स एवार्धं योजनं विष्कम्भतया बहुमध्यदेशभागे विडिमा-ऊर्ध्वं विनिर्गता शाखा सा ऊर्ध्वमुच्चैस्त्वेन षड् योजनानि अष्टौ योजनानि विष्कम्भेन सर्वाग्रेण सातिरेकेणाष्टौ योजनानि प्रज्ञप्तास्तेषां च चैत्यवृक्षाणामयमेतद्रूपो वर्णावासः प्रज्ञप्तस्तद्यथा–'वइरामयमूला रययसुपइट्ठियविडिमा' वज्राणि–वज्रमयानि मूलानि येषां

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [३६]

दीप अनुक्रम [३६]

ते वज्रमयमूला रजते सुप्रतिष्ठिता विडिमा–बहुमध्यदेशभागे ऊर्ध्वं विनिर्गताः शाखा येषां ते रजतसुप्रतिष्ठितविडिमास्ततः पूर्वपदेन कर्मधारयः समासः, 'रिट्ठामयकंदे वेरुलियरुइलखंधे' रिष्ठमयो–रिष्टरत्नमयः कन्दो येषां ते रिष्ठमयकन्दाः, तथा वैडूर्यरत्नमयो रुचिरः स्कन्धो येषां ते तथा, ततः पूर्वपदेन कर्मधारयः, 'सुजायवरजायरूवपढमगविसालसाला' सुजातं-मूलद्रव्यशुद्धं वरं-प्रधानं यत् जातरूपं तदात्मकाः प्रथमका-मूलभूता विशालाः शाखा येषां ते सुजातवरजातरूपप्रथमकविशालशालाः 'नानामणिरयणविविहसाहप्पसाहवेरुलियपत्ततवणिज्जपत्तविंटा' इति नानामणिरत्नात्मिका विविधाः शाखाः प्रशाखा येषां ते तथा वैडूर्याणि–वैडूर्यमयानि पत्राणि येषां ते तथा तपनीयमयानि पत्रवृन्तानि येषां ते तथा, ततः पूर्ववत् पदद्वयसमीलनेन कर्मधारयः, 'जंबूणयरत्तमउयसुकुमालपवालपल्लववरंकुरधरा' जाम्बूनदा–जाम्बूनदसुवर्णविशेषमया रक्ता–रक्तवर्णा मृदवः–मनोज्ञाः सुकुमाराः-सुकुमारस्पर्शाः प्रवाला-ईषदुन्मीलितपत्रभावाः पल्लवाः–संजातपरिपूर्णप्रथमपत्रभावरूपा वराङ्कुराः–प्रथममुद्भिद्यमाना अङ्कुरास्तान् धरन्तीति जाम्बूनदरक्तमृदुसुकुमारप्रवालपल्लवाङ्कुरधराः 'विचित्तमणिरयणसुरभिकुसुमफलभरेणनमियसाला' इति विचित्रमणिरत्नमयानि यानि सुरभीनि कुसुमानि फलानि च तेषां भरेण नमिताः शालाः–शाखा येषां ते तथा, तथा सती-शोभना छाया येषां ते सच्छायाः, सती-शोभना प्रभा-कान्तिर्येषां ते सत्प्रभाः, अत एव सश्रीकाः, तथा सह उद्योतेन वर्त्तन्ते मणिरत्नानामुद्योतभावात् सोद्योताः, अधिकं नयनमनोनिर्वृतिकरा अमृतरससमरसानि फलानि येषां ते तथा, 'पासाईया' इत्यादिविशेषणचतुष्टयं प्राग्वत्। एते च चैत्यवृक्षा अन्यैर्बहुभिस्तिलकलवकच्छत्रौपगशिरीषसप्तपर्णदधिपर्णलुब्धकधवलचन्दननीपकुटजपनसतालतमालप्रियालप्रियङ्गुपारापतराजवृक्षनन्दिवृक्षैः सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्ताः, ते च तिलका

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

यावन्नन्दिवृक्षा मूलमन्तः कन्दमन्त इत्यादि सर्वमशोकप।दपवर्णनायामिव तावद्वक्तव्यं यावत् परिपूर्णं लतावर्णनं, 'तेसि ण'-मित्यादि, तेषां चैत्यवृक्षाणामुपरि अष्टावष्टौ मङ्गलकानि बहवः कृष्णचामरध्वजा इत्यादि चैत्यस्तूप इव तावद्वक्तव्यं यावद्बहवः सहस्रपत्रहस्तकाः सर्वरत्नमया यावत् प्रतिरूपका इति, 'तेसि ण' मित्यादि, तेषां च चैत्यवृक्षाणां पुरतः प्रत्येकं मणिपीठिकाः प्रज्ञप्ताः, ताश्च मणिपीठिका अष्टौ योजनान्यायामविष्कम्भाभ्यां चत्वारि योजनानि बाहल्यतः 'सव्वरयणामईओ' इत्यादि प्राग्वत्, तासां च मणिपीठिकानामुपरि प्रत्येकं महेन्द्रध्वजाः प्रज्ञप्ताः, ते च महेन्द्रध्वजाः षष्टियोजनान्यूर्ध्वमुच्चैस्त्वेन अर्द्धक्रोशं-अर्द्धगव्यूतमुद्वेधेन–उण्डत्वेन अर्द्धक्रोशं विष्कम्भतः ' वइरामयवट्टलट्ठसंठियसुसिलिट्ठपरिघट्ठमट्ठसुपइट्ठिया ' इति वज्रमया–वज्ररत्नमया तथा वृत्ता–वर्तुलं लष्टं-मनोज्ञं संस्थितं–संस्थानं येषां ते वृत्तलष्टसंस्थितास्तथा सुश्लिष्टा यथा भवन्ति एवं परिघृष्टा इव खरशाणया पाषाणप्रतिमेव सुश्लिष्टपरिघृष्टाः मृष्टाः सुकुमारशाणया पाषाणप्रतिमावत् सुप्रतिष्ठिता मनागपि चलनासंभवात्, ततो विशेषणसमासः, ' अणेगवरपंचवण्णकुडभीसहस्सपरिमंडियाभिरामा वाउद्धूयविजयवेजयंतीपडागा छत्ताइच्छत्तकलिया तुंगा गगनतलमभिलंघमाणसिहरा पासाईया जावपडिरूवा ' इति प्राग्वत्, ' तेसि ण ' मित्यादि, तेषां महेन्द्रध्वजानामुपरि अष्टावष्टौ मङ्गलकानि बहवः कृष्णचामरध्वजा इत्यादि तोरणवत् सर्वं वक्तव्यं, तेषां च महेन्द्रध्वजानां पुरतः प्रत्येकं नन्दाभिधाना पुष्करिणी प्रज्ञप्ता, एकं योजनशतमायामतः पञ्चाशत् योजनानि विष्कम्भतः द्वासप्ततियोजनान्युद्वेधेन–उण्डत्वेन, तासां च नन्दापुष्करिणीनां ' अच्छाओ सण्हाओ रययामयकूलाओ ' इत्यादि वर्णनं प्राग्वत्, ताश्च नन्दापुष्करिण्यः प्रत्येकं २ पद्मवरवेदिकया प्रत्येकं २ वनखण्डेन परिक्षिप्ताः, तासां च नन्दा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [३६]

दीप अनुक्रम [३६]

पुष्करिणीनां प्रत्येकं त्रिदिशि त्रिसोपानप्रतिरूपकतोरणवर्णनं प्रागिव । 'सभाए णं सुहम्माए' इत्यादि, सभायां सुधर्मायामष्टचत्वारिंशन्मनोगुलिकासहस्राणि–पीठिकासहस्राणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा–पूर्वस्यां दिशि षोडश मनोगुलिकासहस्राणि, षोडश सहस्राणि पूर्वतः षोडश सहस्राणि पश्चिमायामष्टौ सहस्राणि दक्षिणतोऽष्टौ सहस्राणि उत्तरतः, तेष्वपि फलकनागदन्तकमाल्यदामवर्णनं प्राग्वत्, सिक्कगवर्णनं धूपघटिकावर्णनं द्वारवत् । 'सभाए णं सुहम्माए' इत्यादि, सभायां सुधर्मायां अष्टाचत्वारिंशत् गोमानसिकाः–शय्यारूपस्थानविशेषास्तेषां सहस्राणि प्रज्ञप्तानि, तद्यथा–षोडश सहस्राणि पूर्वतः षोडश सहस्राणि पश्चिमायामष्टौ सहस्राणि दक्षिणतोऽष्टौ सहस्राणि उत्तरतः, तास्वपि फलकवर्णनं नागदन्तवर्णनं सिक्कगवर्णनं धूपघटिकावर्णनं च द्वारवत्, 'सभाए णं सुहम्माए' इत्यादिना भूमिभागवर्णनं 'सभाए णं सुहम्माए' इत्यादिना उल्लोकवर्णनं च प्राग्वत्, 'तस्स ण' मित्यादि, तस्य बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागेऽत्र महती एका मणिपीठिका प्रज्ञप्ता, षोडश योजनान्यायामविष्कम्भाभ्यां अष्टौ योजनानि बाहल्यतः सर्वरत्नमयी इत्यादि प्राग्वत्, तस्याश्च मणिपीठिकाया उपरि महानेको माणवकनामा चैत्यस्तम्भः प्रज्ञप्तः, षष्टियोजनान्यूर्ध्वमुच्चैस्त्वेन योजनमुद्वेधेन योजनं विष्कम्भेन अष्टाचत्वारिंशदस्रिकः 'अडयालीसइकोडीए अडयालीसइविग्गहिए' इत्यादि सम्प्रदायगम्यं, 'वइरामयवट्टलट्ठसंठिए' इत्यादि महेन्द्रध्वजवत् वर्णनं निरवशेषं तावद्वक्तव्यं यावत् 'सहस्सपत्तहत्थगा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा' इति, तस्य च माणवकस्य चैत्यस्तम्भस्य उपरि द्वादश योजनानि अवगाह्य, उपरितनभागात् द्वादश योजनानि वर्जयित्वेति भावः, अधस्तादपि द्वादश योजनानि वर्जयित्वा मध्ये षट्त्रिंशति योजनेषु 'बहवे सुवण्णरुप्पामया फलका' इत्यादि फलकवर्णनं नागदन्तवर्णनं सिक्कवर्णनं च

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [३६]

दीप अनुक्रम [३६]

प्राग्वत्, तेषु च रजतमयेषु सिक्ककेषु बहवो वज्रमया गोलवृत्ताः समुद्गकाः प्रज्ञप्ताः, तेषु च वज्रमयेषु समुद्गकेषु बहूनि जिनसक्थीनि सन्निक्षिप्तानि तिष्ठन्ति, यानि सूर्याभस्य देवस्य अन्येषां च बहूनां वैमानिकानां देवानां देवीनां च अर्चनीयानि चन्दनैः वन्दनीयानि स्तुत्यादिना पूजनीयानि पुष्पादिना माननीयानि बहुमानतः सत्करणीयानि वस्त्रादिना कल्याणं मङ्गलं दैवतं चैत्यमितिबुद्ध्या पर्युपासनीयानि, 'तस्स णं चेइयखंभस्स उवरि बहवे अट्ठट्ठमंगलगा' इत्यादि प्राग्वत् ॥ (सू० ३६)

तस्स माणवगस्स चेइयखंभस्स पुरच्छिमेणं एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता, अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोअणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा, तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगे सीहासण० वण्णतो सपरिवारो, तस्स णं माणवगस्स चेइयखंभस्स पच्चत्थिमेणं एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा, तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगे देवसयणिज्जे पण्णत्ते, तस्स णं देवसयणिज्जस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तंजहा--णाणामणिमया पडिपाया सोवन्निया पाया णाणामणिमयाइं पायसीसगाइं जंबूणयामयाइं गत्तगाइं णाणामणिमए विच्चे रययामया तूली तवणिज्जमया गंडोवहाणया लोहियक्खमया बिब्बोयणा, से णं सयणिज्जे उभओ बिब्बोयणं दुहतो उण्णते मज्झे णयगंभीरे सालिंगणवट्टिए गंगापुलिनवालुयाउद्दालसालिसए सुविरइयरयत्ताणे उवचियखोमदुगुल्लपट्टपडिच्छायणे रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे आईणगरूयबूरण-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

वणोयतूलफासे मउते ॥ (सू० ३७) ॥

'तस्स ण' मित्यादि, तस्य माणवकस्य चैत्यस्तम्भस्य पूर्वस्यां दिशि अत्र महत्येका मणिपीठिका प्रज्ञप्ता, सा च अष्टौ योजनान्यायामविष्कम्भाभ्यां चत्वारि योजनानि बाहल्येन 'सव्वमणिमया' इत्यादि प्राग्वत् । तस्याश्च मणिपीठिकाया उपरि अत्र महदेकं देवशयनीयं प्रज्ञप्तं, तस्य च देवशयनीयस्य अयमेतद्रूपो वर्णावासो–वर्णकनिवेशः प्रज्ञप्तः, तद्यथा–नानामणिमयाः प्रतिपादा-मूलपादानां प्रतिविशिष्टोपष्टम्भकरणाय पादाः प्रतिपादाः, सौवर्णिकाः सुवर्णमयाः पादाः-मूलपादाः, नानामणिमयानि पादशीर्षकाणि जाम्बूनदमयानि गात्राणि–ईषादीनि वज्रमया–वज्ररत्नापूरिताः सन्धयः 'नानामणिमये विचे' इति नानामणिमयं व्यूतं–विशिष्टवानं रजतमयी तूली लोहिताक्षमयानि 'बिब्बोयणा' इति उपधानकानि, आह च जीवाभिगममूलटीकाकारः–'बिब्बोयणा–उपधानकान्युच्यन्ते' इति, तपनीयमय्यो गण्डोपधानिकाः, 'से णं देवसयणिज्जे' इत्यादि, तद्देवशयनीयं सालिङ्गनवर्त्तिकं-सह आलिङ्गनवर्त्त्या–शरीरप्रमाणेनोपधानेन यत् तत्तथा, 'उभओ बिब्बोयणे' इति उभयतः-उभौ–शिरोऽन्तपादान्तावाश्रित्य बिब्बोयणे–उपधानं यत्र तत् उभयतो बिब्बोयणं 'दुहतो उन्नते' इति उभयत उन्नतं 'मज्झेणयगंभीरे' मध्ये नतं च तत् निम्नत्वात् गम्भीरं च–महत्त्वान्नतगम्भीरं गङ्गापुलिनवालुकाया अवदालो–विदलनं पादादिन्यासे अधोगमनमिति भावः तेन 'सालिसए' इति सदृशकं गङ्गापुलिनवालुकावदातसदृशकं, दृश्यते चायं प्रकारो हंसतूल्यादिष्विति, तथा 'उयविय' इति विशिष्टं परिकर्मितं क्षोमं–कार्पासिकं दुकूलं–वस्त्रं तदेव पट्टः उयवियखोमदूकूलपट्टः स प्रतिच्छदनं-आच्छादनं यस्य तत्तथा ' आईणगरूयबूरनवणीयतूलफासे ' इति प्राग्वत्, 'रत्तंसुयसंवुए' इति रक्तांशुके-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

न संवृतं रक्तांशुकसंवृतं अत एव सुरम्यं 'पासाइय' इत्यादिपदचतुष्टयं प्राग्वत् ॥ (सू० ३७) ॥

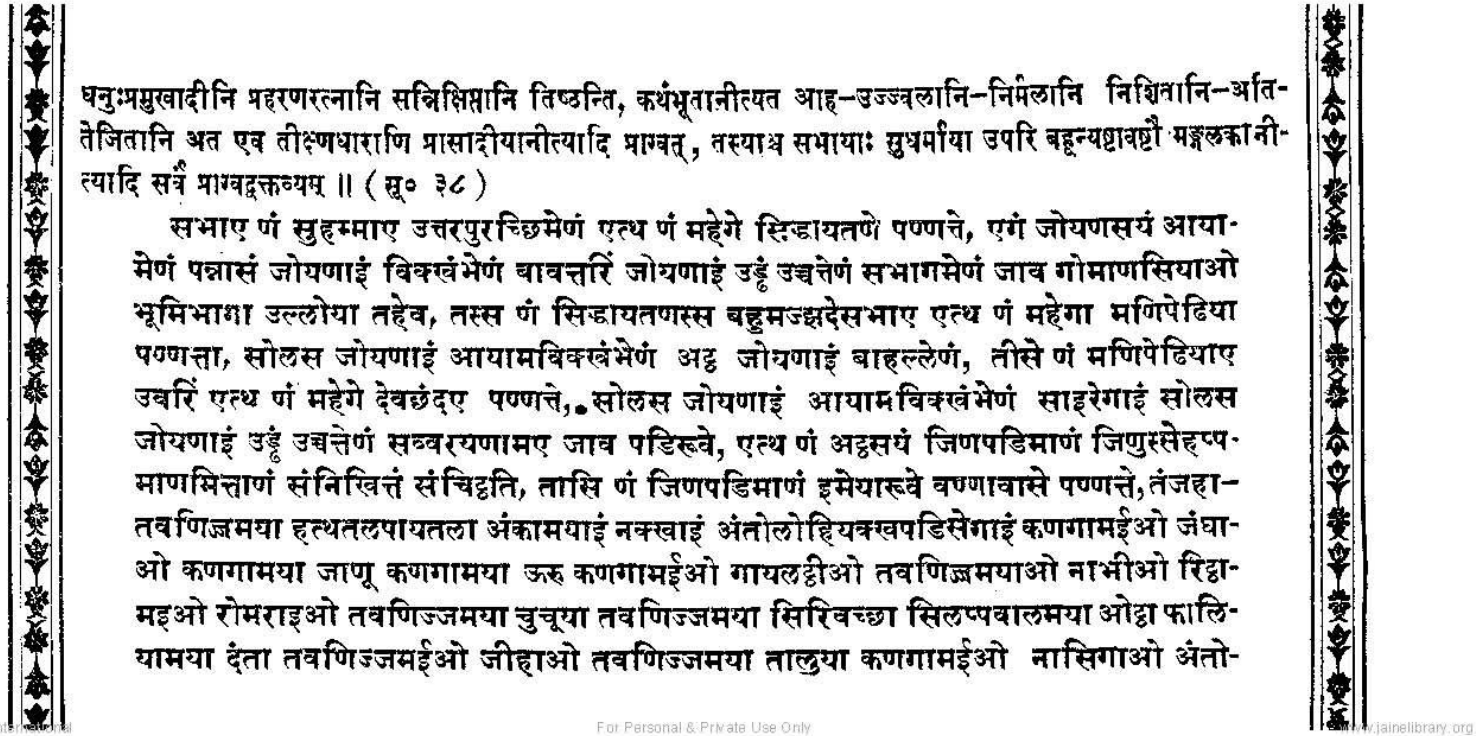
तस्स णं देवसयणिज्जस्स उत्तरपुरच्छिमेणं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता, अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोअणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमयी जाव पडिरूवा, तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगे खुड्डए महिंदज्झए पण्णत्ते, सट्ठिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं जोयणं विक्खंभेणं वइरामया वट्टलट्ठसंठियसुसिलिट्ठजावपडिरूवा, उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता, तस्स णं खुड्डागमहिंदज्झयस्स पच्चत्थिमेणं एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स चाप्पाले नाम पहरणकोसे पन्नत्ते सव्ववइरामए अच्छे जाव पडिरूवे, तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स फलिहरयणखग्गगयाधणुप्पमुहा बहवे पहरणरयणा संनिखित्ता चिट्ठंति, उज्जला निसिया सुतिक्खधारा पासादीया ४। सभाए णं सुहम्माए उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता ॥ (सू० ३८)

'तस्स ण' मित्यादि, तस्य देवशयनीयस्य उत्तरपूर्वस्यां दिशि अत्र महत्येका मणिपीठिका प्रज्ञप्ता, सा चाष्टौ योजनान्यायामविष्कम्भाभ्यां चत्वारि योजनानि बाहल्यतः 'सव्वमणिमयी' इत्यादि प्राग्वत्, तस्याश्च मणिपीठिकाया उपरि क्षुल्लको महेन्द्रध्वजः प्रज्ञप्तः, तस्य प्रमाणं वर्णकश्च महेन्द्रध्वजवद्वक्तव्यं, 'तस्स ण' मित्यादि तस्य क्षुल्लकमहेन्द्रध्वजस्य पश्चिमायामत्र सूर्याभस्य देवस्य महानेकः चोप्पालो नाम प्रहरणकोशः-प्रहरणस्थानं प्रज्ञप्तं, किंविशिष्ट ? इत्याह–' सव्ववइरामए अच्छे जावपडिरूवे ' इति प्राग्वत्, ' तत्थ ण ' मित्यादि, तत्र चोप्पालकाभिधाने प्रहरणकोशे बहूनि परिघरत्नखड्गदा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [३८]

दीप अनुक्रम [३८]



धनुःप्रमुखादीनि प्रहरणरत्नानि सन्निक्षिप्तानि तिष्ठन्ति, कथंभूतानीत्यत आह–उज्ज्वलानि–निर्मलानि निशितानि–अति-तेजितानि अत एव तीक्ष्णधाराणि प्रासादीयानीत्यादि प्राग्वत्, तस्याश्च सभायाः सुधर्मायाः उपरि बहून्यष्टावष्टौ मङ्गलकानी-त्यादि सर्वं प्राग्वद्वक्तव्यम् ॥ (सू० ३८)

सभाए णं सुहम्माए उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं महेगे सिद्धायतणे पण्णत्ते, एगं जोयणसयं आया-मेणं पन्नासं जोयणाइं विक्खंभेणं बावत्तरिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं सभागमेणं जाव गोमाणसियाओ भूमिभागा उल्लोया तहेव, तस्स णं सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता, सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं, तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगे देवच्छंदए पण्णत्ते, सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं सव्वरयणामए जाव पडिरूवे, एत्थ णं अट्ठसयं जिणपडिमाणं जिणुस्सेहप्प-माणमित्ताणं संनिखित्तं संचिट्ठति, तासि णं जिणपडिमाणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तंजहा–तवणिज्जमया हत्थतलपायतला अंकामयाइं नक्खाइं अंतोलोहियक्खपडिसेगाइं कणगामईओ जंघा-ओ कणगामया जाणू कणगामया ऊरू कणगामईओ गायलट्ठीओ तवणिज्जमयाओ नाभीओ रिट्ठा-मईओ रोमराइओ तवणिज्जमया चुचूया तवणिज्जमया सिरिवच्छा सिलप्पवालमया ओट्ठा फालि-यामया दंता तवणिज्जमईओ जीहाओ तवणिज्जमया तालुया कणगामईओ नासिगाओ अंतो-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सिध्धायतन [जिनालय] एवं शाश्वत-जिन प्रतिमायाः वर्णनं

लोहियक्खपडिसेगाओ अंकामयाणि अच्छीणि अंतोलोहियक्खपडिसेगाणि रिट्ठामईओ ताराओ रिट्ठामयाणि अच्छिपत्ताणि रिट्ठामईओ भमुहाओ कणगामया कवोला कणगामया सवणा कणगामईओ णिडालपट्टियाता वइरामईओ सीसघडीओ तवणिज्जमईओ केसंतकेसभूमीओ रिट्ठामया उवरि मुद्धया, तासि णं जिणपडिमाणं पिट्ठतो पत्तेयं २ छत्तधारगपडिमाओ पण्णत्ताओ, ताओ णं छत्तधारगपडिमाओ हिमरययकुंदेंदुप्पगासाइं सकोरेंटमल्लदामाइं धवलाइं आयवत्ताइं सलीलं धारेमाणीओ २ चिट्ठंति, तासि णं जिणपडिमाणं उभओ पासे पत्तेयं २ चामरधारपडिमाओ पण्णत्ताओ, ताओ णं चामरधारपडिमातो नानामणिकणगरयणविमलमहरिह जाव सलीलं धारेमाणीओ २ चिट्ठंति, तासि णं जिणपडिमाणं पुरतो दो दो नागपडिमातो भूयपडिमातो जक्खपडिमाओ कुंडधारपडिमाओ सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव चिट्ठंति, तासि णं जिणपडिमाणं पुरतो अट्ठसयं घंटाणं अट्ठसयं कलसाणं अट्ठसयं भिंगाराणं एवं आयंसाणं थालाणं पाईणं सुपइट्ठाणं मणोगुलियाणं वायकरगाणं चित्तगराणं रयणकरंडगाणं हयकंठाणं जाव उसभकंठाणं पुप्फचंगेरीणं जाव लोमहत्थचंगेरीणं पुप्फपडलगाणं तेल्लसमुग्गाणं जाव अंजणसमुग्गाणं अट्ठसयं धूवकडुच्छुयाणं संनिक्खित्तं चिट्ठंति, सिद्धायतणस्स णं उवरिंअट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता॥ (सू. ३९)॥

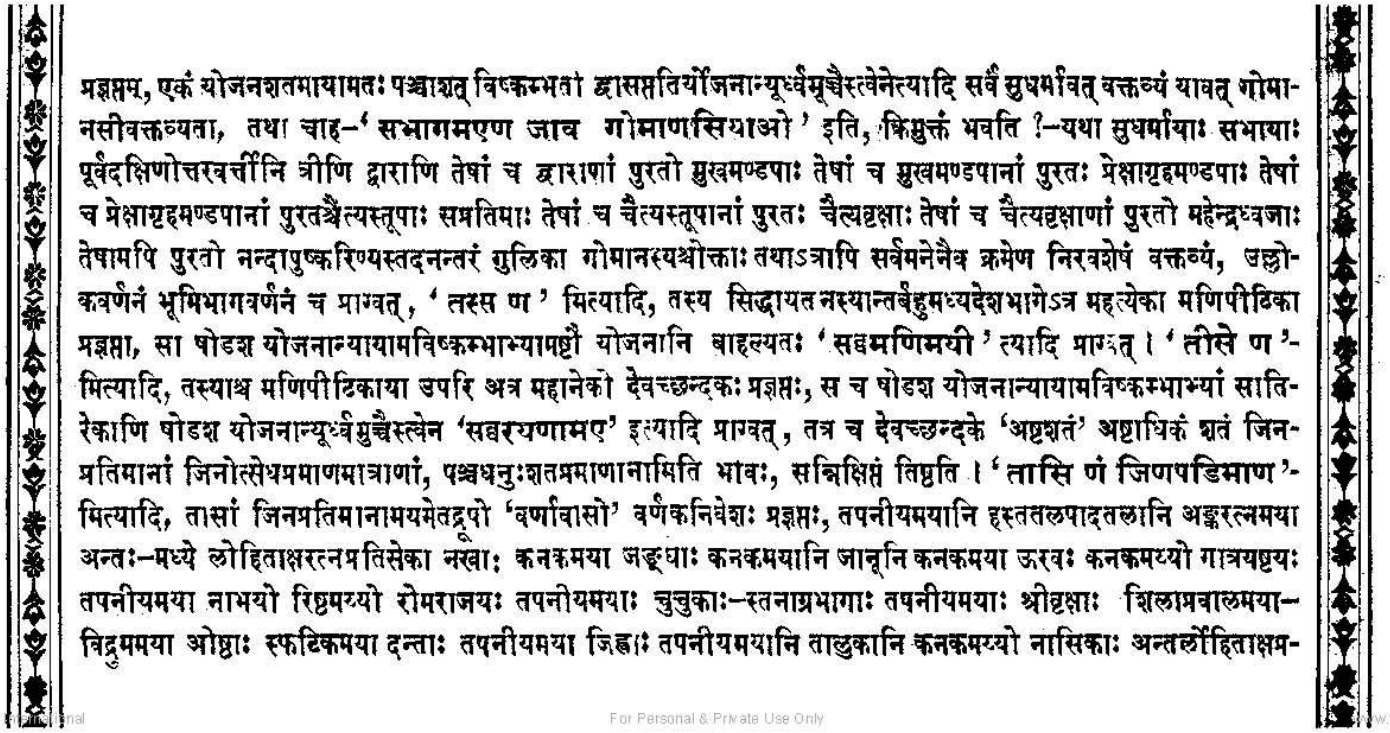
'सभाए ण' मित्यादि, सभायाः सुधर्मायाः 'उत्तरपुरच्छिमेण' मिति उत्तरपूर्वस्यां दिशि महदेकं सिद्धायतनं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सिध्धायतन [जिनालय] एवं शाश्वत-जिन प्रतिमायाः वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३९]

दीप अनुक्रम [३९]



प्रज्ञप्तम्, एकं योजनशतमायामतः पञ्चाशत् विष्कम्भतो द्वासप्ततियोजनान्यूर्ध्वमुच्चैस्त्वेनेत्यादि सर्वं सुधर्मावत् वक्तव्यं यावत् गोमानसीवक्तव्यता, तथा चाह–' सभागमएण जाव गोमाणसियाओ ' इति, किमुक्तं भवति ?–यथा सुधर्मायाः सभायाः पूर्वदक्षिणोत्तरवर्त्तीनि त्रीणि द्वाराणि तेषां च द्वाराणां पुरतो मुखमण्डपाः तेषां च मुखमण्डपानां पुरतः प्रेक्षागृहमण्डपाः तेषां च प्रेक्षागृहमण्डपानां पुरतश्चैत्यस्तूपाः सप्रतिमाः तेषां च चैत्यस्तूपानां पुरतः चैत्यवृक्षाः तेषां च चैत्यवृक्षाणां पुरतो महेन्द्रध्वजाः तेषामपि पुरतो नन्दापुष्करिण्यस्तदनन्तरं गुलिका गोमानस्यश्चोक्ताः तथाऽत्रापि सर्वमनेनैव क्रमेण निरवशेषं वक्तव्यं, उल्लोकवर्णनं भूमिभागवर्णनं च प्राग्वत्, ' तस्स णं ' मित्यादि, तस्य सिद्धायतनस्यान्तर्बहुमध्यदेशभागेऽत्र महत्येका मणिपीठिका प्रज्ञप्ता, सा षोडश योजनान्यायामविष्कम्भाभ्यामष्टौ योजनानि बाहल्यतः ' सव्वमणिमयी ' त्यादि प्राग्वत् । ' तीसे णं '-मित्यादि, तस्याश्च मणिपीठिकाया उपरि अत्र महानेको देवच्छन्दकः प्रज्ञप्तः, स च षोडश योजनान्यायामविष्कम्भाभ्यां सातिरेकाणि षोडश योजनान्यूर्ध्वमुच्चैस्त्वेन 'सव्वरयणामए' इत्यादि प्राग्वत्, तत्र च देवच्छन्दके 'अट्ठसयं' अष्टाधिकं शतं जिनप्रतिमानां जिनोत्सेधप्रमाणमात्राणां, पञ्चधनुःशतप्रमाणानामिति भावः, सन्निक्षिप्तं तिष्ठति । ' तासि णं जिणपडिमाण '-मित्यादि, तासां जिनप्रतिमानामयमेतद्रूपो 'वर्णावासो' वर्णकनिवेशः प्रज्ञप्तः, तपनीयमयानि हस्ततलपादतलानि अङ्करत्नमया अन्तः–मध्ये लोहिताक्षरत्नप्रतिसेका नखाः कनकमया जङ्घाः कनकमयानि जानूनि कनकमया ऊरवः कनकमय्यो गात्रयष्टयः तपनीयमया नाभयो रिष्टमय्यो रोमराजयः तपनीयमयाः चुचुकाः–स्तनाग्रभागाः तपनीयमयाः श्रीवृक्षाः शिलाप्रवालमया–विद्रुममया ओष्ठाः स्फटिकमया दन्ताः तपनीयमया जिह्वाः तपनीयमयानि तालुकानि कनकमय्यो नासिकाः अन्तर्लोहिताक्षम-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सिध्धायतन [जिनालय] एवं शाश्वत-जिन प्रतिमाया: वर्णनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [३९]

दीप अनुक्रम [३९]

तिसेकाः अङ्कमयान्यक्षीणि अन्तर्लोहिताक्षप्रतिरेकानि रिष्टरत्नमयानि अक्षिपत्राणि रिष्टरत्नमय्यो भ्रुवः कनकमयाः कपोलाः कनकमयाः श्रवणाः कनकमय्यो ललाटपट्टिकाः वज्रमय्यः शीर्षघटिकाः तपनीयमय्यः केशान्तकेशभूमयः, केशान्तभूमयः केशभूमयश्चेति भावः, रिष्टमया उपरि मूर्द्धजाः–केशाः, तासां जिनप्रतिमानां पृष्ठत एकैका छत्रधारप्रतिमा हिमरजतकुन्देन्दुप्रकाशं सकोरेण्टमाल्यादिधवलमातपत्रं गृहीत्वा सलीलं धरन्ती तिष्ठति, तथा तासां जिनप्रतिमानां प्रत्येकमुभयोः पार्श्वयोर्द्वे द्वे चामरधारप्रतिमे प्रज्ञप्ते, ते च 'चंदप्पभवयरवेरुलियनानामणिरयणखचियचित्तदंडाओ' इति चन्द्रप्रभः–चन्द्रकान्तो वज्रं वैडूर्यं च प्रतीतं चन्द्रप्रभवज्रवैडूर्याणि शेषाणि च नानामणिरत्नानि खचितानि येषु दण्डेषु ते तथा, एवंरूपाश्चित्रा-नानाप्रकारा दण्डा येषां तानि तथा, सूत्रे स्त्रीत्वं प्राकृतत्वात्, 'सुहुमरययदीहवालाउ' इति सूक्ष्मा रजतमया दीर्घा वाला येषां तानि तथा 'संखंककुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निकासाओ धवलाओ' इति प्रतीतं, चामराणि गृहीत्वा सलीलं वीजयन्त्यस्तिष्ठन्ति, ताश्च 'सव्वरयणामईओ अच्छाओ' इत्यादि प्राग्वत्, 'तासि ण' मित्यादि, तासां जिनप्रतिमानां पुरतो द्वे द्वे नागप्रतिमे द्वे द्वे यक्षप्रतिमे द्वे द्वे भूतप्रतिमे द्वे द्वे कुण्डधारप्रतिमे सन्निक्षिप्ते तिष्ठतः, तस्मिँश्च देवच्छन्दके तासां जिनप्रतिमानां पुरतः अष्टशतं घण्टानामष्टशतं चन्दनकलशानामष्टशतं मङ्गलकलशानामष्टशतं भृङ्गाराणामष्टशतमादर्शानामष्टशतं स्थालानामष्टशतं पात्रीणामष्टशतं सुप्रतिष्ठानामष्टशतं मनोगुलिकानां–पीठिकाविशेषाणामष्टशतं वातकरकाणामष्टशतं चित्राणां रत्नकरण्डकाणामष्टशतं हयकण्ठानामष्टशतं गजकण्ठानां अष्टशतं नरकण्ठानामष्टशतं किन्नरकण्ठानामष्टशतं किंपुरुषकण्ठानामष्टशतं महोरगकण्ठानामष्टशतं वृषभकण्ठानामष्टशतं पुष्पचङ्गेरीणामष्टशतं माल्यचङ्गेरीणां, मुकुलानि पुष्पाणि ग्रथितानि माल्यानि,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सिध्धायतन [जिनालय] एवं शाश्वत-जिन प्रतिमाया: वर्णनं

प्रत सूत्रांक [३९]

दीप अनुक्रम [३९]

अष्टशतं चूर्णचङ्गेरीणामष्टशतं गन्धचङ्गेरीणामष्टशतं वस्त्रचङ्गेरीणामष्टशतमाभरणचङ्गेरीणामष्टशतं सिद्धार्थचङ्गेरीणामष्टशतं लोमहस्तचङ्गेरीणां, अष्टशतं लोमहस्तकानां, लोमहस्तकं च मयूरपुच्छपुञ्जनिका, अष्टशतं पुष्पपटलकानामेवं माल्यचूर्णगन्धवस्त्राभरणसिद्धार्थकलोमहस्तकपटलकानामपि प्रत्येकं २ अष्टशतं वक्तव्यं, अष्टशतं सिंहासनानामष्टशतं छत्राणामष्टशतं चामराणामष्टशतं तैलसमुद्गकानामष्टशतं कोष्ठसमुद्गकानामष्टशतं पत्रसमुद्गकानामष्टशतं चोयकसमुद्गकानामष्टशतं तगरसमुद्गकानामष्टशतमेलासमुद्गकानामष्टशतं हरितालसमुद्गकानामष्टशतं हिङ्गुलकसमुद्गकानामष्टशतं मनःशिलासमुद्गकानामष्टशतमञ्जनसमुद्गकानां सर्वाण्यपि अमूनि तैलादीनि परमसुरभिगन्धोपेतानि, अष्टशतं ध्वजानाम्, अत्र सङ्ग्रहणिगाथा–" चंदणकलसा भिंगारगा य आयंसया य थाला य। पातीई सुपइट्ठा मणगुलिका वायकरगा य ॥१॥ चित्ता रयणकरंडा हयगयनरकंठगा य चंगेरी। पडलगसीहासणछत्त चामरा समुग्गक झया य ॥ २॥ अष्टशतं धूपकडुच्छुकानां संनिक्षिप्तं तिष्ठति, तस्य च सिद्धायतनस्य उपरि अष्टावष्टौ मङ्गलकानि ध्वजच्छत्रातिच्छत्रादीनि तु प्राग्वत् ॥ (सू० ३९) ॥

तस्स णं सिद्धायतणस्स उत्तरपुरच्छिमे णं एत्थ णं महेगा उववायसभा पण्णत्ता, जहा सभाए सुहम्माए तहेव जाव मणिपेढिया अट्ठजोयणाइं देवसयणिज्जं तहेव सयणिज्जवण्णओ अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता। तीसे णं उववायसभाए उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं महेगे हरए पण्णत्ते एगं जोयणसयं आयामेणं पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं दस जोयणाइं उव्वेहेणं तहेव, तस्स णं हरयस्स उत्तरपुरच्छिमे णं एत्थ णं महेगा अभिसेगसभा पण्णत्ता, सुहम्मागमएणं जाव गोमाणसियाओ मणिपेढिया

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सिध्धायतन [जिनालय] एवं शाश्वत-जिन प्रतिमायाः वर्णनं

प्रत सूत्रांक [४०]

दीप अनुक्रम [४०]

सीहासणं सपरिवारं जाव दामा चिट्ठंति, तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स बहुअभिसेयभंडे संनिक्खित्ते चिट्ठइ, अट्ठट्ठमंगलगा तहेव, तीसे णं अभिसेगसभाए उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं अलंकारियसभा पण्णत्ता, जहा सभा सुधम्मा मणिपेढिया अट्ठ जोयणाइं सीहासणं सपरिवारं, तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सुबहुअलंकारियभंडे संनिक्खित्ते चिट्ठति, सेसं तहेव, तीसे णं अलंकारियसभाए उत्तरपुरच्छिमे णं एत्थ णं महेगा ववसायसभा पण्णत्ता, जहा उववायसभा जाव सीहासणं सपरिवार मणिपेढिया अट्ठट्ठमंगलगा०, तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स एत्थ णं महेगे पोत्थयरयणे सन्निक्खित्ते चिट्ठइ, तस्स णं पोत्थयरयणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तंजहा–रयणामयाइ पत्तगाइं रिट्ठामइयो कंबिआओ तवणिज्जमए दोरे नाणामणिमए गंठी वेरुलियमए लिप्पासणे रिट्ठामए छंदणे तवणिज्जमई संकला रिट्ठामई मसी वइरामई लेहणी रिट्ठामयाइं अक्खराइं धम्मिए सत्थे, ववसायसभाए णं उवरिं अट्ठट्ठमंगलगा, तीसे णं ववसायसभाए उत्तरपुरच्छिमेणं एत्थ णं नंदापुक्खरिणी पण्णत्ता हरयसरिसा, तीसे णं णंदाए पुक्खरणीए उत्तरपुरच्छिमेणं महेगे बलिपीढे पण्णत्ते सहरयणामए अच्छेजाव पडिरूवे ॥ (सू० ४०) ॥

तस्य च सिद्धायतनस्य उत्तरपूर्वस्यामत्र महत्येका उपपातसभा प्रज्ञप्ता, तस्याश्च सुधर्मागमेन स्वरूपवर्णनपूर्वादिद्वारत्रयवर्णनमुखमण्डपप्रेक्षागृहमण्डपादिवर्णनादिप्रकाररूपेण तावद्वक्तव्यं यावदुल्लोकवर्णनं, तस्याश्च बहुसमरमणीयभूमिभागस्य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

बहुमध्यदेशभागेऽत्र महत्येका मणिपीठिका प्रज्ञप्ता, सा चाष्टौ योजनान्यायामविष्कम्भाभ्यां चत्वारि योजनानि बाहल्येन 'सर्वमणिमयी' इत्यादि प्राग्वत्, तस्याश्च मणिपीठिकाया उपरि अत्र महदेकं देवशयनीयं प्रज्ञप्तं, तस्य स्वरूपं यथा सुधर्मायां सभायां देवशयनीयस्य, तस्या अप्युपपातसभाया उपरि अष्टाष्टमङ्गलकादीनि प्राग्वत्। 'तासे ण' मित्यादि, तस्या उपपातसभाया उत्तरपूर्वस्यां दिशि महानेको ह्रदः प्रज्ञप्तः, स चैकं योजनशतमायामतः पञ्चाशत् योजनानि विष्कम्भतो दश योजनान्युद्वेधेन 'अच्छे रययामयकूले' इत्यादि नन्दापुष्करिण्या इव वर्णनं निरवशेषं वक्तव्यं, 'से ण'-मित्यादि, स ह्रद एकया पद्मवरवेदिकया एकेन च वनखण्डेन सर्वतः समन्तात् संपरिक्षिप्तः, पद्मवरवेदिकावर्णनं वनखण्डवर्णनं च प्राग्वत्, तस्य ह्रदस्य त्रिदिशि–तिसृषु दिक्षु त्रिसोपानप्रतिरूपकाणि प्रज्ञप्तानि, तेषां च त्रिसोपानप्रतिरूपकाणां तोरणानां च वर्णनं प्राग्वत्, तस्य च ह्रदस्य उत्तरपूर्वस्यां दिशि अत्र महत्येका अभिषेकसभा प्रज्ञप्ता, सा च सुधर्मसभावत् प्रमाणस्वरूपद्वारत्रयमुखमण्डपादिप्रकारेण तावद्वक्तव्या यावद् गोमानसीवक्तव्यता, तदनन्तरं तथैव उल्लोकवर्णनं भूमिभागवर्णनं च तावत् यावन्मणीनां स्पर्शः, तस्या अभिषेकसभाया बहुसमरमणीयस्य भूमिभागस्य बहुमध्यदेशभागे महत्येका मणिपीठिका प्रज्ञप्ता, साऽप्यष्टौ योजनान्यायामविष्कम्भाभ्यां चत्वारि योजनानि बाहल्यतः 'सव्वरयणामयी' इत्यादि प्राग्वत्, तस्या मणिपीठिकाया उपरि अत्र महदेकं सिंहासनं, सिंहासनवर्णकः प्राग्वत्, नवरमत्र परिवारभूतानि भद्रासनानि च वक्तव्यानि, तस्मिंश्च सिंहासने सूर्याभस्य देवस्य सुबहु अभिषेकभाण्डम्–अभिषेकयोग्य उपस्कारः सन्निक्षिप्तः तिष्ठति, 'तीसे णं अभिसेयसभाए अट्ठट्ठमंगलका' इत्यादि प्राग्वत्, तस्याश्च अभिषेकसभाया उत्तरपूर्वस्यां दिशि अत्र महत्येका अलङ्कार-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सभा प्रज्ञप्ता, सा चाभिषेकसभावत् प्रमाणस्वरूपद्वारत्रयमुखमण्डपप्रेक्षागृहमण्डपादिवर्णनप्रकारेण तावद्वक्तव्या यावद् परिवारसिंहासनं, तत्र सूर्याभस्य देवस्य अलङ्कारिकं–अलङ्कारयोग्यं भाण्डं संनिक्षिप्तमस्ति, शेषं प्राग्वत्। तस्याश्च अलङ्कारसभाया उत्तरपूर्वस्यां दिशि अत्र महत्येका व्यवसायसभा प्रज्ञप्ता, सा च अभिषेकसभावत् प्रमाणस्वरूपद्वारत्रयमुखमण्डपादिवर्णनप्रकारेण तावद्वक्तव्या यावत् सिंहासनं सपरिवारं, तत्र महदेकं पुस्तकरत्नं सन्निक्षिप्तमस्ति, तस्य च पुस्तकरत्नस्य अयमेतद्रूपो 'वर्णावासो' वर्णकनिवेशः प्रज्ञप्तः, रिष्टमय्यौ–रिष्टरत्नमय्यौ कम्बिके पृष्ठके इति भावः, रत्नमयो दवरको यत्र पत्राणि प्रोतानि सन्ति, नानामणिमयो ग्रन्थिः दवरकस्यादौ येन पत्राणि न निर्गच्छन्ति, अङ्करत्नमयानि पत्राणि, नानामणिमयं लिव्यासनं, मषीभाजनमित्यर्थः, तपनीयमयी शृङ्खला मषीभाजनसत्का, रिष्टरत्नमयं उपरितनं तस्य छादनं, रिष्टमयी–रिष्टरत्नमयी मषी, वज्रमयी लेखनी, रिष्टमयान्यक्षराणि, धार्मिकं लेख्यं, क्वचित्–'धम्मिए सत्थे' इति पाठः, तत्र धार्मिकं शास्त्रमिति व्याख्येयं, तस्याश्च उपपातसभाया उत्तरपूर्वस्यां दिशि महदेकं बलिपीठं प्रज्ञप्तं, तच्चाष्टौ योजनानि आयामविष्कम्भतः चत्वारि योजनानि बाहल्यतः सर्वरत्नमयं 'अच्छ' मित्यादि प्राग्वत्। तस्य च बलिपीठस्य उत्तरपूर्वस्यां दिशि अत्र महत्येका नन्दापुष्करिणी प्रज्ञप्ता, सा च ह्रदप्रमाणा, ह्रदस्येव च तस्या अपि त्रिसोपानवर्णनं तोरणवर्णनं च प्राग्वत् (सू. ४०)॥ तदेवं यत्र यादृग्रूपं च सूर्याभस्य देवस्य विमानं तत्र तादृग्रूपं चोपवर्णितं, सम्प्रति सूर्याभो देव उत्पन्नः सन् यदकरोत् यथा च तस्याऽभिषेकोऽभवत् तदुपदर्शयति–

तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरियाभे देवे अहुणोववण्णमित्तए चेव समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए

जिनसक्थ्यादीनां पूजा कर्तव्यता० सू० ४१

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पज्जत्तीभावं गच्छइ, तंजहा–आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणपाणपज्जत्तीए भासामणपज्जत्तीए, तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तीभावं गयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था–किं मे पुव्विं करणिज्जं ? किं मे पच्छा करणिज्जं ? किं मे पुव्विं सेयं ? किं मे पच्छा सेयं ? किं मे पुव्विंपि पच्छावि हियाए सुहाए खमाए णिस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ?, तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववन्नगा देवा सूरियाभस्स देवस्स इमेयारूवमज्झत्थियं जाव समुप्पन्नं समभिजाणित्ता जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति, सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति वद्धावित्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पियाणं सूरियाभे विमाणे सिद्धायतणंसि जिणपडिमाणं जिणुस्सेहपमाणमित्ताणं अट्ठसयं संनिखित्तं चिट्ठति, सभाए णं सुहम्माए माणवए चेइए खंभे वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहूओ जिणसकहाओ संनिखित्ताओ चिट्ठंति, ताओ णं देवाणुप्पियाणं अण्णेसिं च बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ जाव पज्जुवासणिज्जाओ, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं करणिज्जं, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पच्छा करणिज्जं तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं सेयं त एयं णं देवाणुप्पियाणं पच्छा सेयं तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पुव्विंपि पच्छावि हियाए सुहाए खमाए निस्सेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सति ॥ (सू०४१)॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

तए णं से सूरियाभे देवे तेसिं सामाणियपरिसोववन्नगाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हयहियए सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेति सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेत्ता उववायसभाओ पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं निग्गच्छइ, जेणेव हरए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता हरयं अणुपयाहिणीकरेमाणे० करेमाणे पुरच्छिमिल्लेणं तोरणेणं अणुपविसइ अणुपविसित्ता पुरच्छिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता जलावगाहं जलमज्जणं करेइ २ जलकिड्डं करेइ २ जलाभिसेयं करेइ२आयंते चोक्खे परमसुईभूए हरयाओ पच्चोत्तरइ २ जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छति तेणेव उवागच्छित्ता अभिसेयसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे०करेमाणे पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ २ जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने। तए णं सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववन्नगा देवा आभिओगिए देवे सद्दावेंति सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! सूरियाभस्स देवस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं उवट्ठवेह, तए णं ते आभिओगिआ देवा सामाणियपरिसोववन्नेहिं देवेहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठा जाव हियया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं देवो ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति,पडिसुणित्ता उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमंति,उत्तरपुरच्छिमं दिसीभागं अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं जाव दोच्चंपि वेउव्वियसमुग्घाएणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य अभिषेकस्य वर्णनं



समोहणित्ता अट्ठसहस्सं सोवण्णियाणं कलसाणं १ अट्ठसहस्सं रुप्पमयाणं कलसाणं २ अट्ठसहस्सं म-
णिमयाणं कलसाणं ३ अट्ठसहस्सं सुवण्णरुप्पमयाणं कलसाणं ४ अट्ठसहस्सं सुवण्णमणिमयाणं कल-
साणं ५ अट्ठसहस्सं रुप्पमणिमयाणं कलसाणं ६ अट्ठसहस्सं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कलसाणं ७ अट्ठस-
हस्सं भोमिज्जाणं कलसाणं ८, एवं भिंगाराणं आयंसाणं थालीणं पाईणं सुपतिट्ठाणं रयणकरंडगाणं
पुप्फचंगेरीणं जाव लोमहत्थचंगेरीणं पुप्फपडलगाणं जाव लोमहत्थपडलगाणं छत्ताणं चामराणं
तेल्लसमुग्गाणं जाव अंजणसमुग्गाणं अट्ठसहस्सं धूवकडुच्छुयाणं विउव्वंति, विउव्वित्ता ते साभाविए य
वेउव्विए य कलसे य जाव कडुच्छुए य गिण्हंति गिण्हित्ता सूरियाभाओ विमाणाओ पडिनिक्खमंति
पडिनिक्खमित्ता ताए उक्किट्ठाए चवलाए जाव तिरियमसंखेज्जाणं जाव वीतिवयमाणे वीतिवयमाणे
जेणेव खीरोदयसमुद्दे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता खीरोयगं गिण्हंति जाइं तत्थुप्पलाइं ताइं
गेण्हंति जाव सयसहस्सपत्ताइं गिण्हंति २ जेणेव पुक्खरोदए समुद्दे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता
पुक्खरोदयं गेण्हंति गिण्हित्ता जाइं तत्थुप्पलाइं सयसहस्सपत्ताइं ताइं जाव गिण्हंति गिण्हित्ता जेणेव
समयखेत्ते जेणेव भरहेरवयाइं वासाइं जेणेव मागहवरदामपभासाइं तित्थाइं तेणेव उवागच्छंति
तेणेव उवागच्छित्ता तित्थोदगं गे० गेण्हेत्ता तित्थमट्टियं गेण्हंति २ जेणेव गंगासिंधुरत्तारत्तवईओ
महानईओ तेणेव उवागच्छंति २ सलिलोदगं गेण्हंति सलिलोदगं गेण्हित्ता उभओकूलमट्टियं गेण्हंति

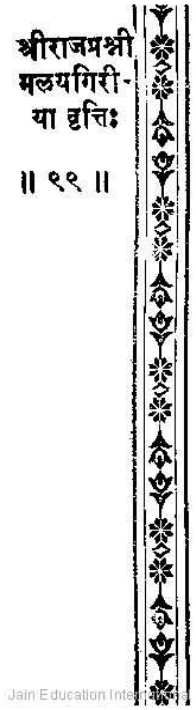


Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

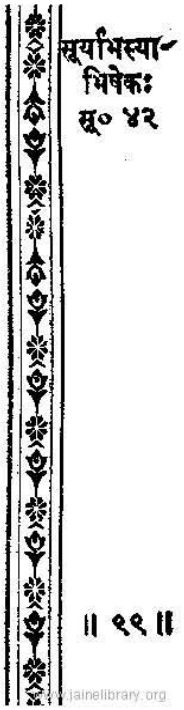
सूर्याभदेवस्य अभिषेकस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [४१-४२]

दीप अनुक्रम [४१-४२]



मट्टियं गेण्हित्ता जेणेव चुल्लहिमवंतसिहरीवासहरपव्वया तेणेव उवागच्छंति तेणेव उवागच्छित्ता दगं गेण्हंति सव्वतुयरे सव्वपुप्फे सव्वगंधे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति गिण्हित्ता जेणेव पउम-पुंडरीयदहे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता दहोदगं गेण्हंति गेण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सयसहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति गेण्हित्ता जेणेव हेमवयएरवयाइं वासाइं जेणेव रोहियरोहियंसा-सुवण्णकूलरूप्पकूलाओ महाणईओ तेणेव उवागच्छंति, सलिलोदगं गेण्हंति २ उभओकूलमट्टियं गिण्हंति २ जेणेव सद्दावतिवियडावतिपरियागा वट्टवेयड्ढपव्वया तेणेव उवागच्छन्ति उवागच्छित्ता सव्वतुयरे तहेव जेणेव महाहिमवंतरुप्पिवासहरपव्वया तेणेव उवागच्छंति तहेव जेणेव महापउम-महापुंडरीयद्दहा तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता दहोदगं गिण्हंति तहेव जेणेव हरिवासरम्म-गवासाइं जेणेव हरिकंतनारिकंताओ महाणईओ तेणेव उवागच्छंति तहेव जेणेव गंधावइमाल-वंतपरियाया वट्टवेयड्ढपव्वया तेणेव तहेव जेणेव णिसढणीलवंतवासधरपव्वया तहेव जेणेव तिगि-च्छिकेसरिद्दहाओ तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता तहेव जेणेव महाविदेहे वासे जेणेव सीता-सीतोदाओ महाणदीओ तेणेव तहेव जेणेव सव्वचक्कवट्टिविजया जेणेव सव्वमागहवरदामपभा-साइं तित्थाइं तेणेव उवागच्छंति तेणेव उवागच्छित्ता तित्थोदगं गेण्हंति गेण्हित्ता सव्वंतरणईओ जेणेव सव्वक्खारपव्वया तेणेव उवागच्छंति सव्वतुयरे तहेव जेणेव मंदरे पव्वते जेणेव भद्दसालवणे



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य अभिषेकस्य वर्णनं



तेणेव उवागच्छंति सहतुयरे सहपुप्फे सहमल्ले सहोसहिसिद्धत्थए य गेण्हंति गेण्हित्ता जेणेव णंदणवणे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सहतुयरे जाव सहोसहिसिद्धत्थए य सरसगोसीसचंदणं गिण्हंति गिण्हित्ता जेणेव सोमणसवणे तेणेव उवागच्छंति सहतुयरे जाव सहोसहिसिद्धत्थए य सरसगोसीसचंदणं च दिव्वं च सुमणदामं दद्दरमलयसुगंधिए य गंधे गिण्हंति गिण्हित्ता एगतो मिलायंति २ त्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव सोहम्मे कप्पे जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव अभिसेयसभा जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति वद्धावित्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं उवट्ठवेंति । तए णं तं सूरियाभं देवं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ अग्गमहिसीओ सपरिवारातो तिन्नि परिसाओ सत्त अणियाहिवइणो जाव अन्नेवि बहवे सूरियाभविमाणवासिणो देवा य देवीओ य तेहिं साभाविएहि य वेउव्विएहि य वरकमलपइट्ठाणेहि य सुरभिवरवारिपडिपुन्नेहिं चंदणकयचच्चिएहिं आविद्धकंठेगुणेहिं पउमुप्पलपिहाणेहिं सुकुमालकोमलकरयलपरिग्गहिएहिं अट्ठसहस्सेणं सोवन्नियाणं कलसाणं जाव अट्ठसहस्सेणं भोमिज्जाणं कलसाणं सव्वोदएहिं सव्वमट्टियाहिं सव्वतूयरेहिं जाव सव्वोसहिसिद्धत्थएहि य सव्विड्ढीए जाव वाइएणं महया २ इंदाभिसेएणं अभिसिंचंति, तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स महया२ इंदाभिसेए वट्टमाणे अप्पे-



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य अभिषेकस्य वर्णनं

गतिया देवा सूरियाभं विमाणं नचोयगं नातिमट्टियं पविरलफुसियरयरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदगं वासं वासंति,अप्पेगतिया देवा हयरयं नट्ठरयं भट्ठरयं उवसंतरयं पसंतरयं करेंति,अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं आसियसंमज्जिओवलित्तं सुइसंमट्ठरत्थंतरावणवीहियं करेंति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं मंचाइमंचकलियं करेंति, अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं णाणाविहरागोसियं झयपडागाइपडागमंडियं करेंति अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं लाउल्लोइयमहियं गोसीससरसरत्तचंदणदद्दरदिण्णपंचंगुलितलं करेंति अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं उवचियचंदणकलसं चंदणघडसुकयतोरणपडिदुवारदेसभागं करेंति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेंति अप्पेगतिया देवा सूरियाभं विमाणं पंचवण्णसुरभिमुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेंति, अप्पेगतिया देवा सूरियाभं कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामं करेंति, अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं सुगंधगंधियं गंधवट्टिभूतं करेंति अप्पेगतिया देवा हिरण्णवासं वासंति सुवण्णवासं वासंति रययवासं वासंति वइरवासं० पुप्फवासं०फलवासं०मल्लवासं०गंधवासं०चुण्णवासं०आभरणवासं वासंति अप्पेगतिया देवा हिरण्णविहिं भाएंति,एवं सुवन्नविहिं भाएंति रयणविहिं पुप्फविहि फलविहिं मल्लविहिं चुण्णविहिं वत्थविहिं गंधविहिं०,तत्थ अप्पेगतिया देवा आभरणविहि भाएंति,अप्पेगतिया चउव्विहं वाइतं वाइंति-ततं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	सूर्याभदेवस्य अभिषेकस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [४१-४२]

दीप अनुक्रम [४१-४२]



वितनं घणं झुसिरं,अप्पेगइया देवा चउव्विहं गेयं गायंति,तं०–उक्खित्तायं पायत्तायं मंदायं रोइतावसाणं,अप्पेगतिया देवा दुयं नट्टविहिं उवदंसेंति अप्पेगतिया विलंबियणट्टविहिं उवदंसेंति अप्पेगतिया देवा दुतविलंबियं नट्टविहिं उवदंसेंति, एवं अप्पेगतिया अंचियं नट्टविहिं उवदंसेंति अप्पेगतिया देवा आरभडं भसोलं आरभडभसोलं उप्पयनिचयपमत्तं संकुचियपसारियं रियारियं भंतसंभंतणामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति अप्पेगतिया देवा चउव्विहं अभिणयं अभिणयंति,तंजहा–दिट्ठंतियं पाडंतियं सामंतोवणिवाइयं लोगअंतोमज्झावसाणियं, अप्पेगतिया देवा वुक्कारेंति अप्पेगतिया देवा पीणेंति अप्पेगतियऽ वासेंति अप्पेगतिया हक्कारेंति अप्पेगतिया विणंति तडवेंति अप्पेगइया वग्गंति अप्फोडेंति अप्पेगतिया अप्फोडेंति वग्गंति अप्पे०तिवइं छिंदंति अप्पेगतिया हयहेसियं करेंति,अप्पेगतिया हत्थिगुलगुलाइयं करेंति, अप्पेगतिया रहघणघणाइयं करेंति,अप्पेगतिया हयहेसियहत्थिगुलगुलाइयरहघणघणाइयं करेंति अप्पेगतिया उच्छोलेंति अप्पेगतिया पच्छोलेंति अप्पेगतिया उक्किट्ठियं करेंतिअ०उच्छोलेंति पच्छोलेंतिउ०अप्पेगतिया तिन्निवि, अप्पेगतिया उवायंति अप्पेगतिया उववायंति अप्पेगतिया परिवयंति अप्पेगइया तिन्निवि, अप्पेगइया सीहनायंति अप्पेगतिया दद्दरयं करेंति अप्पेगतिया भूमिचवेडं दलयंति अप्पे० तिन्निवि अप्पेगतिया गज्जंति अप्पेगतिया विज्जुयायंति अप्पेगइया वासं वासंति अप्पेगतिया तिन्निवि करेंति, अप्पेगतिया जलंति अप्पेगतिया तवंति



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य अभिषेकस्य वर्णनं

अप्पेगतिया पतवेंति अप्पेगतिया तिन्निवि, अप्पेगतिया हक्कारेंति अप्पेगतिया थुक्कारेंति अप्पेगतिया धक्कारेंति, अप्पेगतिया साइं २ नामाइं साहेंति अप्पेगतिया चत्तारिवि, अप्पेगइया देवा देवसन्निवायं करेंति, अप्पेगतिया देवुज्जोयं करेंति, अप्पेगइया देवुक्कलियं करेंति, अप्पेगइया देवा कहकहगं करेंति, अप्पेगतिया देवा दुहदुहगं करति, अप्पेगतिया चेलुक्खेवं करेंति, अप्पेगइया देवसन्निवायं देवुज्जोयं देवुक्कलियं देवकहकहगं देवदुहदुहगं चेलुक्खेवं करेंतिं, अप्पेगतिया उप्पलहत्थगया जाव सयसहस्सपत्तहत्थगया अप्पेगतिया कलसहत्थगया जाव धूवकडुच्छुयहत्थगया हट्ठ तुट्ठ जाव हियया सव्वतो समंता आहावंति परिधावंति। तए णं तं सूरियाभं देवं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ जाव सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ अण्णे य बहवे सूरियाभरायहाणिवत्थव्वा देवा य देवीओ य महया महया इंदाभिसेगेणं अभिसिंचंति अभिसिंचित्ता पत्तेयं २ करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–जय २ नंदा जय २ भद्दा जय जय नंदा भद्दं ते अजियं जिणाहि जियं च पालेहि जियमज्झे वसाहि इंदो इव देवाणं चंदो इव ताराणं चमरो इव असुराणं धरणो इव नागाणं भरहो इव मणुयाणं बहूइं पलिओवमाइं बहूइं सागरोवमाइं बहूइं पविओवमसागरोवमाइं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं सूरियाभस्स विमानस्स अन्नेसिं च बहूणं सूरियाभविमाणवासीणं देवाण य देवीण य आहेवचं जाव महया २ कारे-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य अभिषेकस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [४१-४२]

दीप अनुक्रम [४१-४२]

माणे पालेमाणे विहराहित्तिकट्टु जय२ सद्दं पउंजंति। तए णं से सूरियाभे देवे महया २ इंदाभिसेगेणं अभिसित्ते समाणे अभिसेयसभाओ पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं निग्गच्छति निग्गच्छित्ता जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता अलंकारियसभं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे २ अलंकारियसभं पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति २ जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छति सीहासणवरगते पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने। तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववन्नगा अलंकारियभंडं उवट्ठवेंति, तए णं से सूरियाभे देवे तप्पढमयाए पम्हलसूमालाए सुरभीए गंधकासाइए गायाइं लूहेति लूहित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपति अणुलिंपित्ता नासानीसासवायवोज्झं चक्खुहरं वन्नफरिसजुत्तं हयलालापेलवातिरेगं धवलं कणगखचियन्तकम्मं आगासफालियसमप्पभं दिव्वं देवदूसजुयलं नियंसेति नियंसेत्ता हारं पिणद्धेति२अद्धहारं पिणद्धेइ२ एगावलिं पिणद्धेति२मुत्तावलिं पिणद्धेति २त्ता रयणावलिं पिणद्धेइ २ त्ता एवं अंगयाइं केयूराइं कडगाइं तुडियाइं कडिसुत्तगं दसमुद्दाणंतगं विकच्छसुत्तगं मुरविं पालंबं कुंडलाइं २चूडामणिं मउडं पिणद्धेइ २ गंथिमवेढिमपूरिमसंघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगंपिव अप्पाणं अलंकियविभूसियं करेइ २ दद्दरमलयसुगंधगंधिएहिं गायाइं भुक्खंडेइ दिव्वं च सुमणदामं पिणद्धेइ ॥ (सू० ४२) ॥

'तेणं कालेणं तेणं समएण' मित्यादि, तस्मिन् काले तस्मिन् समये सूर्याभो देवः सूर्याभे विमाने उपपातसभायां

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य अभिषेकस्य वर्णनं

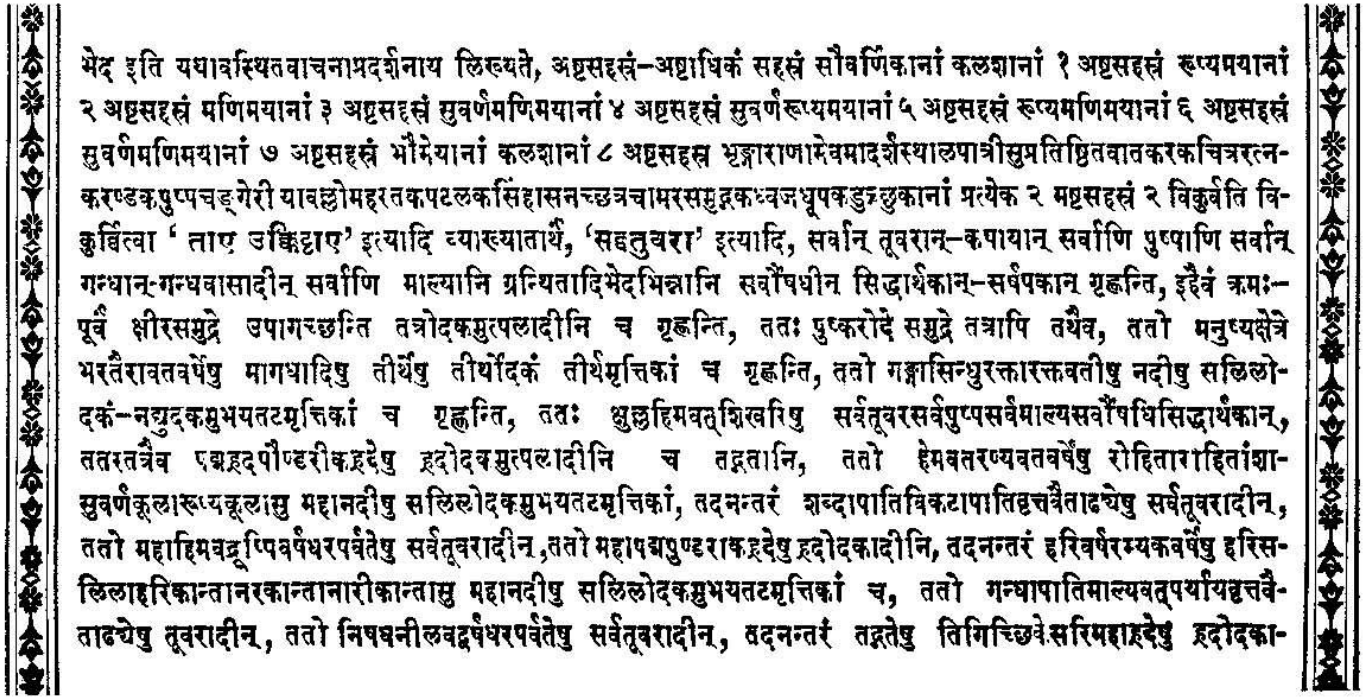
प्रत सूत्रांक [४१-४२]

दीप अनुक्रम [४१-४२]

देवशयनीये देवदूष्यान्तरे प्रथमतोऽङ्गुलासंख्येयभागमात्रयाऽवगाहनया समुत्पन्नः ' तए णं ' मित्यादि सुगमं, नवरं इह भाषामनःपर्याप्त्योः समाप्तिकालान्तरस्य प्रायः शेषपर्याप्तिसमाप्तिकालान्तरापेक्षया स्तोकत्वादेकत्वेन विवक्षणमिति 'पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तीभावं गच्छइ ' इत्युक्तं ' तए णं' मित्यादि, ततस्तस्य सूर्याभस्य देवस्य पञ्चविधया पर्याप्त्या पर्याप्तिभावमुपगतस्य सतोऽयमेतद्रूपः संकल्पः समुदपद्यत–' अब्भत्थिए ' इत्यादि पदव्याख्यानं पूर्ववत्, किं 'मे' मम पूर्वं करणीयं किं मे पश्चात्करणीयं? किं मे पूर्वं कर्त्तुं श्रेयः ? किं मे पश्चात् कर्त्तुं श्रेयः ?,तथा किं मे पूर्वमपि च पश्चादपि च हिताय भावप्रधानोऽयं निर्देशो हितत्वाय–परिणामसुन्दरतायै सुखाय–शर्मणे क्षमाय–अयमपि भावप्रधानो निर्देशः संगतत्वाय निःश्रेयसायनिश्रितकल्याणाय ऽनुगामिकतायै–परम्परशुभानुबन्धसुखाय भविष्यतीति, इह प्राक्तनो ग्रन्थः प्रायोऽपूर्वो भूयानपि च पुस्तकेषु वाचनाभेदस्ततो माऽभूत् शिष्याणां सम्मोह इति क्वापि सुगमोऽपि यथावस्थितवाचनाक्रममदर्शनार्थं लिखितः, इत ऊर्ध्वं तु प्रायः सुगमः प्रागुव्याख्यातस्वरूपश्च न च वाचनाभेदोऽप्यतिबादर इति स्वयं परिभावनीयो, विषमपदव्याख्या तु विधास्यते इति । 'तए णं **तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववन्नगा देवा इममेयारूवं**' मित्यादि 'आयंते ' इति नवानामपि श्रोतसां शुद्धोदकप्रक्षालनेन आचान्तो-गृहीताचमनश्चोक्षः स्वल्पस्यापि शङ्कितमलस्यापनयनात् अत एव परमशुचिभूतो, ' **महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं** ' मिति, महान् अर्थो–मणिकनकरत्नादिक उपयुज्यमानो यस्मिन् स महार्थः तं, तथा महान् अर्घः–पूजा यत्र स महार्घः तं, महय–उत्सवमर्हतीति महार्हस्तं, विपुलं-विस्तीर्णं शक्राभिषेकवत् इन्द्राभिषेकमुपस्थापयत ' **अट्ठसहस्सं सावण्णियाण कलसाणं विउव्वंती** ' त्यादि, अत्र भूयान् वाचना-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य अभिषेकस्य वर्णनं



भेद इति यथावस्थितवाचनाप्रदर्शनाय लिख्यते, अष्टसहस्रं–अष्टाधिकं सहस्रं सौवर्णिकानां कलशानां १ अष्टसहस्रं रूप्यमयानां २ अष्टसहस्रं मणिमयानां ३ अष्टसहस्रं सुवर्णमणिमयानां ४ अष्टसहस्रं सुवर्णरूप्यमयानां ५ अष्टसहस्रं रूप्यमणिमयानां ६ अष्टसहस्रं सुवर्णमणिमयानां ७ अष्टसहस्रं भौमेयानां कलशानां ८ अष्टसहस्र भृङ्गाराणामेवमादर्शस्थालपात्रीसुप्रतिष्ठितवातकरकचित्ररत्नकरण्डकपुष्पचङ्गेरी यावल्लोमहस्तकपटलकसिंहासनच्छत्रचामरसमुद्गकध्वजधूपकडुच्छुकानां प्रत्येक २ अष्टसहस्रं २ विकुर्वति विकुर्वित्वा 'ताए उक्किट्ठाए' इत्यादि व्याख्यातार्थं, 'सहतुवरा' इत्यादि, सर्वान् तूवरान्–कषायान् सर्वाणि पुष्पाणि सर्वान् गन्धान्-गन्धवासादीन् सर्वाणि माल्यानि ग्रन्थितादिभेदभिन्नानि सर्वौषधीन सिद्धार्थकान्–सर्षपकान् गृह्णन्ति, इहैवं क्रमः–पूर्वं क्षीरसमुद्रे उपागच्छन्ति तत्रोदकमुत्पलादीनि च गृह्णन्ति, ततः पुष्करोदे समुद्रे तत्रापि तथैव, ततो मनुष्यक्षेत्रे भरतैरावतवर्षेषु मागधादिषु तीर्थेषु तीर्थोदकं तीर्थमृत्तिकां च गृह्णन्ति, ततो गङ्गासिन्धुरक्तारक्तवतीषु नदीषु सलिलोदकं–नद्युदकमुभयतटमृत्तिकां च गृह्णन्ति, ततः क्षुल्लहिमवच्छिखरिषु सर्वतूवरसर्वपुष्पसर्वमाल्यसर्वौषधिसिद्धार्थकान्, ततस्तत्रैव पद्मद्रपौण्डरीकद्रहेषु द्रहोदकमुत्पलादीनि च तद्गतानि, ततो हैमवतैरण्यवतवर्षेषु रोहितारोहितांशासुवर्णकूलारूप्यकूलासु महानदीषु सलिलोदकमुभयतटमृत्तिकां, तदनन्तरं शब्दापातिविकटापातिवृत्तवैताढ्येषु सर्वतूवरादीन्, ततो महाहिमवद्रूप्यिवर्षधरपर्वतेषु सर्वतूवरादीन्,ततो महापद्मपुण्डराकद्रहेषु द्रहोदकादीनि, तदनन्तरं हरिवर्षरम्यकवर्षेषु हरिसलिलाहरिकान्तानरकान्तानारीकान्तासु महानदीषु सलिलोदकमुभयतटमृत्तिकां च, ततो गन्धापातिमाल्यवत्पर्यायवृत्तवैताढ्येषु तूवरादीन्, ततो निषधनीलवद्वर्षधरपर्वतेषु सर्वतूवरादीन्, तदनन्तरं तद्गतेषु तिगिच्छिकेसरिमहाद्रहेषु द्रहोदका-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य अभिषेकस्य वर्णनं

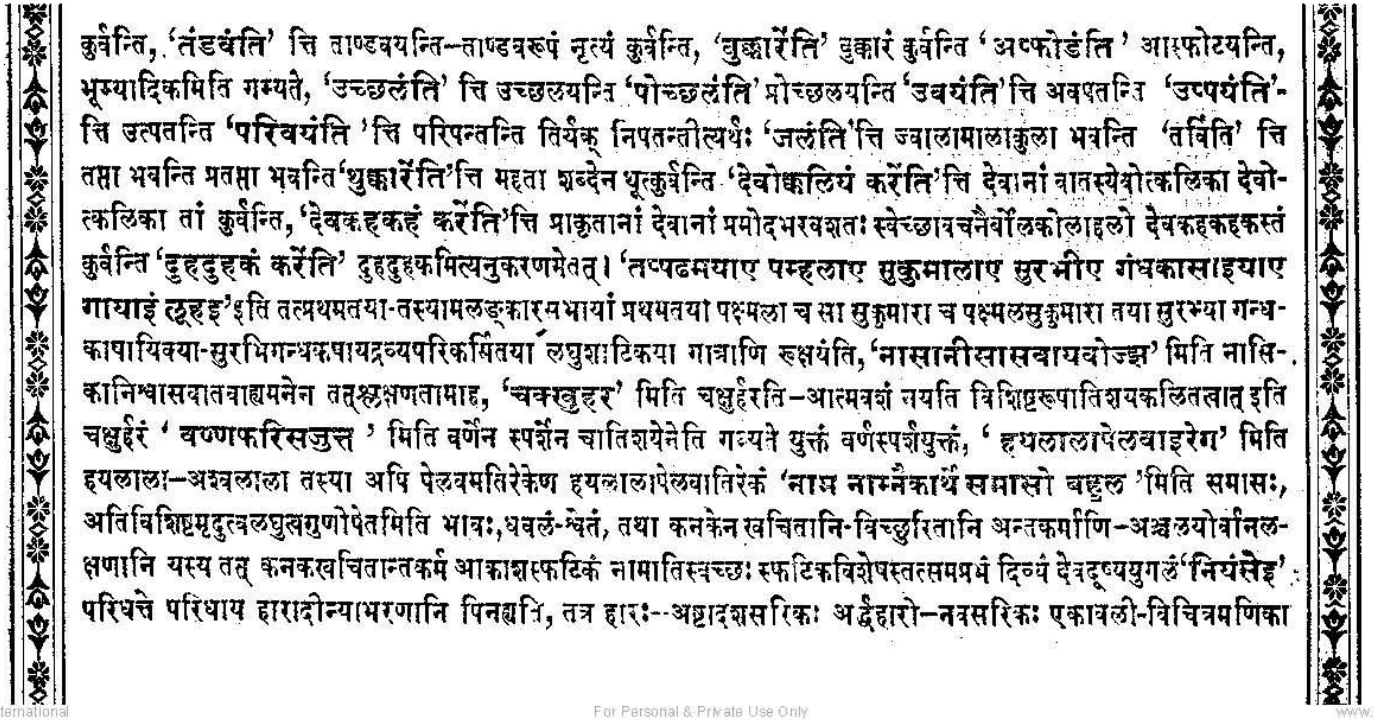
दीनि, ततः पूर्वविदेहापरविदेहेषु सीतासीतोदानदीषु सलिलोदकमुभयतटमृत्तिकां च, ततः सर्वेषु चक्रवर्त्तिविजेतव्येषु मागधादिषु तीर्थेषु तीर्थोदकं तीर्थमृत्तिकां च, तदनन्तरं वक्षस्कारपर्वतेषु सर्वतूवरादीन्, ततः सर्वासु अन्तरनदीषु सलिलोदकमुभयतटमृत्तिकां च, तदनन्तरं मन्दरपर्वते भद्रशालवने तूवरादीन्, ततो नन्दनवने तूवरादीन् सरसं च गोशीर्षचन्दनं, तदनन्तरं सौमनसवने सर्वतूवरादीन् सरसं च गोशीर्षचन्दनं दिव्यं च सुमनोदाम गृह्णन्ति, ततः पण्डकवने तूवरपुष्पगन्धमाल्यसरसगोशीर्षचन्दनदिव्यसुमनोदामानि, 'दद्दरमलए सुगंधिए य गंधे गिण्हंति' इति दर्दरः–चीवरावनद्धं कुण्डिकादिभाजनमुखं तेन गालितं तत्र एकं वा यत् मलयोद्भवतया प्रसिद्धत्वात् मलयजं–श्रीखण्डं येषु तान् सुगन्धिकान्–परमगन्धोपेतान् गन्धान् गृह्णन्ति, 'आसियसंमज्जिओवलित्तं सुइसम्मट्ठरत्थंतरावणवीहियं करेह' इति आसिक्तम्–उदकच्छटकेन सम्मार्जितं–संभाव्यमानकचवरशोधनेन उपलिप्तमिव गोमयादिना उपलिप्तं तथा सिक्तानि जलेनात एव शुचीनि–पवित्राणि संमृष्टाभि-कचवरापनयनेन रथ्यान्तराणि आपणवीथय इव-हट्टमार्गा इवापणवीथयो-रथ्याविशेषा यस्मिन् तत्तथा कुर्वन्ति, 'अप्पेगइया देवा हिरण्णविहिं भाएंति' अप्येकका:–केचन देवा हिरण्यविधिं-हिरण्यरूपं मङ्गलभूतं प्रकारं भाजयन्ति–विश्राणयन्ति, शेषदेवेभ्यो ददतीति भावः, एवं सुवर्णरत्नपुष्पफलमाल्यगन्धचूर्णाभरणविधिभाजनमपि भावनीयम्। 'उप्पायनिवये'त्यादि, उत्पातपूर्वो निपातो यस्मिन् स उत्पातनिपातस्तं, एवं निपातोत्पातं संकुचितप्रसारितं 'रियारिय' मिति गमनागमनं भ्रान्तसंभ्रान्तनामं आरभटसोलं दिव्यं नाट्यविधिमुपदर्शयंति, अप्येकका देवा 'वुक्कारेंति' वुक्काशब्दं कुर्वन्ति, 'पीणंति' पीनयन्ति–पीनमात्मानं कुर्वन्ति स्थूला भवंतीत्यर्थः, 'लासंति' लासयन्ति लास्यरूपं नृत्यं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

सूर्याभदेवस्य अभिषेकस्य वर्णनं

प्रत सूत्रांक [४१-४२]

दीप अनुक्रम [४१-४२]



कुर्वन्ति, 'तंडवंति' त्ति ताण्डवयन्ति–ताण्डवरूपं नृत्यं कुर्वन्ति, 'वुक्कारेंति' वुक्कारं कुर्वन्ति 'अप्फोडंति' आस्फोटयन्ति, भूम्यादिकमिति गम्यते, 'उच्छलंति' त्ति उच्छलयन्ति 'पोच्छलंति' प्रोच्छलयन्ति 'उवयंति' त्ति अवपतन्ति 'उप्पयंति'-त्ति उत्पतन्ति 'परिवयंति' त्ति परिपन्तन्ति तिर्यक् निपतन्तीत्यर्थः 'जलंति' त्ति ज्वालामालाकुला भवन्ति 'तविति' त्ति तप्ता भवन्ति प्रतप्ता भवन्ति 'थुक्कारेंति' त्ति महता शब्देन थूत्कुर्वन्ति 'देवोक्कलियं करेंति' त्ति देवानां वातस्येवोत्कलिका देवोत्कलिका तां कुर्वन्ति, 'देवकहकहं करेंति' त्ति प्राकृतानां देवानां प्रमोदभरवशतः स्वेच्छावचनैर्वोलकोलाहलो देवकहकहकस्तं कुर्वन्ति 'दुहदुहकं करेंति' दुहदुहकमित्यनुकरणमेतत्। 'तप्पढमयाए पम्हलाए सुकुमालाए सुरभीए गंधकासाइयाए गायाइं लूहेइ' इति तत्प्रथमतया-तस्यामलङ्कारसभायां प्रथमतया पक्ष्मला च सा सुकुमारा च पक्ष्मलसुकुमारा तया सुरभ्या गन्धकाषायिक्या-सुरभिगन्धकषायद्रव्यपरिकर्मितया लघुशाटिकया गात्राणि रूक्षयंति, 'नासानीसासवायवोज्झ' मिति नासिकानिश्वासवातवाह्यमनेन तत्श्लक्ष्णतामाह, 'चक्खुहर' मिति चक्षुर्हरति–आत्मवशं नयति विशिष्टरूपातिशयकलितत्वात् इति चक्षुर्हरं 'वण्णफरिसजुत्त' मिति वर्णेन स्पर्शेन चातिशयेनेति गम्यते युक्तं वर्णस्पर्शयुक्तं, 'हयलालापेलवाइरेग' मिति हयलाला–अश्वलाला तस्या अपि पेलवमतिरेकेण हयलालापेलवातिरेकं 'नाम नाम्नैकार्थे समासो बहुल' मिति समासः, अतिविशिष्टमृदुत्वलघुत्वगुणोपेतमिति भावः, धवलं-श्वेतं, तथा कनकेन खचितानि-विच्छुरितानि अन्तकर्माणि–अञ्चलयोर्वानलक्षणानि यस्य तत् कनकखचितान्तकर्म आकाशस्फटिकं नामातिस्वच्छः स्फटिकविशेषस्तत्समप्रभं दिव्यं देवदूष्ययुगलं 'नियंसेइ' परिधत्ते परिधाय हारादीन्याभरणानि पिनद्धति, तत्र हारः–अष्टादशसरिकः अर्द्धहारो–नवसरिकः एकावली-विचित्रमणिका

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	सूर्याभदेवस्य अभिषेकस्य वर्णनं

मुक्तावली-मुक्ताफलमयी रत्नावली--रत्नमयमणिकात्मिका प्रालम्बः-तपनीयमयो विचित्रमणिरत्नभक्तिचित्र आत्मनः प्रमाणेन सुप्रमाण आभरणविशेषः,कटकानि--कलाचिकाभरणानि त्रुटितानि-बाहुरक्षिकाःअङ्गदानि–बाह्याभरणविशेषाःदशमुद्रिकानन्तकं हस्ताङ्गुलिसंबन्धि मुद्रिकादशकं कुण्डले--कर्णाभरणे 'चूडामणि'मिति चूडामणिर्नाम सकलपार्थिवरत्नसर्वसारो देवेन्द्रमनुष्येन्द्रमूर्द्धैकृतनिवासो निःशेषामङ्गलाशान्तिरोगमुखदोषापहारकारी प्रवरलक्षणोपेतः परममङ्गलभूत आभरणविशेषः 'चित्तरयणसंकडं मउडमिति' चित्राणि-नानाप्रकाराणि यानि रत्नानि तैः संकटश्चित्ररत्नसङ्कटः प्रभूतरत्नानिचयोपेत इति भावः, तं 'दिव्वं सुमणदामं' ति पुष्पमालां, 'गंथिमे' त्यादि, ग्रन्थिमं--ग्रन्थनं ग्रन्थस्तेन निर्वृत्तं ग्रन्थिमं 'भावादिमः प्रत्ययः' यत्सूत्रादिना ग्रन्थ्यते तद्ग्रन्थिममिति भावः, पूरिमं यत् ग्रथितं सत् वेष्ट्यते, तथा पुष्पलम्बूसको गण्डक इत्यर्थः, पूरिमं येन वंशशलाकामयं पञ्जरादि पूर्यते, संघातिमं यत् परस्परतो नालसंघातेन संघात्यते ॥ (सू० ४१ ॥ ४२ ॥)

तए णं से सूरियाभे देवे केसालंकारेणं मल्लालंकारेणं आभरणालंकारेणं वत्थालंकारेणं चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकियविभूसिए समाणे पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेति २ अलंकारियसभाओ पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं पडिणिक्खमइ२त्ता जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छति ववसायसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे २ पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, जेणेव सीहासणवरए जाव सन्निसन्ने। तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववन्नगा देवा पोत्थयरयणं उवणेंति, तते णं से सूरियाभे देवे पोत्थयरयणं गिण्हति २ पोत्थयरयणं मुयइ २ पोत्थयरयणं विहाडेइ २

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पोत्थयरयणं वाएति पोत्थयरयणं वाएत्ता धम्मियं ववसायं गिण्हति गिण्हित्ता पोत्थयरयणं पडिनिक्खिवइ सीहासणातो अब्भुट्ठेति अब्भुट्ठेत्ता ववसायसभातो पुरच्छिमिल्लेणं दारेणं पडिनिक्खमइ २त्ता जेणेव नंदा पुक्खरणी तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता णंदापुक्खराणं पुरच्छिमिल्लेणं तोरणेणं पुरच्छिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ पच्चोरुहित्ता हत्थपादं पक्खालेति पक्खालित्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए एगं महं सेयं रयथामयं विमलं सलिलपुण्णं मत्तगयमुहागितिकुंभसमाणं भिंगारं पगेण्हति २ जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सतसहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हति २ णंदातो पुक्खरिणीतो पच्चोरुहति पच्चोरुहित्ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ (सू० ४३) ॥

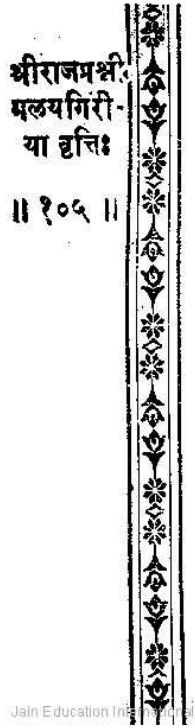
तए णं तं सूरियाभं देवं चत्तारि य सामाणियसाहस्सीओ जाव सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ अन्ने य बहवे सूरियाभ जाव देवीओ य अप्पेगतिया देवा उप्पलहत्थगया जावसयसहस्सपत्तहत्थगया सूरियाभं देवं पिट्ठतो २ समणुगच्छंति । तए णं तं सूरियाभं देवं बहवे आभिओगिया देवा य देवीओ य अप्पेगतिया कलसहत्थगया जाव अप्पेगतिया धूवकडुच्छुयहत्थगता हट्ठतुट्ठ जाव सूरियाभं देवं पिट्ठतो समणुगच्छंति । तए णं से सूरियाभे देवे चउहि सामाणियसाहस्सीहिं जाव अन्नेहि य बहूहि य सूरियाभ जाव देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सविड्ढीए जाव णातियरवेणं जेणेव सिद्धायतणे तेणेव उवागच्छति २ सिद्धायतणं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

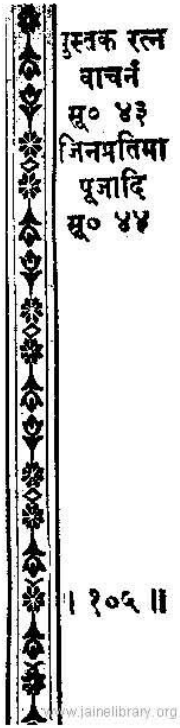
पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [४३-४४]

दीप अनुक्रम [४३-४४]



अणुपविसंति अणुपविसित्ता जेणेव देवच्छंदए जेणेव जिणपडिमाओ तेणेव उवागच्छंति२ जिण-
पडिमाणं आलोए पणामं करेंति २ लोमहत्थगं गिण्हंति २ जिणपडिमाणं लोमहत्थएणं पमज्जइ
पमज्जित्ता जिणपडिमाओ सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेइ ण्हाणित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं
अणुलिंपइ अणुलिंपइत्ता सुरभिगंधकासाइएणं गायाइं लूहेंति लूहित्ता जिणपडिमाणं अहयाइं देव-
दूसजुयलाइं नियंसेइ नियंसित्ता पुप्फारुहणं मल्लारुहणं गंधारुहणं चुण्णारुहणं वण्णारुहणं वत्थारुहणं
आभरणारुहणं करेइ करित्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेइ मल्लदामकलावं
करेत्ता कयग्गहगहियकरयलपब्भट्ठविप्पमुक्केणं दसद्धवन्नेणं कुसुमेणं मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेंति
करित्ता जिणपडिमाणं पुरतो अच्छेहिं सण्हेहिं रययामएहिं अच्छरसातंदुलेहिं अट्ठट्ठ मंगले आलि-
हइ, तंजहा–सोत्थिय जाव दप्पणं, तयाणंतरं च णं चंदप्पभरयणवइरवेरुलियविमलदंडं कंचणम-
णिरयणभत्तिचित्तं कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंतगंधुत्तमाणुविद्धं च धूववट्टिं विणिम्मुयंतं
वेरुलियमयं कडुच्छुयं पग्गहिय पयत्तेणं धूवं दाऊण जिणवराणं अट्ठसयविसुद्धगन्थजुत्तेहिं अत्थ-
जुत्तेहिं अपुणरुत्तेहिं महावित्तेहिं संथुणइ २ सत्तट्ठ पयाइं पच्चोसक्कइ २ त्ता वामं जाणुं अंचेइ २ त्ता
दाहिणं जाणुं धरणितलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवाडेइ २ त्ता ईसिं पच्चुण्ण-
मइ २ करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–नमोत्थु णं अरहंताणं जाव



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शाश्वत जिन-प्रतिमाया: पूजनं

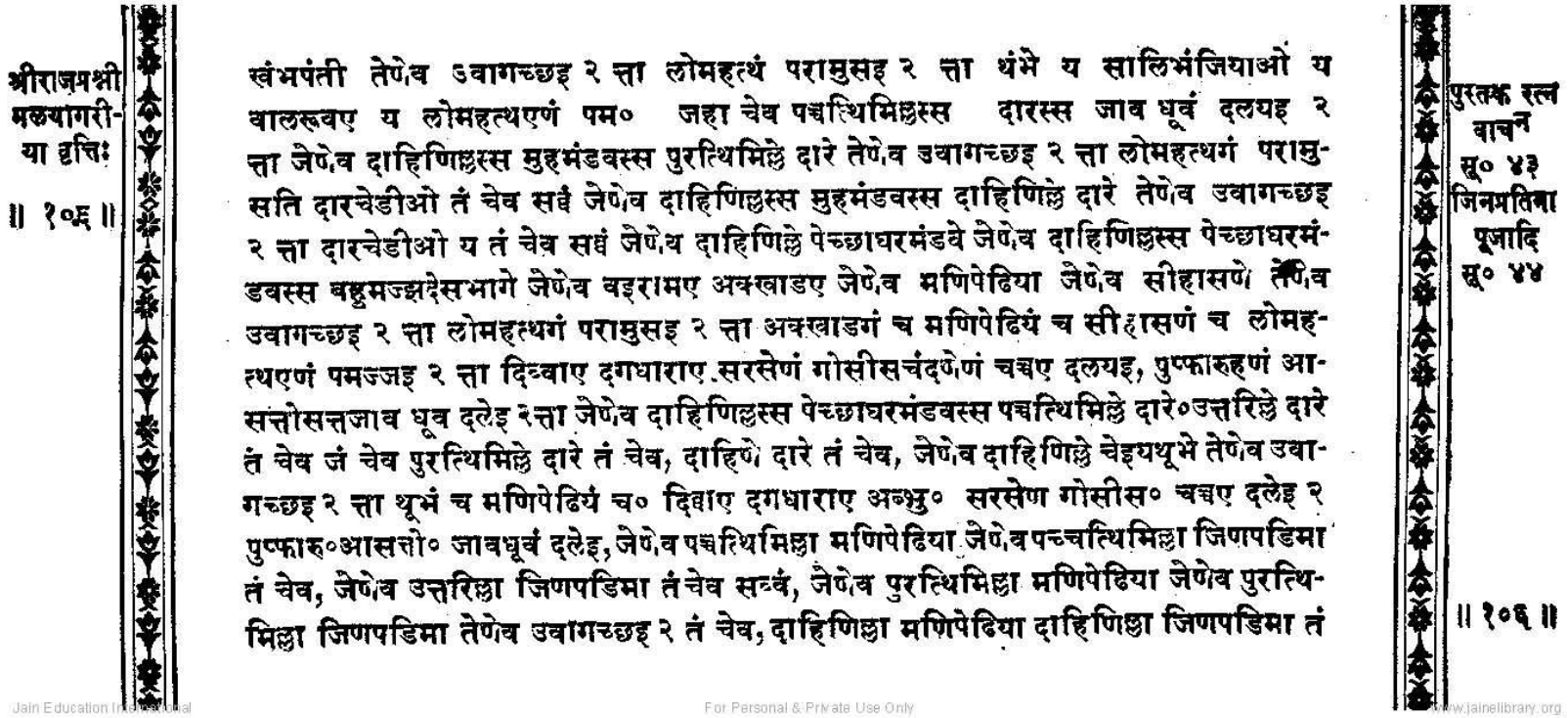
संपत्ताणं, वदइ नमंसइ २ त्ता जेणेव देवच्छंदए० जेणेव सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थगं परामुसइ २ सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभागं लोमहत्थेणं पमज्जति, दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं मंडलगं आलिहइ २ कयग्गाहगहियं जावपुंजोवयारकलियं करेइ करेत्ता धूवं दलयइ, जेणेव सिद्धायतणस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छति २ लोमहत्थगं परामुसइ २ त्ता दारचेडीओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थए णं पमज्जइ २ त्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ २ सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ दलइत्ता पुप्फारुहणं मल्ला जाव आभरणारुहणं करेइ करेत्ता आसत्तोसत्त जाव धूवं दलयइ २ त्ता जेणेव दाहिणिल्ले दारे मुहमंडवे जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थगं परामुसइ २ त्ता बहुमज्झदेसभागं लोमहत्थेणं पमज्जइ २ त्ता दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ २ सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं मंडलगं आलिहइ २ कयग्गाहगहिय जाव धूवं दलयइ २ त्ता जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थगं परामुसइ २ त्ता दारचेडीओ य सालिभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थेणं पमज्जइ २ त्ता दिव्वाए दगधाराए० सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ २ पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ २ आसत्तोसत्त० कयगाहग्गहियं० धूवं दलयइ २ त्ता जेणेव दाहिणिल्लमुहमंडवस्स उत्तरिल्ला

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शाश्वत जिन-प्रतिमाया: पूजनं

प्रत सूत्रांक [४३-४४]

दीप अनुक्रम [४३-४४]



श्रीराजप्रश्नीयमलयागरीया वृत्तिः ॥ १०६ ॥

खंभपंती तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थं परामुसइ २ त्ता थंभे य सालिभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पम० जहा चेव पच्चत्थिमिल्लस्स दारस्स जाव धूवं दलयइ २ त्ता जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थगं परामुसति दारचेडीओ तं चेव सव्वं जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता दारचेडीओ य तं चेव सव्वं जेणेव दाहिणिल्ले पेच्छाघरमंडवे जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स बहुमज्झदेसभागे जेणेव वइरामए अक्खाडए जेणेव मणिपेढिया जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थगं परामुसइ २ त्ता अक्खाडगं च मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ २ त्ता दिव्वाए दगधाराए सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, पुप्फारुहणं आसत्तोसत्तजाव धूव दलेइ २त्ता जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे०उत्तरिल्ले दारे तं चेव जं चेव पुरत्थिमिल्ले दारे तं चेव, दाहिणे दारे तं चेव, जेणेव दाहिणिल्ले चेइयथूभे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता थूभं च मणिपेढियं च० दिव्वाए दगधाराए अब्भु० सरसेण गोसीस० चच्चए दलेइ २ पुप्फारु०आसत्तो० जावधूवं दलेइ, जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा तं चेव, जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा तं चेव सव्वं, जेणेव पुरत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ २ तं चेव, दाहिणिल्ला मणिपेढिया दाहिणिल्ला जिणपडिमा तं

पुस्तक रत्न वाचने सू० ४३ जिनप्रतिमा पूजादि सू० ४४

॥ १०६ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शाश्वत जिन-प्रतिमाया: पूजनं

प्रत सूत्रांक [४३-४४]

दीप अनुक्रम [४३-४४]



चेव, जेणेव दाहिणिल्ले चेइयरुक्खे तेणेव उवागच्छइ २ तं चेव, जेणेव महिंदज्झए जेणेव दाहिणिल्ला
क्खरणं तेणेव उवगच्छति लोमहत्थगं परामुसति तोरणे य तिसोवाणपडिरूवए सालिभंजि-
याओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ दिव्वाए दगधाराए सरसेणं गोसीसचंदणेणं०
पुप्फारुहणं० आसत्तोसत्त० धूवं दलयति, सिद्धाययण अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदा-
पुक्खरणी तेणेव उवागच्छति २ तं चेव, जेणेव उत्तरिल्ले चेइयरुक्खे तेणेव उवागच्छति, जेणेव उत्त-
रिल्ले चेइयथूभे तहेव, जेणेव पच्चत्थिमिल्ला पेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा तं चेव, उत्त-
रिल्ले पेच्छाघरमंडवे तेणेव उवागच्छति २ त्ता जा चेव दाहिणिल्लवत्तव्वया सा चेव सव्वा पुरत्थिमिल्ले
दारे, दाहिणिल्ला खंभपंती तं चेव सव्वं, जेणेव उत्तरिल्ले मुहमंडवे जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स बहु-
मज्झदेसभाए तं चेव सव्वं, पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव० उत्तरिल्ले दारे दाहिणिल्ला खंभपंती सेसं त
चेव सव्वं, जेणेव सिद्धायतणस्स उत्तरिल्ले दारे तं चेव, जेणेव सिद्धायतणस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव
उवागच्छइ २ त्ता तं चेव, जेणेव पुरत्थिमिल्ले मुहमंडवे जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमडवस्स बहुमज्झदे-
सभाए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तं चेव, पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे पच्चत्थिमिल्ला
खंभपंती उत्तरिल्ले दारे तं चेव, पुरत्थिमिल्ले दारे तं चेव, जेणेव पुरत्थिमिल्ले पेच्छाघरमंडवे, एव
थूभे जिणपडिमाओ चेइयरुक्खा महिंदज्झया णंदा पुक्खरिणी त चेव जाव धूवं दलइ२त्ता जेणेव



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शाश्वत जिन-प्रतिमाया: पूजनं

सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छति २ त्ता सभं सुहम्मं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ २ त्ता जेणेव माणवए चेइयखंभे जेणेव वइरामए गोलवट्टसमुग्गे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छइत्ता लोमहत्थगं परामुसइ२ वइरामए गोलवट्टसमुग्गए लोमहत्थेणं पमज्जइ २ वइरामए गोलवट्टसमुग्गए विहाडेइ २ जिणसगहाओ लोमहत्थेणं पमज्जइ २ त्ता सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ पक्खालित्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहि य मल्लेहि य अच्चेइ धूवं दलयइ २ त्ता जिणसकहाओ वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु पडिनिक्खिवइ माणवगं चेइयखंभं लोमहत्थएणं पमज्जइ दिव्वाए दगधाराए सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, पुप्फारुहणं जाव धूवं दलयइ, जेणेव सीहासणे तं चेव, जेणेव देवसयणिज्जे तं चेव, जेणेव खुड्डागमहिंदज्झए तं चेव, जेणेव पहरणकोसे चोप्पालए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थगं परामुसइ २ त्ता पहरणकोसं चोप्पालं लोमहत्थएणं पमज्जइ २ त्ता दिव्वाए दगधाराए सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चा दलेइ पुप्फारुहणं आसत्तोसत्त जाव धूवं दलयइ, जेणेव सभाए सुहम्माए बहुमज्झदेसभाए जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवसयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता लोमहत्थगं परामुसइ देवसयणिज्जं च मणिपेढियं च लोमहत्थएणं पमज्जइ जाव धूवं दलयइ २ त्ता जेणेव उववायसभाए दाहिणिल्ले दारे तहेव अभिसेयसभासरिसं जाव पुरत्थिमिल्ला णंदा पुक्खरिणी जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तोरणे य तिसोवाणे य सालिभंजियाओ य वालरूवए य तहेव, जेणेव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	शाश्वत जिन-प्रतिमाया: पूजनं

प्रत सूत्रांक [४३-४४]

दीप अनुक्रम [४३-४४]

अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तहेव सीहासणं च मणिपेढियं च सेसं तहेव आययणसरिसं जाव पुरत्थिमिल्ला णंदा पुक्खरिणी जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जहा अभिसेयसभा तहेव सहं, जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तहेव लोमहत्थयं परामुसति पोत्थयरयणं लोमहत्थएणं पमज्जइ पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अग्गेहिं वरेहि य गंधेहिं मल्लेहि य अच्चेति २ त्ता मणिपेढियं सीहासणं च सेसं तं चेव, पुरत्थिमिल्ला नंदा पुक्खरिणी जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तोरणे य तिसोवाणे य सालिभंजियाओ य वालरूवए य तहेव। जेणेव बलिपीढं तेणेव उवागच्छइ २ त्ता बलिविसज्जणं करेइ, आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! सूरियाभे विमाणे सिंघाडएसु तिएसु चउक्केसु चच्चरेसु चउम्मुहेसु महापहेसु पागारेसु अट्टालएसु चरियासु दारेसु गोपुरेसु तोरणेसु आरामेसु उज्जाणेसु वणेसु वणराईसु काणणेसु वणसंडेसु अच्चणियं करेह अच्चणियं करेत्ता एवमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह, तए णं ते आभिओगिया देवा सूरिभाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा जाव पडिसुणित्ता सूरियाभे विमाणे सिंघाडएसु तिएसु चउक्कएसु चच्चरेसु चउम्मुहेसु महापहेसु पागारेसु अट्टालएसु चरियासु दारेसु गोपुरेसु तोरणेसु आरामेसु उज्जाणेसु वणेसु वणरातीसु काणणेसु वणसंडेसु अच्चणियं करेइ २ त्ता जेणेव सूरियाभे देवे जाव पच्चप्पिणंति, तते णं से सूरियाभे देवे जेणेव नंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शाश्वत जिन-प्रतिमाया: पूजनं

प्रत सूत्रांक [४३-४४]

दीप अनुक्रम [४३-४४]

२ त्ता नंदापुक्खरिणिं पुरत्थिमिल्लेणं तिसोमाणपडिरूवएणं पच्चोरुहति २ त्ता हत्थपाए पक्खालेइ २ त्ता णंदाओ पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरइ जेणेव सभा सुधम्मा तेणेव पहारित्थ गमणाए। तए णं से सूरियाभे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहि य बहूहिं सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवीहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सविड्ढीए जाव नाइयरवेणं जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छइ सभं सुधम्मं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति २ अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे ॥ (सू० ४४) ॥

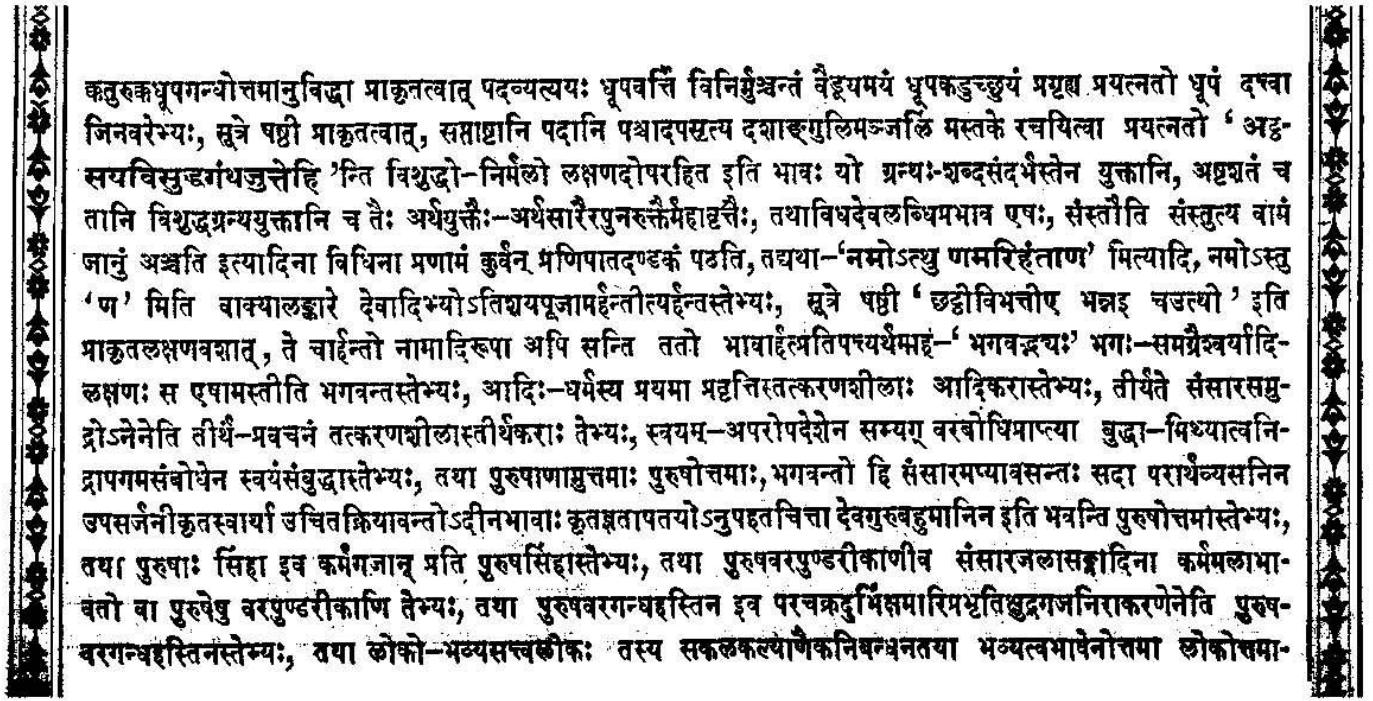
'जेणेव ववसायसभा' इति व्यवसायसभा नाम व्यवसायनिबन्धनभूता सभा, क्षेत्रादेरपि कर्मोदयादिनिमित्तत्वात्, उक्तं च–"उदयक्खयक्खओवसमोवसमा जं च कम्मुणो भणिया। दव्वं खेत्तं कालं भावं च भव च संपप्पे ॥१॥" ति, 'पोत्थयरयणं मुयइ' इति उत्सङ्गे स्थानविशेषे वा उत्तमे इति द्रष्टव्यं, 'विहाडेइ' इति उद्घाटयति, 'धम्मियं ववसायं ववसइ' इति धार्मिकं–धर्मानुगतं व्यवसायं व्यवस्यति, कर्तुमभिलषतीति भावः। 'अच्छरसातंदुलेहिं' अच्छो रसो येषु ते अच्छरसाः, प्रत्यासन्नवस्तुप्रतिबिम्बाधारभूता इवातिनिर्मला इत्यर्थः, अच्छरसाश्च ते तन्दुलाश्च तः, दिव्यतन्दुलरिति भावः, 'पुप्फपुंजोवयारकलियं करित्ता' 'चंदप्पभवइरवेरुलियविमलदंड' मिति चन्द्रप्रभवज्रवैडूर्यमयो विमलो दण्डो यस्य स तथा तं, काञ्चनमणिरत्नभक्तिचित्रं कालागुरुपवरकुंदुरुक्कतुरुक्कसत्केन धूपेन उत्तमगन्धिनाऽनुविद्धा कालागुरुपवरकुंदुरु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शाश्वत जिन-प्रतिमाया: पूजनं

प्रत सूत्रांक [४३-४४]

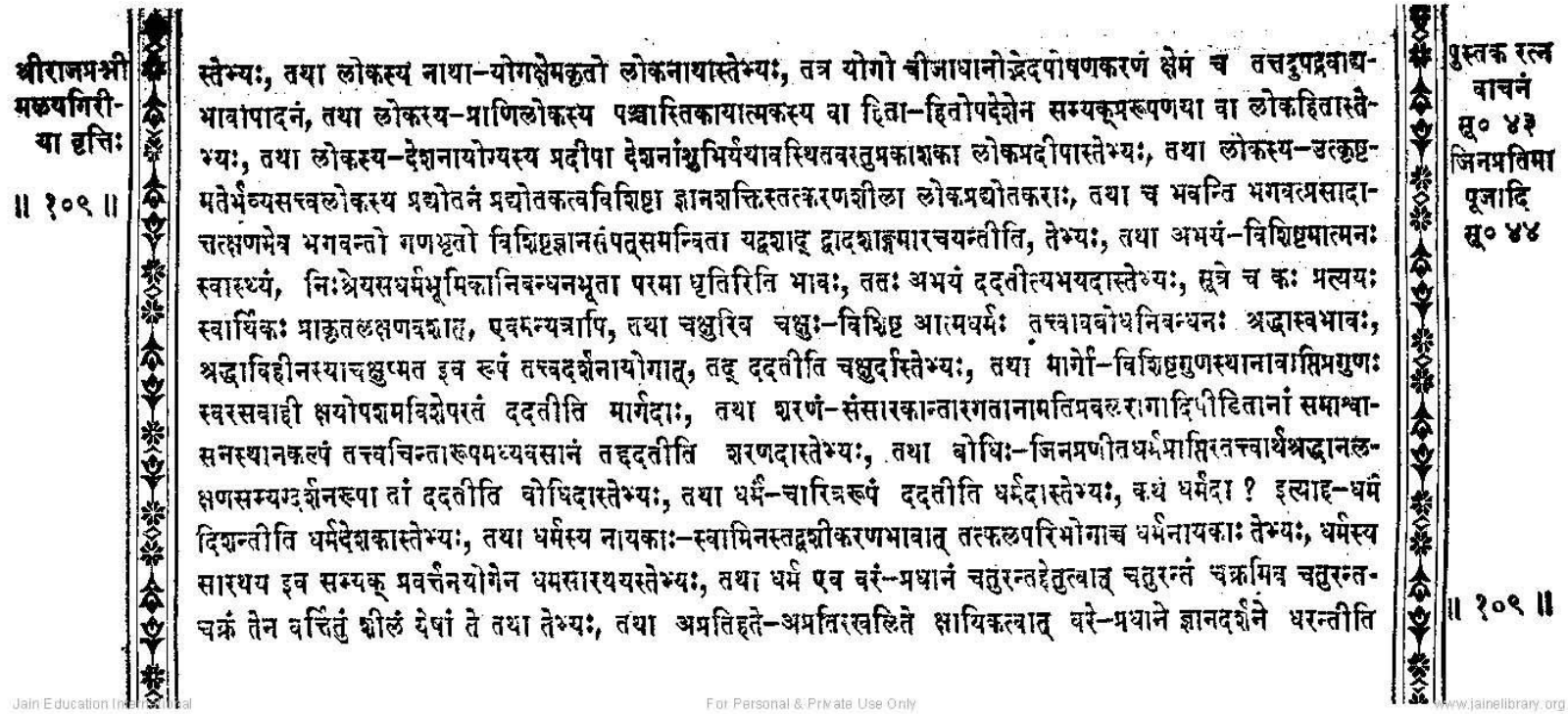
दीप अनुक्रम [४३-४४]



कतुरुक्कधूपगन्धोत्तमानुविद्धा प्राकृतत्वात् पदव्यत्ययः धूपवर्त्तिं विनिर्मुञ्चन्तं वैडूर्यमयं धूपकडुच्छुयं प्रगृह्य प्रयत्नतो धूपं दत्त्वा जिनवरेभ्यः, सूत्रे षष्ठी प्राकृतत्वात्, सप्ताष्टानि पदानि पश्चादपसृत्य दशाङ्गुलिमञ्जलिं मस्तके रचयित्वा प्रयत्नतो 'अट्ठसयविसुद्धगंथजुत्तेहि' न्ति विशुद्धो–निर्मलो लक्षणदोषरहित इति भावः यो ग्रन्थः-शब्दसंदर्भस्तेन युक्तानि, अष्टशतं च तानि विशुद्धग्रन्थयुक्तानि च तैः अर्थयुक्तैः–अर्थसारैरपुनरुक्तैर्महावृत्तैः, तथाविधदेवलब्धिप्रभाव एषः, संस्तौति संस्तुत्य वामं जानुं अञ्चति इत्यादिना विधिना प्रणामं कुर्वन् प्रणिपातदण्डकं पठति, तद्यथा–'नमोऽत्थु णमरिहंताण' मित्यादि, नमोऽस्तु 'ण' मिति वाक्यालङ्कारे देवादिभ्योऽतिशयपूजामर्हन्तीत्यर्हन्तस्तेभ्यः, सूत्रे षष्ठी 'छट्ठीविभत्तीए भन्नइ चउत्थी' इति प्राकृतलक्षणवशात्, ते चार्हन्तो नामादिरूपा अपि सन्ति ततो भावार्हत्प्रतिपत्त्यर्थमाह–'भगवद्भ्यः' भगः–समग्रैश्वर्यादिलक्षणः स एषामस्तीति भगवन्तस्तेभ्यः, आदिः–धर्मस्य प्रथमा प्रवृत्तिस्तत्करणशीलाः आदिकरास्तेभ्यः, तीर्यते संसारसमुद्रोऽनेनेति तीर्थं–प्रवचनं तत्करणशीलास्तीर्थकराः तेभ्यः, स्वयम्–अपरोपदेशेन सम्यग् वरबोधिप्राप्त्या बुद्धा–विध्वात्वनिद्रापगमसंबोधेन स्वयंसंबुद्धास्तेभ्यः, तथा पुरुषाणामुत्तमाः पुरुषोत्तमाः, भगवन्तो हि संसारमप्यावसन्तः सदा परार्थैकव्यसनिन उपसर्जनीकृतस्वार्था उचितक्रियावन्तोऽदीनभावाः कृतज्ञतापतयोऽनुपहतचित्ता देवगुरुबहुमानिन इति भवन्ति पुरुषोत्तमास्तेभ्यः, तथा पुरुषाः सिंहा इव कर्मगजान् प्रति पुरुषसिंहास्तेभ्यः, तथा पुरुषवरपुण्डरीकाणीव संसारजलासङ्गादिना कर्ममलाभावतो वा पुरुषेषु वरपुण्डरीकाणि तेभ्यः, तथा पुरुषवरगन्धहस्तिन इव परचक्रदुर्भिक्षमारिप्रभृतिक्षुद्रगजनिराकरणेनेति पुरुषवरगन्धहस्तिनस्तेभ्यः, तथा लोको–भव्यसत्त्वलोकः तस्य सकलकल्याणैकनिबन्धनतया भव्यत्वभावेनोत्तमा लोकोत्तमा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शाश्वत जिन-प्रतिमाया: पूजनं



श्रीराजप्रश्नीयमलयगिरीया वृत्तिः ॥ १०९ ॥

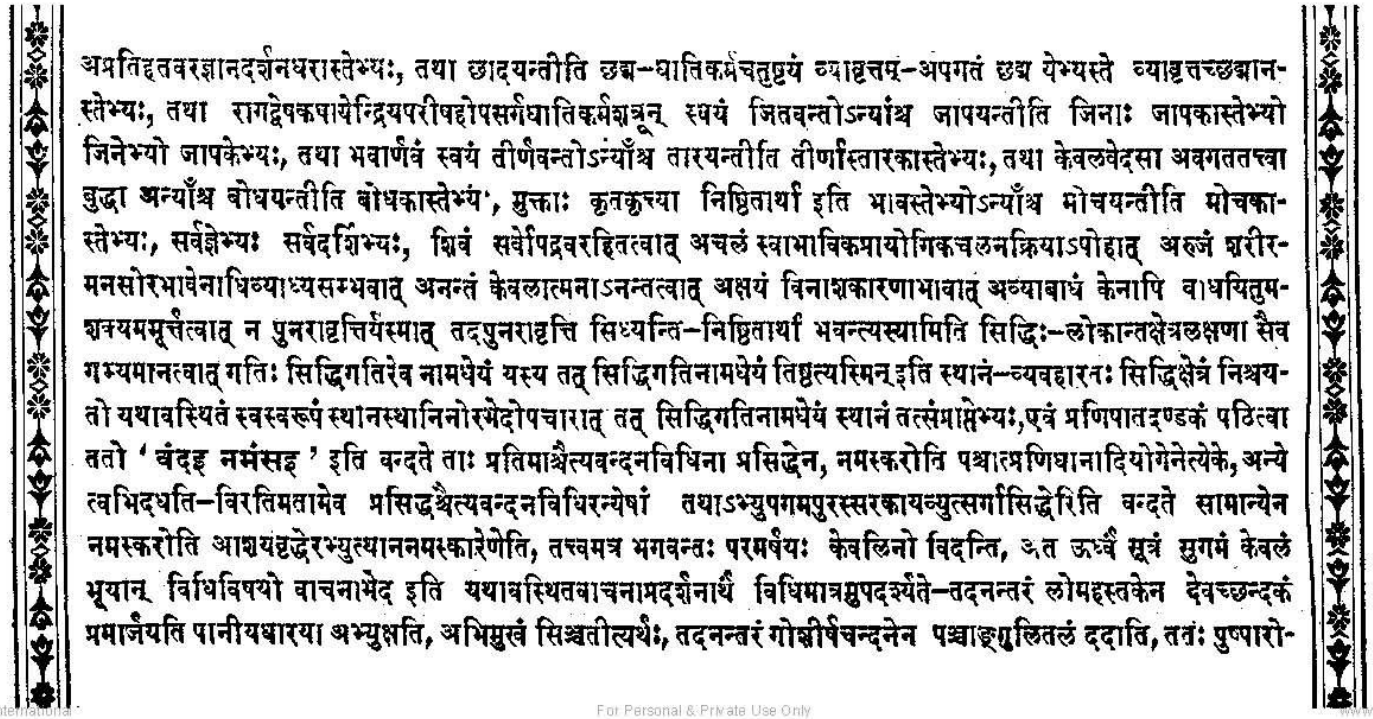
स्तेभ्यः, तथा लोकस्य नाथा–योगक्षेमकृतो लोकनाथास्तेभ्यः, तत्र योगो बीजाधानोद्भेदपोषणकरणं क्षेमं च तत्तदुपद्रवाद्यभावापादनं, तथा लोकस्य–प्राणिलोकस्य पञ्चास्तिकायात्मकस्य वा हिता–हितोपदेशेन सम्यक्प्ररूपणया वा लोकहितास्तेभ्यः, तथा लोकस्य–देशनायोग्यस्य प्रदीपा देशनांशुभिर्यथावस्थितवस्तुप्रकाशका लोकप्रदीपास्तेभ्यः, तथा लोकस्य–उत्कृष्टमतेर्भव्यसत्त्वलोकस्य प्रद्योतनं प्रद्योतकत्वविशिष्टा ज्ञानशक्तिस्तत्करणशीला लोकप्रद्योतकराः, तथा च भवन्ति भगवत्प्रसादात्तत्क्षणमेव भगवन्तो गणभृतो विशिष्टज्ञानसंपत्समन्विता यद्वशाद् द्वादशाङ्गमारचयन्तीति, तेभ्यः, तथा अभयं–विशिष्टमात्मनः स्वास्थ्यं, निःश्रेयसधर्मभूमिकानिबन्धनभूता परमा धृतिरिति भावः, ततः अभयं ददतीत्यभयदास्तेभ्यः, सूत्रे च कः प्रत्ययः स्वार्थिकः प्राकृतलक्षणवशात्, एवमन्यत्रापि, तथा चक्षुरिव चक्षुः–विशिष्ट आत्मधर्मः तत्त्वावबोधनिबन्धनः श्रद्धास्वभावः, श्रद्धाविहीनस्याचक्षुष्मत इव रूपं तत्त्वदर्शनायोगात्, तद् ददतीति चक्षुर्दास्तेभ्यः, तथा मार्गो–विशिष्टगुणस्थानावाप्तिप्रगुणः स्वरसवाही क्षयोपशमविशेषस्तं ददतीति मार्गदाः, तथा शरणं–संसारकान्तारगतानामतिप्रबलरागादिपीडितानां समाश्वासनस्थानकल्पं तत्त्वचिन्तारूपमध्यवसानं तद्ददतीति शरणदास्तेभ्यः, तथा बोधिः–जिनप्रणीतधर्मप्राप्तिरतत्त्वार्थश्रद्धानलक्षणसम्यग्दर्शनरूपा तां ददतीति बोधिदास्तेभ्यः, तथा धर्म–चारित्ररूपं ददतीति धर्मदास्तेभ्यः, कथं धर्मदा ? इत्याह–धर्मं दिशन्तीति धर्मदेशकास्तेभ्यः, तथा धर्मस्य नायकाः–स्वामिनस्तद्वशीकरणभावात् तत्फलपरिभोगाच्च धर्मनायकाः तेभ्यः, धर्मस्य सारथय इव सम्यक् प्रवर्त्तनयोगेन धर्मसारथयस्तेभ्यः, तथा धर्म एव वरं–प्रधानं चतुरन्तहेतुत्वात् चतुरन्तं चक्रमिव चतुरन्तचक्रं तेन वर्त्तितुं शीलं येषां ते तथा तेभ्यः, तथा अप्रतिहते–अप्रतिस्खलिते क्षायिकत्वात् वरे–प्रधाने ज्ञानदर्शने धरन्तीति

पुस्तक रत्न वाचनं सू० ४३ जिनप्रतिमा पूजादि सू० ४४

॥ १०९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शाश्वत जिन-प्रतिमाया: पूजनं



अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनधरास्तेभ्यः, तथा छादयन्तीति छद्म–घातिकर्मचतुष्टयं व्यावृत्तम्–अपगतं छद्म येभ्यस्ते व्यावृत्तच्छद्मानस्तेभ्यः, तथा रागद्वेषकषायेन्द्रियपरीषहोपसर्गघातिकर्मशत्रून् स्वयं जितवन्तोऽन्यांश्च जापयन्तीति जिनाः जापकास्तेभ्यो जिनेभ्यो जापकेभ्यः, तथा भवार्णवं स्वयं तीर्णवन्तोऽन्यांश्च तारयन्तीति तीर्णास्तारकास्तेभ्यः, तथा केवलबोधसा अवगततत्त्वा बुद्धा अन्यांश्च बोधयन्तीति बोधकास्तेभ्यः, मुक्ताः कृतकृत्या निष्ठितार्था इति भावस्तेभ्योऽन्यांश्च मोचयन्तीति मोचकास्तेभ्यः, सर्वज्ञेभ्यः सर्वदर्शिभ्यः, शिवं सर्वोपद्रवरहितत्वात् अचलं स्वाभाविकप्रायोगिकचलनक्रियाऽपोहात् अरुजं शरीरमनसोरभावेनाधिव्याध्यसम्भवात् अनन्तं केवलात्मनाऽनन्तत्वात् अक्षयं विनाशकारणाभावात् अव्याबाधं केनापि बाधयितुमशक्यममूर्त्तत्वात् न पुनरावृत्तिर्यस्मात् तदपुनरावृत्ति सिध्यन्ति–निष्ठितार्था भवन्त्यस्यामिति सिद्धिः–लोकान्तक्षेत्रलक्षणा सैव गम्यमानत्वात् गतिः सिद्धिगतिरेव नामधेयं यस्य तत् सिद्धिगतिनामधेयं तिष्ठत्यस्मिन्निति स्थानं–व्यवहारतः सिद्धिक्षेत्रं निश्चयतो यथावस्थितं स्वस्वरूपं स्थानस्थानिनोरभेदोपचारात् तत् सिद्धिगतिनामधेयं स्थानं तत्संप्राप्तेभ्यः,एवं प्रणिपातदण्डकं पठित्वा ततो 'वंदइ नमंसइ' इति वन्दते ताः प्रतिमाश्चैत्यवन्दनविधिना प्रसिद्धेन, नमस्करोति पश्चात्प्रणिधानादियोगेनेत्येके, अन्ये त्वभिदधति–विरतिमतामेव प्रसिद्धश्चैत्यवन्दनविधिरन्येषां तथाऽभ्युपगमपुरस्सरकायव्युत्सर्गासिद्धेरिति वन्दते सामान्येन नमस्करोति आशयवृद्धेरभ्युत्थाननमस्कारेणेति, तत्त्वमत्र भगवन्तः परमर्षयः केवलिनो विदन्ति, अत ऊर्ध्वं सूत्रं सुगमं केवलं भूयान् विधिविषयो वाचनाभेद इति यथावस्थितवाचनाप्रदर्शनार्थं विधिमात्रमुपदर्श्यते–तदनन्तरं लोमहस्तकेन देवच्छन्दकं प्रमार्जयति पानीयधारया अभ्युक्षति, अभिमुखं सिञ्चतीत्यर्थः, तदनन्तरं गोशीर्षचन्दनेन पञ्चाङ्गुलितलं ददाति, ततः पुष्पारो-

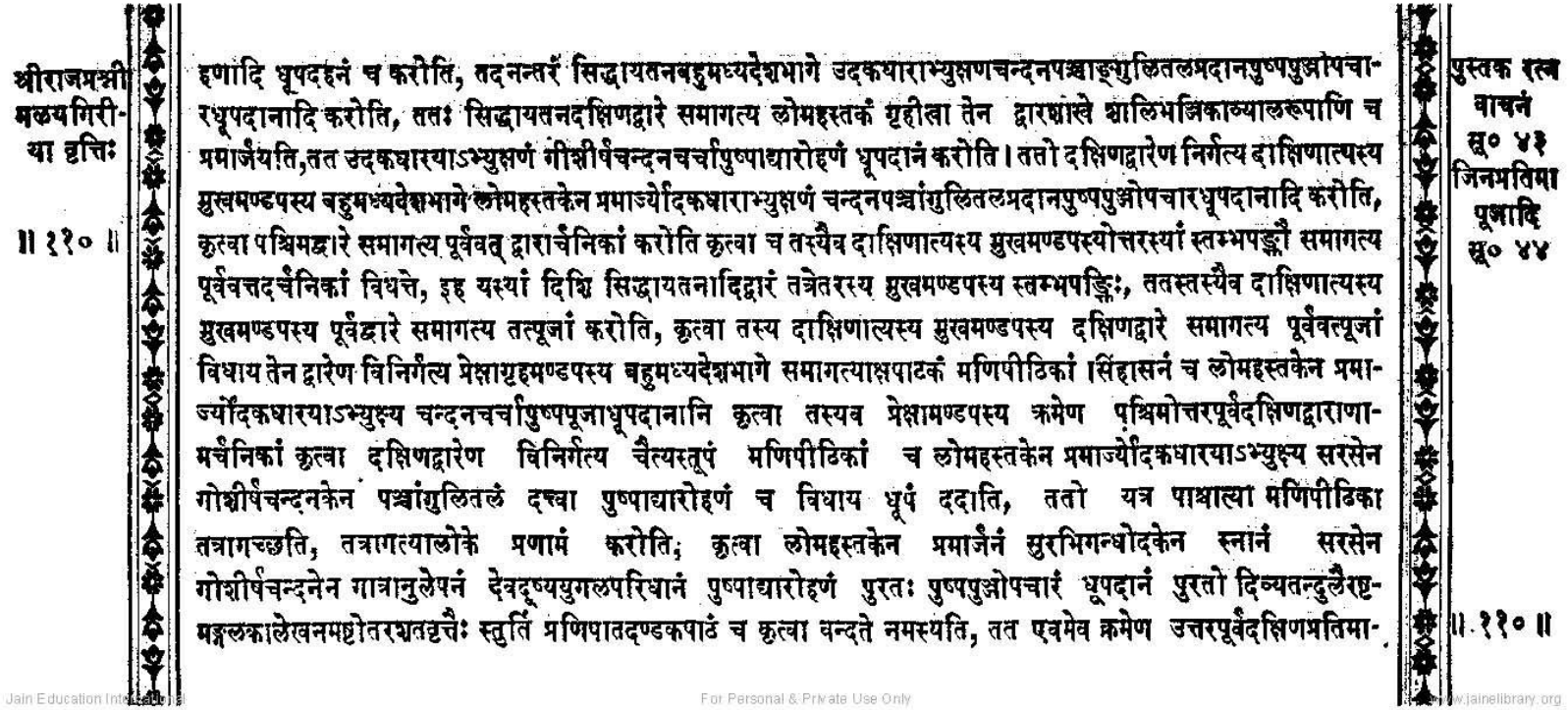
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	शाश्वत जिन-प्रतिमाया: पूजनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [४३-४४]

दीप अनुक्रम [४३-४४]



श्रीराजप्रश्नीयमलयगिरीया वृत्तिः

॥ ११० ॥

इणादि धूपदहनं च करोति, तदनन्तरं सिद्धायतनबहुमध्यदेशभागे उदकधाराभ्युक्षणचन्दनपञ्चाङ्गुलितलप्रदानपुष्पपुञ्जोपचारधूपदानादि करोति, ततः सिद्धायतनदक्षिणद्वारे समागत्य लोमहस्तकं गृहीत्वा तेन द्वारशाखे शालिभञ्जिकाव्यालरूपाणि च प्रमार्जयति,तत उदकधारयाऽभ्युक्षणं गोशीर्षचन्दनचर्चापुष्पाद्यारोहणं धूपदानं करोति। ततो दक्षिणद्वारेण निर्गत्य दाक्षिणात्यस्य मुखमण्डपस्य बहुमध्यदेशभागे लोमहस्तकेन प्रमार्ज्योदकधाराभ्युक्षणं चन्दनपञ्चांगुलितलप्रदानपुष्पपुञ्जोपचारधूपदानादि करोति, कृत्वा पश्चिमद्वारे समागत्य पूर्ववत् द्वारार्चनिकां करोति कृत्वा च तस्यैव दाक्षिणात्यस्य मुखमण्डपस्योत्तरस्यां स्तम्भपङ्क्तौ समागत्य पूर्ववत्तदर्चनिकां विधत्ते, इह यस्यां दिशि सिद्धायतनादिद्वारं तत्रेतरस्य मुखमण्डपस्य स्तम्भपङ्क्तिः, ततस्तस्यैव दाक्षिणात्यस्य मुखमण्डपस्य पूर्वद्वारे समागत्य तत्पूजां करोति, कृत्वा तस्य दाक्षिणात्यस्य मुखमण्डपस्य दक्षिणद्वारे समागत्य पूर्ववत्पूजां विधाय तेन द्वारेण विनिर्गत्य प्रेक्षागृहमण्डपस्य बहुमध्यदेशभागे समागत्याक्षपाटकं मणिपीठिकां सिंहासनं च लोमहस्तकेन प्रमार्ज्योदकधारयाऽभ्युक्ष्य चन्दनचर्चापुष्पपूजाधूपदानानि कृत्वा तस्यव प्रेक्षामण्डपस्य क्रमेण पश्चिमोत्तरपूर्वदक्षिणद्वाराणामर्चनिकां कृत्वा दक्षिणद्वारेण विनिर्गत्य चैत्यस्तूपं मणिपीठिकां च लोमहस्तकेन प्रमार्ज्योदकधारयाऽभ्युक्ष्य सरसेन गोशीर्षचन्दनकेन पञ्चांगुलितलं दत्त्वा पुष्पाद्यारोहणं च विधाय धूपं ददाति, ततो यत्र पाश्चात्या मणिपीठिका तत्रागच्छति, तत्रागत्यालोके प्रणामं करोति; कृत्वा लोमहस्तकेन प्रमार्जनं सुरभिगन्धोदकेन स्नानं सरसेन गोशीर्षचन्दनेन गात्रानुलेपनं देवदूष्ययुगलपरिधानं पुष्पाद्यारोहणं पुरतः पुष्पपुञ्जोपचारं धूपदानं पुरतो दिव्यतन्दुलैरष्टमङ्गलकालेखनमष्टोत्तरशतवृत्तैः स्तुतिं प्रणिपातदण्डकपाठं च कृत्वा वन्दते नमस्यति, तत एवमेव क्रमेण उत्तरपूर्वदक्षिणप्रतिमा-

पुस्तक रत्न वाचनं सू० ४३ जिनप्रतिमा पूजादि सू० ४४

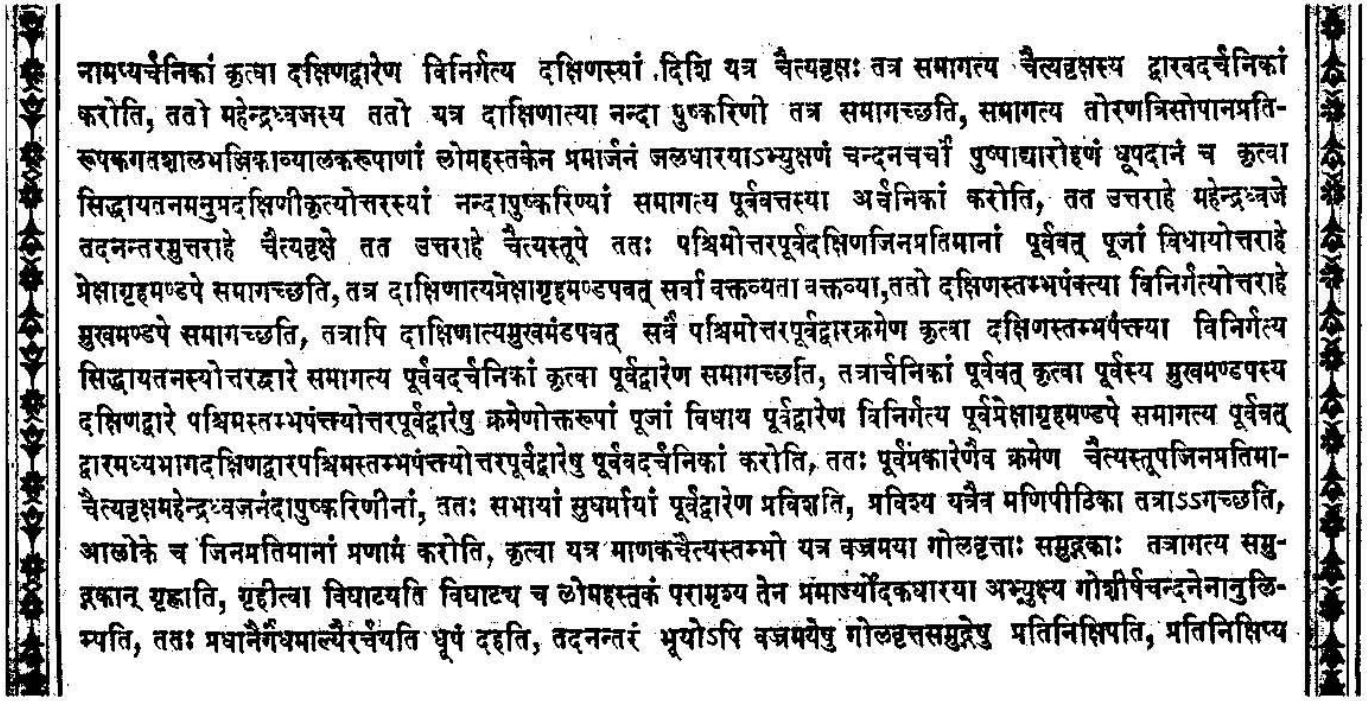
॥ ११० ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शाश्वत जिन-प्रतिमाया: पूजनं

प्रत सूत्रांक [४३-४४]

दीप अनुक्रम [४३-४४]



नामप्यर्चनिकां कृत्वा दक्षिणद्वारेण विनिर्गत्य दक्षिणस्यां दिशि यत्र चैत्यवृक्षः तत्र समागत्य चैत्यवृक्षस्य द्वारवदर्चनिकां करोति, ततो महेन्द्रध्वजस्य ततो यत्र दाक्षिणात्या नन्दा पुष्करिणी तत्र समागच्छति, समागत्य तोरणत्रिसोपानप्रतिरूपकगतशालभञ्जिकाव्यालकरूपाणां लोमहस्तकेन प्रमार्जनं जलधारयाऽभ्युक्षणं चन्दनचर्चां पुष्पाद्यारोहणं धूपदानं च कृत्वा सिद्धायतनमनुप्रदक्षिणीकृत्योत्तरस्यां नन्दापुष्करिण्यां समागत्य पूर्ववत्तस्या अर्चनिकां करोति, तत उत्तराहे महेन्द्रध्वजे तदनन्तरमुत्तराहे चैत्यवृक्षे तत उत्तराहे चैत्यस्तूपे ततः पश्चिमोत्तरपूर्वदक्षिणजिनप्रतिमानां पूर्ववत् पूजां विधायोत्तराहे प्रेक्षागृहमण्डपे समागच्छति, तत्र दाक्षिणात्यप्रेक्षागृहमण्डपवत् सर्वा वक्तव्यता वक्तव्या,ततो दक्षिणस्तम्भपंक्त्या विनिर्गत्योत्तराहे मुखमण्डपे समागच्छति, तत्रापि दाक्षिणात्यमुखमंडपवत् सर्वं पश्चिमोत्तरपूर्वद्वारक्रमेण कृत्वा दक्षिणस्तम्भपंक्त्या विनिर्गत्य सिद्धायतनस्योत्तरद्वारे समागत्य पूर्ववदर्चनिकां कृत्वा पूर्वद्वारेण समागच्छति, तत्रार्चनिकां पूर्ववत् कृत्वा पूर्वस्य मुखमण्डपस्य दक्षिणद्वारे पश्चिमस्तम्भपंक्त्योत्तरपूर्वद्वारेषु क्रमेणोक्तरूपां पूजां विधाय पूर्वद्वारेण विनिर्गत्य पूर्वप्रेक्षागृहमण्डपे समागत्य पूर्ववत् द्वारमध्यभागदक्षिणद्वारपश्चिमस्तम्भपंक्त्योत्तरपूर्वद्वारेषु पूर्ववदर्चनिकां करोति, ततः पूर्वप्रकारेणैव क्रमेण चैत्यस्तूपजिनप्रतिमाचैत्यवृक्षमहेन्द्रध्वजनंदापुष्करिणीनां, ततः सभायां सुधर्मायां पूर्वद्वारेण प्रविशति, प्रविश्य यत्रैव मणिपीठिका तत्राऽऽगच्छति, आलोके च जिनप्रतिमानां प्रणामं करोति, कृत्वा यत्र माणकचैत्यस्तम्भो यत्र वज्रमया गोलवृत्ताः समुद्गकाः तत्रागत्य समुद्गकान् गृह्णाति, गृहीत्वा विघाटयति विघाट्य च लोमहस्तकं परामृश्य तेन प्रमार्ज्योदकधारया अभ्युक्ष्य गोशीर्षचन्दनेनानुलिम्पति, ततः प्रधानैर्गंधमाल्यैरर्चयति धूपं ददाति, तदनन्तरं भूयोऽपि वज्रमयेषु गोलवृत्तसमुद्गेषु प्रतिनिक्षिपति, प्रतिनिक्षिप्य

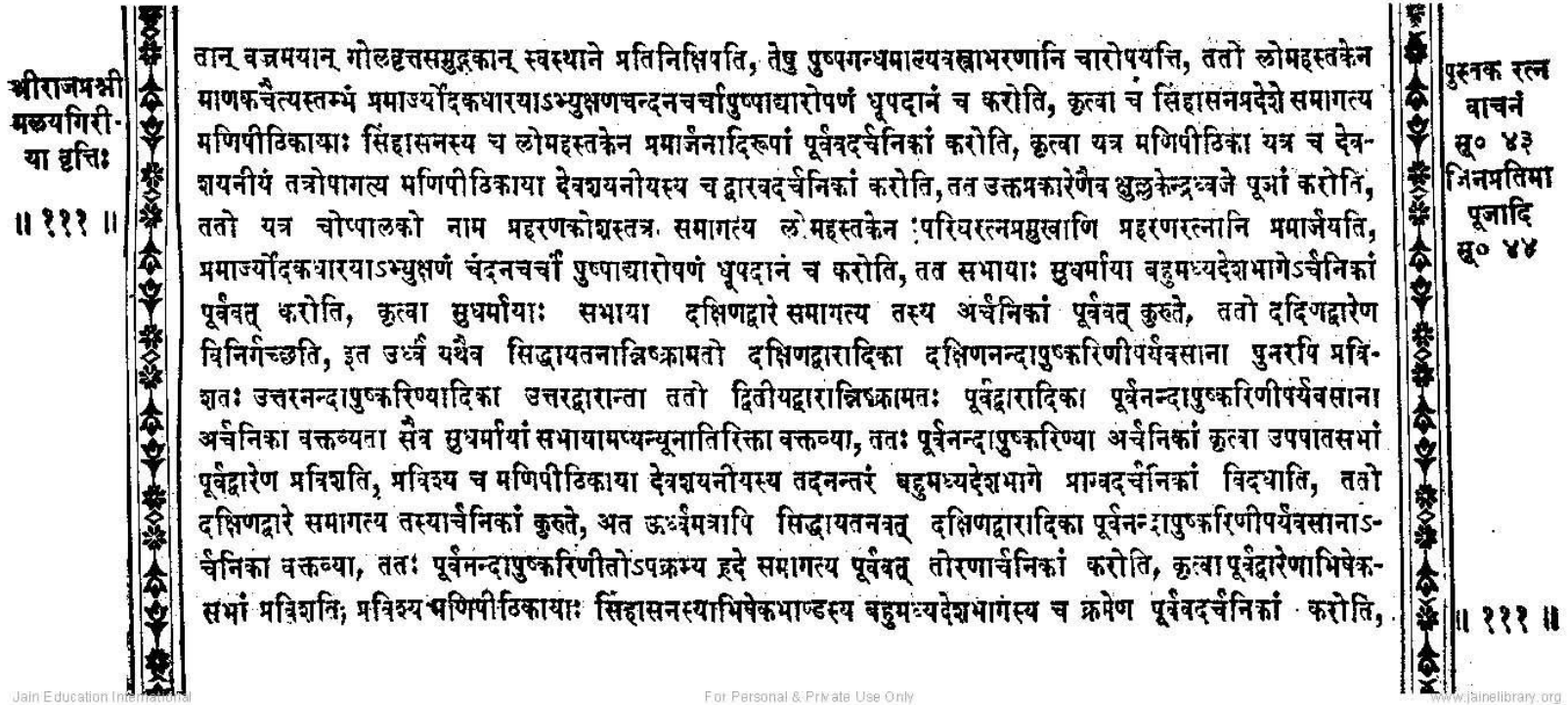
Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शाश्वत जिन-प्रतिमाया: पूजनं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [४३-४४]

दीप अनुक्रम [४३-४४]



श्रीराजप्रश्नीयमलयगिरीया वृत्तिः

॥ १११ ॥

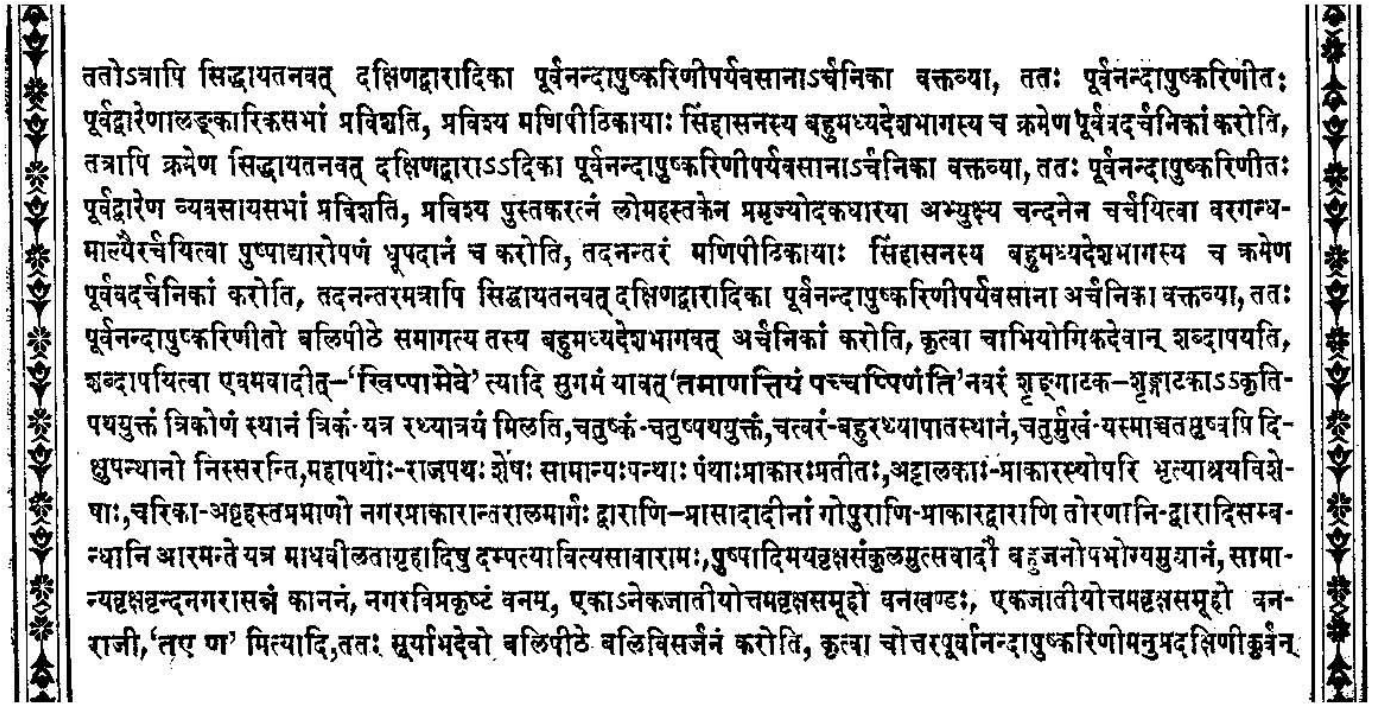
तान् वज्रमयान् गोलवृत्तसमुद्गकान् स्वस्थाने प्रतिनिक्षिपति, तेषु पुष्पगन्धमाल्यवस्त्राभरणानि चारोपयति, ततो लोमहस्तकेन माणवकचैत्यस्तम्भं प्रमार्ज्योदकधारयाऽभ्युक्षणचन्दनचर्चापुष्पाद्यारोपणं धूपदानं च करोति, कृत्वा च सिंहासनप्रदेशे समागत्य मणिपीठिकायाः सिंहासनस्य च लोमहस्तकेन प्रमार्जनादिरूपां पूर्ववदर्चनिकां करोति, कृत्वा यत्र मणिपीठिका यत्र च देवशयनीयं तत्रोपागत्य मणिपीठिकाया देवशयनीयस्य च द्वारवदर्चनिकां करोति, तत उक्तमकारेणैव क्षुल्लकेन्द्रध्वजे पूजां करोति, ततो यत्र चोप्पालको नाम प्रहरणकोशस्तत्र समागत्य लोमहस्तकेन परियरत्नप्रमुखानि प्रहरणरत्नानि प्रमार्जयति, प्रमार्ज्योदकधारयाऽभ्युक्षणं चंदनचर्चां पुष्पाद्यारोपणं धूपदानं च करोति, तत सभायाः सुधर्मायाः बहुमध्यदेशभागेऽर्चनिकां पूर्ववत् करोति, कृत्वा सुधर्मायाः सभाया दक्षिणद्वारे समागत्य तस्य अर्चनिकां पूर्ववत् कुरुते, ततो दक्षिणद्वारेण विनिर्गच्छति, इत उर्ध्वं यथैव सिद्धायतनान्निष्क्रामतो दक्षिणद्वारादिका दक्षिणनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना पुनरपि प्रविशतः उत्तरनन्दापुष्करिण्यादिका उत्तरद्वारान्ता ततो द्वितीयद्वारान्निष्क्रामतः पूर्वद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना अर्चनिका वक्तव्यता सैव सुधर्मायां सभायामप्यन्यूनातिरिक्ता वक्तव्या, ततः पूर्वनन्दापुष्करिण्या अर्चनिकां कृत्वा उपपातसभां पूर्वद्वारेण प्रविशति, प्रविश्य च मणिपीठिकाया देवशयनीयस्य तदनन्तरं बहुमध्यदेशभागे प्राग्वदर्चनिकां विदधाति, ततो दक्षिणद्वारे समागत्य तस्यार्चनिकां कुरुते, अत ऊर्ध्वमत्रापि सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसानाऽर्चनिका वक्तव्या, ततः पूर्वनन्दापुष्करिणीतोऽपक्रम्य ह्रदे समागत्य पूर्ववत् तोरणार्चनिकां करोति, कृत्वा पूर्वद्वारेणाभिषेकसभां प्रविशति; प्रविश्य मणिपीठिकायाः सिंहासनस्याभिषेकभाण्डस्य बहुमध्यदेशभागस्य च क्रमेण पूर्ववदर्चनिकां करोति,

पुस्तक रत्न वाचनं सू० ४३ जिनप्रतिमा पूजादि सू० ४४

॥ १११ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शाश्वत जिन-प्रतिमाया: पूजनं



ततोऽत्रापि सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसानाऽर्चनिका वक्तव्या, ततः पूर्वनन्दापुष्करिणीतः पूर्वद्वारेणालङ्कारिकसभां प्रविशति, प्रविश्य मणिपीठिकायाः सिंहासनस्य बहुमध्यदेशभागस्य च क्रमेण पूर्ववदर्चनिकां करोति, तत्रापि क्रमेण सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वाराऽऽदिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसानाऽर्चनिका वक्तव्या, ततः पूर्वनन्दापुष्करिणीतः पूर्वद्वारेण व्यवसायसभां प्रविशति, प्रविश्य पुस्तकरत्नं लोमहस्तकेन प्रमृज्योदकधारया अभ्युक्ष्य चन्दनेन चर्चयित्वा वरगन्ध-मालयैरर्चयित्वा पुष्पाद्यारोपणं धूपदानं च करोति, तदनन्तरं मणिपीठिकायाः सिंहासनस्य बहुमध्यदेशभागस्य च क्रमेण पूर्ववदर्चनिकां करोति, तदनन्तरमत्रापि सिद्धायतनवत् दक्षिणद्वारादिका पूर्वनन्दापुष्करिणीपर्यवसाना अर्चनिका वक्तव्या, ततः पूर्वनन्दापुष्करिणीतो बलिपीठे समागत्य तस्य बहुमध्यदेशभागवत् अर्चनिकां करोति, कृत्वा चाभियोगिकदेवान् शब्दापयति, शब्दापयित्वा एवमवादीत्–'खिप्पामेवे' त्यादि सुगमं यावत् 'तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति' नवरं शृङ्गाटक–शृङ्गाटकाऽऽकृति-पथयुक्तं त्रिकोणं स्थानं त्रिकं यत्र रथ्यात्रयं मिलति, चतुष्कं-चतुष्पथयुक्तं, चत्वरं-बहुरथ्यापातस्थानं, चतुर्मुखं-यस्माच्चतसृष्वपि दि-क्षुपन्थानो निस्सरन्ति, महापथोः-राजपथः शेषः सामान्यःपन्थाः पंथाःप्राकारःमतीतः, अट्टालकाः-प्राकारस्योपरि भृत्याश्रयविशे-षाः, चरिका-अष्टहस्तप्रमाणो नगरप्राकारान्तरालमार्गः द्वाराणि–प्रासादादीनां गोपुराणि-प्राकारद्वाराणि तोरणानि-द्वारादिसम्ब-न्धानि आरमन्ते यत्र माधवीलतागृहादिषु दम्पत्यावित्यसावारामः, पुष्पादिमयवृक्षसंकुलमुत्सवादौ बहुजनोपभोग्यमुद्यानं, सामा-न्यवृक्षवृन्दनगरासन्नं काननं, नगरविप्रकृष्टं वनम्, एकाऽनेकजातीयोत्तमवृक्षसमूहो वनखण्डः, एकजातीयोत्तमवृक्षसमूहो वन-राजी, 'तए णं' मित्यादि, ततः सूर्याभदेवो बलिपीठे बलिविसर्जनं करोति, कृत्वा चोत्तरपूर्वानन्दापुष्करिणीमनुप्रदक्षिणीकुर्वन्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

शाश्वत जिन-प्रतिमाया: पूजनं

पूर्वतोरणेनानुप्रविशति, अनुप्रविश्य च हस्तौ पादौ प्रक्षालयति प्रक्षाल्य नन्दापुष्करिण्याः प्रत्यवतीर्य सामानिकादिपरिवारसहितः सर्वर्ध्या यावद् दुन्दुभिनिर्घोषनादितरवेण सूर्याभविमाने मध्यंमध्येन समागच्छन् यत्र सुधर्मा सभा तत्रागत्य तां पूर्वद्वारेण प्रविशति, प्रविश्य मणिपीठिकाया उपरि सिंहासने पूर्वाभिमुखो निषीदति ॥ (सू० ४४) ॥

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स अवरुत्तरेणं उत्तरपुरच्छिमेणं दिसिभाएणं चत्तारि य सामाणियसाहस्सीओ चउसु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति,तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पुरत्थिमिल्लेणं चत्तारि अग्गमहिसीओ चउसु भद्दासणेसु निसीयंति,तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणपुरत्थिमेणं अब्भितरियपरिसाए अट्ठ देवसाहस्सीओ अट्ठसु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति,तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणेणं मज्झिमाए परिसाए दस देवसाहस्सीओ दससु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति,तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरियाए परिसाए बारस देवसाहस्सीतो बारससु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति, तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पच्चत्थिमेणं सत्तअणियाहिवइणो सत्तहिं भद्दासणेहिं णिसीयंति, तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स चउद्दिसिं सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ सोलसहिं भद्दासणसाहस्सीहिं णिसीयंति,तंजहा–पुरत्थिमिल्लेणं चत्तारि साहस्सीओ दाहिणेणं चत्तारि साहस्सीओ पच्चत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ उत्तरेणं चत्तारि साहस्सीओ, ते णं आयरक्खा सन्नद्धबद्धवम्मियकवया उप्पीलियसरासणपट्टिया पिणद्धगेविज्जा बद्धआवि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [४५]

दीप अनुक्रम [४५]



ऽविमलवरचिंधपट्टा गहियाउहपहरणा तिणयाणि तिसंधियाइं वयरामयाइं कोडीणि धणूइं पगिज्झ पडियाइयकंडकलावा णीलपाणिणो पीतपाणिणो रत्तपाणिणो चावपाणिणो चारुपाणिणो चम्मपाणिणो दंडपाणिणो खग्गपाणिणो पासपाणिणो नीलपीयरत्तचावचारुचम्मदंडखग्गपासधरा आयरक्खा रक्खोवगया गुत्ता गुत्तपालिया जुत्ता जुत्तपालिया पत्तेयं २ समयओ विणयओ किंकरभूया चिट्ठंति ॥ (सू० ४५) ॥

ततः प्रागुपदर्शितसिंहासनक्रमेण सामानिकादय उपविशन्ति, 'ते णं आयरक्खा' इत्यादि, ते आत्मरक्षाः सन्नद्धबद्धवर्मितकवचा उत्पीडितशरासनपट्टिकाः पिनद्धग्रैवेया-ग्रैवेयकाभरणाः आविद्धविमलवरचिह्नपट्टा गृहीताऽऽयुधप्रहरणास्त्रिनतानि आदिमध्यावसानेषु नमनभावात् त्रिसन्धीनि आदिमध्यावसानेषु संधिभावात् वज्रमयकोटीनि धनूंषि अभिगृह्य 'परियाइयकंडकलावा' इति पर्याप्तकाण्डकलापा विचित्रकाण्डकलापयोगात्, केऽपि 'नीलपाणिणो' इति नीलः काण्डकलाप इति गम्यते पाणौ येषां ते नीलपाणयः, एवं पीतपाणयो रक्तपाणयः चापं पाणौ येषां ते चापपाणयः चारुःप्रहरणविशेषः पाणौ येषां ते चारुपाणयः चर्म अंगुष्ठांगुल्योराच्छादनरूपं येषां ते चर्मपाणयः, एवं दण्डपाणयः खड्गपाणयः पाशपाणयः, एतदेव व्याचष्टे–यथायोगं नीलपीतरक्तचापचारुचर्मदंडखड्गपाशधरा आत्मरक्षाः रक्षामुपगच्छंति तदेकचित्ततया तत्परायणा वर्त्तन्ते इति रक्षोपगाः गुप्ता न स्वामिभेदकारिणः,तथा गुप्त-पराप्रवेश्या पालिः–सेतुर्येषां ते गुप्तपालिकाः,तथा युक्ताः-सेवकगुणोपेततया उचितास्तथा युक्ताः–परस्परसंबद्धा नतु बृहदन्तरा पालिर्येषां ते युक्तपालिकाः, समयतः–आचारतः



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [४५]

दीप अनुक्रम [४५]

आचारेणेत्यर्थः विनयतश्च किंकरभूता इव तिष्ठंति, न खलु ते किंकराः, किन्तु तेऽपि मान्याः, तेषामपि पृथगासननिपातनात्, केवलं ते तदानीं निजाचारपरिपालनतो विनीतत्वेन च तथाभूता इव तिष्ठंति, तत उक्तं किंकरभूता इवेति, 'तेहिं चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं, इत्यादि सुगमं, यावत् 'दिव्वाइं भोगभोगाइं भुंजमाणे विहरति' इति ॥ (सू० ४५)

सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ?, गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगाणं देवाणं केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ?, गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता, महिड्ढीए महज्जुत्तीए महब्बले महायसे महासोक्खे महाणुभागे सूरियाभे देवे, अहो णं भंते ! सूरियाभे देवे महिड्ढीए जाव महाणुभागे ॥ (सू० ४६) ॥ सूरियाभे णं भंते ! देवे णं सा दिव्वा देविड्ढी सा दिव्वा देवजुई से दिव्वे देवाणुभागे किण्णा लद्धे किण्णा पत्ते किण्णा अभिसमन्नागए ? पुव्वभवे के आसी ? किंनामए वा को वा गुत्तेणं ? कयरंसि वा गामंसि वा जाव सन्निवेसंसि वा ? किं वा दच्चा किं वा भोच्चा किं वा किच्चा किं वा समायरित्ता कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मियं सुवयणं सुच्चा निसम्म ? जण्णं सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी जाव देवाणुभागे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए ॥ (सू० ४७) ॥ गोयमाइं ! समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी–एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे केयइअद्धे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

नामे जणवए होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे, तत्थ णं केइयअद्धे जणवए सेयविया णामं नगरी होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा। तीसे णं सेयवियाए नगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे एत्थ णं मिगवणे णामं उज्जाणे होत्था, रम्मे नंदणवणप्पगासे सव्वोउयफलसमिद्धे सुभ-सुरभिसीयलाए छायाए सव्वओ चेव समणुबद्धे पासादीए जाव पडिरूवे, तत्थ णं सेयवियाए णगरीए पएसी णामं राया होत्था, महयाहिमवंत जाव विहरइ अधम्मिए अधम्मिट्ठे अधम्मक्खाई अधम्माणुए अधम्मपलोई अधम्मपजणणे अधम्मसीलसमुयारे अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे हण-छिंदभिंदापवत्तए चंडे रुद्दे खुद्दे लोहियपाणी साहस्सीए उक्कंचणवंचणमायानियडिकूडकवडसायि-संपओगबहुले निस्सीले निव्वए निग्गुणे निम्मेरे निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे बहूणं दुपयचउप्पयमि-यपसुपक्खीसिरिसवाणं घायए वहाए उच्छेयणाए अधम्मकेऊ समुट्ठिए, गुरूणं णो अब्भुट्ठेति णो विणयं पउंजइ, समण० सयस्सवि य णं जणवयस्स णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ ॥ (सू० ४८)॥

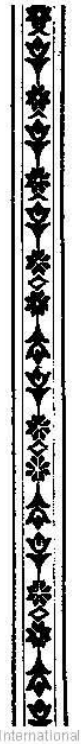
'सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं काल' मित्यादि सुगमं ॥ (सू० ४६) ॥ 'गामंसि वे'ति ग्रसते बुद्ध्यादीन् गुणान् यदिवा गम्यः शास्त्रप्रसिद्धानामष्टादशानां कराणामिति ग्रामस्तस्मिन् 'नगरंसि वे' ति न विद्यते करो यस्मिन् तन्नगरं तस्मिन् निगमः–प्रभूततरवणिग्वर्गावासः राजाधिष्ठानं नगरं राजधानी पांशुप्राकारनिबद्धं खेटं क्षुल्लक-प्राकारवेष्टितं कर्वटं अर्धगव्यूततृतीयान्तर्ग्रामान्तररहितं मंडपं, 'पट्टणंसि वे' ति पट्टनं–जलस्थलनिर्गमप्रवेशः, उक्तं च–

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

" पट्टनं शकटैर्गम्यं, घोटकैर्नौभिरेव च । नौभिरेव तु यद् गम्यं, पत्तनं तत्प्रचक्षते ॥ १ ॥" द्रोणमुखं-जलनिर्गमप्रवेशं, पत्तनमित्यर्थः, आकरो–हिरण्याकरादि आश्रमः–तापसावसथोपलक्षित आश्रयविशेषः संबाधो–यात्रासमागतप्रभूतजननिवेशः सन्निवेशः–तथाविधमाकृतलोकनिवासः ' किं वा दच्चे ' त्यादि, दत्त्वा अशनादि भुक्त्वा अन्तप्रान्तादि कृत्वा तपःशुभध्यानादि समाचर्य प्रत्युपेक्षाप्रमार्जनादि (॥ सू० ४७ ॥) ' केइयअद्धे जणवए होत्था ' केकयीनामार्द्धं–अर्धमात्रमार्यत्वेनेति गम्यते, स हि परिपूर्णो जनपदः, केवलमर्द्धमार्यमर्द्धं चानार्यमार्येण चेह प्रयोजनमित्युर्द्धमित्युक्तं, जनपद आसीत्, ' सद्दोउयफलसमिद्धे रम्मे नंदणवनप्पकासे ' इत्यादि, सर्वर्तुकैः–सर्वर्तुभाविभिः पुष्पैः फलैश्च समृद्धिमत्, एवं रम्यं–रमणीयं नन्दनवनप्रतिमं शुभसुरभिशीतलया छायया सर्वतः समनुबद्धं ' पासाईए ' इत्यादि पदचतुष्टयं पूर्ववत् । ' महया हिमवंते ' त्यादि राजवर्णनं प्राग्वत्, ' धम्मिए ' इति धर्मेण चरति धार्मिको न धार्मिकः अधार्मिकः, तत्र सामान्यतोऽप्यधार्मिकः स्यादत आह–अधर्मिष्ठः–अतिशयेनाधर्मवान् अत एवाधर्मेण ख्यातिर्यस्यासावधर्मख्यातिः ' अधम्माणुए ' इति अधर्ममनुगच्छति अधर्मानुगतः तथा अधर्ममेव प्रलोकते–परिभावयतीत्येवंशीलोऽधर्मप्रलोकी ' अधम्मप्पजणणे ' इति अधर्मं प्रकर्षेण जनयति–उत्पादयति लोकानामपीत्यधर्मप्रजननः अधर्मशीलसमुदाचारोन धर्मात् किमपि भवति तस्यैवाभावादित्येवमधर्मेणैव वृत्ति–सर्वजन्तूनां यापनां कल्पयन् ' हणछिंदभिंदावत्तए ' जहि छिंदि भिंदि ' इत्येवं प्रवर्त्तकोऽत एव लोहितपाणिः–मारयित्वा हस्तयोरप्यप्रक्षालनात् अत एव पापः पापकर्मकारित्वात् चण्डः तीव्रकोपावेशात् रौद्रो निस्तुंशकर्मकारित्वात् साहसिकः परलोकभयाभावात् ' उक्कंचणवंचण-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अत्र सूर्याभदेवस्य प्रकरणं परिसमाप्त:



मायानियडिकूडकवडसाइसंपओगबहुले ' इति ऊर्ध्वं कंचनमुत्कंचनं-हीनगुणस्य गुणोत्कर्षप्रतिपादनं वंचनं-प्रतारणं माया-परवंचनबुद्धिः निकृतिः–वकट्टया गलकर्त्तकानामिवावस्थानं कूटप–अनेकेषां मृगादीनां ग्रहणाय नानाविधप्रयोगकरणं कपटं-नेपथ्यभाषाविपर्ययकरणं एभिरुत्कञ्चनादिभिः सहातिशयेन यः संप्रयोगो–योगस्तेन बहुलः, अथवा सातिसंप्रयोगो नाम यः सातिशयेन द्रव्येण कस्तूरिकादिना अपरस्य संप्रयोगः, उक्तं च सूत्रकृताङ्गचूर्णिकृता–" सो होइ साइजोगो दवं ज छुहिय अन्नदवेसुं । दोसगुणा वयणेसु य अत्थविसंवायणं कुणइ ॥ १ ॥ " इति, तत्संप्रयोगे बहुलः, अपरे व्याख्यानयन्ति–उत्कंचनं नाम उत्कोचा, निकृतिः–वञ्चनप्रच्छादनकर्म सातिः–विश्रम्भः, एतत्संप्रयोगबहुलः, शेषं तथैव, निःशीलो–ब्रह्मचर्यपरिणामाभावात् निर्व्रतो-हिंसादिविरत्यभावात् निर्गुणः–क्षान्त्यादिगुणाभावात् निर्मर्यादः-परस्त्रीपरिहारादिमर्यादाविलोपित्वात् निष्प्रत्याख्यानपोषधोपवासः-प्रत्याख्यानपरिणामपर्वदिवसोपवासपरिणामाभावात्, बहूनां द्विपदचतुष्पदमृगपशुपक्षिसरिसृपानां घाताय–विनाशाय वधाय–ताडनाय उच्छादनाय-निर्मूलाभावीकरणाय अधर्म्मरूपः केतुरिव–ग्रहविशेष इव समुत्थितः, न च गुरूणां–पित्रादीनामागच्छतानामभ्युत्तिष्ठति-अभिमुखमूर्ध्वं तिष्ठति, न च विनयं प्रयुंक्ते, नापि श्रमणब्राह्मणभिक्षुकाणामभ्युत्तिष्ठति, न च विनयं प्रयुंक्ते, नापि स्वकस्यापि–आत्मीयस्यापि जनपदस्यापि सम्यक्करभरवृत्तिं प्रवर्त्तयति ॥ (सू०४८) ॥

तस्स णं पएसिस्स रन्नो सूरियकंता नाम देवी होत्था,सुकुमालपाणिपाया धारिणीवण्णओ, पएसिणा रन्ना सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्दे रूवे जाव विहरइ ॥(सू० ४९)॥ तस्स णं



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अथ 'प्रदेशीराजन्' प्रकरणं आरभ्यते

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [४९-५०]

दीप अनुक्रम [४९-५०]

पएसिस्स रण्णो जेट्ठे पुत्ते सूरियकंताए देवीए अत्तए सूरियकंते नामं कुमारे होत्था, सुकुमालपाणिपाए जाव पडिरूवे। से णं सूरियकंते कुमारे जुवरायावि होत्था, पएसिस्स रन्नो रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च अंतेउरं च जणवयं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे २ विहरइ ॥ (सू० ५०) ॥

'तस्स णं पएसिस्स रन्नो सूरीकंता नाम देवी होत्था,सुकुमालपाणिपाया'इत्यादि देवीवर्णनं प्राग्वत् । प्रदेशिना राज्ञा सार्द्धमनुरक्ता अविरक्ता-कथञ्चिद्विप्रियकरणेऽपि विरागाभावात् । कुमारवर्णनं 'सुकुमालपाणिपाए' इत्यादि जाव 'सुन्दरे' इति, अत्र यावत्करणात् 'अहीणपंचिंदियसरीरे लक्खणवंजणगुणोववेए माणुम्माणपमाणपडिपुण्णसुजायसव्वंगसुन्दरंगे ससिसोमाकारे कंते पियदंसणे सुरूवे' इति द्रष्टव्यं, एतच्च देवीवर्णकवत् स्वयं परिभावनीयं, स च सूर्यकान्तो नाम कुमारो युवराजा अभूत्, प्रदेशिनो राज्ञो राज्यं-राष्ट्रादिसमुदायात्मकं राष्ट्रं च-जनपदं च बलं च-हस्त्यादिसैन्यं वाहनं च-वेगसरादिकं कोशं च-भाण्डागारं कोष्ठागारं च-धान्यगृहं पुरं च-नगरमन्तःपुरं च-अवरोधं चात्मनैव-स्वयमेव समुत्प्रेक्षमाणो-व्यापारयन् ॥ (सू० ४९-५०) ॥

तस्स णं पएसिस्स रन्नो जेट्ठे भाउयवयंसए चित्ते णामं सारही होत्था अड्ढे जाव बहुजणस्स अपरिभूए सामदंडभेयउवप्पयाणअत्थसत्थईहामइविसारए उप्पत्तियाए वेणइयाए कम्मयाए पारिणामियाए चउव्विहाए बुद्धीए उववेए, पएसिस्स रण्णो बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुंबेसु

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधित: मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्ति:

प्रत सूत्रांक [५१]

दीप अनुक्रम [५१]

य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य ववहारेसु य निच्छएसु य आपुच्छणिज्जे मेढी पमाणं आहारे आलंबणं चक्खू मेढिभूए पमाणभूए आहारभूए आलंबणभूए सव्वट्ठाणसव्वभूमियासु लद्धपच्चए विदिण्णविचारे रज्जधुराचिंतए आवि होत्था ॥ (सू० ५१ ॥

'चित्ते नाम सारही होत्था अड्ढे दित्त' इति आद्यः–समृद्धो दीप्तः–कान्तिमान् क्तिः–मतीतोऽयवत्करणात् 'विउलभवणसयणासणजाणवाहणाइण्णे बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूते बहुधणबहुजायरूवरयए विच्छड्डियपउरभत्तपाणे' इति परिग्रहः, अस्य व्याख्या राजवर्णकवत् परिभावनीया, 'बहुजणस्स अपरिभूए' राजमान्यत्वात् स्वयं च जात्यक्षत्रियत्वात्, 'सामभेयदंडउवप्पयाणअत्थसत्थईहामइविसारए' इति, सामभेददण्डोपप्रदानलक्षणानां नीतीनामर्थशास्त्रस्य-अर्थोपायव्युत्पादनग्रन्थस्य ईहा–विमर्शस्तत्प्रधाना मतिरीहामतिस्तया विशारदो–विचक्षणः सामभेददण्डोपप्रदानार्थशास्त्रेहामतिविशारदः उत्पत्तिक्या-अदृष्टाश्रुताननुभूतविषयाकस्माद्भवनशीलया वैनयिक्या–विनयलभ्यशास्त्रार्थसंस्कारजन्यया कर्मजया–कृषिवाणिज्यादिकर्मभ्यः समुद्भवया पारिणामिक्या–वयोवयोविपाकजन्यया एवंरूपया चतुर्विधया बुद्ध्या उपपेतः प्रदेशिनो राज्ञो बहुषु कार्येषु–कर्त्तव्येषु कारणेषु–कर्त्तव्योपायेषु कुटुम्बेषु स्वकीयपरकीयेषु विषयभूतेषु मन्त्रेषु–राज्यादिचिन्तारूपेषु गुह्येषु–बहिर्जनाप्रकाशनीयेषु रहस्येषु–तेष्वेवापवक्षीणेषु 'निश्चयेषु' निश्चीयंते इति निश्चयाः–अवश्यकरणीयाः कर्त्तव्यविशेषास्तेषु व्यवहारेषु–आवाहनविसर्जनादिरूपेषु आपृच्छनीयः–सकृत् पृच्छनीयः प्रतिपृच्छनीयः–असकृत् पृच्छनीयः, किमिति?, यतोऽसौ 'मेढी' इति मेढी-खलकमध्यवर्तिस्थूणा यस्यां निर्यामका गोपंक्तिर्धान्यं ग्राहयति तद्वद् यमालम्ब्य सकलं मन्त्रिमण्डलं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५१]

दीप अनुक्रम [५१]

मन्त्रणीयान् अर्थान् धान्यमिव विवेचयति स मेढिः,तथा प्रमाणं–प्रत्यक्षादि तद्वत् यस्तद्दृष्टानामर्थानामन्यभिचारित्वेन तत्रैव मन्त्रिणां प्रवृत्तिनिवृत्तिभावात् स प्रमाणः,आधार आधेयस्येव सर्वकार्येषु लोकानामुपकारित्वात्,तथा'आलम्बनं' रज्ज्वादि तद्वत् आपदुत्तार्त्तादिनिस्तारकत्वात् आलम्बनं,तथा चक्षुः–लोचनं तद्वल्लोकस्य यो विविधकार्येषु प्रवृत्तिनिवृत्तिविषयदर्शकः स चक्षुः,एतदेव प्रपञ्चयति–' मेढिभूए ' इत्यादि, अत्र भूतशब्द औपम्यार्थः, मेढिसदृश इत्यर्थः, 'सव्वट्ठाणसव्वभूमियासु लब्धपच्चए' इति, सर्वेषु स्थानेषु–कार्येषु संधिविग्रहादिषु सर्वासु भूमिकासु–मन्त्र्यमात्यादिस्थानरूपासु लब्धः-उपलब्धः प्रत्ययः–प्रतीतिः अविसंवादवचनता यस्य स तथा, 'विइण्णविचारो' इति वितीर्णो–राज्ञाऽनुज्ञातो विचारः-अवकाशो यस्य विश्वसनीयत्वात् स वितीर्णविचारः सर्वकार्यादिष्विति प्रकृतं, किं बहुना ?–राज्यधुराचिन्तकश्चापि–राज्यनिर्वाहकश्चाप्यभवत् ॥(सू०५१)॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं कुणाला नाम जणवए होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे, तत्थ णं कुणालाए जणवए सावत्थी नाम नयरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा । तीसे णं सावत्थीए णगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए कोट्ठए नामं चेइए होत्था, पोराणे जाव पासादीए ४,तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पएसिस्स रन्नो अंतेवासी जियसत्तू नामं राया होत्था,महयाहिमवंत जाव विहरइ । तए णं से पएसी राया अन्नया कयाइ महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं सज्जावेइ, सज्जावित्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छ णं चित्ता ! तुमं सावत्थिं नगरिं जियसत्तुस्स रण्णो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि, जाइं तत्थ रायक-

॥११६॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५२]

दीप अनुक्रम [५२]

ज्ञाणि य रायकिच्चाणि य रायनीतीओ य रायववहारा य ताइं जियसत्तुणा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे विहराहित्तिकट्टु विसज्जिए । तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठ जाव पडिसुणेत्ता तं महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ, पएसिस्स रण्णो जाव पडिणिक्खमइ २ त्ता सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति उवागच्छित्ता तं महत्थं जाव पाहुडं ठवेइ, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! सच्छत्तं जाव चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सच्छत्तं जावजुद्धसज्जं चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेन्ति, तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति, तए णं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाण अंतिए एयमट्ठं जाव हियए ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सन्नद्धबद्धवम्मियकवए उप्पीलियसरासणपट्टिए पिणिद्धगेविज्जे बद्धआविद्धविमलवरचिंधपट्टे गहियाउहपहरणे तं महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ २ जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ २ चाउग्घंटं आसरहं दुरूहेति,बहुहिं पुरिसेहिं सन्नद्ध जाव गहियाउहपहरणेहिं सद्धिं संपरिवुडे सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरेज्जमाणेणं२ महया भडचडगररहपहकरविंदपरिक्खित्ते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ सेयवियं नगरिं मज्झमज्झेणं णिग्गच्छइ २ त्ता सुहेहिं वासेहिं पायरासेहिं नाइविकिट्ठेहिं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

अंतरा वासेहिं वसमाणे २ केइयअद्धस्स जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कुणालाजणवए जेणेव सावत्थी नयरी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ, जेणेव जियसत्तुस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तुरए निगिण्हइ२ त्ता रहं ठवेति २ त्ता रहाओ पच्चोरुहइ, तं महत्थं जाव पाहुडं गिण्हइ २ त्ता जेणेव अब्भिंतरिया उवट्ठाणसाला जेणेव जियसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता जियसत्तुं रायं करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ २ त्ता तं महत्थं जाव पाहुडं उवणेइ। तए णं से जियसत्तू राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं जाव पाहुडं पडिच्छइ २ चित्तं सारहिं सक्कारेइ २ सम्माणेति२ पडिविसज्जेइ रायमग्गमोगाढं च से आवासं दलयइ। तए णं से चित्ते सारही विसज्जिते समाणे जियसत्तुस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ२ त्ता जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तुरए निगिण्हइ २ त्ता रहं ठवेइ२ रहाओ पच्चोरुहइ,ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिते अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जिमियभुत्तुत्तरागएऽवि य णं समाणे पुव्वावरण्हकालसमयंसि गंधव्वेहि य णाडगेहि य उवनच्चिज्जमाणे २ उवगाइज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २ इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५२]

दीप अनुक्रम [५२]



स्सए कामभोए पच्चणुभवमाणे विहरइ ॥ (सू० ५२) ॥

'पएसिस्स रण्णो अंतेवासी' ति अन्ते–समीपे वसतीत्येवंशीलोऽन्तेवासी–शिष्यः, अंतेवासीव सम्यगाज्ञाविधायी इति भावः । 'सन्नद्धबद्धवम्मियकवए' इति कवचं-तनुत्राणं वर्म्म–लोहमयकत्तलकादिरूपं संजातमस्येति वर्मितं, सन्नद्धं शरीरारोपणात् बद्धं गाढन्तरबन्धनेन बन्धनात् वर्म्मितं कवचं येन स सन्नद्धबद्धवर्म्मितकवचः, 'उप्पीलियसरासणपट्टिए' इति उत्पीडिता–गाढीकृता शरा अस्यन्ते–क्षिप्यन्ते अस्मिन्निति शरासनं–इषुधिस्तस्य पट्टिका पिणद्धा येन स उत्पीडितशरासनपट्टिकः 'पिणद्धगेवेज्जविमलवरचिंधपट्टे' इति पिनद्धं ग्रैवेयकं–ग्रीवाऽऽभरणं विमलवरचिह्नपट्टश्च येन स पिनद्धग्रैवेयकविमलवरचिन्हपट्टः 'गहियाउहपहरणे' इति आयुध्यतेऽनेनेत्यायुधं–खेटकादि प्रहरणम्–असिकुन्तादि गृहीतान्यायुधानि प्रहरणानि च येन स गृहीतायुधप्रहरणः ॥ (सू० ५२) ॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे जातिसंपण्णे कुलसंपण्णे बलसंपण्णे रूवसंपण्णे विणयसंपण्णे नाणसंपण्णे दंसणसंपन्ने चरित्तसंपण्णे लज्जासंपण्णे लाघवसंपण्णे लज्जालाघवसंपन्ने ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे जियणिद्दे जितिंदिए जियपरीसहे जीवियासमरणभयविप्पमुक्के वयप्पहाणे गुणप्पहाणे करणप्पहाणे चरणप्पहाणे निग्गहप्पहाणे अज्जवप्पहाणे मद्दवप्पहाणे लाघवप्पहाणे खंतिप्पहाणे मुत्तिप्पहाणे विज्जप्पहाणे मंतप्पहाणे बंभप्पहाणे नयप्पहाणे नियमप्पहाणे सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

पार्श्वनाथस्य शिष्य-श्री केशिकुमार-श्रमणस्य परिचयं

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

दंसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगए पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव सावत्थी नयरी जेणेव कोट्ठए चेइए तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सावत्थीए नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हइ उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥ (सू० ५३) ॥

'केसीनामं कुमारसमणे जाइसंपन्ने' इत्यादि, जातिसंपन्नः–उत्तममातृपक्षयुक्त इति प्रतिपत्तव्यम्, अन्यथा मातृपितृपक्षसंपन्नत्वं पुरुषमात्रस्यापीति नास्योत्कर्षः कश्चिदुक्तो भवति, उत्कर्षाभिधानार्थं चास्य विशेषणकलापोपादानं चिकीर्षितमिति, एवं कुलसंपन्नोऽपि नवरं कुलं–पितृपक्षः बलं–संहननविशेषसमुत्थः प्राणः रूपम्–अनुपमं शरीरसौन्दर्यं विनयादीनि प्रतीतानि, नवरं लाघवं–द्रव्यतोऽल्पोपधित्वं भावतो गौरवत्रयत्यागः 'लज्जा' मनोवाक्कायसंयमः 'ओयंसी' ति ओजो–मानसोऽवष्टम्भस्तद्वान् ओजस्वी तेजः–शरीरप्रभा तद्वान् तेजस्वी 'वच्चो' वचनं सौभाग्याद्युपेतं यस्यास्ति स वचस्वी अथवा वर्चः–तेजः प्रभाव इत्यर्थस्तद्वान् वर्चस्वी यशस्वी–ख्यातिमान्, इह च विशेषणचतुष्टयेऽप्यनुस्वारः प्राकृतत्वात्, जितक्रोध इत्यादि तु विशेषणसप्तकं प्रतीतं,नवरं क्रोधादिजय उदयप्राप्तक्रोधादिविफलीकरणतोऽवसेयः,तथा जीवितस्य-प्राणधारणस्य आशा–वाञ्छा मरणाद्भयं ताभ्यां विप्रमुक्तो जीविताशामरणभयविप्रमुक्तः, तदुभयोपेक्षक इत्यर्थः, तथा तपसा प्रधानः–उत्तमः शेषमुनिजनापेक्षया तपो वा प्रधानं यस्य स तपःप्रधानः, एवं गुणप्रधान नवरं गुणाः–संयमगुणाः, एतेन च विशेषणद्वयेन तपःसंयमौ पूर्वबद्धाभिनवयोः कर्मणोर्निर्जरानुपादानहेतू मोक्षसाधने मुमुक्षूणामुपादेयौ प्रदर्शितौ,गुणप्राधान्यप्रपञ्चनार्थमेवाह–'करणप्पहाणे'

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५३] दीप अनुक्रम [५३]	पार्श्वनाथस्य शिष्य-श्री केशिकुमार-श्रमणस्य परिचयं

प्रत सूत्रांक [५३]

दीप अनुक्रम [५३]

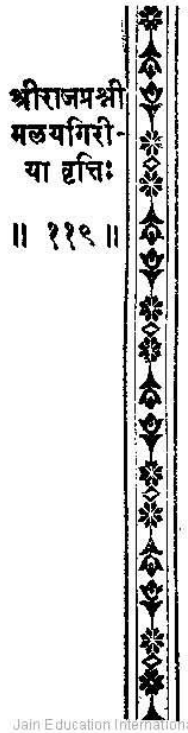
इति यावत् ' चरित्तप्पहाणे ' इति,करणं–पिण्डविशुद्ध्यादि,उक्तञ्च–"पिंडविसोही समिई भावण पडिमा य इंदियनिरोहो । पडिलेहण गुत्तीओ अभिग्गहा चेव करणं तु ॥१॥" चरणं–महाव्रतादि,उक्तञ्च–'वय समणधम्म संजम वेयावच्चं च बंभगुत्तीओ । णाणाइतियं तव कोहनिग्गहाई चरणमेयं ॥ १ ॥ निग्रहः–अनाचारप्रवृत्तेर्निषेधनं । निश्चयः–तत्त्वानां निर्णयः विहितानुष्ठानेष्ववश्यमभ्युपगमो वा आर्जवं–मायानिग्रहो लाघवं–क्रियासु दक्षत्वं क्षान्तिः–क्रोधनिग्रहः गुप्तिः–मनोगुप्त्यादिका मुक्तिः–निर्लोभता विद्या–प्रज्ञप्त्यादिदेवताऽधिष्ठिता वर्णानुपूर्व्यः मन्त्रा–हरिणेगमेष्यादिदेवताधिष्ठिताः अथवा ससाधना विद्या साधनरहिता मन्त्रा, ब्रह्मचर्यं–वस्तिनिरोधः सर्वमेव वा कुशलानुष्ठानं वेदः–आगमो लौकिकलोकोत्तरिककुप्रावचनिकभेदभिन्नः नया–नैगमादयः सप्त प्रत्येकं शतविधा; नियमा–विचित्रा अभिग्रहविशेषाः सत्यं–भूतहितं वचः शौचं–द्रव्यतो निर्लेपता भावतोऽनवद्यसमाचारता ज्ञानं–मत्यादि दर्शनं–सम्यत्वं चारित्रं–बाह्यं सदनुष्ठानं, यच्चेह चरणकरणग्रहणेऽपि आर्जवादिग्रहणं तत् आर्जवादीनां प्राधान्यख्यापनार्थं, ननु जितक्रोधत्वादीनामार्जवादीनां च कः प्रतिविशेषः ?, उच्यते; जितक्रोधादिविशेषणेषु तदुदयविफलीकरणं मार्दवप्रधानादिषु उदयनिरोधः, अथवा यत एव जितक्रोधादिः अत एव क्षमादिप्रधान इत्येवं हेतुहेतुमद्भावाद् विशेषः, तथा ज्ञानसम्पन्न इत्यादौ ज्ञानादिमत्त्वमात्रमुक्तं ज्ञानप्रधान इत्यादौ तद्वतां मध्ये तस्य प्राधान्यमित्येवमन्यत्राप्यपौनरुक्त्यं भावनीयं, तथा ' ओराले ' इति उदारः–स्फाराकारः ' घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी ओच्छूढसरीरे संखित्तविउलतेउलेसे चउद्दसपुव्वी चउनाणोवगए ' इति पूर्ववत्, ' पंचहिं अणगारसएहिं ' इत्यादिकं वाच्यं ॥ (सू० ५३) ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

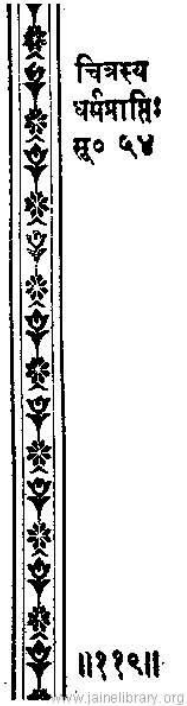
पार्श्वनाथस्य शिष्य-श्री केशिकुमार-श्रमणस्य परिचयं

प्रत सूत्रांक [५४]

दीप अनुक्रम [५४]



. तए णं सावत्थीए नयरीए सिंघाडगतियचउक्कचच्चरचउमुहमहापहपहेसु महया जणसद्देइ वा जण-
वूहेइ वा जणकलकलेइ वा जणबोलेइ वा जणउम्मीइ वा जणउक्कलियाइ वा जणसन्निवाएइ वा जाव
परिसा पज्जुवासइ। तए णं तस्स सारहिस्स तं महाजणसद्दं च जणकलकलं च सुणेत्ता य पासेत्ता य
इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था,किण्णं अज्ज जाव सावत्थीए णयरीए इंदमहेइ वा खंदम-
हेइ वा रुद्दमहेइ वा मउंदमहेइ वा नागमहेइ वा भूयमहेइ वा जक्खमहेइ वा धूभमहेइ वा चेइयमहेइ
वा रुक्खमहेइ वा गिरिमहेइ वा दरिमहेइ वा अगडमहेइ वा नईमहेइ वा सरमहेइ वा सागरमहेइ
वा जं णं इमे बहवे उग्गा भोगा राइन्ना इक्खागा खत्तिया णाया कोरव्वा जाव इब्भा इब्भपुत्ता एहां-
या कयबलिकम्मा जहोववाइए जाव अप्पेगतिया हयगया जाव अप्पेगतिया गयगया पायचारविहा-
रेणं महया२ वंदावंदएहिं निग्गच्छंति,एवं संपेहेइ२ कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–
किण्णं देवाणुप्पिया! अज्ज सावत्थीए नगरीए इंदमहेइ वा जाव सागरमहेइ वा जेणं इमे बहवे उग्गा
भोगा०णिग्गच्छंति ?, तए णं से कंचुईपुरिसे केसिस्स कुमारसमणस्स आगमणगहियविणिच्छए
चित्तं सारहिं करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी–णो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए
णयरीए इंदमहेइ वा जाव सागरमहेइ वा जेणं इमे बहवे जाव विंदाविंदएहिं निग्गच्छंति,एवं खलु
भो देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जे केसीनामं कुमारसमणे जाइसम्पन्ने जाव दूइज्जमाणे इहमागए



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चित्र-सारथिः, तस्य धर्म-प्राप्तिः

प्रत सूत्रांक [५४]

दीप अनुक्रम [५४]

जाव विहरइ, तेण अज्ज सावत्थीए नयरीए बहवे उग्गा जाव इब्भा इब्भपुत्ता अप्पेगतिया वंदण-
वत्तियाए जाव महया वंदावंदणाह णिग्गच्छइ,तए णं से चित्ते सारही कंचुइपुरिसस्स अंतिए एय-
मट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव
भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव सच्छत्तं उवट्ठवेंति, तए णं से चित्ते
सारही ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते शुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवर परिहिते
अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता चाउग्घंटं
आसरहं दुरुहइ २त्ता सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरेण विंदपरिक्खित्ते
सावत्थीनगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ त्ता जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव
उवागच्छइ २ त्ता केसिकुमारसमणस्स अदूरसामंते तुरए णिगिण्हइ रहं ठवेइ य, ठवित्ता पच्चो-
रुहति २ त्ता जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता केसिकुमारसमणं तिक्खुत्तो आया-
हिणं पयाहिणं करेइ करित्ता वंदइ नमंसइ २ त्ता णच्चासण्णे णातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे
अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासइ । तए णं से केसीकुमारसमणे चित्तस्स सारहिस्स तीसे
महतिमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ,तं०-सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं
सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं।

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चित्र-सारथिः, तस्य धर्म-प्राप्तिः

तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोचा निसम्म जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया, तए णं से चित्ते सारही केसीस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोचा निसम्म हट्ठ जावहियए उट्ठाए उट्ठेइ २ त्ता केसिं कुमारसमणं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ २ वंदइ नमंसइ२त्ता एवं वयासी–सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं अब्भुट्ठेमि णं भंते !निग्गंथं पावयणं एवमेयं निग्गंथं पावयणं तहमेयं भंते!० अवितहमेयं भंते!०,असंदिद्धमेयं०सच्चे णं एस अट्ठे जण्णं तुब्भे वदहत्तिकट्टु वदइ नमंसइ२ त्ता एवं वयासी–जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा भोगा जाव इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्णं चिच्चा सुवण्णं एवं धणं धन्नं बलं वाहणं कोसं कोट्ठागारं पुरं अंतेउरं चिच्चा विउलं धणकणगरयणमणिमोत्तियसंखसिलप्पवालसंतसारसावएज्जं विच्छड्डइत्ता विगोवइत्ता दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वयंति,णो खलु अहं ता संचाएमि चिच्चा हिरण्णं तं चेव जाव पवइत्तए, अहण्णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए,अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि,तए णं से चित्ते सारही केसीकुमारसमणस्स अंतिए पंचाणुव्वतियं जाव गिहिधम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरति, तए णं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं वंदइ नमंसइ २ त्ता जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चित्र-सारथिः, तस्य धर्म-प्राप्तिः

प्रत सूत्रांक [५४]

दीप अनुक्रम [५४]

चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ २ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ (सू०५४) ॥

'महया जणसद्देइ वा' इति महान् जनशब्दः परस्परालापादिरूपः इकारो वाक्यालङ्कारार्थः वाशब्दः पदान्तरापेक्षया समुच्चयार्थः,जनव्यूहो-जनसमुदायः,'जनबोलेइ वा' इति बोलः–अव्यक्तवर्णो ध्वनिः,'जनकलकलेइ वा' कलकलः स एवोपलभ्यमानवचनविभागः 'जणउम्मीइ वा' उर्म्मिः–संबाधः'जणउक्कलियाइ वा' लघुतरसमुदायः 'जणसन्निवाए इ वा' सन्निपातः–अपरापरस्थानेभ्यो जनानामेकत्र मीलनं, 'जाव परिसा पज्जुवासइ' इति, यावत्करणात् 'बहुजणो अन्नमन्नस्स एवमाइक्खइ एवं भासइ एवं पन्नवेइ एवं खलु देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जे केसीनामं कुमारसमणे जाइसंपण्णे जाव गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव सावत्थीए नयरीए कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ, तं महप्फलं खलु देवा०तहारूवाणं समणाणं नामगोयस्सवि सवणयाए' इत्यादि प्रागुक्तसमस्तपरिग्रहः, 'इंदमहेइ वा' इत्यादि, इन्द्रमहः–इन्द्रोत्सवः इन्द्रः–शक्रः,स्कन्दः कार्त्तिकेयः रुद्रः प्रतीतः मुकुन्दो–बलदेवः शिवो–देवताविशेषः वैश्रमणो–यक्षराट् नागो–भवनपतिविशेषः यक्षो भूतश्च व्यन्तरविशेषौ स्तूपः--चैत्यस्तूपश्चैत्य-प्रतिमा वृक्षदरिगिरीअवटनदीसरःसागराः प्रतीताः,'बहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा जावलेच्छइपुत्ता' इति,उग्राः आदिदेवावस्थापिता इक्ष्वुवंशजाताः उग्रपुत्राः त एव कुमाराद्यवस्थाः, एवं भोगाः–आदिदेवेनैवावस्थापितगुरुवंशजाता राजन्याः–भगवद्वयस्यवंशजाः यावत्करणात् 'खत्तिया माहणा भडा जोहा मल्लई मल्लइपुत्ता लेच्छई २ पुत्ता' इति परिग्रहः,तत्र क्षत्रियाः–सामान्यराजकुलीना भटाः–शौर्यवन्तः योधाः–तेभ्यो विशिष्टतराः, मल्लकिनो लेच्छकिनश्च राजविशेषाः, यथा चेटकराजस्य श्रूयन्ते अष्टादश गण-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चित्र-सारथिः, तस्य धर्म-प्राप्तिः

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [५४]

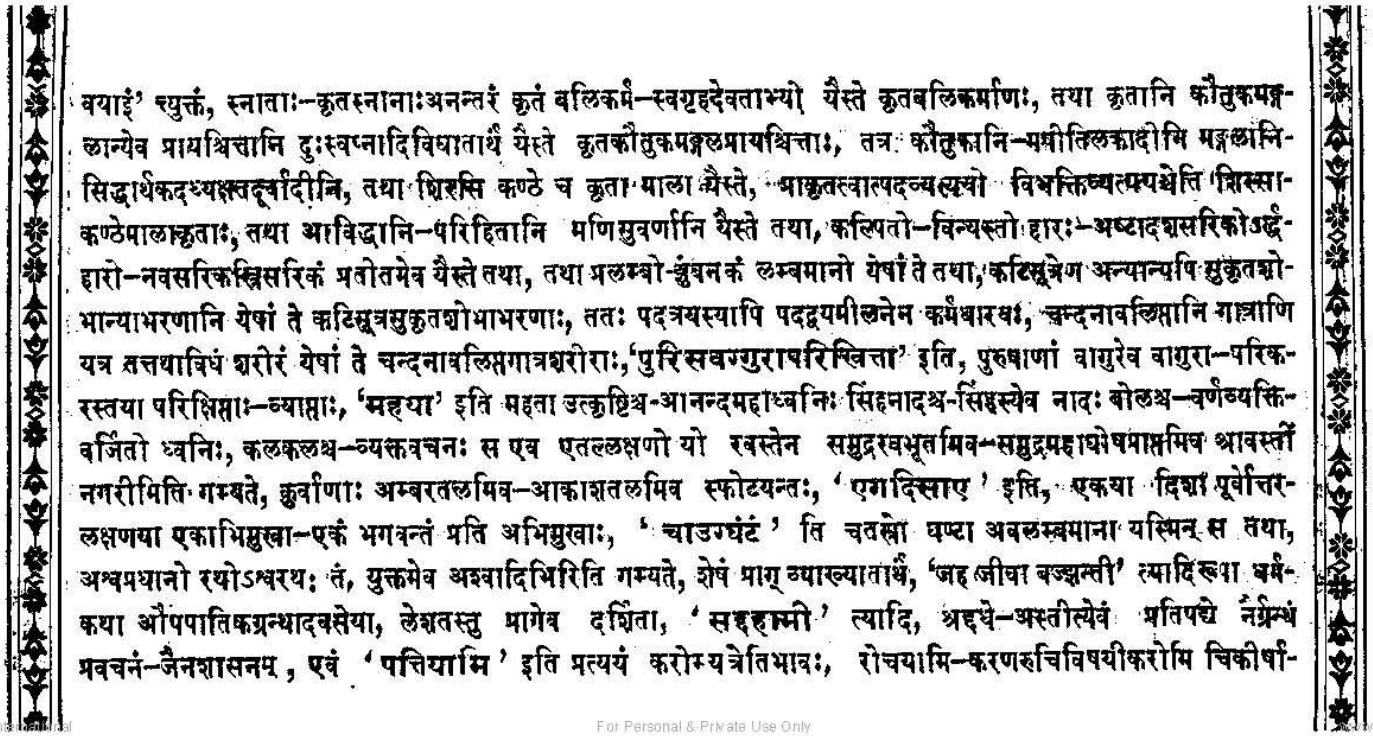
दीप अनुक्रम [५४]

राजा नव मल्लकिनो नव लेच्छकिनः, 'अन्ने य बहवे राईसरे' त्यादि, राजानो–मण्डलिका ईश्वरा–युवराजानस्तलवराः–परितुष्टनरपतिप्रदत्तपट्टबन्धविभूषिता राजस्थानीयाः माडम्बिकाः–चित्रमण्डपाधिपाः कुटुम्बिकाः–कतिपयकुटुम्बस्वामिनोऽन्यलगकाः इभ्या–महाधनिनः श्रेष्ठिनः–श्रीदेवताध्यासितसौवर्णपट्टविभूषितोत्तमाङ्गाः सेनापतयो–नृपतिनिरुपिताश्चतुरङ्गसैन्यनायकाः सार्थवाहाः–सार्थनायकाः प्रभृतिग्रहणात् मन्त्रिमहामन्त्रिगणकदौवारिकपीठमर्दादिपरिग्रहः, तत्र मन्त्रिणः प्रतीताः महामन्त्रिणो–मन्त्रिमण्डलप्रधानाः हस्तिसाधनोपरिका इतिवृद्धाः गणका–गणितज्ञा भाण्डागारिका इति वृद्धाः ज्योतिषिका इत्यपरे दौवारिकाः–प्रतीहारा राजद्वारिका वा पीठमर्दाः–आस्थाने आसन्नप्रत्यासन्नसेवका वयस्या इति भावः ' जाव अंबरतलमिव फोडेमाणा ' इति यावत्करणात् ' अप्पेगतिया ' वंदणवत्तियं अप्पेगइया पूअणवत्तियं एवं सक्कारवत्तियं सम्माणवत्तियं कोउहलवत्तियं अमुयाइं सुणिस्सामो सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो मुंडे भवित्ता आगाराओ अणगारियं पव्वइस्सामो पंचाणुव्वयाइं सत्त सिक्खावयाइं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जिस्सामो, अप्पेगइया जिणभत्तिरागेणं अप्पेगइया जीयमेयंतिकट्टु ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सिरसाकंठेमालाकडा आविद्धमणिसुवण्णा कप्पियहारद्धहारतिसरयपालंबपलंबमाणकडिसुत्तयसोभाभरणा वत्थ पवर परिहिया चंदणोलित्तगायसरीरा अप्पेगइया हयगया अप्पेगइया गयगया अप्पेगइया रहगया अप्पेगइया सिबिकागया अप्पेग० संदमाणियागया अप्पेगइया पायविहारचारिणो पुरिसवग्गुराय परिक्खित्ता महया उक्किट्ठिसीहनाइया बोलकलकलरवेणं समुद्दरक्भूयं पिव करेमाणा अंबरतलंपिव फोडेमाणा' इति परिग्रहः, एतच्च प्रायः सुगमं, नवरं गुणव्रतानामपि निरन्तरमभ्यस्यमानतया शिक्षाव्रतत्वेन विवक्षणात् ' सत्त सिक्खा-

॥१२१॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चित्र-सारथिः, तस्य धर्म-प्राप्तिः



वयाई' त्युक्तं, स्नाताः–कृतस्नानाःअनन्तरं कृतं बलिकर्म–स्वगृहदेवताभ्यो यैस्ते कृतबलिकर्माणः, तथा कृतानि कौतुकमङ्गलान्येव प्रायश्चित्तानि दुःस्वप्नादिविघातार्थं यैस्ते कृतकौतुकमङ्गलप्रायश्चित्ताः, तत्र कौतुकानि–मषीतिलकादीनि मङ्गलानि-सिद्धार्थकदध्यक्षतदूर्वादीनि, तथा शिरसि कण्ठे च कृता माला यैस्ते, आकृतस्वात्पदव्यत्ययो विभक्तिव्यत्ययश्चेति शिरसा-कण्ठेमालाकृताः, तथा आविद्धानि–परिहितानि मणिसुवर्णानि यैस्ते तथा, कल्पितो–विन्यस्तो हारः–अष्टादशसरिको ऽर्द्ध-हारो–नवसरिकस्त्रिसरिकं प्रतीतमेव यैस्ते तथा, तथा प्रलम्बो-ऽवनर्क लम्बमानो येषां ते तथा, कटिसूत्रेण अन्यान्यपि सुकृतशो-भान्याभरणानि येषां ते कटिसूत्रसुकृतशोभाभरणाः, ततः पदत्रयस्यापि पदद्वयमीलनेन कर्मधारयः, चन्दनावलिप्तानि गात्राणि यत्र तत्तथाविधं शरीरं येषां ते चन्दनावलिप्तगात्रशरीराः,'पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ता' इति, पुरुषाणां वागुरेव वागुरा–परिक-रस्तया परिक्षिप्ताः–व्याप्ताः, 'महया' इति महता उत्कृष्टिश्च-आनन्दमहाध्वनिः सिंहनादश्च-सिंहस्येव नादः बोलश्च–वर्णव्यक्ति-वर्जितो ध्वनिः, कलकलश्च–व्यक्तवचनः स एव एतल्लक्षणो यो रवस्तेन समुद्रस्वभूतमिव–समुद्रमहाघोषप्राप्तमिव श्रावस्तीं नगरीमिति गम्यते, क्षुर्वाणाः अम्बरतलमिव–आकाशतलमिव स्फोटयन्तः, 'एगदिसाए' इति, एकया दिशा पूर्वोत्तर-लक्षणया एकाभिमुखा–एकं भगवन्तं प्रति अभिमुखाः, 'चाउग्घंटं' ति चतस्रो घण्टा अवलम्ब्यमाना यस्मिन् स तथा, अश्वप्रधानो रथोऽश्वरथः तं, युक्तमेव अश्वादिभिरिति गम्यते, शेषं प्राग् व्याख्यातार्थं, 'जह जीवा बज्झन्ती' त्यादिरूपा धर्म-कथा औपपातिकग्रन्थादवसेया, लेशतस्तु प्रागेव दर्शिता, 'सद्दहामी' त्यादि, श्रद्धे–अस्तीत्येवं प्रतिपद्ये नैर्ग्रन्थं प्रवचनं–जैनशासनम्, एवं 'पत्तियामि' इति प्रत्ययं करोम्यत्रेतिभावः, रोचयामि–करणरुचिविषयीकरोमि चिकीर्षा-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चित्र-सारथिः, तस्य धर्म-प्राप्तिः

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [५४]

दीप अनुक्रम [५४]

मीति तात्पर्यार्थः, किमुक्तं भवति ?–अभ्युत्तिष्ठामि, अभ्युपगच्छामीत्यर्थः, एवमेतत् यद्भवद्भिः प्रतिपादितं तत् तथैव भदन्त ! तथैवैतद् भदन्त ! याथात्म्यवृत्त्या वस्तु अवितथमेतत् भदन्त !, सत्यमित्यर्थः, असंदिग्धमेतत् भदन्त !, सम्यक् तथ्यमेतदिति भावः, 'इच्छियपडिच्छियमेयं भंते !' इति, इष्टम्-अभिलषितं प्रतीष्टम्–आभिमुख्येन सम्यक् प्रतिपन्नमेतत् यथा यूयं वदथ, 'चिचा हिरण्ण' मित्यादि, हिरण्यम्–अघटितं सुवर्णं धनं–रूप्यादि धान्यबलवाहनकोशकोष्ठागारपुरान्तःपुराणि व्याख्यातानि प्रतीतानि च, 'चिचा विउल धणे' त्यादि, धनं–रूप्यादि कनकरत्नमणिमौक्तिकशङ्खाः प्रतीताः शिलाप्रवालं–विद्रुम सत्–विद्यमानं सारं–प्रधानं यत् स्वापतेयं–द्रव्यं 'विच्छर्दयित्वा' भावतः परित्यज्य 'विगोवइत्ता' प्रकटीकृत्य, तदनन्तरं दानं–दीनानाथादिभ्यः परिभाज्य पुत्रादिषु विभज्य ॥ (सू० ५४) ॥

तए णं से चित्ते सारही समणोवासए जाए अहिगयजीवाजीवे उवलद्धपुण्णपावे आसवसंवरनिज्जरकिरियाहिगरणबंधमोक्खकुसले असहिज्जे देवासुरणागसुवण्णजक्खरक्खसकिन्नरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगाईहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए णिक्कंखिए णिवितिगिच्छे लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे विणिच्छियट्ठे अभिगयट्ठे अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ते, अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे, ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउरघरप्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे समणे णिग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पीढफलगसेज्जासंथारेणं वत्थपडिग्ग-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चित्र-सारथिः, तस्य श्रावक्त्वं

प्रत सूत्रांक [५५]

दीप अनुक्रम [५५]

हकंबलपायपुंछणेणं ओसहभेसज्जेणं पडिलाभेमाणे २ बहूहिं सीलव्वयगुणवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासेहि य अप्पाणं भावेमाणे जाइं तत्थ रायकज्जाणि य जाव रायववहाराणि य ताइं जियसत्तुणा रण्णा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे २ विहरइ ॥ (सू० ५५) ॥

'अभिगयजीवाजीवे' इति, अभिगतौ–सम्यग् विज्ञातौ जीवाजीवौ येन स तथा, उपलब्धे–यथावस्थितस्वस्वरूपेण विज्ञाते पुण्यपापे येन स उपलब्धपुण्यपापः, आश्रवाणां–प्राणातिपातादीनां संवरस्य–प्राणातिपातादिप्रत्याख्यानरूपस्य निर्जरायाः–कर्मणां देशतो निर्जरणस्य क्रियाणां–कायिक्यादीनामधिकरणानां–खड्गादीनां बन्धस्य–कर्मपुद्गलजीवप्रदेशान्योऽन्यानुगमरूपस्य मोक्षस्य–सर्वात्मना कर्मापगमरूपस्य कुशलः–सम्यक् परिज्ञाता आश्रवसंवरनिर्जराक्रियाधिकरणबन्धमोक्षकुशलः 'असहेज्जे' इति अविद्यमानसाहाय्यः, कुतीर्थिकप्रेरितः सम्यक्त्वाविचलनं प्रति न परसाहाय्यमपेक्षते इति भावः, तथा चाह–'देवासुरनागजक्खरक्खसकिन्नरकिंपुरिसगरुलगंधव्वमहोरगाइएहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे' सुगमं, नवरं गरुडाः–सुवर्णकुमाराः, एवं चैतत् यतो निर्ग्रन्थे प्रावचने 'निस्संकिये' निःसंशयः 'निक्कंखिये' दर्शनान्तराकाङ्क्षारहितः 'निव्वितिगिच्छे' फलं प्रति निःशङ्कः 'लद्धट्ठे' अर्थश्रवणतः 'गहिअट्ठे' अर्थावधारणतः 'पुच्छियट्ठे' संशये सति 'अहिगयट्ठे' सम्यगुत्तरश्रवणतो विमलबोधात्, 'विणिच्छियट्ठे' पदार्थोपलम्भात् 'अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ते' अस्थीनि प्रसिद्धानि तानि च मिश्रा च-तन्मध्यवर्त्ती मज्जा अस्थिमिश्रानः ते प्रेमाणुरागेण–सर्वज्ञप्रवचनप्रीतिलक्षणकुसुम्भादिरागेण रक्ता इव रक्ता यस्य स तथा, केनोल्लेखेनेत्यत आह–'अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे परमट्ठे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चित्र-सारथिः, तस्य श्रावक्त्वं

प्रत सूत्रांक [५५]

दीप अनुक्रम [५५]

सेसे अणट्ठे' इति 'आउसो' इति आयुष्मन्!,एतच्च सामर्थ्यात्पुत्रादेरामन्त्रणं, शेषमिति–धनधान्यपुत्रदारराज्यकुप्रवचनादि, 'ऊसियफलिहे' इति उच्छ्रितं स्फाटिकमिव स्फाटिकम्–अन्तःकरणं यस्य स तथा, मौनीन्द्रप्रवचनावाप्त्या परितुष्टमना इत्यर्थः, एषा वृद्धव्याख्या, अपरे त्वाहुः--उच्छ्रितः--अर्गलास्थानादपनीय ऊर्ध्वीकृतो न तिरश्चीनः, कपाटपश्चाद्भागादपनीत इत्यर्थः, उत्सृतो वा -अपगतः परिघा–अर्गला गृहद्वारे यस्यासौ उच्छ्रितपरिघ उत्सृतपरिघो वा, औदार्यातिरेकतोऽतिशयदानदायित्वेन भिक्षुकप्रवेशार्थमनर्गलितगृहद्वार इत्यर्थः,' अवंगुयदुवारे' अपावृतद्वारः भिक्षुकप्रवेशार्थं कपाटानामपि पश्चात्करणात्, वृद्धानां तु भावनावाक्यमेवं--सम्यग्दर्शनलाभे सति न कस्माच्चित् पाखण्डिकाद्भिभेति शोभनमार्गपरिग्रहेण उद्घाटितशिरास्तिष्ठतीति भावः,' चियत्तंतेउरघरपवेसे' 'चियत्ते'ति नामीतिकरः अन्तःपुरगृहे प्रवेशः–शिष्टजनप्रवेशनं यस्य स तथा, अनेनानीर्ष्यालुत्वमस्योक्तम्, अथवा चियत्तः--प्रीतिकरो लोकानामन्तःपुरे गृहे वा प्रवेशो यस्यातिधार्मिकतया सर्वत्रानाशङ्कनीयत्वात् स तथा,' चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुन्नं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे' इति, चतुर्दश्यामष्टम्यामुद्दिष्टमित्यवमावास्यां पौर्णमास्यां च प्रतिपूर्णम्–अहोरात्रं यावत् पोषधम्--आहारादिपोषधं सम्यक् अनुपालयन्,'पोढफलगे'ति पीढम्–आसनं फलकम्--अवष्टम्भार्थं 'सिज्जा' वसतिः शयनं वा यत्र प्रसारितपादैः सुप्यते संस्तारको लघुतरः 'वत्थपडिग्गहकंबलपायपुंछणेणं'ति वस्त्रं प्रतीतं पतत् भक्तं पानं वा गृह्णातीति पतद्ग्रहः लिहादित्वादच्प्रत्ययः-पात्रं पादप्रोञ्छनकं--रजोहरणं औषधं प्रतीतं भेषजं--पथ्यं 'अहापरिग्गहेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ' सुगमं, क्वचित्पाठः--' बहूहिं सीलव्वयगुणवेरमणपोसहोववासेहिं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ' इति, तत्र शीलव्रतानि–स्थूलप्राणाति-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

चित्र-सारथिः, तस्य श्रावकत्वं

प्रत सूत्रांक [५५]

दीप अनुक्रम [५५]

पातविरमणादीनि गुणव्रतानि–दिग्व्रतादीनि पौषधोपवासाः–चतुर्दश्यादिपर्वतिथ्युपवासादिस्तैरात्मानं भावयन् विहरति–आस्ते ॥ (सू० ५५) ॥

तए णं से जियसत्तुराया अण्णया कयाइ महत्थं जाव पाहुडं सज्जेइ २ त्ता चित्तं सारहिं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छाहि णं तुमं चित्ता ! सेयवियं नगरिं पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि, मम पाउब्भवं च णं जहाभणियं अचिंतहमसंदिट्ठं वयणं विन्नवेहितिकट्टु विसज्जिए । तए णं से चित्ते सारही जियसत्तुणा रन्ना विसज्जिए समाणे तं महत्थं जाव गिण्हइ जाव जियसत्तुस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता सावत्थीनगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ २ जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छति २ त्ता तं महत्थं जाव ठवइ, ण्हाए जाव सरीरे सकोरंट० महया० पायचारविहारेण महया पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते, रायमग्गमोगाढाओ आवासाओ निग्गच्छइ २ त्ता सावत्थीनगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति २ त्ता जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छति २ केसिकुमारसमणस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा जाव हट्ठ० उट्ठाए जाव एवं वयासी–एवं खलु अहं भंते ! जियसत्तुणा रन्ना पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव उवणेहित्तिकट्टु विसज्जिए, तं गच्छामि णं अहं भंते ! सेयवियं नगरिं, पासादीया णं भंते ! सेयविया णगरी, एवं दरिसणिज्जा णं भंते ! सेयविया णगरी,अभिरूवा णं भंते ! सेयविया नगरी,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५६-६१]

दीप अनुक्रम [५६-६१]

पडिरूवा णं भंते ! सेतविया नगरी, समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयविय नगरिं, तए णं से केसीकुमारसमणे चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परिजाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ, तए णं से चित्ते सारही केसीकुमारसमणं दोच्चंपि तच्चंपि एवं वयासी-एवं खलु अहं भंते ! जियसत्तुणा रन्ना पएसिस्स रण्णो इमं महत्थं जाव विसज्जिए तं चेव जाव समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयवियं नगरिं, तए णं केसीकुमारसमणे चित्तेण सारहिणा दोच्चंपि तच्चंपि एवं वुत्ते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी–चित्ता ! से जहानामए वणसंडे सिया किण्हे किण्होभासे जाव पडिरूवे, से णूणं चित्ता ! से वणसंडे बहूण दुपयचउप्पयमियपसुपक्खीसिरीसिवाणं अभिगमणिज्जे ?, हंता अभिगमणिज्जे, तंसि च णं चित्ता ! वणसंडंसि बहवे भिल्लुगा नाम पावसउणा परिवसंति, जे णं तेसिं बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खीसिरीसिवाण ठियाणं चेव मंससोणियं आहारेंति,से णूणं चित्ता ! से वणसंडे तेसिं णं बहूणं दुपय जाव सिरिसिवाणं अभिगमणिज्जे ?, णो ति०,कम्हा णं ?, भंते ! सोवसग्गे,एवामेव चित्ता ! तुब्भंपि सेवियाए णयरीए एएसीनामं राया परिवसइ अहम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तइ,तं कहं णं अहं चित्ता ! सेयवियाए नगरीए समोसरिस्सामि ?,तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–किं णं भंते ! तुब्भं पएसिणा रन्ना कायव्वं ?, अत्थि णं भंते ! सेयवियाए नगरीए अन्ने

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५६-६१]

दीप अनुक्रम [५६-६१]

बहवे ईसरतलवरजाव सत्थवाहपभिइयो जे णं देवाणुप्पियं वंदिस्संति नमंसिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभिस्संति, पडिहारिएण पीढफलगसेज्जासंथारेणं उवनिमंतिस्संति, तए णं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी–अवियाइ चित्ता! समोसरिस्सामो ॥ (सू० ५६) ॥ तए णं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं वंदइ नमंसइ २ केसिस्स कुमारसमणस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ २ जेणेव सावत्थी णगरी जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जहा सेयवियाए नगरीए निग्गच्छइ तहेव जाव वसमाणे २ कुणालाजणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव केइयअद्धे जेणेव सेयविया नगरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ २ उज्जाणपालए सद्दावेइ २ त्ता एवं वयासी-जया णं देवाणुप्पिया! पासावच्चिज्जे केसीनाम कुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा तया णं तुब्भे देवाणुप्पिया! केसिकुमारसमणं वंदिज्जाह नमंसिज्जाह वंदित्ता नमंसित्ता अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणेज्जाह पडिहारिएणं पीढफलग जाव उवनिमंतिज्जाह, एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणेज्जाह, तए णं ते उज्जाणपालगा चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहियं जाव एवं वयासी–तहत्ति, आणाए विणएणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५६-६१]

दीप अनुक्रम [५६-६१]

वयणं पडिसुणंति ॥ (सू० ५७) ॥ तए णं चित्ते सारही जेणेव सेयविया णगरी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ २ त्ता जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तुरए णिगिण्हइ २ रहं ठवेइ २ त्ता रहाओ पच्चोरुहइ २ त्ता तं महत्थं जाव गेण्हइ २ जेणेव पएसी राया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पएसिं रायं करयल जाव वद्धावेत्ता तं महत्थं जाव उवणेइ । तए णं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं जाव पडिच्छइ २ त्ता चित्तं सारहिं सक्कारेइ २ त्ता सम्माणेइ २ पडिविसज्जेइ । तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा विसज्जिए समाणे हट्ठ जाव हियए पएसिस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ २ त्ता जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ२ चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ २ त्ता सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तुरए णिगिण्हइ २ रहं ठवेइ २ रहाओ पच्चोरुहइ२ ण्हाए जाव उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणे २ उवगाइज्जमाणे २ उवलालिज्जमाणे २ इट्ठे सद्दफरिस जाव विहरइ ॥ (सू० ५८) ॥ तए णं केसीकुमारसमणे अण्णया कयाइ पाडिहारियं पीढफलगसेज्जासंथारगं पच्चप्पिणइ २ सावत्थीओ नगरीओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ २ पंचहिं अणगारसएहिं जाव विहरमाणे जेणेव केयइअद्धे जणवए जेणेव सेयविया नगरी जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५६-६१]

दीप अनुक्रम [५६-६१]

उवागच्छइ २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति। तए णं सेयवियाए नगरीए ।सघाडग महया जणसद्देइ वा० परिसा णिग्गच्छइ, तए णं ते उज्जाणपालगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठ जावहियया जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छन्ति २ त्ता केसिं कुमारसमणं वंदंति नमंसंति २ त्ता अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणंति पाडिहारिएणं जाव संथारएणं उवनिमंतंति णामं गोयं पुच्छंति २ त्ता ओधारेंति २ त्ता एगंतं अवक्कमंति अन्नमन्नं एवं वयासी–जस्स णं देवाणुप्पिता! चित्ते सारही दंसणं कंखइ दंसणं पत्थेइ दंसणं पीहेइ दंसणं अभिलसइ जस्स णं णामगोयस्सवि सवणयाए हट्ठतुट्ठ जाव हियए भवति से णं एस केसीकुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागए इह संपत्ते इह समोसढे इहेव सेयवियाए णगरीए बहिया मियवणे उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरइ, तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया! चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं पियं निवेएमा पियं से भवउ, अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति २ जेणेव सेयविया णगरी जेणेव चित्तस्स सारहिस्स गिहे जेणेव चित्तसारही तेणेव उवागच्छंति २ त्ता चित्तं सारहिं करयल जाव वद्धावेंति २ त्ता एवं वयासी– जस्स णं देवाणुप्पिया! दंसणं कंखंति जाव अभिलसंति जस्स णं णामगोयस्सवि सवणयाए हट्ठजाव भवह से णं अयं केसी कुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे समोसढे जाव विहरइ। तए णं से चित्ते सारही तेसिं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

उज्जाणपालगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव आसणाओ अब्भुट्ठेति पायपीढाओ पच्चोरुहइ २ त्ता पाडयाओ ओमुयइ २त्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, अंजलिमउलियग्गहत्थे केसिकुमारसमणाभिमुहे सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ २ त्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–नमोत्थु ण अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमोऽत्थु णं केसियस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए पासउ मे त्तिकट्टु वंदइ नमसइ, ते उज्जाणपालए विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ २ त्ता पडिविसज्जेइ २ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ ३ एवं वयासी–खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह । तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव खिप्पामेव सच्छत्तं सज्झयं जाव उवट्ठवित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति, तए णं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जावहियए ण्हाए कयबलिकम्मे जाव सरीरे जेणेव चाउग्घंटे जाव दुरुहित्ता सकोरंट० महया भडचडगरेणं तं चेव जाव पज्जुवासइ धम्मकहाए जाव ॥ (सू० ५९) ॥ तए णं से चित्ते सारही केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे उट्ठाए तहेव एवं वयासी–एवं खलु भंते ! अम्हं पएसी राया अधम्मिए जाव सयस्सवि णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ, तं जइ णं देवाणुप्पिया ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जा बहुगुणतरं खलु होज्जा पएसिस्स रण्णो तेसिं च बहूणं दुपयचउप्पयमियपसुपक्खीसिरीसवाणं,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५६-६१]

दीप अनुक्रम [५६-६१]

तेसिं च बहूणं समणमाहणभिक्खुयाणं, तं जइ णं देवाणुप्पिया ! पएसिस्स बहुगुणतरं होज्जा सयस्सवि य णं जणवयस्स ॥ (सू० ६०) ॥ तए णं केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी-एवं खलु चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जीवा केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए, तं०–आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ णो वंदइ णो णमंसइ णो सक्कारेइ णो सम्माणेइ णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ नो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छइ, एएणं ठाणेणं चित्ता ! जीवा केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभंति सवणयाए ? उवस्सयगयं समणं वा तं चेव जाव एतेणवि ठाणेणं चित्ता ! जीवा केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभन्ति सवणयाए २ गोयरग्गगयं समणं वा माहणं वा जाव नो पज्जुवासइ, णो विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभइ० णो अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएणं ठाणेणं चित्ता ! केवलिपन्नत्तं० नो लभइ सवणयाए ३जत्थवि णं समणेण वा माहणेण वा सद्धिं अभिसमागच्छइ तत्थवि णं हत्थेण वा वत्थेण वा छत्तेण वा अप्पाणं आवरित्ता चिट्ठइ, नो अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएणवि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं णो लभइ सवणयाए ४, एएहिं च णं चित्ता ! चउहिं ठाणेहिं जीवे णो लभइ केवलिपन्नत्तं धम्मं सवणयाए । चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए, तं०–आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा वंदइ नमंसइ जाव पज्जुवासइ अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएणवि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

जाव लभइ सवणयाए, एवं उवस्सयगयं गोयरग्गगयं समणं वा जाव पज्जुवासइ विउलेणं जाव पडिलाभेइ अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएणवि०, जत्थवि य णं समणेण वा अभिसमागच्छइ तत्थवि य णं णो हत्थेण वा जाव आवरेत्ताणं चिट्ठइ, एएणवि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए, तुज्झं च णं चित्ता! पएसी राया आरामगयं वा तं चेव सवं भाणियवं आइल्लएणं गमएणं जाव अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ, तं कहं णं चित्ता! पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खिस्सामो?, तए णं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं एवं वयासी–एवं खलु भंते ! अण्णया कयाइं कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया ते मए पएसिस्स रण्णो अन्नया चेव उवणीया, तं एएणं खलु भंते! कारणेणं अहं पएसिं रायं देवाणुप्पियाणं अंतिए हव्वमाणेस्सामो, तं मा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खमाणा गिलाएज्जाह, अगिलाए णं भंते! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह, छंदेणं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह, तए णं से केसीकुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी–अवियाइं चित्ता ! जाणिस्सामो। तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं वंदइ नमंसइ २ जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ २त्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ (सू० ६१) ॥

' जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छित्ता केसीकुमारसमणं पंचविहेणं अभिगमेणं अभिगच्छइ, तंजहा--सचित्तानं

प्रदेशिबोधाय श्रावस्त्यागमन विज्ञप्तिः सू० ६० धर्मस्य लाभालाभकारणानि सू० ६१

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

द्रव्यानां पुष्पताम्बूलादीनां 'विउसरणयाए' इति व्यवसरणेन--व्युत्सर्जनेन, अचित्तानां द्रव्याणाम्--अलङ्कारवस्त्रादीनामव्यवसरणेन--अव्युत्सर्गेण, क्वचित् 'विउसरणयाए' इति पाठः, तत्र अचित्तानां द्रव्याणां--छत्रादीनां व्युत्सर्जनेन--परिहारेण, उक्तं च--' अवणेइ पंच ककुहाणि रायवरचिंधभूयाणि। छत्तं खग्गो वाणह मउडं तह चामराओ य ॥ १ ॥ ' इति, एका शाटिका यस्मिन् तत्तथा तच्च तद् उत्तरासंगकरणं च--उत्तरीयस्य न्यासविशेषरूपं तेन, चक्षुस्स्पर्शे--दर्शने 'अंजलिपग्गहेणं' हस्तजोटनेन, मनस एकत्वीकरणेन--एकत्वविधानेन, 'पाडिहारिएण पीढफलगसेज्जासंथारगेणं निमंतेहिंति' प्रातिहारिकेण--पुनः समर्पणीयेन। 'अवियाइं चित्ता! जाणिस्सामो' इति 'अवियाइं' इति अपि च चित्ते परिभावयामो 'लग्गा' इति भावः, क्वचित्पाठः 'आवियाइं चित्ता! समोसरिस्सामो' इति, तत्र अपि च--एतदपि च परिभाव्य समवसरिष्यामो वर्त्तमानयोगेन, 'फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं'ति स्फुटद्भिरतिरभसास्फालनात् मर्दलमुखपुटैः द्वात्रिंशद्विधैः द्वात्रिंशत्पात्रनिबद्धनाटकैर्वरतरुणयुक्तैरुपनृत्यमानः तदभिनयपुरस्सरं नर्त्तनात् उपगीयमानः तद्गुणानां गानात्। 'दंसणं कंखेइ' इत्यादि, काङ्क्षति प्रार्थयते स्पृहते अभिलषति चत्वारोऽप्येकार्थाः। 'चउहिं ठाणेहिं' इति आरामादिगतं श्रमणादिकं नाभिगच्छतीत्यादिकं प्रथमं कारणं, उपाश्रयगतं नाभिगच्छतीत्यादि द्वितीयं, प्रातिहारिकेण पीठफलकादिना नामन्त्रयतीत्यादि तृतीयं, गोचरगतं नाशनादिना प्रतिलाभयतीत्यादि चतुर्थं, एतैरेव चतुर्भिः स्थानैः केवलिप्रज्ञप्तं धर्मं लभते श्रवणतया--श्रवणेनेति भावः, 'अत्थवियण'मित्यादि, यत्रापि श्रमणः--साधुः माहनः--परमगीतार्थः श्रावकोऽभ्यागच्छति तत्रापि हस्तेन वस्त्राञ्चलेन छत्रेण वाऽऽत्मानमावृत्य न तिष्ठति इदं प्रथमं कारणं, एवं शेषाण्यपि कारणानि प्रत्येकमेवं भावनीयानि, 'तुज्झं च णं चित्ता!

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [५६-६१]

दीप अनुक्रम [५६-६१]

पएसी राया आरामगयं वा तं चेव सव्वं भाणियव्वं' 'आइल्लगमएणं 'ति प्रथमगमकेन, तद्यथा–युष्माकं प्रदेशी राजा हे चित्र ! आरामादिगतं न वन्दते, यत्रापि च श्रमणोऽभ्यागच्छति तत्रापि हस्तादिनाऽऽत्मानमावृत्य तिष्ठति, 'तं कहन्नं चित्ता !' इत्यादि सुगमं ॥ (सू० ५६-५७-५८-५९-६०-६१) ॥

तए णं से चित्ते सारही कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियंमि अहापंडुरे पभाए कयनियमावस्सए सहस्सरस्सिंमि दिणयरे तेयसा जलंते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ २ त्ता जेणेव पएसिस्स रन्नो गिहे जेणेव पएसी राया तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पएसिं रायं करयल जाव तिकट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, २त्ता एवं वयासी–एवं खलु देवाणुप्पियाणं कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया तेय मए देवाणुप्पियाणं अण्णया चेव विणइया तं एह णं सामी ! ते आसे चिट्ठं पासह, तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी–गच्छाहि णं तुमं चित्ता ! तेहिं चेव चउहिं आसेहिं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेहि २ त्ता जाव पच्चप्पिणाहि, तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव हियए उवट्ठवेइ २ त्ता एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ । तए णं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ निग्गच्छइ २ त्ता जेणामेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ २ चाउग्घंटं आसरहं दुरुहइ, सेयवियाए नगरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, तए णं से चित्ते

अश्वसेवनं केशिनः समीपेगमनं च सू० ६२

॥ १२८ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [६२-६४]

दीप अनुक्रम [६२-६४]

सारही तं रहं णेगाइं जोयणाइं उब्भामेइ, तए णं से पएसी राया उण्हेण य तण्हाए य रहवाएणं परिकिलंते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी–चित्ता ! परिकिलंते मे सरीरे परावत्तेहि रहं, तए णं से चित्ते सारही रहं परावत्तेइ, जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, पएसिं रायं एवं वयासी–एस णं सामी ! मियवणे उज्जाणे एत्थ णं आसाणं समं किलामं सम्मं पवीणेमो, तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वदासी–एवं होउ चित्ता !, तए णं से चित्ते सारही जेणेव मियवणे उज्जाणे जेणेव केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते तेणेव उवागच्छइ २ तुरए णिगिण्हेइ २ रहं ठवेइ २ त्ता रहाओ पच्चोरुहइ २ त्ता तुरए मोएति २ त्ता पएसिं रायं एवं वयासी–एह णं सामी ! आसाणं संमं किलामं पवीणेमो, तए णं से पएसी राया रहाओ पच्चोरुहइ, चित्तेण सारहिणा सद्धिं आसाणं समं किलामं सम्मं पवीणेमाणे पासइ जत्थ केसीकुमारसमणे महइमहालियाए महच्चपरिसाए मज्झगये महया २ सद्देणं धम्ममाइक्खमाणं, पासइत्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–जड्डा खलु भो जडुं पज्जुवासंति मुंडा खलु भो मुंडं पज्जुवासंति मूढा खलु भो मूढं पज्जुवासंति अपंडिया खलु भो ! अपंडियं पज्जुवासंति निव्विण्णाणा खलु भो ! निव्विण्णाणं पज्जुवासंति, से केस णं एस पुरिसे जड्डे मुंडे मूढे अपंडिए निव्विण्णाणे सिरीए हिरीए उवगए उत्तप्पसरीरे, एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ ? किं परिणामेइ ? किं खाइ किं पियइ किं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

दलइ किं पयच्छइ जण्णं एमहालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झगए महया २ सद्देणं वुयाए ?, एवं संपेहेइ २ त्ता चित्तं सारहिं एवं वयासी-चित्ता ! जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति जाव वुयाइ, साएवि य णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए ?। तए णं से चित्ते सारही पएसीरायं एवं वयासी-एस णं सामी ! पासावच्चिज्जे केसीनामं कुमारसमणे जाइसंपण्णे जाव चउनाणोवगए आहोहिए अण्णाजीवी। तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी-आहोहियं ण वदासि चित्ता ! अण्णजीवियत्तं णं वदासि चित्ता ?, हंता ! सामी ! आहोहिअण्णं वयामि०, अभिगमणिज्जे णं चित्ता ! अहं एस पुरिसे ?, हंता ! सामी ! अभिगमणिज्जे, अभिगच्छामो णं चित्ता ! अम्हे एयं पुरिसं?, हंता सामो ! अभिगच्छामो ॥ (सू० ६२) ॥ तए णं से पएसी राया चित्तेण सारहिणा सद्धिं जेणेव केसीकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ २ त्ता केसीस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते ठिचा एवं वयासी-तुब्भे णं भंते! आहोहिया अण्णजीविया ?, तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वदासी-पएसी ! से जहाणामए अंकवाणियाइ वा संखवाणियाइ वा दंतवाणियाइ वा सुंकं भंसिउंकामा णो सम्मं पंथं पुच्छइ, एवामेव पएसी तुब्भेवि विणयं भंसेउकामो नो सम्मं पुच्छसि, से णूणं तव पएसी ममं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति, जाव पवियरित्तए, से णूणं पएसी अट्ठे समत्थे ?,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

प्रत सूत्रांक [६२-६४]

दीप अनुक्रम [६२-६४]

हंता ! अत्थि ॥ (सू० ६३) ॥ तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वदासी–से केणट्ठेणं भंते ! तुज्झं नाणे वा दंसणे वा जेणं तुज्झे मम एयारूवं अज्झत्थियं जाव संकप्पं समुप्पण्णं जाणह पासह ?, तए णं से केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–एवं खलु पएसी अम्हं समणाणं निग्गंथाणं पंचविहे नाणे पण्णत्ते, तंजहा–आभिणिबोहियणाणे सुयनाणे ओहिणाणे मणपज्जवणाणे केवलणाणे, से किं तं आभिणिबोहियनाणे ?, आभिणिबोहियनाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–उग्गहो ईहा अवाए धारणा । से किं तं उग्गहे?, उग्गहे दुविहे पण्णत्ते, जहा नंदीए जाव से तं धारणा, से तं आभिणिबोहियणाणे । से किं तं सुयनाणे ?, सुयनाणे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा-अंगपविट्ठं च अंगबाहिरं च, सव्वं भाणियव्वं जाव दिट्ठिवाओ । ओहिणाणं भवपच्चइयं खओवसमियं जहा णंदीए । मणपज्जवनाणे दुविहे पण्णत्ते, तंजहा–उज्जुमई य विउलमई य, तहेव केवलनाणं सव्वं भाणियव्वं, तत्थ णं जे से आभिणिबोहियनाणे से णं ममं अत्थि, तत्थ णं जे से सुयणाणे सेऽवि य ममं अत्थि, तत्थ णं जे से ओहिणाणे सेवि य ममं अत्थि, तत्थ णं जे से मणपज्जवनाणे सेऽवि य ममं अत्थि, तत्थ णं जे से केवलनाणे से णं ममं नत्थि, से णं अरिहंताणं भगवंताणं, इच्चेएणं पएसी अहं तव चउव्विहेणं छउमत्थेणं णाणेणं इमेयारूवं अज्झत्थियं जाव समुप्पण्णं जाणामि पासामि ॥ (सू० ६४) ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

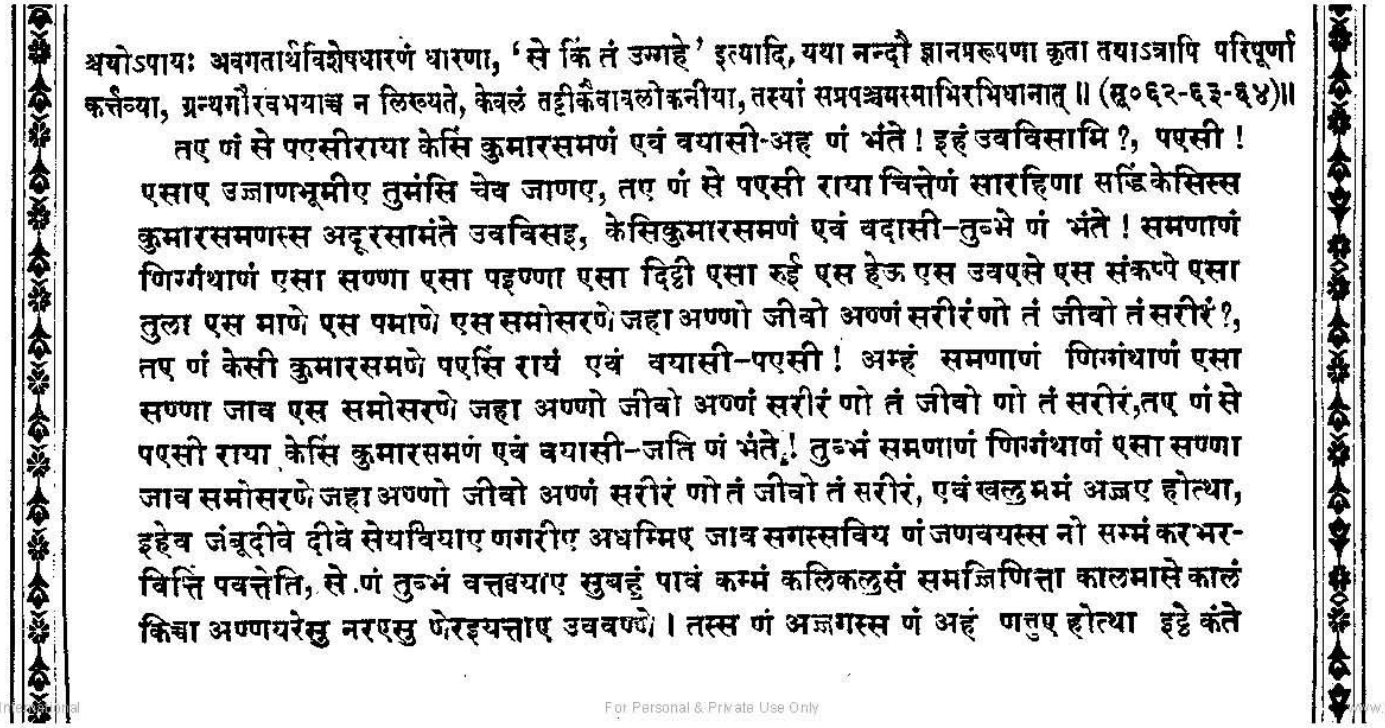
'आसाणं समं किलामं सम्मग्गवणेमो' इति, अश्वानां समं–श्रमं खेदं क्लमं–ग्लानिं सम्यक् अपनयामः–स्फोटयामः 'जडा खलु जड' मित्यादि, जडमूढअपण्डितनिर्विज्ञानशब्दा एकार्थिका मौख्यप्रकर्षप्रतिपादनार्थं चोक्ताः, 'सिरिए हिरिए उवगए उत्तप्पसरीरे' इति श्रिया–शोभया ह्रिया–लज्जया उपगतो–युक्तः, परमपरिषदादिशोभया गुप्तशरीरचेष्टाकतया चोपलम्भात्, उत्तप्तशरीरो–देदीप्यमानशरीरः, अत्रैव कारणं विमृशति–एष किमाहारयति–किमाहारं गृह्णाति ?, न खलु कदन्नभक्षणे एवंरूपायाः शरीरकान्तेरुपपत्तिः, कण्डूत्यादिसद्भावतो विच्छायत्वप्रसक्तेः, तथा किं परिणामयति–कीदृशोऽस्य गृहीताहारपरिणामो ?, न खलु शोभनाहाराभ्यवहारेऽपि मन्दाग्नित्वे यथारूपा कान्तिर्भवति, एतदेव सविशेषमाचष्टे–'किं खाइ किं पियइ ?, तथा किं ददाति, एतदेव व्याचष्टे–किं प्रयच्छति ?, येनैतावान् लोकः पर्युपास्ते, एतदेवाह–'जन्नं एस एमहालियाए माणुसपरिसाए महया२ सद्देणं बूया' इति ब्रूते, यस्मिँश्चेत्थं चेष्टमाने 'साएविय णं'–मित्यादि स्वकीयायामपि उद्यानभूमौ न संचाएमो–न शक्नुमः सम्यक्–प्रकामं स्वेच्छया प्रविचरितुं, एवं संप्रेक्षते–स्ववेतसि परिभावयति, संप्रेक्ष्य चित्तं सारथिमेवमवादीत्–'चित्ता' इत्यादि, 'अधोवहिए' इति अधोऽवधिकः–परमावधेरधोवर्त्यवधियुक्तः, 'अन्नजीविए' इति अन्नेन जीवितं–प्राणधारणं यस्यासावन्नजीवितः। 'से जहानामए' इत्यादि, ते यथा नाम इति वाक्यालङ्कारे 'अंकवणिजो' अङ्करत्नवणिजः शङ्खवणिजो मणिवणिजो वा शुल्कं–राजदेयं भागं भ्रंशयितुकामाः शङ्कातो न सम्यग् पन्थानं पृच्छन्ति, 'एवमेव तुम' मित्यादि, दार्ष्टान्तिकयोजना सुगमा। 'उग्गहे' त्यादि, तत्राविवक्षितशेषविशेषस्य सामान्यरूपस्यानिर्देश्यस्य रूपादेरवग्रहणमवग्रहः तदर्थगतासद्भूतसद्भूतविशेषालोचनमीहा प्रक्रान्तार्थविशेषनि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

प्रत सूत्रांक [६२-६४]

दीप अनुक्रम [६२-६४]



अथोऽपायः अवगतार्थविशेषधारणं धारणा, 'से किं तं उग्गहे' इत्यादि, यथा नन्दौ ज्ञानप्ररूपणा कृता तथाऽत्रापि परिपूर्णा कर्त्तव्या, ग्रन्थगौरवभयाच्च न लिख्यते, केवलं तट्टीकैवावलोकनीया, तस्यां सम्प्रपञ्चमस्माभिरभिधानात् ॥ (सू०६२-६३-६४)॥

तए णं से पएसीराया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-अह णं भंते ! इहं उवविसामि ?, पएसी ! एसाए उज्जाणभूमीए तुमंसि चेव जाणए, तए णं से पएसी राया चित्तेणं सारहिणा सद्धिं केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते उवविसइ, केसिकुमारसमणं एवं वदासी-तुब्भे णं भंते ! समणाणं णिग्गंथाणं एसा सण्णा एसा पइण्णा एसा दिट्ठी एसा रुई एस हेऊ एस उवएसे एस संकप्पे एसा तुला एस माणे एस पमाणे एस समोसरणे जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं ?, तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-पएसी ! अम्हं समणाणं णिग्गंथाणं एसा सण्णा जाव एस समोसरणे जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं णो तं जीवो णो तं सरीरं,तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-जति णं भंते ! तुब्भं समणाणं णिग्गंथाणं एसा सण्णा जाव समोसरणे जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं, एवं खलु अहं अज्जए होत्था, इहेव जंबूदीवे दीवे सेयवियाए णगरीए अधम्मिए जाव सगस्सवि य णं जणवयस्स नो सम्मं करभर-वित्तिं पवत्तेति, से णं तुब्भं वत्तव्वयाए सुबहुं पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरएसु णेरइयत्ताए उववण्णे । तस्स णं अज्जगस्स णं अहं णत्तुए होत्था इट्ठे कंते

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

पिए मणुण्णे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए अणुमए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए हियय-णंदिजणणे उंबरपुप्फंपिव दुल्लभे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ?, तं जति णं से अज्जए ममं आगंतुं वएज्जा–एवं खलु नत्तुया ! अहं तव अज्जए होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेमि, तए णं अहं सुबहुं पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता नरएसु उववण्णे, तं मा णं नत्तुया ! तुमंपि भवाहि अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेहि, मा णं तुमंपि एवं चेव सुबहुं पावकम्मं जाव उववज्जिहिसि, तं जइ णं से अज्जए ममं आगंतुं वएज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं, जम्हा णं से अज्जए ममं आगंतुं नो एवं वयासी तम्हा सुपइट्ठिया मम पइन्ना समणाउसो ! जहा तज्जीवो तं सरीरं । तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वदासी–अत्थि णं पएसी ! तव सूरियकंता णामं देवी ?, हंता अत्थि, जइ णं तुमं पएसी तं सूरियकंतं देविं ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं केणइ पुरिसेणं ण्हाएणं जाव सव्वालंकारभूसिएणं सद्धिं इट्ठे सद्दफरिसरसरूवगंधे पंचविहे माणुस्सते कामभोगे पच्चणुब्भवमाणिं पासिज्जसि तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स कं डंडं निवत्तेज्जासि ?,अहण्णं भंते ! तं पुरिसं हत्थच्छिण्णगं वा सूलायगं वा सूलभिन्नगं वा पायच्छिन्नगं वा एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवएज्जा, अहण्णं पएसी से

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

प्रत सूत्रांक [६५-६६]

दीप अनुक्रम [६५-६६]

पुरिसे तुमं एवं वदेज्जा–मा ताव मे सामी ! मुहुत्तगं हत्थच्छिण्णगं वा जाव जीवियाओ ववरोवेहि जाव तावाहं मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणं एवं वयामि–एवं खलु देवाणुप्पिया ! पावाइं कम्माइं समायरेत्ता इमेयारूवे आवई पाविज्जामि, तं मा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भेवि केइ पावाइं कम्माइं समायरउ, मा णं सेऽवि एवं चेव आवइं पाविज्जिहिइ जहा णं अहं, तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जासि ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, जम्हा णं भंते ! अवराही णं से पुरिसे, एवामेव पएसी ! तवंवि अज्जए होत्था इहेव सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ, से णं अम्ह वत्तव्वयाए सुबहुं जाव उववन्नो, तस्स णं अज्जगस्स तुमं णत्तुए होत्था इट्ठे कंते जाव पासणयाए, से णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए, चउहिं ठाणेहिं पएसी अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए इच्छेइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ अहुणोववन्नए नरए नेरइए, से णं तत्थ महब्भूयं वेयणं वेदेमाणे इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वं०णो चेव णं संचाएइ० १,अहुणोववन्नए नरए नेरइए नयरपालेहिं भुज्जो २,समहिट्ठिज्जमाणे इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेवणं संचाएइ २ अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए निरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अनिज्जिन्नंसि इच्छइ माणुसं लोगं० नो चेव णं संचाएइ ३, एवं नेरइए निरयाउयंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

अणिज्जिन्नंसि इच्छइ माणुसं लोगं० नो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए ४, इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी अहुणोववन्ने नरएसु नेरइए इच्छइ माणुसं लोगं० णो चेव णं संचाएइ०, तं सद्दहाहि णं पएसी ! जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो तं जीवो तं सरीरं १, ॥ (सू० ६५) ॥ तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वदासी–अत्थि णं भंते! एसा पण्णा उवमा, इमेण पुण कारणेण नो उवागच्छइ, एवं खलु भंते ! मम अज्जिया० होत्था इहेव सेयवियाए नगरीए धम्मिया जाव विहरइ, सा णं तुज्झं वत्तव्वयाए सुबहुं पुन्नोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा, तीसे णं अज्जियाए अहं नत्तुए होत्था इट्ठे कंते जाव पासणयाए, तं जइ णं सा अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा–एवं खलु नत्तुया ! अहं तव अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए धम्मिया जाव विहरामि । तए णं अहं सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता जाव देवलोएसु उववण्णा, तं तुमंपि णत्तुया ! भवाहि धम्मिए जाव विहराहि, तए णं तुमंपि एयं चेव सुबहुं पुण्णोवचयं सम० जाव उववज्जिहिसि, तं जइ णं अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोइज्जा जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं, जम्हा सा अज्जिया ममं आगंतुं णो एवं वदासी, तम्हा

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

प्रत सूत्रांक [६५-६६]

दीप अनुक्रम [६५-६६]

सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा तं जीवो तं सरीरं नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं। तए णं केसीकुमार-समणे पएसीरायं एवं वयासी–जति णं तुमं पएसी! ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपाय-च्छित्तं उल्लपडसाडगं भिंगारकडुच्छुयहत्थगयं देवकुलमणुपविसमाणं केइ य पुरिसे वच्चघरंसि ठिचा एवं वदेज्जा–इ(ए)ह ताव सामी! इह मुहुत्तगं आसयह वा चिट्ठह वा निसीयह वा तुयट्टह वा, तस्स णं तुमं पएसी! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणिज्जासि?, णो ति०, कम्हा णं?, भंते! असुइ २ सामंतो,एवामेव पएसी! तवावि अज्जिया होत्था इहेव सेयवियाए णयरीए धम्मिया जाव विहरति, सा णं अम्हं वत्तव्वयाए सुबहुं जाव उववन्ना, तीसे णं अज्जियाए तुमं णत्तुए होत्था इट्ठ० किमंग पुण पासणयाए?, सा णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्व-मागच्छित्तए, चउहिं ठाणेहिं पएसी अहुणोववन्ने देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं० णो चेव णं संचाएइ० अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववण्णे से णं माणुसे भोगे नो आढाति नो परिजाणाति, से णं इच्छिज्ज माणुसं नो चेव णं संचाएति १, अहुणोववण्णए देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे, तस्स णं माणुस्से पेम्मे वोच्छिन्नए भवति दिव्वे पिम्मे संकंते भवति, से णं इच्छेज्जा माणुस० णो चेव णं संचाएइ २, अहुणोववण्णे देवे दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे,

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

तस्स णं एवं भवइ-इयाणिं गच्छं मुहुत्तं गच्छं जाव इह अप्पाउया णरा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति, से णं इच्छेज्जा माणुस्सं० णो चेव णं संचाएइ ३, अहुणोववण्णे देवे दिव्वेहिं जाव अज्झोववण्णे, तस्स माणुस्सए उराले दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे भवइ, उड्ढंपि य णं चत्तारि पंच जोयणसयाइं असुभे माणुस्सए गंधे अभिसमागच्छइ, से णं इच्छेज्जा माणुसं० णो चेव णं संचाइज्जा ४, इच्चेएहिं ठाणेहिं पएसी! अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो तं-जीवो तं सरीरं २॥ (सू० ६६) ॥

'तुज्झ णं भंते! समणाणं णिग्गंथाणं एसा सण्णा' इत्यादि, संज्ञानं-संज्ञा सम्यग्ज्ञानमित्यर्थः, एषा च प्रतिज्ञा-निश्चयरूपोऽभ्युपगमः एषा-दृष्टिः दर्शनं स्वतत्त्वमिति भावः, एषा रुचिः-परमश्रद्धानुगतोऽभिप्रायः, एष हेतुः समस्तायाऽपि दर्शनवक्तव्यतायाः, एतन्मूलं युष्मद्दर्शनमिति भावः, एष सदैव भवतां तात्त्विकोऽध्यवसायः, एषा तुला यथा तुलायां तोलितं सम्यगित्यवधार्यते तथाऽनेनाप्यभ्युपगमेनाङ्गीकृतेन च यद्विचार्यमाणं संगतिमुपैति तत् सम्यगित्यवधार्यते न शेषमिति, तुलेव तुला तया, एवमेतन्मानमित्यपि भावनीयं, नवरं मानं-प्रस्थादि, 'एसप्पमाणे' इति एतत् प्रमाणं, यथा प्रमाणं प्रत्यक्षाद्यविसंवादि एवमेषोऽप्यभ्युपगमोऽविसंवादीति भावः, 'एस समोसरणे' इति, एतत् समवसरणं-बहूनामेकत्र मीलनं, सर्वेषामपि तत्त्वानामस्मिन्नभ्युपगमे संलुलनमिति भावः। 'इट्ठे कंते पिए' इत्यादि, इष्टः इच्छाविषयत्वात् कान्तः कमनीयतमत्वात्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

प्रियः प्रेमनिबन्धनत्वात् मनोज्ञो मनसा सम्यगुपादेयतया ज्ञातत्वात् मनसा अम्यते–गम्यते इति मनोऽमः स्थैर्यगुणयोगात् स्थैर्यो विश्वासको विश्वासस्थानं संमतः कार्यकरणेन बहुमतो बहुत्वेन--अनल्पतया मतो बहुमतः कार्यविघातस्य पश्चादपि मतो बहु(अनु)मतः रत्नकरण्डसमानो, रत्नकरण्डकवदेकान्तेनोपादेय इति भावः, ' जीविउस्सविए ' इति जीवितस्योत्सव इव जीवितोत्सवः स एव जीवितोत्सविकः,हृदयनन्दिजननः, उदुम्बरपुष्पं ह्यलभ्यं भवति ततस्तेनोपमानं, 'सूलाइयं वा' इत्यादि शूलायामतिश्चयेन गतं शूलातिगं,एतदेव व्याचष्टे–शूलायां भिन्नः शूलाभिन्नः स एव शूलाभिन्नकस्तं, तथा 'एगाहच्च'मिति एकं घातं, एकेन घातेनेति भावः, ' कूडाहच्च ' मिति कूटाघातं, कूटपतितस्य मृगस्येव घातेनेति भावः। ' चउहिं ठाणेहिं' इत्यादि, तत्र सुमहद्भूतनरकवेदनावेदनमेकं कारणं द्वितीयं परमाधार्मिकैः कदर्थनं तृतीयं नरकवेदनीयकर्म्माक्षयत उद्विजनं चतुर्थं नरकायुष्कक्षयत उद्विजनं। 'चउहि ठाणेहिं अहुणोववण्णए देवे'इत्यादि सुगमं नवरं 'चत्तारि पंच वा जोअणसए असुभे गंधे हवइ ' इति इह यद्यपि नवभ्यो योजनेभ्यः परतो गन्धपुद्गला न घ्राणेन्द्रियग्रहणयोग्या भवन्ति, पुद्गलानां मन्दपरिणामभावात् घ्राणेन्द्रियस्य च तथाविधशक्त्यभावात्, तथापि ते अत्युत्कटगंधपरिणामा इति नवसु योजनेषु मध्ये अन्यान् पुद्गलान् उत्कटगन्धपरिणामेन परिणमयति, तेऽपि ऊर्ध्वं गच्छन्तः परतोऽन्यान् तेऽप्यन्यानिति चत्वारि पञ्च वा योजनशतानि यावत् गन्धः, केवलमूर्ध्वमूर्ध्वं मन्दपरिणामो वेदितव्यः, तत्र यदा मनुष्यलोके बहूनि गोमृतककलेवरादीनि तदा पञ्च योजनशतानि यावत् गन्धः शेषकालं चत्वारि तत उक्तं चत्वारि पञ्चेति ॥ (सू० ६५–६६) ॥

तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–अत्थि णं भंते ! एस पण्णाउवमा, इमेणं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

पुण मे कारणेणं णो उवागच्छति, एवं खलु भंते ! अहं अन्नया कयाइं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेगगणणायकदंडणायगईसरतलवरमाडंबियकोडुंबियइब्भसेट्ठिसेणावइसत्थवाहमंतिमहामंतिगणगदोवारियअमचचेडपीढमद्दनगरनिगमदूयसंधिवालेहिं सद्धिं संपरिवुडे विहरामि । तए णं मम णगरगुत्तिया ससक्खं सलोहं सगेवेज्जं अवउण(वाउड)बंधणबद्धं चोरं उवणेंति. तए णं अहं तं पुरिसं जीवंतं चेव अउकुंभीए पक्खिवावेमि अउमएणं पिहाणएणं पिहावेमि अएण य तउएण य आयावेमि आयपच्चइयएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि, तए अहं अण्णया कयाइं जेणामेव सा अउकुंभी तेणामेव उवागच्छामि उवागच्छित्ता तं अउकुंभीं उग्गलच्छावेमि उग्गलच्छावित्ता तं पुरिसं सयमेव पासामि णो चेव णं तीसे अयकुंभीए केइ छिद्देइ वा विवरेइ वा अंतरेइ वा राई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए,जइ णं भंते!तीसे अउकुंभीए होज्जा केइ छिद्दे वा जावराई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए, तो णं अहं सद्दहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं नो तं जीवो तं सरीरं, जम्हा णं भंते!तीसे अउकुंभीए णत्थि केइ छिद्दे वा जाव निग्गए,तम्हा सुपतिट्ठिया मे पन्ना जहा तं जीवो तं सरीरं नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं। तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-पएसी ! से जहा नामए कूडागारसाला सिया दुहओलित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा निवायगंभीरा, अहण्णं केइ पुरिसे भेरिं च दंडं च गहाय कूडागारसालाए अंतो २ अणुप्पविसइ २ त्ता

॥ १३४ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

प्रत सूत्रांक [६७-७४]

दीप अनुक्रम [६७-७४]



तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समंता घणनिचियनिरंतरणिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेइ, तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए ठिच्चा तं भेरिं दंडएणं महया २ सद्देणं तालेज्जा, से णूणं पएसी! से सद्दे णं अंतोहिंतो बहिया निग्गच्छइ,? हंता जिग्गच्छइ, अत्थि णं पएसी! तीसे कूडागारसालाए केइ छिड्डे वा जावराई वा जओ णं से सद्दे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए ?, नो तिणट्ठे समट्ठे, एवामेव पएसी! जीवेवि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा सिलं भेच्चा पव्वयं भिच्चा अंतोहिंतो बहिया णिगच्छइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! अण्णो जीवो तं चेव३। तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वदासी-अत्थि णं भंते ! एस पण्णाउवमा इमेण पुण कारणेणं णो उवागच्छइ, एवं खलु भंते! अहं अन्नया कयाइ बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए जाव विहरामि, तए णं ममं णगरगुत्तिया ससक्खं जाव उवणेंति, तए णं अहं (तं) पुरिसं जीवियाओ ववरोवेमि जीवियाओ ववरोवेत्ता अयोकुंभीए पक्खिवामि २ त्ता अउमएणं पिहावेमि जाव पच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि, तए णं अहं अन्नया कयाइं जेणेव सा कुंभी तेणेव उवागच्छइ २ त्ता तं अउकुंभिं उग्गलच्छावेमि २ त्ता तं अउकुंभीं किमिकुंभिपिव पासामि णो चेव णं तीसे अउकुंभीए केइ छिड्डेइ वा जावराई वा जताणं ते जीवा बहियाहिंतो अणुपविट्ठा, जति णं तीसे अउकुंभीए होज्ज केइ छिड्डेइ वा जाव अणुपविट्ठा तेणं अहं सद्दहेज्जा जहा अन्नो जीवो तं चेव, जम्हा णं तीसे अउकुंभीए नत्थि कोइ छिड्डेइ वा जाव



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

अणुपविट्ठा तम्हा सुपतिट्ठिआ मे पण्णा जहा तं जीवो तं सरीरं तं चेव। तए णं केसीकुमारसमणे पएसीं रायं एवं वयासी–अत्थि णं तुमे पएसी ! कयाइ अए धंतपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा ? हंता अत्थि, से णूणं पएसी ! अए धंते समाणे सव्वे अगणिपरिणए भवति ?, हंता भवति, अत्थि णं पएसी ! तस्स अयस्स केइ छिड्डेइ वा जेणं से जोई बहियाहिंतो अंतो अणुपविट्ठे ?, नो इणमट्ठे समट्ठे, एवामेव पएसी ! जीवोऽवि अप्पडिहयगई पुढवि भित्ता सिलं भित्ता बहियाहिंतो अणुपविसइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! तहेव ४ ॥ (सू० ६७) ॥ तए णं पएसी राया केसीकुमारसमणं एवं वयासी–अत्थि णं भंते ! एस पण्णाउवमा इमेण पुण मे कारणेणं नो उवागच्छइ, अत्थि णं भंते ! से जहानामए केई पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए पभू पंचकंडगं निसिरित्तए ?, हंता पभू !, जति णं भंते ! सोच्चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे पभू होज्जा पंचकंडगं निसिरित्तए, तो णं अहं सद्दहेज्जा ३ जहा अन्नो जीवो तं चेव, जम्हा णं भंते ! स चेव से पुरिसे जाव मंदविन्नाणे णो पभू पंचकंडयं निसिरित्तए तम्हा सुपइट्ठिया मे पण्णा जहा तं जीवो तं चेव। तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए णवएणं धणुणा नवियाए जीवाए नवएणं इसुणा पभू पंचकंडगं निसिरित्तए ?, हंता, पभू. सो चेव णं पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगते कोरिल्लिएणं धणुणा कोरिल्लियाए जीवाए कोरिल्लिएणं उसुणा पभू पंचकंडगं निसि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

प्रत सूत्रांक [६७-७४]

दीप अनुक्रम [६७-७४]

रित्तए ?, णो तिणमट्ठे समट्ठे, कम्हा णं ?, भंते ! तस्स पुरिसस्स अपज्जत्ताइं उवगरणाइं हवंति, एवामेव पएसी ! सो चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे अपज्जत्तोवगरणे, णो पभू पंचकंडयं निसिरित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा अन्नो जीवो तं चेव ५ ॥ (सू० ६८) ॥ तए णं पएसी राया केसीकुमारसमणं एवं वयासी-अत्थि णं भंते ! एस पण्णाउवमा इमेण पुण कारणेणं नो उवागच्छइ, भंते ! से जहा नामए केइ पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगते पभू एगं महं अयभारगं वा तउयभारगं वा सीसगभारगं वा परिवहित्तए ?, हंता पभू, सो चेव णं भंते ! पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे सिढिलवलितयाविणद्धगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे पविरलपरिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले किलंते नो पभू एगं महं अयभारगं वा जाव परिवहित्तए, जति णं भंते ! सच्चेव पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे जाव परिकिलंते पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए तो णं सद्दहेज्जा ३ तहेव, जम्हा णं भंते ! से चेव पुरिसे जुन्ने जाव किलंते नो पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए तम्हा सुपतिट्ठिता मे पण्णा तहेव । तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-से जहाणामए केइ पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए णवियाए विहंगियाए णवएहिं सिक्कएहिं णवएहिं पच्छियपिंडएहिं पभू एगं महं अयभारं जाव परिवहित्तए ? हंता पभू, पएसी ! से चेव णं पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए जुन्नियाए दुब्बलियाए घुणक्खइयाए विहंगियाए

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

जुण्णएहिं दुब्बलएहिं घुणक्खइएहिं सिढिलतयापिणद्धएहिं सिक्कएहिं जुण्णएहिं दुब्बलिएहिं घुणखइएहिं पच्छिपिंडएहिं पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए ?, णो तिण०, कम्हा णं ?, भंते ! तस्स पुरिसस्स जुन्नाइं उवगरणाइं भवंति, पएसी ! से चेव से पुरिसे जुन्ने जाव किलंते जुत्तोवगरणे तो पभू एगं महं अयभारं वा जावपरिवहित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं ६ ॥ (सू० ६९) ॥ तए णं से पएसी केसिकुमारसमणं एवं वयासी–अत्थि णं भंते ! जाव नो उवागच्छइ, एवं खलु भंते ! जाव विहरामि, तए णं मम णगरगुत्तिया चोरं उवणेंति, तए णं अहं तं पुरिसं जीवंतगं चेव तुलेमि तुलेत्ता छविच्छेयं अकुव्वमाणे जीवियाओ ववरोवेमि २ त्ता मयं तुलेमि णो चेव णं तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स वा मुयस्स वा तुलियस्स [णत्थि] केइ आणत्ते वा नाणत्ते वा ओमत्ते वा तुच्छत्ते वा गुरुयत्ते वा लहुयत्ते वा, जति णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स केइ अन्नत्ते वा जाव लहुयत्ते वा तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेव, जम्हा णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ अन्नत्ते वा लहुयत्ते वा० तम्हा सुपतिट्ठिया मे पन्ना जहा तं जीवो तं चेव । तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–अत्थि णं पएसी ! तुमे कयाइ वत्थी धंतपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा ?, हंता अत्थि, अत्थि णं पएसी ! तस्स वत्थिस्स पुण्णस्स वा तुलियस्स अपुण्णस्स

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

प्रत सूत्रांक [६७-७४]

दीप अनुक्रम [६७-७४]

वा तुलियस्स केइ अणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, एवामेव पएसी ! जीवस्स अ-गुरुलघुयत्तं पडुच्च जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ आणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! तं चेव ७। (सू. ७०) तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–अत्थि णं भंते ! एसा जाव नो उवागच्छइ, एवं खलु भंते ! अहं अन्नया जाव चोरं उव-णेति, तए णं अहं तं पुरिसं सव्वतो समंता समभिलोएमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि, तए णं अहं तं पुरिसं दुहा फालियं करेमि २ त्ता सव्वतो समंता समभिलोएमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि, एवं तिहा चउहा संखेज्ज फालियं करेमि णो चेव णं तत्थ जीवं पासामि, जइ णं भंते ! अहं तं पुरिसं दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखेज्जहा वा फालियंमि वा जीवं पासंतो तो णं अहं सद्दहेज्जा नो तं चेव, जम्हा णं भंते ! अहं तंसि दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखिज्जहा वा फालियंमि वा जीवं न पासामि तम्हा सुपतिट्ठिया मे पण्णा जहा तं जीवो तं सरीरं तं चेव। तए णं केसिकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासि–मूढतराए णं तुमं पएसी ! ताओ तुच्छत-राओ, केणं भंते ! तुच्छतराए ?, पएसी ! से जहाणामए केई पुरिसे वणत्थी वणोवजीवी वणगवेसणयाए जोइं च जोइभायणं च गहाय कट्ठाणं अडविं अणुपविसा, तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए जाव किंचिदेसं अणुप्पत्ता समाणा एगं पुरिसं एवं वयासी–अम्हे णं देवाणु-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

प्पिया! कट्ठाणं अडविं पविसामो, एत्तो णं तुमं जोइभायणाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि, अह तं जोइभायणे जोइं विज्झवेज्जा एत्तो णं तुमं कट्ठाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासित्तिकट्टु कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा, तए णं से पुरिसे तओ मुहुत्तन्तरस्स तेसिं पुरिसाणं असणं साहेमित्तिकट्टु जेणेव जोतिभायणे तेणेव उवागच्छइ जोइभायणे जोइं विज्झायमेव पासति, तए णं से पुरिसे जेणेव से कट्ठे तेणेव उवागच्छइ उवागच्छित्ता तं कट्ठं सव्वओ समंता समभिलोएति नो चेव णं तत्थ जोइं पासति, तए णं से पुरिसे परियरं बंधइ फरसुं गिण्हइ तं कट्ठं दुहा फालियं करेइ सव्वतो समंता समभिलोएइ णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ, एवं जाव संखेज्जफालियं करेइ सव्वतो समंता समभिलोएइ नो चेव णं तत्थ जोइं पासइ, तए णं से पुरिसे तेसिं कट्ठंसि दुहाफालिए वा जाव संखेज्जफालिए वा जोइं अपासमाणे संते तंते परिसंते निव्विण्णे समाणे परसुं एगंते एडेइ २ परियरं मुयइ २ एवं वयासी-अहो! मए तेसिं पुरिसाणं असणे नो साहिएत्तिकट्टु ओहयमणसंकप्पे चिंतासोगसागरसंपविट्ठे करयलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठिए झियाइ, तए णं ते पुरिसा कट्ठाइं छिंदंति २ त्ता जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति२त्ता ते पुरिसं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासंति २ त्ता एवं वयासी-किन्नं तुमं देवाणुप्पिया! ओहयमणसंकप्पे जाव झियायसि?, तए णं से पुरिसे एवं वयासी-तुब्भे णं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

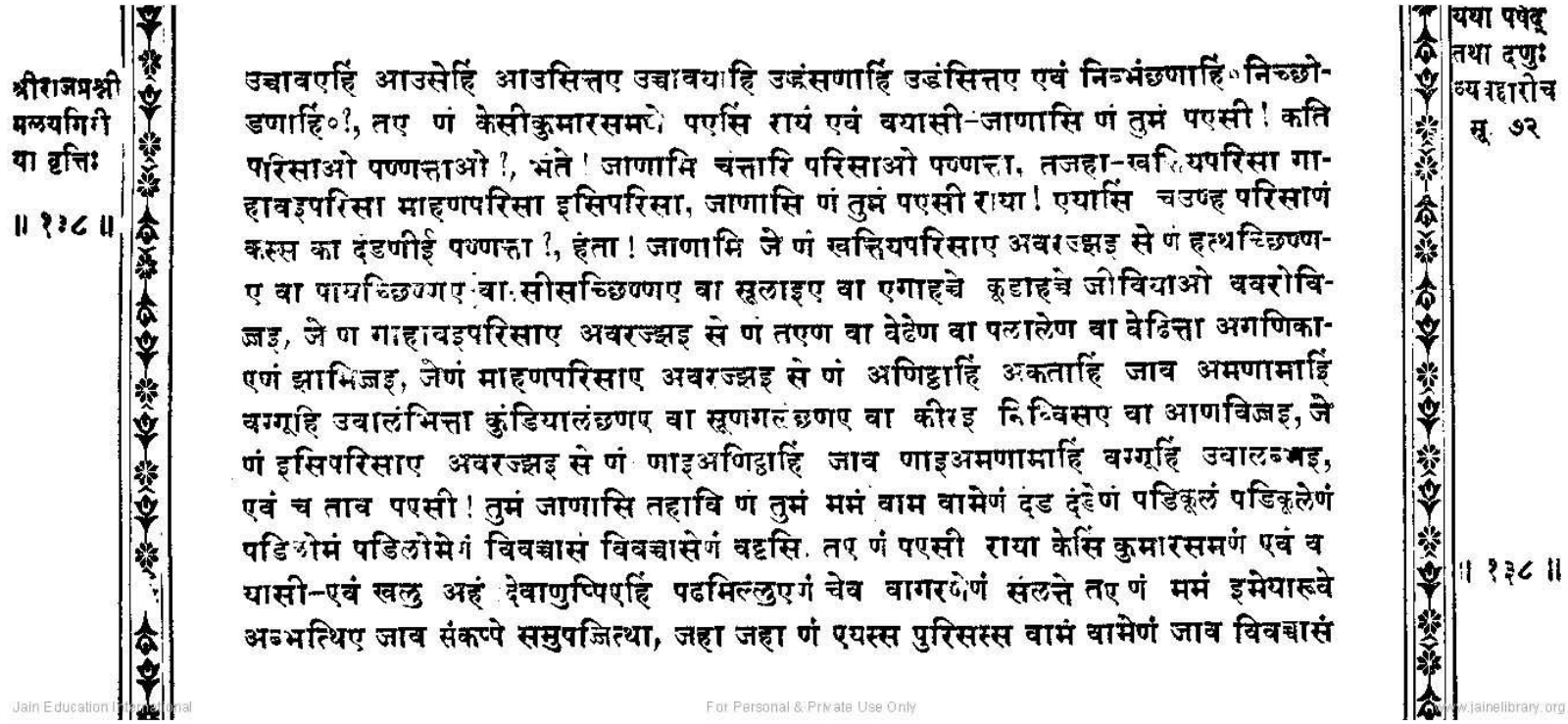
प्रत सूत्रांक [६७-७४]

दीप अनुक्रम [६७-७४]

देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं अणुपविसमाणा ममं एवं वयासी-अम्हे णं देवाणुप्पिया! कट्ठाणं अडविं जाव पविट्ठा, तए णं अहं तत्तो मुहुत्तंतरस्स तुज्झं असणं साहेमित्तिकट्टु जेणेव जोई जाव झियामि, तए णं तेसिं पुरिसाणं एगे पुरिसे छेदे दक्खे पत्तढे जाव उवएसलद्धे ते पुरिसे एवं वयासी-गच्छह णं तुज्झे देवाणुप्पिया! ण्हाया कयबलिकम्मा जाव हव्वमागच्छेह जा णं अहं असणं साहेमित्तिकट्टु परियरं बंधइ २ परसुं गिण्हइ २ त्ता सरं करेइ सरेण अरणिं महेइ जोइं पाडेइ २ जोइं संधुक्खेइ तेसिं पुरिसाणं असणं साहेइ, तए णं ते पुरिसा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति, तए णं से पुरिसे तेसिं पुरिसाणं सुहासणवरगयाणं तं विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं उवणेइ, तए णं ते पुरिसा तं विउलं असणं ४ आसाएमाणा वीसाएमाणा जावविहरंति, जिमियभुत्तुत्तरागयावि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं पुरिसं एवं वयासी-अहो णं तुमं देवाणुप्पिया! जड्ढे मूढे अपडिए णिव्विण्णाणे अणुवएसलद्धे जे णं तुमं इच्छसि कडंसि दुहाफालियंसि वा जोतिं पासित्तए, से एएणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ मूढतराए णं तुमं पएसी! ताओ तुच्छतराओ ८ ॥ (सू० ७१) ॥ तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी-जुत्तए णं भंते! तुब्भं इयछेयाणं दक्खाणं बुद्धाणं कुसलाणं महामईणं विणीयाणं विण्णाणपत्ताणं उवएसलद्धाणं अहं इमीसाए महालियाए महच्चपरिसाए मज्झे

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा



श्रीराजप्रश्नी मलयगिरी या वृत्तिः ॥ १३८ ॥

उच्चावएहिं आउसेहिं आउसित्तए उच्चावयाहिं उद्दंसणाहिं उद्दंसित्तए एवं निब्भंछणाहिं निच्छोडणाहिं?, तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–जाणासि णं तुमं पएसी! कति परिसाओ पण्णत्ताओ?, भंते! जाणामि चत्तारि परिसाओ पण्णत्ता, तंजहा–खत्तियपरिसा गाहावइपरिसा माहणपरिसा इसिपरिसा, जाणासि णं तुमं पएसी राया! एयासिं चउण्हं परिसाणं कस्स का दंडणीई पण्णत्ता?, हंता! जाणामि जे णं खत्तियपरिसाए अवरज्झइ से णं हत्थच्छिण्णए वा पायच्छिण्णए वा सीसच्छिण्णए वा सूलाइए वा एगाहच्चे कूडाहच्चे जीवियाओ ववरोविज्जइ, जे णं गाहावइपरिसाए अवरज्झइ से णं तएण वा वेढेण वा पलालेण वा वेढित्ता अगणिकाएणं झामिज्जइ, जेणं माहणपरिसाए अवरज्झइ से णं अणिट्ठाहिं अकंताहिं जाव अमणामाहिं वग्गूहिं उवालंभित्ता कुंडियालंछणए वा सूणगलंछणए वा कीरइ निव्विसए वा आणविज्जइ, जे णं इसिपरिसाए अवरज्झइ से णं णाइअणिट्ठाहिं जाव णाइअमणामाहिं वग्गूहिं उवालब्भइ, एवं च ताव पएसी! तुमं जाणासि तहावि णं तुमं ममं वाम वामेणं दंड दंडेणं पडिकूलं पडिकूलेणं पडिलोमं पडिलोमेणं विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टसि. तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–एवं खलु अहं देवाणुप्पिएहिं पढमिल्लुएणं चेव वागरणेणं संलत्ते तए णं ममं इमेयारूवे अब्भत्थिए जाव संकप्पे समुप्पज्जित्था, जहा जहा णं एयस्स पुरिसस्स वामं वामेणं जाव विवच्चासं

यथा षष्ठद् तथा दण्डः व्यवहारोच सू. ७२ ॥ १३८ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा



विवचासेणं वट्टिस्सामि तहा तहा णं अहं नाणं च नाणोवलंभं च करणं च करणोवलंभं च दंसणं च दंसणोवलंभं च जीवं च जीवोवलंभं च उवलभिस्सामि, तं एएणं अहं कारणेणं देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं जाव विवचासं विवचासेणं वट्टिए, तए णं केसीकुमारसमणे पएसीरायं एवं वयासी–जाणासि णं तुमं पएसी! कइ ववहारगा पण्णत्ता?, हंता जाणामि, चत्तारि ववहारगा पण्णत्ता–देइ नामेगे णो सण्णवेइ सन्नवेइ नामेगे नो देइ एगे देइवि सन्नवेइवि एगे णो देइ णो सण्णवेइ, जाणासि णं तुमं पएसी! एएसिं चउण्हं पुरिसाणं के ववहारो के अववहारो?, हंता जाणामि, तत्थ णं जे से पुरिसे देइ णो सण्णवेइ से णं पुरिसे ववहारो, तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ सण्णवेइ से णं पुरिसे ववहारो, तत्थ णं जे से पुरीसे देइवि सन्नवेइवि से पुरिसे ववहारी, तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ णो सन्नवेइ से णं अववहारी, एवामेव तुमंपि ववहारो, णो चेव णं तुमं पएसी अववहारी (सू० ७२) तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी-तुज्झे णं भंते! इयछेया दक्खा जाव उवएसलद्धा समत्था ण भंते! मम करयलंसि वा आमलयं जोवं सरीराओ अभिनिवट्टित्ताणं उवदंसित्तए, तेणं कालेणं तेणं समएणं पएसिस्स रण्णो अदूरसामंते वाउयाए संवुत्ते, तणवणस्सइकाए एयइ वेयइ चलइ फंदइ घट्टइ उदीरइ तं तं भावं परिणमइ, तए ण केसीकुमारसमणे पएसिरायं एवं वयासी–पाससि ण तुमं पएसीराया! एयं तणवण-



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

स्सइं एयंतं जाव तं तं भावं परिणमंतं ?, हंता पासामि, जाणासि णं तुमं पएसी ! एयं तणवणस्सइकायं किं देवो चालेइ असुरो वा चालेइ णागो वा किन्नरो वा चालेइ किंपुरिसो वा चालेइ महोरगो वा चालेइ गंधव्वो वा चालेइ ?, हंता जाणामि, णा देवो चालेइ जाव णो गंधव्वो चालेइ वाउयाए चालेइ, पाससि णं तुमं पएसी ! एतस्स वाउकायस्स सरूविस्स सकामस्स सरागस्स समोहस्स सवेयस्स सलेसस्स ससरीरस्स रूवं ?, णो तिणट्ठे०, जइ णं तुमं पएसीराया ! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स जाव ससरीरस्स रूवं न पाससि तं कहं णं पएसी ! तव करयलंसि वा आमलगं जीवं उवदंसिस्सामि ?, एवं खलु पएसी ! दसट्ठाणाइं छउमत्थे मणुस्से सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ, तंजहा–धम्मत्थिकायं १ अधम्मत्थिकायं २ आगासत्थिकायं ३ जीवं असरीरबद्धं ४ परमाणुपोग्गलं ५ सद्दं ६ गंधं ७ वायं ८ अयं जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ ९ अयं सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्सइ वा नो वा १०, एताणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ, तं०-धम्मत्थिकायं जाव नो वा करिस्सइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा अन्नो जीवो तं चेव ९ ॥ (सू०७३)॥ तए णं से पएसीराया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–से नूणं भंते ! हत्थिस्स कुंथुस्स य समे चेव जीवे ?, हंता पएसी ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे, से णूणं भंते ! हत्थीउ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव अप्पकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव एवं आहारनीहारउस्सास-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

प्रत सूत्रांक [६७-७४]

दीप अनुक्रम [६७-७४]

नीसासइड्ढीए महज्जुइअप्पतराए चेव, एवं च कुंथुओ हत्थी महाकम्मतराए चेव महाकिरिय जाव?, हंता पएसी! हत्थीओ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव कुंथुओ वा हत्थी महाकमतराए चेव तं चेव, कम्हा णं भंते! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे?, पएसी! से जहा णामए कूडागारसाला सिया जाव गंभीरा अह णं केइ पुरिसे जोइं व दीवं व गहाय तं कूडागारसालं अंतो २ अणुपविसइ तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समंता घणनिचियनिरंतराणि णि छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेति २तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए तं पईवं पलीवेज्जा, तए णं से पईवे तं कूडागारसालं अंतो२ओभासइ उज्जोवेइ तवति पभासेइ, णो चेव णं बाहिं, अह णं से पुरिसे तं पईवं इड्ढरएणं पिहेज्जा, तए णं से पईवे तं इड्ढरयं अंतो ओभासेइ, णो चेव णं इड्ढरयस्स बाहिं णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं. एवं किलिंजेणं गंडमाणियाए पच्छिपिडएणं आढतेणं अड्ढाढतेणं पत्थएणं अड्ढपत्थएणं अट्ठभाइयाए चाउब्भाइयाए सोलसियाए छत्तीसियाए चउसट्ठियाए दीवचंपएणं तए णं से पदीवे दीवचंपगस्स अंतो ओभासति४, नो चेव णं दीवचंपगस्स बाहिं, नो चेव णं चउसट्ठियाए बाहिं, णो चेव णं कूडागारसालं णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं, एवामेव पएसी! जीवेवि जं जारिसयं पुव्वकम्मनिबद्धं बोंदिं णिव्वत्तेइ तं असंखेज्जेहिं जीवपदेसेहिं सचित्तं करेइ खुड्डियं वा महालियं वा, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी! जहा अण्णो जीवो तं चेव णं ॥ (सू० ७४) ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

'अस्ति णं भंते ! एस पन्नाउवमा' अस्ति भदन्त ! प्रज्ञानो–बुद्धिविशेषादुपमा, 'अपे,गगणनायगे' त्यादि, गणनायकाः–प्रकृतिमहत्तराः दण्डनायकाः–तन्त्रपालाः राजेश्वरतलवरमाडम्बिककौटुम्बिकेभ्यश्रेष्ठिसेनापतिसार्थवाहमन्त्रिमहामन्त्रिगणकदौवारिकाः पागुक्तस्वरूपाः अमात्याः–राज्याधिष्ठायकाः चेटाः–पादमूलिकाः पीठमर्दाः–प्रागुक्ता नगरं–नगरवासिप्रकृतयः निगमाः–कारणिकाः दूता–अन्येषां गत्वा राजादेशनिवेदकाः संधिपालाः–राज्यमन्धिरक्षकाः 'नगरगुत्तिया' इति नगररक्षाकारिणः 'ससक्खं' इति ससाक्षि सहोहं–सल्लोढ्रं 'सगेवेज्जं' ग्रीवानिबद्धकिंचिल्लोध्रमित्यर्थः, 'अवाउडं' अपावृतबन्धनबद्धं चौरमिति। 'भेरिं दंडं चे'ति भेरी–ढक्का दण्डो वादनदण्डः। 'वामं वामेण' मित्यादि, वामं वामेन एवं दंडं दंडेणेत्यादयपि भावनीयं। 'देइ नामेगे नो सन्नवेइ' इति ददाति–दानं प्रयच्छति न संज्ञापयति–न सम्यग्गालापेन संतोषयति, चतुर्भङ्गी पाठसिद्धा, 'एवामेव पएसि ! तुमंपि ववहारी' इति यद्यपि त्वं न सम्यग्गालापेन मां संतोषयसि तथापि मम विषये भक्तिबहुमानं च कुर्वन् आद्यपुरुष इव व्यवहार्येव नाव्यवहारी, एतावता च 'मूढतराए तुमं पएसी ! तओ कट्ठहारयाओ' इत्यनेन वचसा यत् कालुष्यमापादितं तदपनीतं परमं च संतोषं प्रापित इति। 'हंता पएसी हत्थिस्स! कुंथुस्सय समे चेव जीवे' इति प्रदेशानां तुल्यत्वात्, केवलं संकोचविकोचधर्मत्वात् कुन्थुशरीरे संकुचितो भवति, हस्तिशरीरे विस्तृतः उक्तञ्च–"आसज्ज कुंथुदेहं तत्तियमित्तो गयंमि गयमित्तो। न य संजुज्जइ जीवो संकोयविकोयदोसेहिं ॥"॥ अत्र न संयुज्यते जीवः संकोचविकोचदोषाभ्यामिति, तयोस्तस्य स्वभावतयाऽभ्युपगमात्, तथा चात्र प्रदीपदृष्टान्तो वक्ष्यते, अथवा 'कम्मतराए चेवे' त्यादि, 'कम्मं' आयुष्कलक्षणं क्रियां–कायिक्यादि आश्रवः–प्राणाति

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

प्रत सूत्रांक [६७-७४]

दीप अनुक्रम [६७-७४]



पातादिः आहारनीहारोच्छ्वासनिश्वासादि द्रव्यः प्रतीतः, इङ्गितं-बहिर्विकारः, येन साङ्गादि रक्तादी स्वयो, गोकलिञ्जं नाम यत्र गोभक्तं प्रक्षिप्यते, पच्छिकापिटकं च प्रतीतं, गण्डुका मालिका २ देशविशेषप्रसिद्धा, आढकाद्यौढकस्यकार्द्धस्थककुलवार्द्धकुलवा मगधदेशप्रसिद्धा धान्यमानविशेषाः, चतुर्भागिकाष्टभागिकाषोडशिकाद्वात्रिंशतिका मगधदेशप्रसिद्धा एवा रसमानविशेषाः, दीपचम्पको-दीपस्थगनकं, 'एवामेवे' त्यादि निगमनं कण्ठ्यं, उक्तं चैतदन्यत्रापि-"जह दीवो महइ घरे पलीविओ तं घरं पगासेइ। अप्पायारे तं तं एवं जीवो सदेहाई॥ १॥" इति ॥ (सू० ६७-६८-६९-७०-७१-७२-७३-७४) ॥

तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-एवं खलु भंते! मम अज्जगस्स एस सन्ना जाव समोसरणे जहा तज्जीवो तं सरीरं नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं, तयाणंतरं च णं मम पिउणोऽवि एस सण्णा तयाणंतरं ममवि एसा सण्णा जाव समोसरणं, तं नो खलु अहं बहुपुरिसपरंपरागयं कुलनिस्सियं दिट्ठिं छंडेस्सामि, तए णं केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-मा णं तुमं पएसी! पच्छाणुतावियं भवेज्जासि जहा व से पुरिसे अयहारए, केणं भंते! से अयहारए?, पएसी! से जहाणामए केई पुरिसा अत्थत्थी अत्थगवेसी अत्थकंखिया अत्थपिवासिया अत्थगवेसणयाए विउलं पणियभंडमायाए सुबहुं भत्तपाणपत्थयणं गहाय एगं महं अकामियं छिन्नावायं दीहमद्धं अडविं अणुपविट्ठा, तए णं ते पुरिसा तीसे अकामियाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगमहं अया-



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

गरं पासंति, अएणं सद्दतो समंता आइण्णं वित्थिण्णं सच्छडं उवच्छडं फुडं गाढं अवगाढं पासंति २ त्ता हट्ठतुट्ठ जावहियया अन्नमन्नं सद्दावेंति २ त्ता एवं वयासी-एस णं देवाणुप्पिया! अयभंडे इट्ठे कंते जाव मणामे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं अयभारए बंधित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता अयभारं बंधंति २ अहाणुपुव्वीए संपत्थिया, तए णं ते पुरिसा अकामियाए जाव अडवीए किंचि देसं अणुपत्ता समाणा एगं महं तउआगरं पासंति, तउएणं आइण्णं तं चेव जाव सद्दावेत्ता एवं वयासी-एस णं देवाणुप्पिया! तउयभंडे जाव मणामे, अप्पेणं चेव तउएणं सुबहुं अए लब्भति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अयभारए छड्डेत्ता तउयभारए बंधित्तएत्तिकट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति २ त्ता अयभारं छड्डेंति २ त्ता तउयभारं बंधंति, तत्थ णं एगे पुरिसे णो संचाएइ अयभारं छड्डेत्तए तउयभारं बंधित्तए, तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं एवं वयासी-एस णं देवाणुप्पिया! तउयभंडे जाव सुबहुं अए लब्भति, तं छड्डेहि णं देवाणुप्पिया! अयभारगं, तउयभारगं बंधाहि, तए णं से पुरिसे एवं वदासी-दूराहडे मे देवाणुप्पिया ! अए चिराहडे मे देवाणुप्पिया ! अए अइगाढबंधणबद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए असिलिट्ठबंधणबद्धे देवाणुप्पिया! अए घणियबंधणबद्धे देवाणुप्पिया! अए, णो संचाएमि अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तए। तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं जाहे णो संचायंति बहूहिं आघवणाहि य पन्नवणाहि य

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [७५-८०] दीप अनुक्रम [७५-८०]	केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा

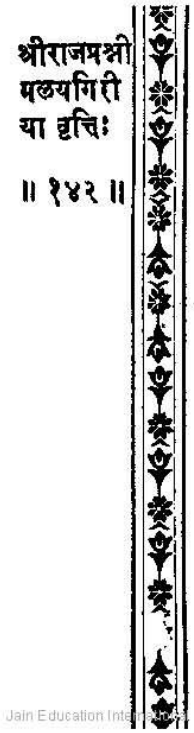


आघविक्तए वा पण्णविक्तए वा तया अहाणुपुवीए संपत्थिया, एवं तंबागरं रुप्पागरं सुवन्नागरं रयणागरं वइरागरं, तए णं ते पुरिसा जेणेव सया जणवया जेणेव साइं २ नगराइं तेणेव उवागच्छन्ति २ त्ता वयरविक्कणयं करेंति २ त्ता सुबहुदासीदासगोमहिसगवेलगं गिण्हंति २ त्ता अट्टतलमूसियवडंसगे कारावेंति व्हाया कयबलिकम्मा उप्पिं पासायवरगया फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणा उवलालिज्जमाणा इट्ठे सद्दफरिस जाव विहरंति। तए णं से पुरिसे अयभारेण जेणेव सए नगरे तेणेव उवागच्छइ अयभारेणं गहाय अयविक्किणणं करेति २ त्ता तंसि अप्पमोल्लंसि निहियंसि झीणपरिवए ते पुरिसे उप्पिं पासायवरगए जाव विहरमाणे पासति २ त्ता एवं वयासी–अहो णं अहं अधन्नो अपुन्नो अकयत्थो अकयलक्खणो हिरिसिरिविज्जिए हीणपुण्णचाउद्दसे दुरंतपंतलक्खणे, जति णं अहं मित्ताण वा णाईण वा नियगाण वा सुणेंतओ तो णं अहंपि एवं चेव उप्पिं पासायवरगए जाव विहरंतो, से तेणट्ठेणं पएसी एवं वुच्चइ–मा णं तुमं पएसी पच्छाणुतावए भविज्जासि, जहा व से पुरिसे अयभारिए ११॥ (सू० ७५)॥ एत्थ णं से पएसी राया संबुद्धे केसिकुमारसमणं वंदइ जाव एवं वयासी–णो खलु भंते ! अहं पच्छाणुतावए भविस्सामि जहा व से पुरिसे अयभारिए, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए, अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा

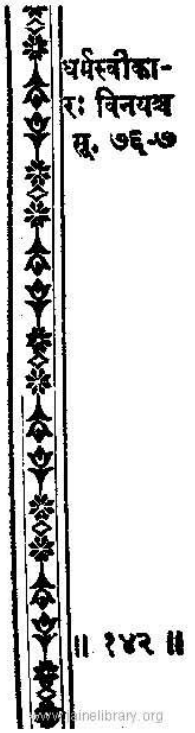


Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं सार्धं प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-चर्चा



पडिवंधं०, धम्मकहा जहा चित्तस्स, तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ २ त्ता जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ॥ (सू० ७६) ॥ तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-जाणासि तुमं पएसी! कइ आयरिया पन्नत्ता ?, हंता जाणामि, तओ आयरिआ पण्णत्ता, तंजहा-कलायरिए सिप्पायरिए धम्मायरिए, जाणासि णं तुमं पएसी! तेसिं तिण्हं आयरियाणं कस्स का विणयपडिवत्ती पउंजियव्वा ?, हंता जाणामि, कलायरियस्स सिप्पायरियस्स उवलेवणं संमज्जणं वा करेज्जा पुरओ पुप्फाणि वा आणवेज्जा मज्जावेज्जा मंडावेज्जा भोयाविज्जा वा विउलं जीवितारिहं पीइदाणं दलएज्जा पुत्ताणुपुत्तियं वित्तिं कप्पेज्जा, जत्थेव धम्मायरियं पासिज्जा तत्थेव वंदेज्जा णमंसेज्जा सक्कारेज्जा सम्माणेज्जा कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जा फासुएसणिज्जेणं असणपाणखाइमसाइमेणं पडिलाभेज्जा पाडिहारिएणं पीढफलगसिज्जासंथारएणं उवनिमंतेज्जा, एवं च ताव तुमं पएसी ! एवं जाणासि तहावि णं तुमं ममं वामे वामेणं जाव वट्टित्ता ममं एयमट्ठं अक्खामित्ता जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए, तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-एवं खलु भंते! मम एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-एवं खलु अहं देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं जाव वट्टिए तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते अंतेउरपरियाल सद्धिं संपरिवुडस्स देवाणुप्पिए वंदित्ता नमंसित्ता एतमट्ठं



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

केसिकुमार श्रमणं पार्श्वे प्रदेशी राज्ञस्य धर्म-स्विकारम्



भुज्जो २ सम्मं विणएणं खामित्तएत्तिकट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूते तामेव दिसिं पडिगए॥ तए णं से पएसीराया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते हट्ठतुट्ठ जाव हियए जेहेव कूणिए तहेव निग्गच्छइ अंतेउरपरियाल सद्धिं संपरिवुडे पंचविहेणं अभिगमेणं वंदइ नमंसइ एयमट्ठं भुज्जो २ सम्मं विणएणं खामेइ। (सू० ७७) तए णं केसी कुमारसमणे पएसिस्स रण्णो सूरियकंतप्पमुहाणं देवीणं तीसे य महतिमहालियाए महच्चपरिसाए जाव धम्मं परिकहेइ। तए णं से पएसी राया धम्मं सोच्चा निसम्म उट्ठाए उट्ठेति २ केसिकुमारसमणं वंदइ नमंसइ २ त्ता जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए। तए णं केसी कुमारसमणे पएसिरायं एवं वदासी–मा णं तुमं पएसी! पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि, जहा से वणसंडे इ वा णट्टसाला इ वा इक्खुवाडए इ वा खलवाडए इ वा, कहं णं भंते!, वणसंडे पत्तिए पुप्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव उवसोभेमाणे २ चिट्ठइ, तया णं वणसंडे रमणिज्जे भवति,जया णं वणसंडेनो पत्तिए नो पुप्फिए नो फलिए नो हरियगरिरेज्जमाणेणो सिरीए अईव २ उवसोभेमाणे चिट्ठइ तया णं जुन्ने झडे परिसडियपंडुपत्ते सुक्करुक्खे इव मिलायमाणे चिट्ठइ तया तया णं वणे णो रमणिज्जे भवति, जया णं णट्टसालावि गिज्जइ वाइज्जइ नच्चिज्जइ हसिज्जइ रमिज्जइ तया णं णट्टसाला रमणिज्जा भवइ, जया णं नट्टसाला णो गिज्जइ जाव णो रमिज्जइ

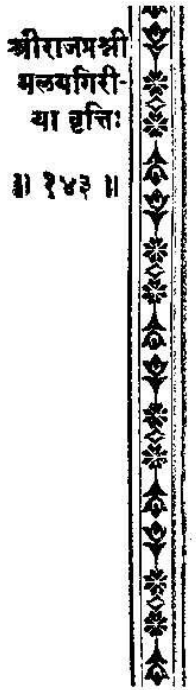


Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

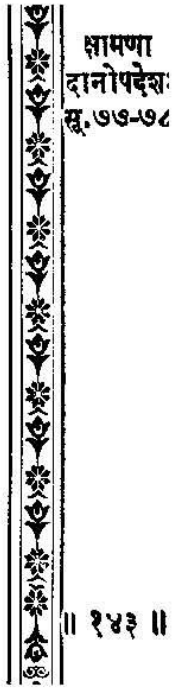
पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [७५-८०]

दीप अनुक्रम [७५-८०]



तया णं पट्टसाला अरमणिज्जा भवति, जया णं इक्खुवाडे छिज्जइ भिज्जइ सिज्जइ पिज्जइ दिज्जइ तया णं इक्खुवाडे रमणिज्जे भवइ, जया णं इक्खुवाडे णो छिज्जइ जाव तया इक्खुवाडे अरमणिज्जे भवइ, जया णं खलवाडे उच्छुब्भइ उद्दुइज्जइ मलइज्जइ मुणिज्जइ खज्जइ पिज्जइ दिज्जइ तया णं खलवाडे रमणिज्जे भवति, जया णं खलवाडे नो उच्छुब्भइ जाव अरमणिज्जे भवति, से तेणट्ठेणं पएसी! एवं वुच्चइ-मा णं तुमं पएसी! पुट्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि जहा वणसंडे इ वा, तए णं पएसी केसिं कुमारसमणं एवं वयासी-णो खलु भंते! अहं पुट्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविस्सामि, जहा वणसंडे इ वा जाव खलवाडेइ वा, अहं णं सेयवियानगरीपमुक्खाइं सत्त गामसहस्साइं चत्तारि भागे करिस्सामि, एगं भागं बलवाहणस्स दलइस्सामि, एगं भागं कुट्ठागारे छुभिस्सामि, एगं भागं अंतेउरस्स दलइस्सामि, एगेणं भागेणं महतिमहालयं कूडागारसालं करिस्सामि, तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं दिन्नभइभत्तवेयणेहिं विउलं असणं० उवक्खडावेत्ता बहूणं समणमाहणअतिहिकिवणवणीमगाणं पंथियपहियाणं परिभाएमाणे २ बहूहिं सीलव्वयगुणवयवेरमणपच्चक्खाणपोसहोववासस्स जाव विहरिस्सामित्तिकट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए ॥ (सू० ७८) ॥ तए णं से पएसी राया कल्लं जाव तेयसा जलंते सेयवियापामोक्खाइं सत्त गामसहस्साइं चत्तारि भाए करेइ, एगं भागं बलवाहणस्स दलइ जाव कूडागारसालं करेइ,



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [७५-८०]

दीप अनुक्रम [७५-८०]

तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं जाव उद्दवरूवेत्ता बहूणं समण जाव परिभाएमाणे विहरइ ॥ (सू० ७९) ॥ तए णं से पएसीराया समणोवासए अभिगयजीवाजीवे० विहरइ, जप्पभिइं च णं पएसीराया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च पुरं च अंतेउरं च जणवयं च अणाढायमाणे यावि विहरति। तए णं तीसे सूरियकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं जाव अंतेउरं च मम जणवयं च अणाढायमाणे विहरइ, तं सेयं खलु मे पएसिं रायं केणवि सत्थपओएण वा अग्गिपओएण वा मंतप्पओगेणवा विसप्पओगेण वा उद्दवेत्ता सूरियकंतं कुमारं रज्जे ठवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणीए पालेमाणीए विहरित्तएत्तिकट्टु एवं संपेहेइ संपेहित्ता सूरियकंतं कुमारं सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी-जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च जाव अंतेउरं च णं जणवयं च माणुस्सए य कामभोगे अणाढायमाणे विहरइ, तं सेयं खलु तव पुत्ता ! पएसिं रायं केणइ सत्थप्पयोगेण वा जाव उद्दवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए । तए णं सूरियकंते कुमारे सूरियकंताए देवीए एवं वुत्ते समाणे सूरियकंताए देवीए एयमट्ठं णो आढाइ नो परियाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ, तए णं तीसे सूरियकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था-मा णं सूरियकंते कुमारे पए-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [७५-८०]

दीप अनुक्रम [७५-८०]

सिस्स रन्नो इमं रहस्सभेयं करिस्सइत्तिकट्टुपएसिस्स रण्णो छिद्दाणि य मम्माणि य रहस्साणि य विवराणि य अंतराणि य पडिजागरमाणीर विहरइ। तए णं सूरियकंता देवी अन्नया कयाइ पएसिस्स रण्णो अंतरं जाणइ असणं जाव खाइमं सव्ववत्थगंधमल्लालंकारं विसप्पजोगं पउंजइ, पएसिस्स रण्णो पहायस्स जाव पायच्छित्तस्स सुहासणवरगयस्स तं विससंजुत्तं असणं वत्थं जाव अलंकारं निसिरेइ घातइ। तए णं तस्स पएसिस्स रण्णो तं विससंजुत्तं असणं ४ आहारेमाणस्स सरीरगंमि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विपुला पगाढा कक्कसा कडुया चंडा तिव्वा दुक्खा दुग्गा दुरहियासा पित्तजरपरिगयसरीरे दाहवक्कंति यावि विहरइ ॥ (सू० ८०) ॥

'कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते' इति, अत्र यावत्करणात् 'फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियंमि अहापंडुरे पभाए रत्तासोगकिंसुयसुयमुहगुंजद्धरागसरिसे कमलागरनलिणि दिवाहर उट्ठियंमि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे' इति परिग्रहः, अस्यायमर्थः-कल्यमिति श्वः प्रादुः-प्राकाशे, ततः प्रकाशप्रभातायां रजन्यां फुल्लोत्पलकमलकोमलोन्मीलिते फुल्लं-विकसितं तच्च तत् उत्पलं तच्च कमलश्च-हरिणविशेषः फुल्लोत्पलकमलौ तयोः कोमलम्-अकठोरमुन्मीलितं यथासंख्यं दलानां च नयनयोश्च यस्मिन् तत्तथा तस्मिन्, अथ रजनीविभातान्तरं पाण्डुरे-शुक्ले प्रभाते, 'रत्तासोगे'त्यादि, रक्ताशोकस्य प्रकाशः स च किंशुकं च-पलाशपुष्पं शुकमुखं च गुञ्जा-फलविशेषो रक्तकृष्णस्तदर्धं च तानि तेषां सदृशे-आरक्तया समाने 'कमलागरनलिणि-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [७५-८०]

दीप अनुक्रम [७५-८०]

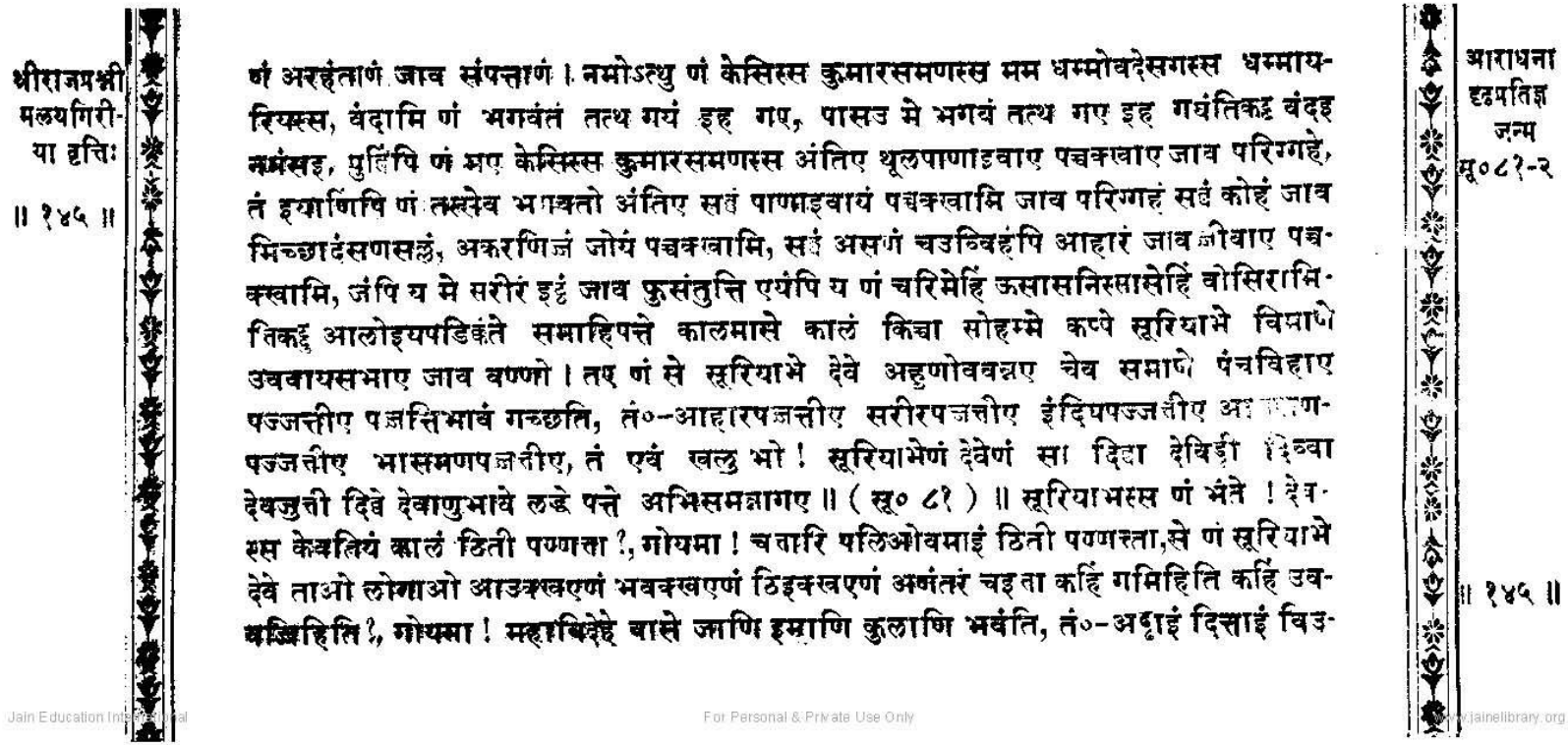
संडबोहए' इति कमलाकराः–ह्रदास्तेषु नलिनीखण्डास्तेषां बोधके 'उत्थिते' उदयप्राप्ते 'सूरिए' आदित्ये सहस्ररश्मौ 'दिनकरे' दिवसकरणशीले तेजसा ज्वलिते। 'तेरिज्जमाणे' इति हरितया देदीप्यमाने 'मा णं तुमे पुव्वं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि' इत्यादेर्ग्रन्थस्यायं भावार्थः–पूर्वमन्येषां दात्रा भूत्वा सम्प्रति जैनधर्मप्रतिपत्त्या तेषामदात्रा न भवितव्यमस्माकमंतरायस्य जिनधर्मापभ्राजनस्य च प्रसक्तेः। 'वेयणा पाउब्भूया उज्जला' इत्यादि, उज्ज्वला दुःखरूपतया निर्मला सुखलेशेनाप्यकलङ्किते ति भावः विपुला–विस्तीर्णा सकलशरीरव्यापनात् प्रगाढा–प्रकर्षेण मर्मप्रदेशिव्यापितया समवगाढा, कर्कश इव कर्कशा, किमुक्तं भवति?–यथा कर्कशपाषाणसंघर्षः शरीरस्य खण्डानि त्रोटयति एवमात्मप्रदेशान् त्रोटयंतो या वेदनोपजायते सा कर्कशा, तथा कटुका पित्तप्रकोपपरिकलितस्य रोहण्यादिकटुद्रव्यमिवोपभुज्यमानमतिशयेनाप्रीतिजनिकेति भावः, परुषा मनसोऽनोद रूक्षत्वजनिका, निष्ठुरा–अशक्यप्रतीकारतया दुर्भेदाऽत एव चण्डा–रुद्रा तीव्रा–अतिशायिनी दुःखा–दुःखरूपा दुर्लङ्घ्या पित्तज्वरपरिगतशरीरे व्युत्क्रान्त्या चापि–दाहोत्पत्त्या चापि विहरति–तिष्ठति ॥ (सू०७४–७५–७६–७७–७८–७९–८०) ॥

तए णं से पएसी राया सूरियकंताए देवीए अन्ताणं संपलग्गं जाणित्ता सूरियकंताए देवीए मगसावि अप्पदुस्समाणे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ २ त्ता पोसहसालं पमज्जइ २ त्ता उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ २ त्ता दब्भसंथारगं संथरेइ २ त्ता दब्भसंथारगं दुरूहइ २ त्ता पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं अंजलिं मत्थएत्तिकट्टु एवं वयासी–नमोऽत्थु

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रत सूत्रांक [८१-८२]

दीप अनुक्रम [८१-८२]



श्रीराजप्रश्नी मलयगिरी-या वृत्तिः ॥ १४५ ॥

णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं । नमोऽत्थु णं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मोवदेसगस्स धम्मायरियस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थ गयं इह गए, पासउ मे भगवं तत्थ गए इह गयंतिकट्टु वंदइ नमंसइ, पुव्विंपि णं मए केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए थूलपाणाइवाए पच्चक्खाए जाव परिग्गहे, तं इयाणिंपि णं तस्सेव भगवतो अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव परिग्गहं सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं, अकरणिज्जं जोगं पच्चक्खामि, सव्वं असणं चउव्विहंपि आहारं जावज्जीवाए पच्चक्खामि, जंपि य मे सरीरं इट्ठं जाव फुसंतुत्ति एयंपि य णं चरिमेहिं ऊसासनिस्सासेहिं वोसिरामितिकट्टु आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे उववायसभाए जाव वण्णो । तए णं से सूरियाभे देवे अहुणोववन्नए चेव समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छति, तं०-आहारपज्जत्तीए सरीरपज्जत्तीए इंदियपज्जत्तीए आणापाणपज्जत्तीए भासमणपज्जत्तीए, तं एवं खलु भो ! सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुत्ती दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए ॥ (सू० ८१) ॥ सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?, गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता,से णं सूरियाभे देवे ताओ लोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चइत्ता कहिं गमिहिति कहिं उववज्जिहिति ?, गोयमा ! महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवंति, तं०-अड्ढाइं दित्ताइं विउ-

आराधना दृढप्रतिज्ञ जन्म सू० ८१-२

॥ १४५ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रदेशी राज्ञस्य आगामि भवा: एवं मोक्ष-प्राप्तिः

प्रत सूत्रांक [८१-८२]

दीप अनुक्रम [८१-८२]



लाइं विच्छड्डियपउरभत्तपाणाइं बहुदासीदासगोमहिसगवेलगप्पभूयाइं बहुजणस्स अपरिभूयाइं, तत्थ अन्नयरेसु कुलेसु पुत्तत्ताए पच्चाइस्सइ। तए णं तंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि अम्मापिऊणं धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ। तए णं तस्स दारगस्स नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाण राइंदियाणं वीतिक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीणपडिपुण्णपंचिंदियसरीरं लक्खणवंजणगुणोववेयं माणुम्माणपमाणपडिपुन्नसुजायसव्वंगसुंदरंगं ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पयाहिसि। तए णं तस्स दारगस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठितिवडियं करेहिंति ततियदिवसे चंदसूरदंसणियं करिस्संति छट्ठे दिवसे जागरियं जागरिस्संति एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते संपत्ते बारसाहे दिवसे णिव्वित्ते असुइ जायकम्मकरणे चोक्खे संमज्जिओवलित्ते विउलं असणपाणखाइमसाइमं उवक्खडावेस्संति २ मित्तणाइणियमसयणसंबंधि परिजणं आमंतेत्ता तओ पच्छा पहाया कयबलिकम्मा जाव अलंकिया भोयणमंडवंसि सुहासणवरगया ते मित्तणाइ जाव परिजणेण सद्धिं विउलं असणं ४ आसाएमाणा विसाएमाणा परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं चेव णं विहरिस्संति, जिमियभुत्तुत्तरागयावि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं मित्तणाइ जाव परिजणं विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेस्संति सम्माणि-



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रदेशी राज्ञस्य आगामि भवाः एवं मोक्ष-प्राप्तिः

पूज्य आगमोद्धारकश्री संशोधितः मुनि दीपरत्नसागरेण संकलित..आगमसूत्र- [१३], उपांगसूत्र- [२] "राजप्रश्नीय" मूलं एवं मलयगिरि-प्रणीता वृत्तिः

प्रत सूत्रांक [८१-८२]

दीप अनुक्रम [८१-८२]

स्संति २ त्ता तस्सेव मित्त जाव परिजणस्स पुरतो एवं वइस्संति-जम्हा णं देवाणुप्पिया! इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि धम्मे दढा पइण्णा जाया तं होऊ णं अम्हं एयस्स दारयस्स दढपइण्णे णामेणं। तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करिस्संति-दढपइण्णो य २, तए णं तस्स अम्मापियरो अणुपुव्वेणं ठितिवडियं च चंदसूरियदरिसणं च धम्मजागरियं च नामधिज्जकरणं च पजेमणगं च पडिवद्धावणगं च पचंकमणगं च कन्नवेहणं च संवच्छरपडिलेहणगं च चूलोवणयं च अन्नाणि य बहूणि गब्भाहाणजम्मणाइयाइं महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं करिस्संति ॥ (सू० ८२) ॥

'संपलियंकसन्निसन्ने' इति पद्मासनसन्निविष्टः 'सवं कोह'मित्यादि क्रोधमानमायालोभाः प्रतीताः प्रेम-अभिष्वंगमात्रं द्वेषः-अप्रीतिमात्रः अभ्याख्यानम्-असद्दोषारोपणं पैशून्यं-पिशुनकर्म परिवादः-विप्रकीर्णपरदोषकथा अरतिरती धर्म्माधर्म्माद्वेषु मायामृषा-वेषान्तरकरणतो लोकविप्रतारणं मिथ्यादर्शनं-मिथ्यात्वं तत् शल्यमिव मिथ्यादर्शनशल्यं। 'अट्ठाइं' इत्यादि, 'आजोगपओगसंपउत्ताइं' इति, आयोगस्य-अर्थलाभस्य प्रयोगाः उपायाः संप्रयुक्ता-व्यापारिता यैस्तानि आयोगप्रयोगसंप्रयुक्तानि 'विच्छड्डियपउरभत्तपाणाइं' इति विच्छर्दिते-त्यक्ते बहुजनबहुभोजनदानेनाविशिष्टोच्छिष्टसंभवात् संजातविच्छर्दे वा-नानाविधभक्तिके भक्तपाने येषां तानि तथा, बहुदासीदासगोमहिषगवेलकाः प्रभूता येषां तानि तथा। 'पढमे दिवसे ठिइपडियं करेंति' इति स्थितौ-कुलमर्यादायां पतिता-अन्तर्भूता या क्रिया पुत्र-

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रदेशी राज्ञस्य आगामि भवाः एवं मोक्ष-प्राप्तिः

प्रत सूत्रांक [८१-८२]

दीप अनुक्रम [८१-८२]



जन्मोत्सवसम्बन्धिनो सा स्थितिपतिता तां, तृतीये दिवसे चन्द्रसूर्यदर्शनोत्सवं, षष्ठे दिवसे जागरिकां–रात्रिजागरणरूपां 'निव्वत्ते असुइजम्मकम्मकरणे' इति निर्वृत्ते–अतिक्रान्ते अशुचीनां-जातिकर्मणां करणे 'आसाएमाणा' इति परिभोजयति आस्वादयंतौ 'वीसाएमाणा' विविधखाद्यादि स्वादयंतौ 'परिभाएमाणा' इति परिभाजयन्तौ–अन्योऽन्यमपि यच्छन्तौ मातापितराविति प्रक्रमः, 'जिमियभुत्तुत्तरे'ति भुक्तोत्तरकालं 'आगत' त्ति आगतौ उपवेशनस्थाने इति गम्यते, 'आयन्ता' इति आचान्तौ शुद्धोदकयोगेन चौक्षौ लेपसिक्थाद्यपनयनेन अत एव परमशुचिभूतौ। 'तए णं तस्स दढपइण्णस्स अम्मापियरो आणुपुव्वेणं ठिइपडियं'मित्याद्युक्तमनुक्तं च संक्षेपत उपदर्शयति, सुगमं चैतत्, नवरं पजेमनं–भक्तग्रहणं पवङ्कमणं–पद्भ्यां गमनं 'पजंपणगं'मिति जल्पनं 'कण्णवेहणगं' कर्णवेधनं 'वच्छरपडिलेहणगं' संवत्सरप्रतिलेखनं प्रथमः संवत्सरोऽभूदित्येवं संवत्सरलेखनपूर्वं महोत्सवकरणं 'चूडोवणयणं' चूडोपनयनं मुण्डनं अन्नाणि य बहूणि' इत्यादि, अन्यानि च बहूनि गर्भाधानजन्मादीनि 'कौतुकानि' उत्सवविशेषरूपाणि 'महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं' ति महत्या ऋद्ध्या महता सत्कारेण–पूजया महता समुदयेन जनानामिति ॥ (सू० ८१–८२) ॥

तए णं दढपतिण्णे दारए पंचधाईपरिक्खित्ते खीरधाईए मज्जणधाईए मंडणधाईए अंकधाईए किलावणधाईए, अन्नाहि य बहूहिं चिलाइयाहिं वामणियाहिं वडभियाहिं बब्बराहिं बउसियाहिं जोण्हियाहिं पण्णवियाहिं ईसिणियाहिं वारुणियाहिं लासियाहिं लाउसियाहिं दमिलीहिं सिंहलीहिं आरबीहिं पुलदीहिं पक्कणीहिं बहलीहिं मुरंडीहिं पारसीहिं णाणादेसीविदेस-



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रदेशी राज्ञस्य आगामि भवा: एवं मोक्ष-प्राप्ति:

प्रत सूत्रांक [८३]

दीप अनुक्रम [८३]

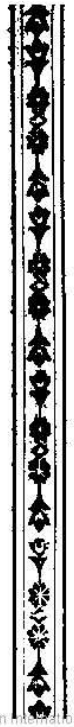
परिमंडियाहिं सदेसणेवत्थगहियवेसाहिं इंगियचिंतियपत्थियवियाणाहिं निउणकुसलाहिं विणीयाहिं चेडियाचक्कवालपरिकिण्णं परिवुडे वरिसधरकंचुइमहयरवंदपरिक्खित्ते हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे उवणविज्जमाणे २ अंकेणं अंकं परिभुज्जमाणे उवगिज्जेमाणे २ उवलालिज्जमाणे २ अवतासि० २ परिचुंबिज्जमाणे २ रम्मेसु मणिकोट्टिमतलेसु परंगमाणे २ गिरिकंदरमल्लीणे विव चंपगवरपायवे णिव्वाघायंसि सुहंसुहेणं परिवड्ढिस्सइ। तए णं तं दढपतिण्णं दारगं अम्मापियरो सातिरेगअट्ठवासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहिकरणणक्खत्तमुहुत्तंसि पहायं कयबलिकम्मं कयकोउअमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं कलायरियस्स उवणेहिंति। तए णं से कलायरिए तं दढपतिण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ अत्थओ करणओ सेहावेहि य, तं०-लेहं गणियं रूवं नट्टं गीयं वाइयं सरगयं पुक्खरगयं समतालं जूयं जणवयं पासगं अट्ठावयं पोरेकच्चं दगमट्टियं अन्नविहिं पाणविहिं वत्थविहिं विलेवणविहिं सयणविहिं अज्जं पहेलियं मागहियं गाहं गीइयं सिलोगं हिरण्णजुत्तिं सुवण्णजुत्तिं आभरणविहिं तरुणीपडिकम्मं इत्थिलक्खणं पुरिसलक्खणं हयलक्खणं गयलक्खणं कुक्कुडलक्खणं छत्तलक्खणं चक्कलक्खणं दंडलक्खणं असिलक्खणं मणिलक्खणं कागणिलक्खणं वत्थुविज्जं णगरमाणं खंधवारं माणवारं

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रदेशी राज्ञस्य आगामि भवा: एवं मोक्ष-प्राप्ति:

प्रत सूत्रांक [८३]

दीप अनुक्रम [८३]



पडिचारं चूहं पडिचूहं चक्कचूहं गरुलचूहं सगडचूहं जुद्धं नियुद्धं जुद्धजुद्धं अट्ठिजुद्धं मुट्ठिजुद्धं बाहुजुद्धं लयाजुद्धं ईसत्थं छरुप्पवायं धणुवेयं हिरण्णपागं सुवण्णपागं मणिपागं धाउपागं सुत्तखेडुं वट्टखेडुं णालियाखेडुं पत्तच्छेज्जं कडगच्छेज्जं सज्जीवनिज्जीवं सउणरुयमिति। तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य गंथओ य करणओ य सिक्खावेत्ता सेहावेत्ता अम्मापिऊणं उवणेहिंति। तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स अम्मापियरो तं कलायरियं विउलेणं असणपाणखाइमसाइमेणं वत्थगंध-मल्लालंकारेणं सक्कारिस्संति सम्माणिस्संति २ विउलं जीवियारिहं पीतीदाणं दलइस्संति विउलं जीवियारिहं० दलइत्ता पडिविसज्जेहिंति ॥ (सू० ८३) ॥

'खीरधाईए' इत्यादि, क्षीरधात्र्या–स्तनदायिन्या मण्डनधात्र्या–मण्डयित्र्या मज्जनधात्र्या–स्नापिकया क्रीडन-धात्र्या–क्रीडाकारिण्या अङ्कधात्र्या–उत्सङ्गधारिण्या 'अन्नाहि य बहूहिं' इत्यादि, कुब्जिकाभिः–वक्रजङ्घाभिः लासिकाभिर्लकुसिकाभिर्द्रमिलाभिः सिंहलीभिः पुलिंद्रीभिः पक्कणीभिः बहलीभिः मुरण्डीभिः शबरीभिः पारसीभिः एवंभूताभिर्नानादेशीभिर्नानाविधानार्यप्रदेशोत्पन्नाभिः 'विदेसपरिमंडियाहिं' इति विदेशः–तदीयदेशापेक्षया इदमितिज्ञजन्यदेशस्तस्य परिमण्डिकाभिः इङ्गितं–नयनादिचेष्टाविशेषः चिंतितं–परेण स्वहृदि स्थापितं प्रार्थितं च–अभिल-षितं च विजानते यास्तास्तथा ताभिः, स्वदेशे यत् नेपथ्यं–परिधानादिरचना तद् गृहीतो वेषो यकाभिस्तास्तथा ताभिः, नि-



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रदेशी राज्ञस्य आगामि भवाः एवं मोक्ष-प्राप्तिः

प्रत सूत्रांक [८३]

दीप अनुक्रम [८३]

पुणानां मध्ये या अतिशयेन कुशलास्ता निपुणकुशलास्ताभिः, अत एव विनीताभिः. 'चेडियाचक्कवाले' ति चेटिकाचक्रवालेनाथ स्वदेशसंभवेन वर्षधराणां–वर्द्धितकप्रयोगेण नपुंसकीकृतानामन्तःपुरमहल्लकानां कञ्चुकिनाम्–अन्तःपुरप्रयोजननिवेदकानां प्रतिहाराणां वा महत्तरकाणां च–अन्तःपुरकार्यचिन्तकानां वृन्देन परिक्षिप्तः, तथा हस्ताद् हस्तं–हस्तान्तरं संहियमाणः अङ्कादङ्कं परिभोज्यमानः परिगीयमानस्तथाविधबालोचितगीतविशेषैः उपलाल्यमानः क्रीडादिलालनया 'उवगूहिज्जमाणे' इति आलिङ्ग्यमानः 'अवयासेज्जमाणे' इति आलिङ्गनविशेषेण 'परियंदिज्जमाणे' इति स्तूयमानः 'परिचुंबिज्जमाणे' इति परिचुम्ब्यमानः 'गिरिकंदरमल्लीणे इव चंपगवरपायवे' इति गिरिकन्दरायां लीन इव चम्पकपादपः सुखंसुखेन परिवर्द्धिष्यते, 'अर्थत' इति व्याख्यानतः करणतः–प्रयोगतः 'सेहावेहइ' सेधयिष्यति–निषादयिष्यति शिक्षापयिष्यति–अभ्यासं कारयिष्यति ॥ (सू० ८३) ॥

तए णं से दढपतिण्णे दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते बावत्तरिकलापंडिए अट्ठारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए णवंगसुत्तपडिबोहए गीयरई गंधव्वणट्टकुसले सिंगारागारचारुवेसे संगयगयहसियभणियचिट्ठियविलाससंलावनिउणजुत्तोवयारकुसले हयजोही गयजोही बाहुजोही बाहुप्पमद्दी अलं भोगसमत्थे साहसीए वियालचारीयावि भविस्सइ। तए णं तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं जाव वियालचारिं च वियाणित्ता विउलेहिं अन्नभोगेहि य पाणभोगेहि य लेणभोगेहि य वत्थभोगेहि य सयणभोगेहि य

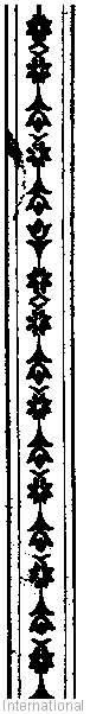
॥ १४८ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रदेशी राज्ञस्य आगामि भवाः एवं मोक्ष-प्राप्तिः

प्रत सूत्रांक [८४-८५]

दीप अनुक्रम [८४-८५]

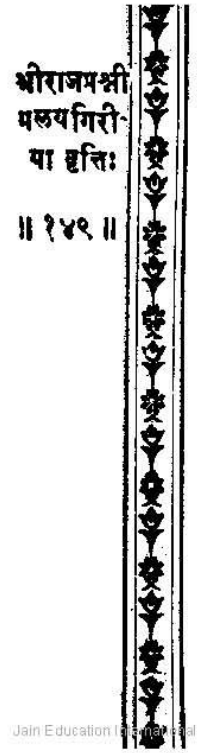


उवनिमंतिहिंति। तए णं दढपइण्णे दारए तेहिं विउलेहिं अन्नभोएहिं जाव सयणभोगेहिं णो सज्जिहिति णो गिज्झिहिति णो मुच्छिहिति णो अज्झोववज्जिहिति, से जहा णामए पउमुप्पलेति वा पउमेइ वा जाव सयसहस्सपत्तेति वा पंके जाते जले संवुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव दढपइण्णेवि दारए कामेहिं जाते भोगेहिं संवड्ढिए णोवलिप्पिहिति० मित्तणाइणियगसयणसंबंधिपरिजणेणं, से णं तथारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिति केवलं मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सति, से णं अणगारे भविस्सइ ईरियासमिए जाव सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंते। तस्स णं भगवतो अणुत्तरेणं णाणेणं एवं दंसणेणं चरित्तेणं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खन्तीए गुत्तीए मुत्तीए अणुत्तरेणं सवसंजमतवसुचरियफलणिव्वाणमग्गेण अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे कसिणे पडिपुण्णे णिरावरणे णिव्वाघाए केवलवरनाणदंसणे समुपज्जिहिति। तए णं से भगवं अरहा जिणे केवली भविस्सइ सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियागं जाणहिति तं०–आगतिं गतिं ठितिं चवणं उववायं तकं कडं मणोमाणसियं खइयं भुत्तं पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्सभागी तं तं मणवयकायजोगे वट्टमाणाणं सवलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ। तए णं दढपइन्ने केवली एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे बहूइं वासाइं केवलि-



Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

प्रदेशी राज्ञस्य आगामि भवाः एवं मोक्ष-प्राप्तिः



श्रीराजप्रश्नी यमलयगिरी या वृत्तिः

॥ १४९ ॥

परियागं पाउणित्ता अप्पणो आउसेसं आभोएत्ता बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाइस्सइ २ त्ता बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेइस्सइ २ त्ता जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे केसलोचबंभचेरवासे अण्हाणगं अदंतवणं अणुवहाणगं भूमिसेज्जाओ फलहसेज्जाओ परघरपवेसो लद्धावलद्धाइं माणावमाणाइं परेसिं हीलणाओ खिंसणाओ गरहणा उच्चावया विरूवा बावीसं परीसहोवसग्गा गामकंटगा अहियासिज्जंति तमट्ठं आराहेइ २ त्ता चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिज्झिहिति बुज्झिहिति परिनिव्वाहिति स दुक्खाणमंतं करेहिति ॥ (सू० ८४) ॥ सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति । णमो जिणाणं जियभयाणं । णमो सुयदेवयाए भगवतीए । णमो पण्णत्तीए भगवईए । णमो भगवओ अरहओ पासस्स पस्से सुपस्से पस्सवणा णमो ९ । रायप्पसेणीयं सम्मत्तं ॥ (सू० ८५) ॥ ग्रंथाग्रं सूत्र २१०० ।

'नवंगसुत्तपडिबोहिए' इति द्वे श्रोत्रे द्वे नयने द्वे नासिके एका जिह्वा एका त्वक् एकं मन इति सुप्तानीव बाल्यादव्यक्तचेतनानि प्रतिबोधितानि–यौवनेन व्यक्तचेतनावंति कृतानि यस्य स तथा, व्यवहारभाष्ये 'सोत्ताइं नव सुत्ताइं' इत्यादि, 'अट्ठारसविहदेसीभासाविसारए' अष्टादशविधाया–अष्टादशभेदाया देशीप्रकाराया–देशीस्वरूपाया भाषाया विशारदो–विचक्षणः, तथा गीतरतिः तथा गन्धर्वे गीते नाट्ये च कुशलः हयेन युध्यते इति हययोधी एवं गजयोधो रथयो-

सूत्रस्य उपसंहार सू० ८५

॥ १४९ ॥

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

	प्रदेशी राज्ञस्य आगामि भवा: एवं मोक्ष-प्राप्तिः

श्री बाहुयोधी तथा बाहुभ्यां ममृदूनातीति बाहुममर्दी साहसिकत्वात् विकाले चरतीति विकालचारी 'सवसंजमतवसुचरियफलनिवाणमग्गेण' त्ति सर्वसंयमः सर्वेषां मनोवाक्कायानां संयमनं तस्य सुचरितस्य च आशंसादिदोषरहितस्य तपसो यत्फलं–निर्वाणं तन्मार्गेण, किमुक्तं भवति?–सर्वसंयमेन सुचरितेन च तपसा, निर्वाणग्रहणमनयोर्निर्वाणफलत्वख्यापनार्थं, 'मणोमाणसियं'ति मनसि भवं मानसिकं तच्च कदाचिद्वचसापि प्रकटितं भवति तत उच्यते–मनसि व्यवस्थितं, 'खइयं' ति क्षपितं क्षयं नीतमिति भावः, 'पडिसेवियं'ति प्रतिसेवितं स्यात् स्त्यादि अधःकर्म्म-भूमौ निखातं रहःकर्म-गुप्तस्थानकृतं 'परेसिं हीलणाओ' इति हीलनानि सद्भूतहीनोत्पत्त्याद्युद्घट्टनानि निन्दनानि–परोक्षे जुगुप्सा आतापनानि खिसनानि 'धिग् मुंड ते' इत्यादि वाक्यानि तर्जनानि अङ्गुल्या निक्षेपपुरस्सरं निर्भर्त्सनानि ताडनानि कशादिघाताः ॥ सू० ८४–८५) ॥

इतिमलयगिरिविरचिता राजप्रश्नीयोपाङ्गवृत्तिका समर्थिता ॥

प्रत्यक्षरं गणनतो, ग्रन्थमानं विनिश्चितम् । सप्तत्रिंशच्छतान्यत्र, श्लोकानां सर्वसंख्यया ॥ १ ॥ ३७०० ।

इति श्रीमन्मलयगिर्याचार्यवर्यविरचितवृत्तियुतं
श्रीराजप्रश्नीयाख्यं द्वितीयमुपाङ्गं समाप्तम्

Jain Education International For Personal & Private Use Only www.jainelibrary.org

भाग 15	राजप्रश्नीय उपांगसूत्र-२ मूलं एवं वृत्तिः परिसमाप्ताः मूल संशोधकः सम्पादकश्च पूज्य आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज साहेब किंचित् वैशिष्ट्य समर्पितेन सह पुनः संकलनकर्ता मुनि दीपरत्नसागरजी [M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

	सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि भाग १ से ४० में कहां क्या मिलेगा?		
भाग	इस भागमे समाविष्ट आगम के नाम और आगम-क्रम		कुलपृष्ठ
01	आगम ०१ आचार मूलं एवं वृत्ति भाग-१ श्रुतस्कन्ध-१, अध्ययन- १,२		३१४
02	आगम ०१ आचार मूलं एवं वृत्ति, भाग-२ श्रुतस्कन्ध-१, अध्ययन- ३ से ९, श्रुतस्कन्ध- २		५८६
03	आगम ०२ सूत्रकृत मूलं एवं वृत्ति, भाग-१ श्रुतस्कन्ध-१, अध्ययन- १ से १३		४९८
04	आगम ०२ सूत्रकृत मूलं एवं वृत्ति, भाग-२ श्रुतस्कन्ध-१, अध्ययन १४ से १६, श्रुतस्कन्ध-२		३९२
05	आगम ०३ स्थान मूलं एवं वृत्ति, भाग-१ स्थान- १ से ४		५९४
06	आगम ०३ स्थान मूलं एवं वृत्ति, भाग-२ स्थान- ५ से १० संपूर्ण		४९४
07	आगम ०४ समवाय मूलं एवं वृत्ति.		३३८
08	आगम ०५ भगवती मूलं एवं वृत्ति, भाग-१ शतक- १ से ६		५९२
09	आगम ०५ भगवती मूलं एवं वृत्ति, भाग-२ शतक- ७ से ११		५५२
10	आगम ०५ भगवती मूलं एवं वृत्ति, भाग-३ शतक- १२ से २०		५१४
11	आगम ०५ भगवती मूलं एवं वृत्ति, भाग-४ शतक- २१ से ४१ संपूर्ण		३८४
12	आगम ०६ ज्ञाताधर्मकथा मूलं एवं वृत्ति.		५२२
13	आगम-७,८,९,१०उपासकदशा, अंतकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्नव्याकरण मूलं एवं वृत्ति.		५३८
14	आगम-११,१२, विपाक, उववाई मूलं एवं वृत्ति.		३८४
15	आगम १३ राजप्रश्नीय मूलं एवं वृत्ति.		३१४
16	आगम१४ जीवाजीवाभिगम भाग-१ मूलं एवं वृत्ति. [प्रतिपत्ति-३-अतर्गत] सूत्र- १ से १३८		४८०
17	आगम१४ जीवाजीवाभिगम भाग-२ मूलं एवं वृत्ति. [प्रतिपत्ति-३-अतर्गत] सूत्र- १३९ से प्रतिपत्ती-१० संपूर्ण		४८८
18	आगम १५ प्रज्ञापना भाग-१ मूलं एवं वृत्ति. पद- १ से ५		४२६
19	आगम १५ प्रज्ञापना भाग-२ मूलं एवं वृत्ति. पद- ६ से २२		५१४
20	आगम १५ प्रज्ञापना भाग-३ मूलं एवं वृत्ति. पद- २३ से ३६ संपूर्ण		३३६
21	आगम १६ सूर्यप्रज्ञप्ति मूलं एवं वृत्ति.		६१०

	सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि भाग १ से ४० में कहां क्या मिलेगा?		
भाग	इस भागमे समाविष्ट आगम के नाम और आगम-क्रम		कुलपृष्ठ
22	आगम १७ चन्द्रप्रज्ञप्ति मूलं एवं वृत्ति.		६१४
23	आगम१८ जंबूद्विपप्रज्ञप्ति भाग-१ मूलं एवं वृत्ति. वक्षस्कार- १ एवं २.		३७६
24	आगम१८ जंबूद्विपप्रज्ञप्ति भाग-२ मूलं एवं वृत्ति. वक्षस्कार- ३ एवं ४.		४२६
25	आगम१८ जंबूद्विपप्रज्ञप्ति भाग-३ मूलं एवं वृत्ति. वक्षस्कार- ५ से ७.		३४४
26	आगम १९-३२ निरयावलिका, कल्पवतंसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका, वृष्णिदशा, चतु:शरण, आतुरपरत्याख्यान, महाप्रत्याख्यान, भक्तपरिज्ञा, तंदुलवैचारिक, संस्तारक, गच्छाचार, गणिविदया, देवेन्द्रस्तव मूलं एवं छाया		३१२
27	आगम ३३ थी ३९ मरणसमाधि मूलं एवं छाया, निशीथ, बृहत्कल्प, व्यवहार, दशाश्रुतस्कंध, जीतकल्प/पंचकल्प, महानिशीथ मूलं एव		३३०
28	आगम ४० आवश्यक मूलं एवं वृत्ति, भाग-१, निर्युक्ति- १ से ५२१		४६६
29	आगम ४० आवश्यक मूलं एवं वृत्ति, भाग-२, निर्युक्ति- ५२२ से ९५१		४४२
30	आगम ४० आवश्यक मूलं एवं वृत्ति, भाग-३ निर्युक्ति- ९५२ से १२७३ अपूर्ण, [अध्ययन- १ से ४ अपूर्ण]		४६४
31	आगम ४० आवश्यक मूलं एवं वृत्ति, भाग-४ निर्युक्ति- १२७३ अपूर्ण से १६२३, [अध्ययन- ४ अपूर्ण से ६ संपूर्ण]		४२६
32	आगम ४१/१ ओघनिर्युक्ति मूलं एवं वृत्ति.		४७२
33	आगम ४१/२ पिंडनिर्युक्ति मूलं एवं वृत्ति.		३७६
34	आगम ४२ दशवैकालिक मूलं एवं वृत्ति.		५९०
35	आगम ४३ उत्तराध्यन मूलं एवं वृत्ति, भाग-१, अध्ययन- १ से ५		५२२
36	आगम ४३ उत्तराध्यन मूलं एवं वृत्ति, भाग-२, अध्ययन- ६ से २१		४८२
37	आगम ४३ उत्तराध्यन मूलं एवं वृत्ति, भाग-३, अध्ययन- २२ से ३६		४६६
38	आगम ४४ नन्दिसूत्र मूलं एवं वृत्ति.		५२८
39	आगम ४५ अनुयोगद्वार् मूलं एवं वृत्ति.		५६०
40	कल्प[बारसा]सूत्र... चतु:शरण, तन्दुलवैचारिक, गच्छाचार मूलं एवं वृत्ति.		३९४



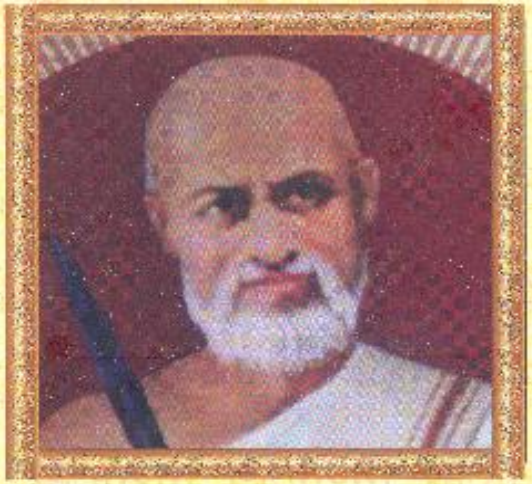
आगम

वाचना शताब्दी वर्ष

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

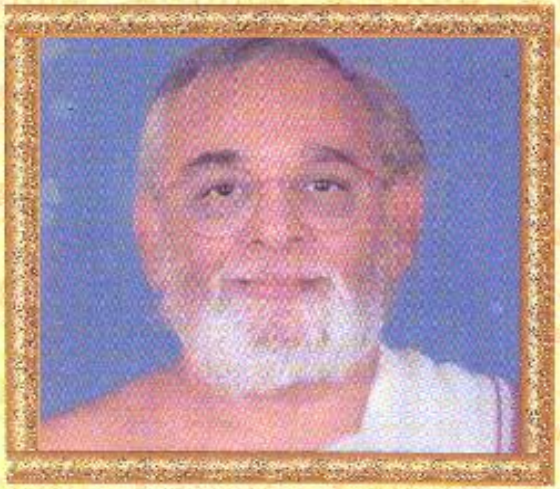
सवृत्तिक-आगम-सुत्ताणि

मूल संशोधक



पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य
श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराज

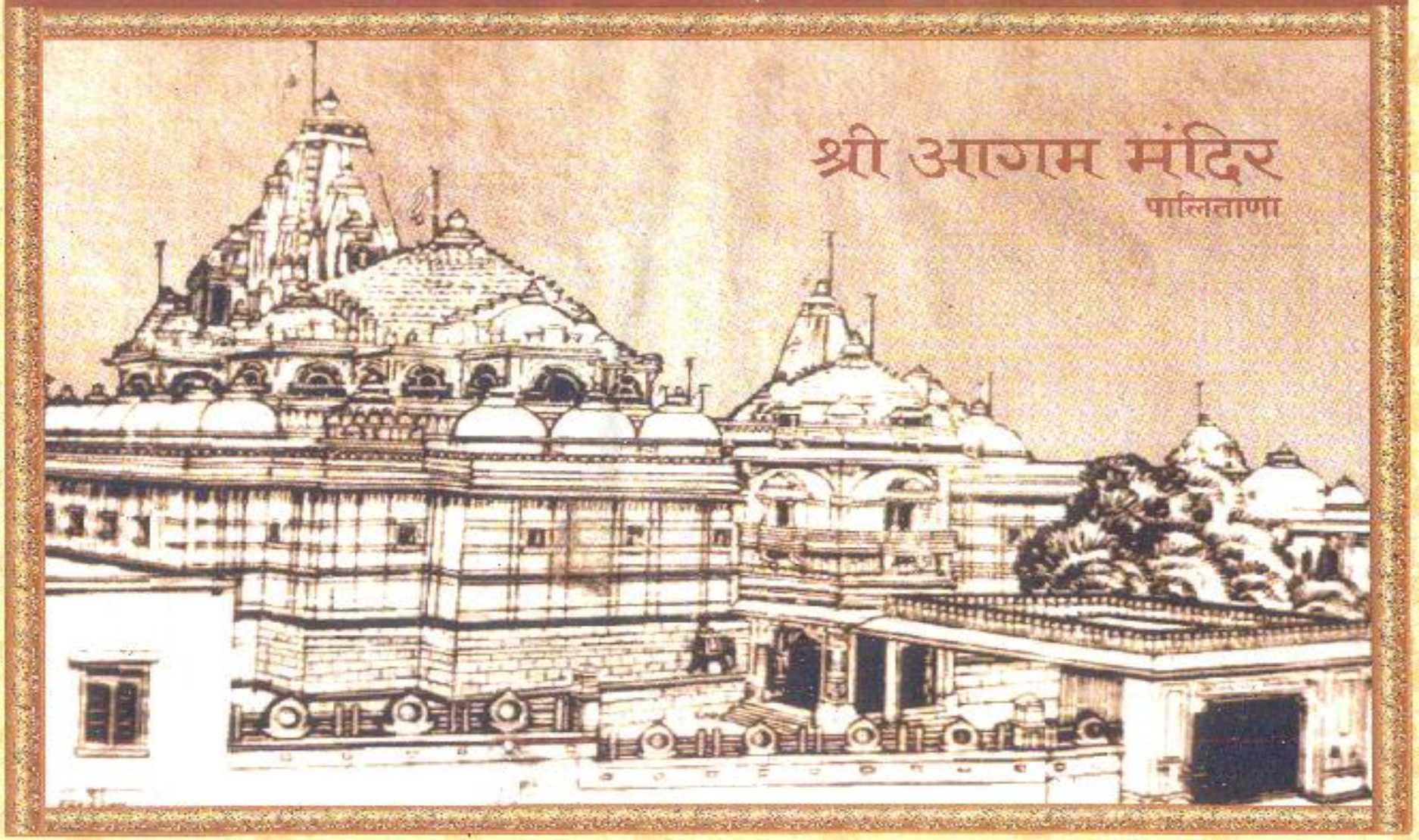
अभिनव-संकलनकर्ता

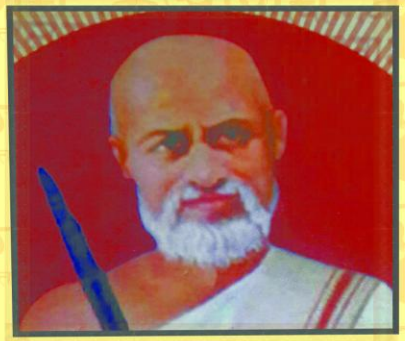


आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी
[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

प्रत-प्राप्ति और पेज-सेटिंग कर्ता : www.jainelibrary.org के चेरमन श्री प्रवीणभाई शाह, अमेरिका
मुद्रक : नवप्रभात प्रिन्टींग प्रेस अमदावाद Mo 9825598855 / 9825306275

ईस प्रोजेक्ट के संपूर्ण-अनुदान-दाता





मूल संशोधक

पूज्यपाद आगमोद्धारक आचार्य

श्री आनंदसागरसूरीश्वरजी महाराजसाहेब

आगम १३

"राजप्रश्नीय" मूलं एवं वृत्तिः

अभिनव-संकलनकर्ता

आगम दिवाकर मुनिश्री दीपरत्नसागरजी

[M.Com., M.Ed., Ph.D., श्रुतमहर्षि]

